

श्री द्विजकर्म नन्दिनी



संशोधक

गुरु सा. श्री भैरवलाल जी भट्ट
तलवण्डी, कोटा

upayogibooks.com



प्रकाशक

शुक्ल दयानन्द 'निराला'
(पूर्व अध्यापक)
दिग्विजय शुक्ला
(निर्माता सेलो सुपारी, कोटा)



पुस्तक प्राप्ति स्थान

१-श्री दिग्विजय शुक्ला
सुधा-भवन, लक्ष्मण विहार
मकान नं. 21, कुन्हाड़ी कोटा
मो.: 98290-36693

२-पं. राकेशकुमार व्यास
किशन-निवास, वरनापाडा
रेतवाली कोटा-6(राज.)
मोबाईल नं.98291-70164,
94149-71116

३-श्री मथुरानाथ शर्मा
टिपन की चौकी
श्रीपुरा कोटा (राज.)
मोबाईल नं. 94130-08261

॥ शुभाशंषा ॥



श्री राकेश व्यास द्वारा संकलित “द्विजकर्म नन्दिनी” श्री निरंजन वेद विद्यालय गोदावरी धाम कोटा में अधीत ज्ञान का भंडार, सामाजिक संस्कारों को सुरक्षित रखने का सु-प्रयास हैं। सामाजिक आवश्यकता पूर्ति के लिए समय-२ पर काम आने वाले संस्कारों को समुचित ढंग से सम्पादित करके शुभ चिन्तन की प्रबलकामना हैं, जिससे हमारी संस्कृति एवं प्राकृतिक वनस्पति, गोधन आदि निरन्तर सुरक्षित रह सकें।

अहोरात्र अथक परिश्रम करके “सर्वजन हिताय”
“सर्वजन सुखाय” प्रयास स्तुत्य हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि इन्हे निरन्तर गतिशील कर्मकाण्ड वेद साहित्य में पारङ्गतता प्रदान कर यशस्वी बनाये।

पं. भैरवलाल भट्ट

पूर्व प्राचार्य निरंजन वेद विद्यालय
गोदावरी धाम, कोटा (राज.)

प्राक्कथन ॥

श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम् ।
दोर्भिः पाशाङ्कुशाब्जाभयवरदधतं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम्,
ध्याये शान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥३॥

श्री नीलकण्ठ महादेव व श्री श्री १००८ श्री जमुनादास जी महाराज की परम कृपा व सद्गुरुदेव के आशीर्वाद से "श्री द्विजकर्म नन्दिनी" पुस्तक लिखी गई । भगवान की कृपा कब और कैसे होती है कुछ कहा नहीं जा सकता है । एक दिन मुझे श्री मथुरानाथ शर्मा जी की लाइब्रेरी में, कर्मकाण्ड. रत्न श्री मोघालाल जी औदीच्य (गुजराती) की हस्तलिखित ग्रहशान्ति संवत् १९५० देखने को मिली । ऐसी ही एक पुस्तक श्री गुरुजी भैरव लाल जी भट्ट के पास भी संवत् १८२४ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ शनिवार, कर्मकाण्ड रत्न श्री देवीराम जी दवे की थी । इन दोनों पुस्तकों व अन्य (हस्तलिखित) पुस्तकों का संग्रह कर यह "श्री द्विजकर्म नन्दिनी" के रूप में संग्रहीत की गई । गुरु साहब श्री भैरवलाल जी भट्ट, श्री प्रह्लादत्त जी शास्त्री, पिता श्री जगदीशप्रसाद जी व्यास, पं. उमाशंकर जी शर्मा, श्री नित्यानन्द जी शुक्ल, मथुरानाथ जी शर्मा इन सभी का स्नेह प्यार, सहयोग एवं आशीर्वाद से यह पुस्तक पूर्ण हो सकी ।

इस पुस्तक संग्रहण के समय उन सभी महाविभूतियों की मुझे बहुत याद आ रही है । जिनका मेरे जीवन में बड़ा महत्व है और वे आज हमारे बीच नहीं हैं बाबा स्व. श्री रामस्वरूप जी (भायाजी) कर्मकाण्डी व ज्योतिषाचार्य ढोढ़र जिला श्योपुर (म.प्र.) स्व. श्रीबाबा गोपीनाथजी भार्गव संस्थापक गोदावरीधाम कोटा (राज.) गुरु जी स्व. श्रीमांगीलाल जी यज्ञाचार्य व भागवत मर्मज्ञ नागदा श्योपुर (म.प्र.) इन

सभी महाविभूतियों को इस पुस्तक के माध्यम से छोटी सी श्रद्धाञ्जली समर्पित है ।

प्रस्तुत पुस्तक में, प्रामाणिक ग्रहशान्तिपद्धति, यज्ञोपवीतसंस्कार, विवाहसंस्कार, मंडलपूजन अन्यदेवपूजन नवग्रह जप विधि इत्यादि का बड़ी ही सरल भाषा में समावेश किया गया है, जिससे इसकी महत्ता और भी बढ़ गई है ।

मेरी यही अभिलाषा है कि यह पुस्तक कर्मिणी ब्राह्मणों व विद्वज्जनों तक पहुँचे जिससे वे और समाज सही लाभ उठा सके । श्री शुकल दयानन्द जी 'निराला' तत्पुत्र कुल भूषण श्री दिग्विजय शुकला सुधा-भवन, लक्ष्मण विहार, मकान नं. 21, कुन्हाड़ी कोटा जिन्होंने इस पुस्तक के मुद्रण व प्रकाशन का समस्त व्ययभार उठाया मैं व्यक्तिगत रूप से उनका सहृदय से आभारी हूँ साथ ही हम उन सभी ग्रन्थों के हृदय से आभारी हैं जिनसे हमने इस संग्रह में मदद ली है ।

अंत में निवेदन है कि इस पुस्तक के संकलन एवं मुद्रण आदि में दृष्टिदोष होना स्वाभाविक है जिसे विद्वज्जन मुझे क्षमा कर सूचित करने की कृपा करेंगे, ताकि भविष्य में उन्हें सुधारा जा सके । पाठक रुचिपूर्वक पढ़ें और लाभ उठायें । इसी शुभकामनाओं के साथ ।

गच्छतः स्वल्पं क्वापि भवत्येव प्रभादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥

वयमेव करिष्यामो कर्म भूमेः सुमंगलम् ।

प्रतिष्ठां धर्मभूमिश्च नेष्याम परमोन्नतिम् ॥

पं.राकेशकुमार व्यास
शुकल यजुर्वेद पाठी

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
१-प्रातः स्मरण	1
२-मंगलाचरण	2
३-गुरु वन्दना	3
४-श्री गुरुपादुका पंचकम्	4
५-दशविधि स्नानम्	5-6
६-जलयात्रा विधानम्	7-13
७-ग्रहशान्ति पद्धति (कर्माङ्ग विधि)	14-130
८-गणपति स्मरणम्	15
९-शान्तिपाठ(आनोभद्रा)	16-17
१०-गणपति-वन्दना	18
११-संकल्प	19
१२-दिग्बन्धनम्	20
१३-भैरव-ध्यानम्	22
१४-हनुमत्-ध्यानम्	22
१५-वरुणपूजनम्	22-23
१६-दीपपूजनम्	24
१७-घण्टापूजनम्	24
१८-शंखपूजनम्	25
१९-गणपतिपूजनम्	25-40
२०-गणेशाथर्वशीर्ष	29
२१-मातृकापूजनम्	41-44
२२-वसोर्धारा(सप्तघृतमातृका)	45-48

२३-नान्दीश्राद्धम्	49-52
२४-आचार्यऋत्विजानां वरणम्	53-55
२५-वरणश्राद्धम्	56
२६-यजमान-तिलकम्	57
२७-पुण्याहवाचनम्	58-69
२८-यज्ञरक्षाविधानम्	70
२९-कुण्डपूजनम्	71
३०-कुश-काण्डिका	74-76
३१-नवग्रह-स्थापनम्	77-82
३२-अधिदेवता-आवाहनम्	83-85
३३-पंचगणक-आवाहनम्	86
३४-नक्षत्र-आवाहनम्	87-91
३५-रुद्रकलश स्थापनम्	92-94
३६-वेद स्थापनम्	95
३७-दिक्पाल-स्थापनम्	95-97
३८-प्राणप्रतिष्ठा	98-99
३९-शेषकुश-काण्डिका	100
४०-हवन-प्रारम्भ.	101
४१-अग्निपूजनम्	101
४२-नवग्रह-हवन	102-103
४३-षोडशमातृका-सप्तघृतमातृका हवन	104-105
४४-नवाहुतयः	106
४५-अधिदेव-हवनम्	106
४६-प्रत्यधिदेव-हवनम्	107

४७-पंचलोकपाल-हवनम्	108
४८-सप्तविंशतिनक्षत्र-हवनम्	109-111
४९-वेद-हवनम्	112
५०-दिक्पाल-हवनम्	113
५१-गुग्गल-होमः	114
५२-सर्षपा-होमः	114
५३-लक्ष्मी-होमः	114-115
५४-अग्निस्विष्टहोमः	116
५५-प्रायश्चित्त-नवाहुतयः	116
५६-वर,कन्या विवाहे कंकणबन्धनम्	117
५७-दिक्पाल-बलिः	117-121
५८-गणपतिपायस-बलिः	122
६०-क्षेत्रपाल-बलिः	122-123
६१-पूर्णाहुतिः	124
६२-घृतधारा	125
६३-अग्निप्रार्थना	126
६४-होम-संकल्पः	126-127
६५-यजमानाभिषेकः	128-129
६६-आशिका(आशीर्वादाः)	130
६७-चौलकर्मसंस्कारः (मुण्डन-संस्कारः)	131-135
६८-यज्ञोपवीत-संस्कारः(उपनयन-संस्कारः)	136-166
६९-प्रथमवेदी-संस्कारः	138
७०-द्वितीयवेदी-संस्कारः	152

७१-तृतीयवेदी-संस्कारः	156
७२-एकाशीति वास्तुमंडलपूजनम् व गृहवास्तु	167-173
७३-चतुः षष्टिपद वास्तुमण्डल पूजनम्	174-185
७४-योगिनी-मंडलपूजनम्	186-197
७५-क्षेत्रपाल-मंडलपूजनम्	198-206
७६-सर्वतोभद्रमंडल पूजनम्	207-215
७७-वास्तुमण्डल-हवनम्	216-217
७८-योगिनी-हवनम्	218
७९-क्षेत्रपालमण्डल-हवनम्	219
८०-सर्वतोभद्रमण्डल-हवनम्	220
८१-मण्डपपूजनम्	221-228
८२-तोरणपूजनम्	229-233
८३-पंचवर्णमहाध्वजपूजनम्	234
८४-विवाहसंस्कारः	235-267
८५-चतुर्थीकर्म	268-272
८६-सीमन्तोन्नयनसंस्कारः	273-276
८७-विष्णुपूजनम्	277-285
८८-पुरुष सूक्तम्	280
८९-महालक्ष्मीपूजनम्	286-297
९०-श्रीसूक्तम्	290
९१-महालक्ष्मी आरातिकम्	297
९२-वैदिकशिवपूजनम्	298-315
९३-रुद्रसूक्तम्	305

अष्टोत्तरशत, विल्वपत्र	313
शिव मानस पूजा	315
१४-जन्मोत्सवपूजनविधि	316-321
१५-दुर्गापूजनम्	322-334
१६-दुर्गाप्राचीनध्यानानि	335-336
१७-भैरवनामावलिः	337-339
१८-गणपतिमंत्रजपविधिः	340
१९-रुद्रपाठ-न्यासध्यानम्	340
१००-महामृत्युञ्जय-जपविधिः	341-343
१०१-त्र्यक्षरमृत्युञ्जय-जपविधिः	344
१०२-शताक्षरागायत्रीमंत्र-जपविधिः	345-346
१०३-शिवपंचाक्षरमंत्र-जपविधिः	347
१०४-नवग्रहमंत्र-जपविधिः	348-356
छायापात्रदानम्	357
१०५-रामायणआसनविधिः	358
१०६-रामायणविसर्जनविधिः	359
१०७-श्रीराम स्तुतिः	360
१०८-शिवभजन	360
१०९-अग्निवास, ग्रहमुखाग्निचक्रम्	361
११०-शिववासचक्रम्	362
१११-श्री गणेश (आरार्तिकम्)	362
११२-शतरुद्राभिषेकः	363-370

*** ॥ प्रातः स्मरण ॥ ***

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
 करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥
 समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमंडले ।
 विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥
 अहिल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
 पञ्च कन्याः (पंचकं ना) स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम् ॥
 अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।
 पुरी द्वारावती चैव सप्तैताः मोक्षदायिकाः ॥
 हनुमानञ्जनी सुनूवायुपुत्रो महाबलः ।
 रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमित विक्रमः ॥
 उदधिक्रमणश्चैव सीता शोक विनाशनः ।
 लक्ष्मण प्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥
 अश्वत्थामा बलिव्यासो हनूमांश्च विभीषणः ।
 कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥
 सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् ।
 जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधि विवर्जितः ॥

☪ ॥ मंगलाचरणम् ॥ ☪

यं ब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वति दिव्यैः स्तवै-
 र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
 ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
 यस्यान्तं न विदुः सुराऽसुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥१॥
 निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् ।
 पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥२॥
 यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
 पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु-

स्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥३॥
 यः स्वानुभावमखिलश्रुतिसारमेक-
 मध्यात्मदीपमतितितीर्षतां तमोऽन्धम् ।
 संसारिणां करुणयाऽऽह पुराणगुह्यं
 तं व्याससूनुमुपयामि गुरुं मुनीनाम् ॥४॥
 त्वं क्रतुस्त्वं हविस्त्वं हुताशः स्वयं
 त्वं हि मन्त्रः समिद्धर्भपात्राणि च ।
 त्वं सदस्यत्विजो दम्पती देवता
 अग्निहोत्रं स्वधा सोम आज्यं पशुः ॥५॥
 त्वं पुरा गां रसाया महासूकरो
 दंष्ट्रया पद्मिनीं वारणेन्द्रो यथा ।
 स्तूयमानो नदँल्लीलया योगिभि-
 र्व्युञ्जहर्षं त्रयीगात्र यज्ञक्रतुः ॥६॥
 स प्रसीद त्वमस्माकमाकाङ्क्षतां
 दर्शनं ते परिभ्रष्टसत्कर्मणाम् ।
 कीर्त्यमाने नृभिर्नाम्नि यज्ञेश ते
 यज्ञविघ्नाः क्षयं यान्ति तस्मै नमः ॥७॥
 बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
 बिभ्रद् वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
 रन्धान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दै-
 र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः ॥८॥
 नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
 देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥९॥
 वसुदेव सुतं देवं कंसं चाणूर मर्दनम् ।
 देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम् ॥१०॥

ॐ गुरुवन्दना ॐ

ॐ ब्रह्मानन्दं परमसुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
 द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं, तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥१॥
 एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधी साक्षीभूतम् ।
 भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥२॥
 ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुदेवो महेश्वरः ।
 गुरुसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥३॥
 अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं ।
 तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥४॥
 अखण्डानन्दबोधाय शिष्य संताप हारिणे ।
 सच्चिदानन्दरूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥५॥
 अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
 चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥६॥
 न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
 न गुरोरधिकं ज्ञानं तस्मै श्री गुरवे नमः ॥७॥
 ध्यानमूलं गुरोमूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
 मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥८॥
 अज्ञान मूल हरणं जन्मकर्म निवारणम् ।
 ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं गुरोः पादोदकं पिबेत् ॥९॥
 वन्दे भगवतीं देवी श्री रामञ्च जगत् गुरुम् ।
 पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥१०॥
 मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
 नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा प्रज्ञायुता च या ॥११॥

❀❀❀ श्री गुरुपादुका पंचकम् ❀❀❀

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो ।

नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ॥

आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो ।

नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्यः ॥१॥

ऐंकार हींकार रहस्य युक्त ।

श्रींकार गूढार्थ महाविभूत्या ॥

ॐकार मर्म प्रतिपादिनीभ्याम् ।

नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥२॥

होत्राग्नि होत्राग्नि हविष्य होतृ ।

होमादि सर्वाकृति भासमानम् ॥

यद् ब्रह्म तद्बोध वितारिणीभ्याम् ।

नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् ॥३॥

कामादि सर्प व्रज गारुडाभ्याम् ।

विवेक वैराग्य निधि प्रदाभ्याम् ॥

बोध प्रदाभ्याम् द्रुतमोक्षादाभ्याम् ।

नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् ॥४॥

अनन्त संसार समुद्रतार ।

नौकायिताभ्याम् स्थिर भक्तिदाभ्याम् ॥

जाड्याब्धि संशोषण वाडवाभ्याम् ।

नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् ॥५॥

❖❖❖ ॥ दशविधि स्नानम् ॥ ❖❖❖

तीर्थस्नाने तथा प्रायश्चित्तादिषु केचन दशविधस्नानानि कुर्वन्ति
यथा:-

१-भस्मस्नानम्:- ॐ नमस्ते रुद्रमन्त्र्यव ऽ उतोत ऽ इषवेनमः ।
बाहुभ्यामुततेनमः ॥

यथा ऽ ग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादि सञ्चयम् ।

तथा मे दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम् ॥1॥

२-अथमृत्तिका-स्नानम्:- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपाथं सुरेस्वाहा ॥2॥

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।

शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे ॥

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।

मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥

मृत्तिके ब्रह्मपूता ऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता ।

मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥2॥

३-गोमयस्नानम्:- ॐ मानस्तोकेतनयेमान ऽ आयुषिमानो गोषुमानो ऽ
अश्वेषुरीरिषः ॥ मानो विरान्नुद्भ्रामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः
सदमित्त्वाहवामहे ॥

गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमङ्गला ।

स्नानार्थं संस्कृता देवी पापं मे हर गोमय ॥

अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने ।

तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ॥

यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमय ॥3॥

४-पंचगव्यस्नानम्:- ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

सभूमि ठं सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः समन्वितम् ।

सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम् ॥

५-गोरजःस्नानम्:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः

पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥

गवां क्षुरेण निर्द्धूतं यद्रेणु गगने गतम् ।

शिरसा तेन संलेपे महापातकनाशनम् ॥

६-धान्यस्नानम्:- ॐ धान्यमसिधिनुहि देवान्प्राणायत्त्वोदानायत्वा

व्यानायत्वा ॥ दीर्घामिनुप्रसितिमा युषेधान्देवोवः

सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण

पाणिनाचक्षुषेत्वामहीनाम्पयोसि ॥

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम् ।

तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु ॥

७-फलस्नानम्:- ॐ आः फलिनीर्थाऽ अफलाऽ

अपुष्पाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वथं

हसः॥

वनस्पतिरसो दिव्यः फलपुष्पवृतः सदा ।

तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनंतकम् ॥

८-सर्वौषधिस्नानम्:- ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेनसहराज्ञा ।

अस्मैकृणोतिब्राह्मणस्त थं राजत्पारयामसि ॥

औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः ।

दूर्वा सर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम् ॥

९-कुशोदकस्नानम्:- ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवे

शिवनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः ।

कुशाग्रे शङ्करो देवस्तेन नश्यतु पातकम् ॥

१०-हिरण्यस्नानम्:- ॐ आकृष्णणे नरजसाव्वर्त्तमानो
निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति
भुवनानिपश्यन् ॥

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।

अनन्त पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

॥ अथ जलयात्रा विधानम् ॥

संकल्पः-अत्राद्य. जलयात्राङ्गभूत श्री वरुणदेवता प्रीत्यर्थं गणेश
जलमातृ -जीवमातृ -स्थलमातृ-सप्तसागर योगिनी
क्षेत्रपाल-जलपूजन भूमिपूजन पूर्वकं नववर्द्धनी कलशेषु वरुण
पूजनं करिष्ये ॥

(थाली या लालवस्त्र पर गणपति का पूजन करें)

गणपति-ध्यानम्:- ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां
त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे
वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥
गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

आंसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥
हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि
॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं समर्पयामि
॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतं
समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं समर्पयामि
॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान् समर्पयामि
॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥ सुगंधितैलं
समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यं निवेदयामि
॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं समर्पयामि ॥ ताम्बूलं
समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥ श्रीफलं समर्पयामि ॥

✠ ॥ जलादिमातृकापूजनम् ॥ ✠

(थाली में ऋद्धुम से या वस्त्र पर अक्षत से सप्त पुंजबना पर पूजन करे)

ध्यानम्:- ॐ मत्सी कूर्मी वाराही च मांडूकी मकरी तथा ।

ग्राहकी क्रौचकी चैव सप्तैता जलमातृकाः ॥

१- ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२- ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३- ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४- ॐ भूर्भुवः स्वः मांडूक्यै नमः मांडूकीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५- ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

६- ॐ भूर्भुवः स्वः ग्राहक्यै नमः ग्राहकीमावाहयामि स्थापयामि ॥

७- ॐ भूर्भुवः स्वः क्रौचिक्यै नमः क्रौचिकीमावाहयामि स्थापयामि ॥

सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥ ॐ मत्स्यादि

जलदेवताभ्यो नमः ॥

✠ ॥ सप्त जीवमातृका पूजनम् ॥ ✠

ध्यानम्:- ॐ कुमारी धनदा नंदा विमला मंगलाऽचला ।

पद्मा चेति सुविख्याताः सप्तैता जीवमातृकाः ॥

१- ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२- ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि ॥

३- ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि ॥

४- ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि ॥

५- ॐ भूर्भुवः स्वः मंगलायै नमः मंगलामावाहयामि स्थापयामि ॥

६- ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः अचलामावाहयामि स्थापयामि ॥

७- ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि ॥

सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥ ॐ जीवमातृकाभ्यो

नमः ॥

ॐ ॥ अथ सप्त स्थलमातृका पूजनम् ॥ ॐ

ध्यानम्:—ऊर्मी लक्ष्मीर्महामाया पानादेवी तथैव च ।

वारुणी निर्मला गोधा सप्तैताः स्थलमातृकाः ॥

१-ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्यै नमः ऊर्मिमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि ॥

४-ॐ भूर्भुवः स्वः पानादेव्यै नमः पानादेवीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः वारुणीमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि ॥

७-ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि ॥

सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ स्थलमातृकाभ्यो नमः ॥

ॐ ॥ योगिनी पूजनम् ॥ ॐ

ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यादिचतुः षष्टि योगिनीभ्यो नमः ॥

सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ ॥ अथ क्षेत्रपाल पूजनम् ॥ ॐ

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्यनाभिरसि मा त्वाहि ॐ सीन्मामाहि ॐ

सीः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालमावाहयामि

स्थापयामि ॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

बलिदानम्:—(दीपक, उड़द, दही, नमकीन (मंगोडी) से बलि देवे)

क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रम । बलिं गृहाण देवेश

क्षेत्ररक्षण हेतवे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः ॥ सदीप-दधिमाषभक्तबलिं

समर्पयामि ॥

ॐ अथ सप्तसागराणान् पूजनम् । ॐ

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः ॥ पुष्करादि तीर्थेभ्यो नमः
॥ इति मंत्रेण आवाहनम् ॥ जले वरुण पूजनम् ॥

ॐ तत्त्वाशामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः
। अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशथं स मान 5 आयुः प्रमोषीः ॥
सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥ (जल में पेडे की
बलि प्रदान करे, जल में पञ्चामृत प्रोक्षण करें, और स्नुवे से
घृत की द्वादश आहुती देवें)

(जले स्नुवेण द्वादशघृताहुतीर्जुह्यात्)

ॐ अद्भ्यः स्वाहा । इदं अद्भ्यो न मम ॥१॥

ॐ वाभ्यः स्वाहा । इदं वाभ्यो न मम ॥२॥

ॐ उदकाय स्वाहा । इदं उदकाय न मम ॥३॥

ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा । इदं तिष्ठन्तीभ्यः न मम ॥४॥

ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । इदं स्रवन्तीभ्यो न मम ॥५॥

ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा । इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम ॥६॥

ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा । इदं कूप्याभ्यः न मम ॥७॥

ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा । इदं सूद्याभ्यः न मम ॥८॥

ॐ धार्याभ्यः स्वाहा । इदं धार्याभ्यः न मम ॥९॥

ॐ अर्णवाय स्वाहा । इदं अर्णवाय न मम ॥१०॥

ॐ समुद्राय स्वाहा । इदं समुद्राय न मम ॥११॥

ॐ सरिद्धभ्यः स्वाहा । इदं सरिद्धभ्यः न मम ॥१२॥

ॐ नव कलशो मे जल भरेः- ॐ

१-मध्य कलशो :- ॐ समुद्र ज्योष्ठाः सलिलस्थ
मध्यात्पुनानायन्त्यनिविशमानाः । इन्द्रो या वज्रो वृषभोररादाता
आपो देवीरिह मामवन्तु ॥

२-पूर्वकलशः-ॐ षा आपो दिव्या उतवास्रवन्ति खनित्रिमा
उतवायाः स्वयंजाः । समुद्रार्थायाः शुचयः पावकास्ता आपो
देवीरिह मामवन्तु ॥

३-आग्नेयकलशः-या सा राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानुते
अवपश्यञ्जनाना । मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो
देवीरिह मामवन्तु ॥

४-दक्षिणकलशः-ॐ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा
यासूर्जं मदन्ति । वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह
मामवन्तु ॥

५-नैऋत्यकलशः-समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देव
र्ष सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ
स्वाहा छन्दाश्च सि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं
गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं
गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दिं यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः
पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥

६-पश्चिमकलशः-ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिताय
त्वा वाताय स्वाहा । अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय
त्वा वाताय स्वाहा ॥

७-वायव्यकलशः-ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि
मा वाहि स्वाहा । मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्मयो भूरभि
मा वाहि स्वाहा । अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयो भूरभि मा
वाहि स्वाहा ॥

८-उत्तरकलशः-ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ।
त्वा मवस्युरा चके ॥

९-ईशानकलशः-ॐ वरुणस्योत्तं भनमसि व्वरुणस्यस्कं
भसर्जनीस्थो व्वरुणस्यऋत सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि
व्वरुणस्य ऋत सदनमासीद ॥

❀ सब कलशों में धान्यादि प्रक्षेपः-❀

१-धान्य प्रक्षेपः-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामिनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥

२-गन्ध प्रक्षेपः-ॐ त्वां गन्धर्वाऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत ॥

३-कलशं सूत्रवेष्टनम्:-ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म व्वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्रे विश्वरूपथं संव्ययस्व विभावसो॥

४-सर्वोषधी प्रक्षेपः- ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नु बभ्रूणामह थं शतं धामानि सप्त च ॥

५-दूर्वाप्रक्षेपः-ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥

६-कलशे कुशा प्रक्षेपः-ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्षस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

७-सप्त मृत्तिकाप्रक्षेपः-स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

८-पूगीफलम् प्रक्षेपः-ॐ याः फलिनीर्वाऽअफलाऽ अपुष्पावाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वदं हंसः ॥

९-पंचरत्नानि प्रक्षेपः- परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

१०-दक्षिण प्रक्षेपः-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

११-पंचपल्लवान् प्रक्षेपः-ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णेवो व्वसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ॥

१२-तण्डुल पूर्णपात्रम् निधाय:- ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ व्वस्ने व्विक्रीणा वहाऽइषमूर्ज ठं शतक्रतो ॥

१३-श्रीफल:- ॐ श्रीश्वते लक्ष्मीश्वपत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ ऽव्याप्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्वस्य बृहस्पतिर्ष्वज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ॐ म्प्रतिष्ठ ॥ इति मंत्रेण प्रतिष्ठा कार्या ॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशथं स मान ऽ आयुः प्रमोषीः ॥ सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

(यात्रा के बीच में चौराहे पर भैरव पूजन व बलि दान करें)

ॐ ॥ अथ क्षेत्रपाल पूजनम् ॥ ॐ

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्यनाभिरसि मा त्वाहि थं सीन्मा माहिथं सीः ॥१॥

करकलित कपाल कुंडली दण्डपाणिस्त रुणतिमिरनीलो व्याल यज्ञोपवीती । ऋतुसमय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धदः साधकानाम् ॥ आवाहयामि स्थापयामि ॥

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

बलिदानम्:- (दीपक, उड़द, दही, नमकीन से बलि देवें)

क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रम । बलिं गृहाण देवेश क्षेत्ररक्षण हेतवे ॥

भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः ॥ सदीप-दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥

(मंडप में पश्चिम द्वार से प्रवेश करे व द्वार पर गंगा जी की आरती करे)

❀ ॥ ग्रहशान्ति पद्धति ॥ ❀

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ यजुर्वेदोक्त ग्रहयज्ञ पद्धतिर्लिख्यते ॥ यजमानः कृताभ्यङ्गादि
स्वलंकृतोदर्भपाणिः शुचिर्भूत्वा मंगल संभारान् संभृत्य स्वलंकृते
गृहे गोमयेनोलिप्त भूमौ सोत्तरच्छदे भद्रासने प्राङ्मुखो
दङ्मुखोपविश्य स्वदक्षिणपार्श्वे पत्नीं तद्दक्षिणपार्श्वे संस्कार्य
चोपवेश्य ॥

सुमुहूर्तं सुलग्नं क्षेमं कल्याणं आरोग्यं शुभं भवतु ॥

शरीर-मार्जनम्:- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाविस्थांगतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ
पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥

पवित्री धारणम्:- ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते
पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

त्रिराचम्यः:- ॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ
गोविन्दाय नमः ॥ हृषीकेशायनमः हस्तौ प्रक्षालयेत् ॥

आचम्य-प्राणानायम्यः:- मूलमंत्रेण गायत्रीमंत्रेण वा
पूरककुम्भकरेचक क्रमेण त्रिवारं कुर्यात् ॥

रक्षादीप-प्रज्वालनः:- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा
सूर्व्योर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्व्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः
स्वाहा सूर्व्योर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्व्यः
सूर्व्योर्ज्योतिः स्वाहा ॥ दीपकं प्रज्वाल्य हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

शिखाबन्धनम्:- ॐ मानस्तोके तनये मानोऽ आयुषि मानो
गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः । मानो वीरान्नुद्र भामिनो
व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

ललाटे तिलकं कुर्यात्:- ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः
पूषाविश्ववेदाः । स्वस्तिनस्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो
बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजमानपत्न्यै तिलकं दद्यात्:- ॐ श्रीश्वते लक्ष्मीश्वपत्क्या
बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ ऽव्यात्तम् । इष्णन्निषाणा
मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥

लोकाचारात् ग्रन्थीबन्धनम्:- ॐ यदाबध्न्दाक्षायणा हिरण्यं
शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान्
जरदष्टिर्यथासम् ॥ मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः
। मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनो हरिः ॥

भूमिपूजनम्:- ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा
नः शर्म सप्रथाः ॥ ॐ कर्म भूम्यै नमः ॥ सर्वोपचारार्थं
गन्धाक्षत्पुष्पाणि समर्पयामि ॥

आसनशुद्धिः-पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो
देवता आसन पवित्रकरणे विनियोगः ॥

ॐ पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च
धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ॥ ॐ कूर्मासनाय नमः ॥
ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ ॐ योगासनाय
नमः ॥ ॐ मध्ये परमसुखासनाय नमः ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥

ॐ ॥ गणपति स्मरणम् ॥ ॐ

ॐ उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निज हस्त पद्मैः,

पाशांकुशाऽभयवरान्दधतं गजास्यम् ।

रक्ताम्बरं सकलविघ्नहरं गणेशं,

ध्यायेत् प्रसन्नमखिला भरणाभिरामम् ॥१॥

सजयति सिन्धुर-वदनो देवो यत्पाद पंकज-स्मरणम् ।

वासर मणिरिव तमसां राशीन्नाशयतु विघ्नानाम् ॥२॥

अविरल मदझर निवहं भ्रमरकुलानीक सेवितकपोलम् ।

अभिमत फलदातारं कामेशं गणपतिं वन्दे ॥३॥

किंकिणिमणि-गण-रंजित-चरण,

प्रकटित गुरुमति भवभय हरण ।

मदझर-लहरी-गलित-कपोल शमयति दुरितं गणपतिर्नाम् ॥४॥

सम्पूजकानां परिपालकानां जितेन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।

देशे च राष्ट्रे च कुले च राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् गणेशः ॥५॥

ॐ॥ भद्रसूक्तम् ॥ॐ

शान्तिपाठं-कुर्यात्:-हरिः ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु

व्विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः । देवानो यथा

सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥ देवानाम्भद्रा

सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाथं रातिरभिनो निवर्तताम् । देवानाथं सकख्य

मुपसेदिमा व्वयन्देवा नऽआयुः प्प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥ तान्पूर्व्या

निविदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दकक्षमस्त्रिधम् । अर्ष्यमणं

वरुणथं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥ तन्नो

व्वातो मयोभुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः । तद्ग्रावाणः

सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्यया युवम् ॥४॥ तमीशान

ञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषानो यथा

व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥ स्वस्ति नऽ

इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्षर्यो

अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वामरुतः

पृश्निमातरः शुभँयावानो व्विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वामनवः

सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ॥७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम

देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्घजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाथं

सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥८॥ ॐ शतमिन्नुशरदो अन्ति

देवा यत्रा नश्वक्रा जरसन्तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति

मानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिर्न्तरिक्षमदितिर्माता

स पिता स पुत्रः । विश्वे देवाऽअदितिः पञ्च जनाऽ

अदितिर्जातिमदितिर्जनित्वम् ॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
 पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः
 शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव
 शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥ दृते दृथं ह मा मित्रस्य मा
 चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि
 भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चुक्षुषा समीक्षामहे ॥१२॥ दृते दृथं ह
 मा ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासन्ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥१३॥
 नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे । अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु
 हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ॥१४॥ नमस्ते अस्तु विद्युते
 नमस्ते स्तनयित्कनवे । नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे
 ॥१५॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयङ्कुरु । शत्रुः
 कुरुप्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥१६॥ विश्वानि देव सवितर्द्विरितानि
 परासुव । यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥१७॥

हरिः ॐ आशुः शिशानो० ॥ सङ्क्रन्दनेना० ॥ सइऽषुहस्तैः० ॥
 बृहस्पते परि० ॥ बलविज्ञाय० ॥ गोत्रभिदं० ॥ अभिगोत्रा० ॥
 इन्द्रऽआसान्ने० ॥ इन्द्रस्य० ॥ उद्धर्षय मघ० ॥ अस्माकमिन्द्रःस०
 ॥ अमीषाञ्चि० ॥ अवस्त्रष्टाप० ॥ विश्वानिदेवसवितर्द्विरितानि परासुव
 ॥ यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी
 शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
 शान्तिर्ब्रह्मशांतिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि॥
 विनियोग :- तच्छ्रियोरावृणीति मन्त्रस्य विश्वेदेवा ऋषयः
 शक्करीच्छन्दः शान्तिर्देवता शान्तिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥
 ॐ तच्छ्रिन्योरा वृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये
 दैवीस्वस्तिरस्तुनः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ऊर्द्ध्वजिगातु भैषजं शत्रोऽस्तु
 द्विपदे शं चतुष्पदे । ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु ॥

गुरुपूजनम्:- ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
 गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ ॥ श्री गणेश वन्दना ॥ ॐ

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥२॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥३॥
विद्यारम्भेविवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥४॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥५॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥६॥
सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥७॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनो हरिः ॥८॥
तदेवलग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥९॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥१०॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिमतिर्मम ॥११॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥
आपदामपहतरिं दातारं सुखसम्पदाम् ।

लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥१२॥
 विश्वेशं माधवं दुण्डिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
 वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणि कर्णिकाम् ॥१३॥
 विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
 सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थं सिद्धये ॥१४॥
 वक्र तुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ ।
 निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥१५॥
 श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ॥
 श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ॥ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ॥
 शचीपुन्दराभ्यां नमः ॥ मातापितृचरणकमलेभ्योनमः ।
 इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ कुलदेवताभ्यो नमः ॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः
 ॥ स्थान देवताभ्योनमः ॥ एतत्कर्मप्रधान देवताभ्यो नमः ॥ गुरु
 चरणकमलेभ्यो नमः ॥ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॥ सर्वेभ्योदेवेभ्यो
 नमः ॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ निर्विघ्नमस्तु ॥

हस्ते साक्षत जलं गृहीत्वा सङ्कल्पं पठेत् :-

ॐ नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया
 प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोद्वितीयपराद्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे
 सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे
 भारतवर्षे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्री
 गोदावर्याः पश्चिमदिग्भागे श्रीमल्लवणाब्धेरुत्तरेतीरे अमुके
 अस्मिन्वर्तमाने अमुकनामसंवत्सरे अमुक श्रीशालिवाहनशके
 अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ
 अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते
 श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं
 राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ
 अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्मा-गुप्ता-वर्माऽहं ममात्मनः
 श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं

अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थं
 सकलमनईप्सित- कामनासंसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राज्यद्वारे
 वा सर्वत्र यशो विजयलाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे
 वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य संपुत्रस्य सबान्धवस्य
 अखिल कुटुम्ब सहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधि
 जरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं मम
 जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टमद्वादशस्था
 नस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूच्ययिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं
 तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं
 पुत्रपौत्रादिसन्तते रविच्छिन्नवृद्ध्यर्थं आदित्यादि
 नवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं इन्द्रादि दशदिक्पाल प्रसन्नता सिद्ध्यर्थं
 आधिदैविकाऽऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थं
 धर्मार्थकाममोक्षफलवाप्यर्थं अमुककर्म प्रारम्भनिमित्तं गौर्यादि
 षोडशमातृणां वसोद्धारासहितानां आभ्युदयिक नांदीश्राद्ध, ब्राह्मण
 वरण, पुण्याहवाचनपूर्वकं (वास्तुपूजन,) अग्निस्थापनं, ग्रहस्थापन,
 रुद्रकलश सहितं (योगिनी श्रेत्रपालमण्डलस्थदेवतानां) प्रधानपूजनं
 आवाहनं स्थापनं प्रतिष्ठा पूजनं हवनञ्च करिष्ये ॥

तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं शङ्खघण्टार्चनं च करिष्ये ॥ तद्यथा ॥

वामहस्ते गौरसर्षपान्गृहीत्वाः-

(हाथ में पीली सरसों या चावल लेकर अभिमन्त्रित कर चारों
 दिशाओं में छोड़े)

ॐ रक्षोहणं व्वलगहनं वैष्णवीमिदमहंतं व्वलगमुत्किरामि यम्मे
 निष्टयो यममात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि
 यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि
 यम्मे सबन्धुर्धर्मसबन्धुर्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि
 यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥१॥ रक्षोहणो वो
 व्वलगहनः प्रोक्षामि व्वैष्णवान्त्रक्षोहणो वो व्वलगहनो वनयामि

व्वैष्णवान्त्रक्षोहणोवो व्वलगहनोवस्तृणामि व्वैष्णवान्त्रक्षोहणौ
 वां व्वलगहनाऽ उपदधामि व्वैष्णवीरक्षोहणौ वां व्वलगहनौ
 पर्व्वूहामि व्वैष्णवी व्वैष्णवमसि व्वैष्णवास्थ ॥२॥ रक्षसां
 भागोसिनिरस्तथं रक्षऽइदमहथं रक्षोभितिष्ठामीदमहथं रक्षोव
 बाधऽइदमहथं रक्षोधमन्तमो नयामि ॥ घृतेनद्द्यावापृथिवी
 प्पोर्णुवाथां व्वायो व्वे स्तोकाणामगिग्राज्ज्यस्य व्वेतुस्वाहा
 स्वाहाकृतेऽ ऊर्ध्वनभसम्मरुतङ्गच्छतम् ॥३॥ रक्षोहा
 विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते । द्रोणेसधस्थमासदत् ॥४॥

पूर्वे रक्षतु गोविन्दः आग्नेयां गरुडध्वजः ।

याम्ये रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋते ॥१॥

केशवो वारुणीं रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ।

उत्तरं श्रीधरो रक्षेदीशाने च गदाधरः ॥२॥

ऊर्ध्वं गोवर्धनोरक्षेद्धरायां च त्रिविक्रमः ।

एवं दशदिशोरक्षे द्वासुदेव जनार्दनः ॥३॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥४॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।

सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥५॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।

स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥६॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ।

स्थानादस्माद् ब्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम् ॥७॥

भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन ।

ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥८॥

एतैर्मन्त्रैः सर्वदिक्षु विकिरेत् ॥

वामपादेन भूमिं त्रिवारं ताडयेत् ॥ हुं फट् इति (मनसा स्मरेत्)

भैरवध्यानम्:- तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकायकल्पान्त दहनोपम । भैरवाय
नमस्तुभ्यं अनुज्ञांदातु मर्हसि ॥

ॐ यो भूताना मधिपतिर्यस्मिँल्लोकाऽ अधिश्रिताः यऽईशो महतो
महाँस्तेन गृह्णामि मयि गृह्णामि त्वामहम् ॥

हनुमतः ध्यानम्:- अतुलित बलधामं हेम शैलाभदेहं, दनुजवन
कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् । सकल गुण निधानं
वानराणामधीशं, रघुपति प्रिय भक्तं वातजातं नमामि ॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः
शशं सतेस्तु वते धायि पद्म इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ २॥ अवन्तु देवाः ॥
(उदकस्पर्शः ॥ ततः स्ववामभागे पूजार्थजलपूरितकलशार्चनम्)

तत्र वरुणावाहनम्:-

तत्त्वायामीत्यस्य शुनः शेष ऋषिः त्रिष्टुच्छन्दः वरुणो देवता
वरुणावाहने विनियोगः ॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः
अहेडमानो व्वरुणे हबोध्युरुशशं समानऽआयुः प्रमोषीः ॥

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं
वरुणं यादसां पतिम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन्कलशे वरुणं
साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि ॥

प्रतिष्ठापनम्:-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञशंसमिमं दधातु । विश्वे देवासऽ इह मादन्तामोँ ३॥ म्प्रतिष्ठ
॥ ॐ वरुणाय नमः । वरुण सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥

सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

ततः अनामिकया कलशं स्पृष्ट्वा अभिमन्त्रयेत्:-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो अथर्वणः ॥
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
 अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
 आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ।
 गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥
 नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।
 ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥
 तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

ततो पूजनम्:-

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः ॥ दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः । । पश्चिमे सामवेदाय
 नमः ॥ उत्तरे अथर्ववेदाय नमः ॥ कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय
 नमः ॥ इति वरुणं सम्पूज्य “गायत्र्यादिभ्यो नमः”
 सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि
 कलशं प्रार्थयेत्:- देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
 उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
 त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
 त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
 शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
 आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
 त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
 त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ॥
 सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
 अङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलात् सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य । वं इति
 धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य हुं इति कवचेनावगुण्ठय
 मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य वं इति मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य
 तस्मादुदकादुदकं गृहीत्वा पूजाद्रव्याणि सम्प्रोक्षयेत् । तां च

भूमिं सम्प्रोक्षयेत्। पुनः स्वल्पोदकमादाय स्वात्मानं स्वशिरश्च
संप्रोक्षयेत् ॥

तत्रमन्त्रः-अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाविस्थां गतोऽपि वा । यः
स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन ॥ महेरणाय चक्षसे
॥ वो वः- शिवतमो रसस्तस्यभाजयते हनः॥ उशती रिवमातरः॥
तस्माऽअरङ्गमा मवोयस्यक्षया यजिन्वथ ॥ आपो जनयथाचनः
॥ पश्चात्कलश (कुम्भ) मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

१-अथ-दीपपूजनम्:-ईशानभागे घृतदीपं प्रज्वाल्य अक्षतपुंजोपरि
निर्वातस्थले निधाय ॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः
स्वाहा । अग्निर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः
स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्योर्ज्योतिः स्वाहा ॥ भूर्भुवः स्वः
दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि । सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि नमस्करोमि ॥

प्रार्थयेत्- भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यावत्तावदत्र स्थिरो भव ॥
अनेन पूजनेन दीपदेवता प्रीयताम् ॥

२-घण्टापूजनम्:- ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं
चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्मा छन्दा ः स्यङ्गानि यजूंषि
नाम । साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धष्ण्याः शफाः
। सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम् । घण्टानादं प्रकुर्वीत
पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय
नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि
नमस्करोमि । गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

७) पूजा -> आनन्द - तद्वर्जका ज (२) वासना - सुवर्ण - जलपान

८) पश्चिम - गजवक्र - गोमर्दि (४) उत्तर - सुयोग्य - शुभदायक

श्री द्विजकर्म नन्दिनी

गणेशविधिदाः

गणपति पूजनम्

३-शङ्ख पूजनम्:- शङ्खे जलपूरणम् । शङ्खं चन्द्रार्कदेवत्यं वरुणं चाधिदैवतम् । पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया । शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः तमीमहे महागयम् ॥ उपया मगृहीतोस्यग्रयेत्वा वर्चसऽएषते योनिरग्रयेत्वा वर्चसे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥

प्रार्थयेत्- त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे । नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ॥ शङ्खमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

ॐ ॥ गणपति-पूजनम् ॥

कलशापूजनम् (५)

मृण्मय पीठेपट्टे वा रक्त वस्त्रोपरि अरुणाक्षतैर्गोधूमैः अष्टदलं स्वस्तिकं वा कृत्वा गणपतिं पूजयेत् ॥

ॐ मण्डूकादि पीठ देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

नवशक्तयः- ॐ तीव्रायै नमः । ॐ ज्वालिन्यै नमः । ॐ नन्दायै नमः ।

ॐ मोदायै नमः । ॐ कामरूपिण्यै नमः । ॐ उग्रायै नमः ।

ॐ तेजोवत्यै नमः । ॐ सत्यायै नमः । ॐ विधनाशिन्यै नमः ।

सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

गणपतिध्यानम्:- ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥१॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमोनमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमोनमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमोनमः ॥२॥

श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः, क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम् । दोर्भिः पाशाङ्कुशाब्जाभयवरदधतं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम्, ध्याये शान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥३॥ ॐ गजास्य गणनाथत्वं सर्वविघ्न विनाशन ॥ लम्बोदर त्रिनयन आगच्छ गणनायक ॥४॥

अम्बिकाध्यानम्:- ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयतिकश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यानान्ते अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

आसनम्:- ॐ पुरुषऽ एवेदथं सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम् । उतामृतत्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति ॥ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् । आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

पाद्यम्:- ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्य संयुतम् ॥ पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्यम् जलं समर्पयामि ॥

अर्घ्यम् :- ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥१॥ ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुब्पङ्कत्या सह । बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्वा ॥२॥ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम् । ताम्रपात्रस्थितं चैव फलतोय समन्वितम् ॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमनम्:- ॐ ततो विराडजायत व्विराजो अधि पूरुषः । सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥१॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्

॥२॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा
चके ॥३॥ सर्व तीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् । आचम्यतां
मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः आचमनीयं समर्पयामि ॥

स्नानम्:- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्जम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्चक्रे ॥१॥
ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्यस्कं भसर्जनीस्थो व्वरुणस्यऋत
सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋत सदनमासीद ॥२॥
गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदाजलैः । स्नापितोऽसि मया
देव ह्यतः शान्तिं कुरुष्व मे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः स्नानं समर्पयामि ॥

पयस्नानम्:- ॐ पयः पृथिव्यां पयओषधीषु पयोदिव्यंतरिक्षेपयोधाः
। पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यम् ॥ ॐ पयसो रूपं यद्यवा
दध्नोरूपंकर्कन्धूनि । सोमस्य रूपंवाजिनं सौम्यस्यरूपमामिक्षा
॥ काम धेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च
पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः पयः स्नानं समर्पयामि ॥ पयः स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

दधिस्नानम्:- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः
। सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयू ङं षितारिषत् ॥ पयसस्तु समुद्धृतं
मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानम्
समर्पयामि ॥ दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

घृतस्नानम्:- ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसा पावानः
पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश
ऽ उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥१॥ ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य बोनिघृते

श्रितो घृतम्बस्य धाम । अनुष्वधमावह मादवस्य स्वाहाकृतं
वृषभ वक्षि हव्यम् ॥२॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
समर्पयामि ॥

मधुस्नानम्:- ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः
सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव थं रजः । मधु
द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँर ॥ अस्तु सूर्यः
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥१॥ ॐ स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्वदिवः
सथं स्पृशस्पाहि । मधु मधु मधु ॥२॥ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु
मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । मधुस्नानं समर्पयामि
॥ मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते
आचमनीयं समर्पयामि ॥

शर्करास्नानम्:- ॐ अपाथं रसमुद्वय सथं सूर्बेसंत थं समाहितम्
॥ अपाथं रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्रा
यत्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

विनियोगः:- स्वादुः पवस्वेतिवेनो भार्गवः पवमानः सोमोजगतीछन्द
शर्करास्नाने विनियोगः ॥

शर्करामंत्रः:- ॐ स्वादुः पवस्वदिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय
सुहवीतुनाम्ने स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवेबृहस्पतेये मधुमां अदाम्या ॥
इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारका । मलापहारिका दिव्या
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ॥ शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं
समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

एकतन्त्रेण पञ्चामृतस्नानम्:- ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपिषंति
सस्रोतसः । सरस्वतीतु पंचधासो देशे भवत्सरित् ॥ पयो दधि
घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः
पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं
समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

गन्धोदकस्नानम्:- ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु
विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥१॥ ॐ
अथं शुनाते अथं शुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतु
मदाय रसो अच्युतः ॥२॥ मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् ।
चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

शुद्धोदकस्नानम्:- ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणि
बालस्तऽआश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णाश्यामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ सर्वोपचारार्थं
गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

अभिषेकं कुर्यात्:- गणपत्यथर्वशीर्षम्:-

ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं
कर्त्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि ।
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि । त्वमेव साक्षादात्मासि नित्यम् ।
ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अव त्वं माम् । अव वक्तारम् ।
अव श्रोतारं । अव दातारम् । अव धातारम् । अवानूचानमव
शिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् । अवोत्तरात्तात् ।
अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् अवाधरात्तात् । सर्वतो
मां पाहि पाहि समन्तात् । त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः ।

त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥ त्वं गुणत्रयातीतः । त्वमवस्थात्रयातीतः । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितम् । तारेणरुद्धम् । एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् । बिन्दुत्तररूपम् । नादः सन्धानम् । सथं हिता सन्धिः । सैषा गणेशविद्या । गणक ऋषिः । निचृद्गायत्रीछन्दः । गणपतिर्देवता ॥ ॐ गं गणपतये नमः । एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् । रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम् ॥ रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥ भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः ॥ (अभिषेकं समर्पयामि) ॥ (फलश्रुतिः-) एतदथर्वशीर्षं योऽधीते । स ब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते । स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायम्प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो

भवति । सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति । धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति ॥ इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् । यो यदि मोहाद्दास्यति । स पापीयान्भवति ॥ सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते । तं तमनेन साधयेत् ॥ अनेन गणपतिमभिषिञ्चति । स वाग्मी भवति ॥ चतुर्थ्यामिनश्नञ्जपति । स विद्यावान्भवति ॥ इत्यथर्वणवाक्यम् ॥ ब्रह्माद्यावरणं विद्याभि बिभेति कदाचनेति ॥ यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति । स वैश्रवणोपमो भवति ॥ यो लाजैर्यजति । स यशोवान् भवति । स मेधावान् भवति ॥ यो मोदकसहस्रेण यजति । स वाञ्छितफलमवाप्नोति ॥ यः साज्यसमिद्धिर्यजति । स सर्वं लभते स सर्वं लभते ॥ अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्य वर्चस्वी भवति ॥ सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति ॥ महाविघ्नात्प्रमुच्यते । महादोषात्प्रमुच्यते । महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते ॥ स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति । य एवं वेद ॥ इत्युपनिषत् ॥

पुनः शुद्धोदक स्नानम्:- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि बालस्तऽआश्विनाःश्वेतः श्वेता क्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णाम्बामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

वस्त्रम्:- ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म व्वरूथमासदत्स्वः । वासो अग्रे विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो ॥१॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाश्चंसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मा दजायत ॥२॥ ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥३॥ सर्व भूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ रक्तवस्त्रद्वयं देव राजराजादिपूजित । भक्त्या दत्तं गृहाणेदं भगवन् हरनन्दन

॥५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । वस्त्रोपवस्त्रं
समर्पयामि । तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतः- ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽ
आवः । स बुध्या ऽ उपमाऽ अस्य विष्टाः सतश्च षोनि-
मसतश्च व्विवः ॥१॥ ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के
चोभयादतः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः ॥२॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम् । उपवीतं चोत्तरीयम्
गृहाण परमेश्वर ॥३॥ राजतं ब्रह्मसूत्रं च कांचनं चोत्तरीयकम्
। गृहाण देव सर्वज्ञ गीर्वाणसुरपूजित ॥४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । तदन्ते
आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुपर्कः- ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः
सन्त्वोषधीः ॥१॥

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमं ठं रूपमन्नाद्यम् । तेनाऽहं मधुनो
मधव्येन परमेण रूपमन्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥२॥
कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमवाज्यसंयुतः । मधुपर्को
मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । मधुपर्कम् समर्पयामि । आचमनीयं
जलं समर्पयामि ॥

चन्दनम्- ॐ त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः
। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत ॥१॥

ॐ तँस्यज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः । तेन देवाऽ अयजन्त
साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥२॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां
करीषिणीम् । ईश्वरीम् सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥३॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ
चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ गन्धं विलेपयामि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । गन्धं (चन्दनं)

समर्पयामि।

रक्त चन्दनः—नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु । ईशो रिपुरघशार्ठं
सः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । रक्त चन्दनं
समर्पयामि ।

कुङ्कुमः—ॐ इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय कर्णाभ्याथं श्रोत्रममृतं
ग्रहाभ्याम् । यवा न बर्हिर्भ्रुवि केसराणि कर्कन्धु जज्ञे मधु सारघं
मुखात् ॥

कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम् । अखण्डकामसौभाग्यं
कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः । कुङ्कुमं समर्पयामि ।

सिन्दूरः—ॐ सिन्धूरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति
यद्वाः । घृतस्य धारा अरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नुर्मिभिः
पिन्वमानः ॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम् । शुभदं कामदं चैव
सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः । सिन्दूरं समर्पयामि ॥

अक्षतान्—ॐ अक्षत्रमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत । अस्तोषतस्व
भानवो विप्रान विष्ट्या मती योजान्निन्द्रते हरिः ॥१॥ अक्षताश्च
सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या
गृहाण परमेश्वर ॥२॥ अक्षतान् धवलान् दिव्यान्
शालीयांस्तण्डुलान् शुभान् । हरिद्रा चूर्णं संयुक्तान् सुगृहाण
गणाधिप ॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ।
अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पम्—ॐ सवित्तात्त्वा सवानाथं सुवता मग्निर्गृहपतीनाथं
सोमोवनस्पतीनाम् । बृहस्पतिवर्चिऽ इन्द्रोज्ज्वेष्ट्यायरुद्रः
पशुभ्योमित्रः सत्यो वरुणो धर्म पतीनाम् ॥

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्व्वाऽ
इवसजित्वरीर्वीरूधः पारयिष्णवः ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि
गृहाण परमेश्वर ॥ पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः ।
संपूजयामि त्वां देव पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बिल्वपत्रः-ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च
वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय
च ॥ ॐ शिवोभवप्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः ॥ माद्यावा
पृथिवी अभिशोचीम्मन्तरिक्षम्मा वनस्पतीन् ॥

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैस्त्वां पूजयामि गजानन । अच्छिद्रैः कोमलैर्नित्यं
गृहाण गणनायक ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः । बिल्वपत्रं समर्पयामि ।

(गणपति जी को इक्कीस दूर्वाएँ चढायें)

दूर्वाः-ॐ गणाधिपाय नमः दूर्वायुगं समर्पयामि ॥ (१) ॐ उमापुत्राय
नमः दूर्वायुगं समर्पयामि ॥ (२) ॐ अघनाशनाय नमः दूर्वायुगं
समर्पयामि ॥ (३) ॐ विनायकाय नमः दूर्वायुगं समर्पयामि ॥
(४) ॐ ईशपुत्राय नमः दूर्वायुगं समर्पयामि ॥ (५)
ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः दूर्वायुगं समर्पयामि ॥ (६) ॐ एकदन्ताय
नमः दूर्वायुगं समर्पयामि ॥ (७) ॐ इभवक्त्राय नमः दूर्वायुगं
समर्पयामि ॥ (८) ॐ मूषकवाहनाय नमः दूर्वायुगं समर्पयामि
॥ (९) ॐ कुमारगुरवे नमः दूर्वायुगं समर्पयामि ॥ (१०)

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे
प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः । दूर्वामिकां (दूर्वाकुराणि) समर्पयामि । (११)

आभूषणः-ॐ पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभराग्निं
पुरीष्यमङ्गिरस्वदच्छेमोऽग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वद्भरिष्यामः ॥

रत्नकङ्कणवैदूर्य मुक्ताहारादिकानि च । सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि
स्वीकुरुष्व भो ॥ वज्रमाणिक्य वैदूर्य मुक्ताविद्रुममण्डितम्
। पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । आभूषणं समर्पयामि ॥

शमीपत्राणिः— ॐ अग्रेस्तनूरसि वाचो विसर्जनन्देववीतये त्वा
गृह्णामि बृहद्ग्रावासि वानस्पत्यः सऽइदन्देवेभ्यो हविः शमीष्व
सुशामि शमीष्व हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ॥१॥

ॐ ऋतवस्तऽऋतुथापर्वशमितारो विशासतु । संवत्सरस्य तेजसा
शमीभिः शम्यन्तुत्वा ॥२॥ अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य
च । दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यामर्पयेऽहं शमी शुभाम् ॥३॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । शमीपत्राणि समर्पयामि ॥

अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वाः— अक्षतपुष्प हाथ में लेकर अंग पूजन करे)

अंगपूजाः— ॐ पार्वतीनन्दाय नमः पादौ पूजयामि । ॐ गणेशाय
नमः गुल्फौ पूजयामि । ॐ जगद्धात्रे नमः जंघे पूजयामि । ॐ
जगद्वल्लभाय नमः जानुनी पूजयामि । ॐ उमापुत्राय नमः
ऊरू पूजयामि । ॐ विकटाय नमः कटिं पूजयामि । ॐ
गुहाग्रजाय नमः गुह्यं पूजयामि । ॐ महत्तमाय नमः मेढ्रं पूजयामि
। ॐ नाथाय नमः नाभिं पूजयामि । ॐ उत्तमाय नमः उदरं
पूजयामि । ॐ विनायकाय नमः वक्षः पूजयामि ॐ पाशच्छिदे
नमः पार्श्वे पूजयामि । ॐ हेरम्बाय नमः हृदयं पूजयामि ।
ॐ मदोत्कटाय नमः कंठं पूजयामि । ॐ स्कन्दाग्रजाय नमः
स्कन्धं पूजयामि । ॐ हरसुताय नमः हस्तान् पूजयामि ।
ॐ ब्रह्मचारिणे नमः बाहून् पूजयामि । ॐ सुमुखाय नमः मुखं
पूजयामि । ॐ एकदन्ताय नमः दन्तं पूजयामि । ॐ विघ्नहन्त्रे
नमः नेत्रे पूजयामि । ॐ शूर्प कर्णाय नमः कर्णौ पूजयामि ।
ॐ भालचन्द्राय नमः भालं पूजयामि । ॐ नागाभरणाय नमः
नासिकां पूजयामि । ॐ चिरन्तनाय नमः चिबुकं पूजयामि ।

ॐ स्थूलोष्ठाय नमः ओष्ठौ पूजयामि । ॐ गलन्मदाय नमः
कचान् पूजयामि । ॐ शिवप्रियाय नमः शिरः पूजयामि ।
ॐ सर्वमंगलासुताय नमः सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि ।

सुगन्धिद्रव्याणिः—ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ तैलानि च सुगन्धीनि
द्रव्याणि विविधानि च । मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । सुगन्धि द्रव्याणि
समर्पयामि ॥

नानापरिमल द्रव्याणिः—ॐ अहिरिवभोगैः पर्येतिवाहुञ्ज्याया
हेतिम्परि बाधमानः । हस्तगघ्नो विश्वाव्युनानि विद्वान्पुमान्पुमांश्च
सम्परिपातु विश्वतः ॥ हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्य-संयुक्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । परिमल द्रव्याणि समर्पयामि ॥ हस्तौ
प्रक्षाल्य ॥

धूपः—ॐ धूरसि धूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतँ ओस्मान्धूर्वतितं धूर्व यं
व्यन्धूर्वामिः । देवानामसि व्वन्हितमंश्च स्नितमम्पिप्रित-
मञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥१॥ ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः
कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पश्चात् शूद्रो अजायत ॥२॥ वनस्पति
रसोद्भूतो गन्धाद्दयो गन्ध उत्तमः । आग्नेयः सर्व देवानाम् धूपोऽयं
प्रतिगृह्यताम् ॥३॥ दशाङ्ग गुग्गुलोपेतं सुगन्धं च मनोहरम् ।
धूपं दास्यामि देवेश गृहाण त्वं गजानन ॥४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । धूपं आघ्रापयामि ।
दीपः—ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि । रयिं पिशङ्गं
बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कनिक्रदत् ॥१॥ ॐ अग्निर्ज्योतिषा
ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान् । सहस्रदाऽअसि सहस्राय
त्वा ॥२॥ ॐ मखस्य शिरोसि । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखस्य शिरोसि । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे । मखस्य

शिरोसि । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे । मखाय त्वा मखस्य
त्वा शीर्ष्णे । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे । मखाय त्वा
मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥३॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः
स्वाहा । अग्निर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः
स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्योर्ज्योतिः स्वाहा ॥४॥

साज्यं चवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश
त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां
नमः । दीपं दर्शयामि । हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

नैवेद्यः— ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत
पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रा तथालोका २॥ ५ अकल्पयन् ॥१॥

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्रदातारं
तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥२॥ शर्करा घृत संयुक्तं
मधुरं स्वादुचोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥३॥
ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तीः
प्रचोदयात् ।

टंकारं गायत्रीमन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॥ धेनुमुद्रां, ग्रासमुद्राम् प्रदर्शयेत्
॥ ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा,
ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि मध्ये पानीयं जलं
समर्पयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोषणार्थं हस्त
प्रक्षालनं, मुखप्रक्षालनं आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

करोद्धर्तनार्थं गन्धम्— ॐ अथं शुनाते अथं शुः पृच्यतां परुषा
परुः । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्धर्तनान्ते गन्धं समर्पयामि ॥

ऋतुफलम्— ॐ वाः फलिनीर्षाऽअफलाऽअपुष्पावाश्च
पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वहं हसः ॥ इदं फलं

मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि
जन्मनि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलं
समर्पयामि ।

ताम्बूलम्:-मुख वासार्थं ताम्बूलम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा
देवा यज्ञ मतन्वत । व्वसन्तोस्या सीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः
॥१॥ ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः
श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा
॥२॥ ताम्बूलं च वरं रम्यं कर्पूरादि सुवासितम् ।

जिह्वाजाड्यच्छेदकरं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् ॥३॥ पूगीफलं
महद्विव्यम् नागवल्ली दलैर्युतम् । एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं
प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ।
मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा:- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक
आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम
॥१॥ ॐ यद्दत्तं व्यत्परादानं व्यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः तदग्निर्वैश्व
कर्मणः स्वर्देवेषुनो दधत् ॥२॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं
विभावसोः । अनन्तपुण्यफलद-मतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥३॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सांगतासिद्ध्यर्थं
हिरण्यगर्भदक्षिणां समर्पयामि ।

श्रीफलम्:- ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणिरूपमश्विनौऽ व्याप्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽ इषाण
सर्वलोकम्मऽ इषाण ॥१॥ रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि
मे । पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥२॥ फलेन फलितं
सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु
मनोरथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ।
सांगतासिद्ध्यर्थं श्रीफलं समर्पयामि ॥

कंपूरारार्तिकम्:- ॐ इदं हविः प्रजननम्मेऽस्तुदशवीरं
 सर्वगणं स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि
 लोकसन्न्यभयसनि अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽ
 स्मासुधत् ॥१॥ ॐ आ रात्रि पार्थिवं रजः पितुरप्रायि धामभिः
 । दिवः सदां सि बृहती वि तिष्ठस ऽआ त्वेषं वर्तते तमः
 ॥२॥ ॐ ये देवसो दिव्येकादशस्थ पृथिव्या मध्येकादशस्थ ।
 अप्सुक्षितो महिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥३॥
 कदली गर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् । आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य
 मे वरदो भव ॥४॥ कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्
 । सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥५॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । आरार्तिकम्
 समर्पयामि । ततो जलारार्तिकम् समर्पयामि ।

मन्त्रपुष्पांजलिः- अञ्जलौ पुष्पाण्यादाय तिष्ठन् ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते
 ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
 ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमोनमो व्रातेभ्यो
 व्रातपतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो
 व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्चवो नमोनमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥
 ततः प्रदक्षिणाः- सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
 देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽ अबधन् पुरुषं पशुम् ॥ यानि कानि च
 पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणे
 पदे पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रदक्षिणाम्
 समर्पयामि ।

(अर्घपात्रे जलं प्रपूर्य रक्तचन्दनपुष्पाक्षतसहितं नारिकेलं च धृत्वा)
 विशेषार्घः- रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।

भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात् । द्वैमातुर कृपासिन्धो
षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थदा।
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।
प्रार्थनाः- ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय
जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ
नमो नमस्ते ॥१॥ भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय
शुभदाय सुरेश्वराय । विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्त
प्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥२॥ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय
ते नमः । नमस्ते रूद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय
नमस्तुभ्यं विनायक ॥३॥ लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥४॥ त्वां विघ्नशत्रुदलनेति
च सुन्दरेति, भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति । विद्याप्रदेत्यघहरेति
च ये स्तुवन्ति, तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥५॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमस्करोमि ।

अनया पूजया श्री गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम ॥



ॐ ॥ आग्नेयां मातृका पूजनम् ॥ ॥

(तन्निमित्तमाह ॥ अकृत्वा मातृयागंतु वैदिकं यः समाचरेत् ॥ तस्य क्रोध समाविष्टा हिंसामिच्छंति मातरः ॥१॥ स्थानलक्षणमाह ॥ गृहनिर्गम वामांगे वसोद्धारा च वेदिका । कार्या विवाहे विद्वद्भिर्गृहेवै पूर्वदक्षिणे ॥ गृहेवै पश्चिमद्वारे तथा उत्तर एव च । कार्याविवाहे विद्वद्भिर्गृह निर्गम दक्षिणे ॥ मातृपूजां रक्तवस्त्रोपरिपट्टे कुर्यात् ॥ तत्र स्थापन क्रमः ॥ वायौचतुष्क मध्यस्थं गणेशं तत्र पूजयेत् ॥ मध्ये नैऋत्यके गौरी पद्मा पावक गोचरे । शचिः पश्चिमतो मेधा सावित्री विजया यमे ॥ जयोत्तरे देवसेना स्वधामीशान एवच । स्वाहा चैव तथाग्नेये मात्रीन्द्रे लोकमातरः ॥ मध्ये वायु धृतिश्चैव नैऋत्ये पुष्टि पूजयेत् । तुष्टिश्चैवतु वायव्ये मध्येशे कुलदेवता ॥ अथ नामानि ॥ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः तुष्टि तथापुष्टिरात्मनः कुल देवता । गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु मातरः ॥ ततश्च पंचसप्तवानातिनीचानचोच्छृताः ॥ कुड्यादिषु वसोर्धारा सप्तधारा घृतेनतु । कारयेत् पंचधारावा वसोः मंत्रेण कारयेत् ॥ पुष्टिरात्मनः कुल देवता । गणेशाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु मातरः ॥ ततश्च पंचसप्तवानातिनीचानचोच्छृताः ॥ कुड्यादिषु वसोर्धारा सप्तधारा घृतेनतु । कारयेत् पंचधारावा वसोर्मंत्रेण कारयेत् ॥)

मातृपूजां रक्तवस्त्रोपरिपट्टे कुर्यात् ॥ हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा ॥

अथ मातृका स्थापनं ॥

गणपतिः—ॐ गणानान्त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ गजास्य गणनाथत्वं सर्वविघ्न विनाशन ॥ लम्बोदर त्रिनयन आगच्छ गण

नायक ॥ मध्ये वायव्यकोष्ठे भो गणपते इहागच्छ इहा तिष्ठ
॥ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

१-गौरीः-ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः । पितरं
च प्रयन्त्स्वः ॥ हिमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरव प्रियां । लम्बोदरस्य
जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥ मध्ये नैऋत्यकोष्ठे गौर्यै नमः ।
गौरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-पद्माः-ॐ हिरण्यरूपाऽउषसो विरोकऽ उभाविन्द्राऽ उदितः
सूर्वश्च । आरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं
च मित्रोसि वरुणोसि ॥ सुवर्णाभां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम्
। त्रैलोक्ये पूजितां देवीं पद्मामावाहयाम्यहम् मध्ये आग्नेयकोष्ठे
पद्मायै नमः । पद्मामावाहयामि स्थापयामि ॥

३-शचीः-ॐ कदाचन स्तरीरसि नेन्द्रसश्चसि दाशुषे । उपोपेन्नु
मघवन् भूयऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥ उत्पलाक्षीं सुदर्शनां
शचीं कुंडलधारिणीं । देवराज प्रियां भद्रां शचीमावाहयाम्यहं
॥ पश्चिमे प्रथमकोष्ठे शच्यै नमः । शचीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-मेधाः-ॐ मेधांमे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥
वैवस्वत्करफुल्लाब्जं दधानां पद्मवासिनीम् । बुद्धि प्रसादिनीं
सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥ पश्चिमे द्वितीयकोष्ठे मेधायै नमः
। मेधामावाहयामि स्थापयामि ॥

५-सावित्रीः-ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि । धियो यो नः
प्रचोदयात् ॥१॥

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधाऽअसि चनोमयिधेहि
। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे ॥२॥
जगत्सृष्टीं जगद्धात्रीं पक्षीरूपेण संस्थिताम् । आवाहयामि
सावित्रीमोकारांक स्वरूपिणीम् ॥३॥ दक्षिणे प्रथमकोष्ठे सावित्र्यै
नमः । सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-विजयाः-ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँर॥ उत । अनेशत्रस्य याऽऽषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥ दैत्य क्षयकरिं देवीं देवानामभयप्रदाम् । गीर्वाण वंदितां देवीं विजयामावाहयाम्यहं ॥दक्षिणे द्वितीयकोष्ठे विजयायै नमः । विजयामावाहयामि स्थापयामि ॥

७-जयाः-ॐ यातेरुद्रशिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तया नस्तन्वाशं तमयागिरिशंताभिचा कशीहि ॥ विश्वभद्रां जयां रक्तां रक्तांबर धरां सतीम् । त्रैलोक्ये पूजितां देवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥ उत्तरे प्रथमकोष्ठे जयायै नमः । जयामावाहयामि स्थापयामि॥

८-देवसेनाः-ॐ देवानां भद्रा सुमितिर्ऋजूयतां देवानां शं रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ मयूर वाहनारूढां शक्ति खड्ग धनुर्धराम् ॥ आवाहये देवसेनां तारका सुरमर्दिनीम् ॥ उत्तरे द्वितीयकोष्ठे देवसेनायै नमः । देवसेनामावाहयामि स्थापयामि ॥

९-स्वधाः-ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ कव्यमादाय सततं पितृभ्योया प्रयच्छति । पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहं ॥ बाह्ये ईशानकोष्ठे स्वधायै नमः । स्वधामावाहयामि स्थापयामि ॥

१०-स्वाहाः-स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात् स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां शं स्वाहा वातादारभे स्वाहा ॥१॥ ॐ स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् । अतिच्छन्दा ऽ इन्द्रियं बृहदृषभो गौर्वयो दधुः ॥२॥ हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति । दैवतैः स्वर्चिता स्वाहा समायातु मदध्वरे ॥३॥ बाह्याग्रेयकोष्ठे स्वाहायै नमः । स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥

११-मातृः- अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवाऽ अदितिः पञ्च जनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥१॥ ॐ आपो अद्यान्वचारिषथं रसेन समसृक्षमहि । पयस्वानग्रआगमंतं मा सथं सृजवर्चसा प्रजया च धनेन च ॥२॥ भूतग्राममिदं कृत्स्नं याभिरुत्पादितं पुरा । त्रैलोक्ये पूजितां देवीं मातृनावाहयाम्यहं ॥३॥ पूर्वे प्रथमकोष्ठे मातृभ्यो नमः । मातृनावाहयामि स्थापयामि ॥

१२-लोकमातृः- ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽ अवसागमन्निह ॥१॥ ॐ भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञथं हिथं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः ॥२॥ आवाहयेल्लोकमातर्जगत्पालन संस्थिताम् । शक्राद्यैर्वदितां देवीं स्तोत्र मंत्रैरभीष्टदाम् ॥३॥ पूर्वे द्वितीयकोष्ठे लोकमातृभ्यो नमः । लोकमातृनावाहयामि स्थापयामि ॥

१३-धृतिः- यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्चयज्ज्योतिरंतरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किंचनकर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥ ॐ धृष्टिरस्यपाऽग्रे ऽ अग्रिमामादं जहि निष्क्रव्याद ठं सेधा देवयजं वह । ध्रुवमसि पृथिवीं दृठं हब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय ॥२॥ मनस्तुष्टिकरीं देवीं लोकानुग्रहकारिणीम् । सर्वकाम समृद्धयर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ॥३॥ मध्ये वायव्यकोष्ठे धृत्यै नमः । धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

१४-पुष्टिः- ॐ त्वष्टा तुरीपो अद्भुतऽ इन्द्राग्री पुष्टिवर्धना । द्विपदा छन्दऽ इन्द्रियमुक्षा गौर्नवयो दधुः ॥१॥ ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशथं स मान ऽ आयुः प्रमोषीः ॥२॥ स्वभक्तेभ्यश्च वरदां विद्याज्वालाक्ष कुण्डलाम् ॥ आब्रह्मस्तंब पर्यंतं सर्वजीव सुखप्रदाम् ॥३॥ बाह्ये नैऋत्यकोष्ठे पुष्ट्यै नमः । पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥

१५-तुष्टिः-ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्शोऽअर्हा द्युमद्विभाति
 ऋतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजा ततदस्मा सुद्रविणं
 धेहि चित्रम् ॥१॥ ॐ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहा मित्राँ ॥२
 अपबाधमानः । प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेद्ध्यविता
 रथानाम् ॥२॥ आवाहयामि तां तुष्टिं सर्वलोकेषु गीयताम् ।
 संतोषभावनां देवीं रक्षणीयाध्वरे मम ॥३॥ बाह्ये वायव्यकोष्ठे
 तुष्ट्यै नमः । तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥

१६-कुलदेवाः-ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा
 । अंबेऽअंबिकेऽम्बालिकेनमानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः
 सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् ॥ तामात्म वंदितां देवीं सर्वकाम
 फलप्रदाम् । वंश रक्षक गोत्रीयां देवीमावाहयाम्यहम् ॥ मध्ये
 ईशानकोष्ठे आत्मनः कुलदेवतायै नमः । आत्मकुलदेवता-
 मावाहयामि स्थापयामि ॥

ध्यानम्-ॐ समख्ये देव्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा । मा
 मऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि ॥
 ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना
 स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः तुष्टि तथा पुष्टिरात्मनः
 कुल देवता । गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः ॥

ॐ ॥ सप्तवसोर्धारा पूजनम् ॥ ॐ

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती । मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते
 सप्तैताः घृत मातरः ॥

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्
 । देवत्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः
 ॥ इत्यनेन सप्तधाराः कृत्वा

१-श्रीः-ॐ मनसः काममाकूतिम् वाचः सत्यमशीय । पशूनाथं
रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयिस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः
श्रियै नमः ॥ श्रियं आवाहयामि स्थापयामि ॥

२-लक्ष्मीः-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणिरूपमश्विनौव्याप्तम् । इष्णं त्रिषाणामुम्मइषाण
सर्वलोकंमइषाण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः ॥ लक्ष्मीं
आवाहयामि स्थापयामि ॥

३-धृतिः-ॐ इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा
। उपसृजन् धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन् । रायस्पोषमस्तासु
दीधरत् स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः । धृतिमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४-मेधाः-ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः मेधायै नमः ॥ मेधामावाहयामि स्थापयामि ॥

५-स्वाहाः-ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा
चक्षुषे स्वाहाश्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥

६-प्रज्ञाः-अज्ञानमुतचेतो धृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्मानऽऋते किञ्चन कर्मक्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः । प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि ॥

७-सरस्वतीः-ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवति ।
यज्ञं व्वष्टुधियावसुः । ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः
सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ॥

प्रतिष्ठां कुर्यात्-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्जस्य बृहस्पतिर्ब्रह्मिमं
तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु । विश्वे देवासऽइहमादन्तामो
३॥ म्प्रतिष्ठ ॥

एषवै प्रतिष्ठानाम् वज्ञो वत्रै तेन वज्ञे वजंतेन सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥

गौर्यादि षोडशमातरः श्र्यादि सप्तमातरः गणपति कुलदेव्याः सहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवंतु ॥ श्री गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः । श्रियादि सप्तमातृभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि ॥

आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥ हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान् समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥ सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥ श्रीफलं समर्पयामि ॥ पुष्पआरातिकं समर्पयामि ॥ मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ॥ प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ नमस्कारं समर्पयामि ॥

विशेषार्घ्यः—जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥ रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि मे । पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरं । फलस्यार्घ्यं प्रदानेन सफलाः सन्तु मनोरथाः ॥ इदं फलं मया देव्यः स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ इति नालिकेरमयं विशेषार्घ्यं समर्पयामि ॥

प्रार्थनाः—गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः तुष्टि तथा पुष्टिरात्मनः

कुल देवता । गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः ॥
 श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती । मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते
 सप्तैताः घृत मातरः ॥ श्री गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः ।
 श्रियादि सप्तमातृभ्यो नमः ॥ मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ॥
 आयुष्यमंत्रम्:- ॐ आयुष्यं वर्चस्यथं रायस्पोषमौद्धिदम् । इदथं
 हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रा याविशतादुमाम् ॥ नतद्रक्षाथंसि न
 पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजथं ह्येतत् । यो बिभर्ति
 दाक्षायणथं हिरण्यथं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते
 दीर्घमायुः ॥ अदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यथं शतानीकाय
 सुमनस्यमानाः । तन्मऽ आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जर-
 दष्टिर्वथासम् ॥

अद्य मातृका स्थापन पूजन कृतस्य कर्मणो विधेर्यत्र्यूनमधिकंवा
 तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनेभ्यः श्रीगणेशाम्बिकयोः प्रसादात्सर्वं
 विधेः परिपूर्णमस्तु॥

द्वारमातृ पूजनम् ॐ अद्येह - कामनासिद्धयर्थं

क्रियमाणसत्ताहकर्मणि निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थञ्च
 नन्दादि सप्तद्वारमातृपूजनं करित्ये -

१) नन्दा (२) नन्दिनी

(३) वासिष्ठी

(४) वायुदेवा (५) भार्गवी

(६) जया (७) विजया

ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दादि

सप्तमातरः इहाग-

च्छत तिष्ठत इत्यावाह्ये

प्रतिष्ठाप्य चतुर्थ्यन्तैः

नाममन्त्रैः पूजयेत् घृतधाराञ्च कुर्यात् -

वयोः पवित्रमासि शतधारे ०

⇒⇒ ॥ अथ नान्दीश्राद्धम् ॥ ⇐⇐

सौकर्याय सङ्कल्पं विधिनैवोच्यते ॥ ताम्र पात्रे दधि कुंकुमयवाक्षत
दूर्वाजलानि एकीकृत्य सङ्कल्पं कुर्यात् ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥

ॐ तत्सदद्य मासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे
अमुकनक्षत्रे अमुककर्माङ्गीभूतं सङ्कल्पविधिना आभ्युदयिक
श्राद्धमहं करिष्ये ॥

दूर्वाङ्कुरम् गृहीत्वा पात्रस्थ दध्यादीनालोडयेत् ॥

सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः नांदिमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः
पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥ सर्वं पितृकार्यमपि सव्येनैव
स्वाहाकार संयुक्तं यवैरेव देववत्कुर्यात् ॥ वृद्धिः इत्युक्तौ ॥

अमुकगोत्राः मातृपितामही प्रपितामह्यः नांदिमुख्यः भूर्भुवः स्वः
एतद्वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

अमुकगोत्राः पितृपितामह प्रपितामहाः नांदिमुखाः भूर्भुवः स्वः
एतद्वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

अमुकगोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताः
नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः एतद्वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

गणेशाम्बिकयोः भूर्भुवः स्वः एतद्वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

पादोदकं परित्यज्य आचमनं प्राणायामम्:- कर्म पात्रस्थापनं,
कर्मपात्रे आसनं, आसने पात्रं, पात्रे पवित्रं ॐ शन्नो देवीति
जलपूरणम्:- ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।

शँब्धोरभिस्रवंतुनः ॥ यवोसीति यव प्रक्षेपः- ॐ यवो
सियवयास्मद् द्वेषोयवयाराती दिवेत्वान्तरिक्षा यत्वा पृथिव्यै त्वा
शुन्धंताँ लोकाः पितृसदनाः पितृसदनमसि ॥

इति मंत्रेण चन्दनं पुष्पं दधि च प्रक्षेपः- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं
जिष्णो रश्वस्य वाजिनः । सुरभिन्नो मुखाकरत्प्रणः आयू षं
षितारिषत् ॥

स्वस्ति नइन्द्रेत्यनेनाक्षतै दिग्बंधः-

(पूर्वादि दिशाओं में अक्षत छोडे)

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति
नस्ताक्षर्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

(इति पूर्वादिदिक्षु अक्षतान् प्रक्षिपेत्)

संकल्प विधिना आभ्युदयिक श्राद्धोपहाराणां पवित्रतास्तु
देश-काल-पाक-पात्र-उपहार द्रव्य श्रद्धा सम्पदस्तु ॥

अत्राद्य. तिथौ अमुककर्म प्रारंभ निमित्तं आभ्युदयिक श्राद्धमहं
करिष्ये ॥

सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः नांदीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः
आसनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

अमुकगोत्राः मातृपितामही प्रपितामह्यः नांदीमुख्यः भूर्भुवः स्वः
इदं वः आसन गंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

अमुकगोत्राः पितृपितामह प्रपितामहाः नांदीमुखाः भूर्भुवः स्वः
इदं वः आसन गंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

अमुकगोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताः
नांदीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः आसन गंधाद्युपचार कल्पनं
स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

गणेशाम्बिकयोः भूर्भुवः स्वः इदं वः आसनगंधाद्युपचार कल्पनं
स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

इदमर्चितं वो ज्योतिः सूर्बोज्योतिः दीपकं ज्योतिः पुष्पं ॥

अस्याभ्युदयिक श्राद्धस्यार्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु

ॐ ॥ अथ ब्राह्मणभोजनं ॥ ॐ

सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः नांदीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः
युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्तं दास्यमानमन्नं यथाशक्ति सोपस्करं
स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

अमुकगोत्राः मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः
युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्तं दास्यमानमन्नं यथाशक्ति सोपस्करं
स्वाहानामयं च वृद्धिः द्विः ॥

अमुकगोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताः
नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्तं दास्यमानमन्नं
यथाशक्ति सोपस्करं स्वाहानामयं च वृद्धिः द्विः ॥

गणेशाम्बिकयोः भूर्भुवः स्वः युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्तं
दास्यमानमन्नं यथाशक्ति सोपस्करं स्वाहानामयं च वृद्धिः द्विः ॥

ॐ ॥ ततो दक्षिणा सङ्कल्पः ॥ ॐ

सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः संकल्प
श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां वः
स्वाहानामयं च वृद्धिः ॥

अमुकगोत्राः मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः
सङ्कल्प श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं हरीतक्या निष्क्रयिणीं दक्षिणां
वः स्वाहानामयं च वृद्धिः द्विः ॥

अमुकगोत्राः पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः
सङ्कल्प श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं रजतं निष्क्रयिणीं दक्षिणां वः
स्वाहानामयं च वृद्धिः द्विः ॥

अमुकगोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताः
नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः साङ्कल्प श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं हिरण्य
निष्क्रयिणीं दक्षिणां वः स्वाहानामयं च वृद्धिः द्विः ॥

गणेशाम्बिकयोः भूर्भुवः स्वः श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक
निष्क्रयिणीं दक्षिणां वः स्वाहानामयं च वृद्धिः द्विः ॥

(विश्वेदेवाः प्रीयंतामिति ब्रूहि)

ते देवाः शान्तिदा पुष्टिदा तुष्टिदा वरदा भवन्तु ॥

अद्य आभ्युदयिक श्राद्ध कृतस्य कर्मणो विधेः परिपूर्णताऽस्तु

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँर इयक्क्षते
 ॥१॥ ये त्वाहिहृत्ये मघवन्नवर्धन्ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ ।
 ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमथं सगणो मरुद्भिः ॥२॥
 जनिष्ठाऽउग्रः सहसे तुराय मरायमन्द्रऽ ओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।
 अवर्धन्निन्द्रम्मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा ॥३॥ आ तू
 नऽ इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥४॥
 त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वाऽअसि स्पृधः । अशस्तिहा जनिता
 विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥५॥ अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः
 कक्षोणी शिशुं न मातरा । विश्वास्ते स्पृधः श्रथयन्त मन्यवे
 वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥६॥ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो
 भवता मृडयन्तः । आ वोर्वाची सुमतिर्ववृत्यादथं होश्चिद्या
 वरिवोवित्तरासत् ॥७॥ अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्टथं शिवेभिरद्य
 परि पाहि नो गयम् । हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्क्षा माकिर्त्रो
 ऽ अघशथं सऽ ईशत ॥८॥

ततः स्तुतिः—माता पिता महीचैव तथैव प्रपितामहीः । पिता
 पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ माता महस्तत्पिता च प्रमाता
 महकादयः । एते भवंतु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥ इडामग्रे
 पुरुदथं सथं सनिङ्गोः शश्वत्तमथं हवमानाय साध । स्यान्नः
 सूनुस्तनयो विजावाग्रे सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥

शिवं शिवं इति पात्र टंकार नादं कृत्वा ॥

अनेन कर्मणा नान्दीमुख देवताः प्रीयन्ताम् वृद्धिः ॥

ते देवाः शान्तिदाः पुष्टिदाः तुष्टिदाः वरदाः भवन्तु ॥

कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य विधेर्यन्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां
 वचनात् श्रीगणेशाम्बिकयोः प्रसादात् सर्वविधेः परिपूर्णताऽस्तु ॥

॥ इति नां दी श्राद्धः ॥

ततो बहिःशालायामागत्य ग्रहयज्ञं समारभेत् ॥
मण्डपवितानाद्यलंकृतं गृहं गोमयादिना लिपेत् ॥ चन्दो बांधवो
॥ (विवाह स्तम्भ गाड़ना व मंडप पूजन करना)
(अथ मंडप पूजनम्:-सूर्य संक्रान्ति अनुसार
ईशानकोणे:- सिंह, कन्या, तुला
अग्निग्रकोण:- वृषभ, मिथुन, कर्क
नैऋत्यकोणे:- कुंभ, मीन, मेष
वायव्यकोणे:- वृश्चिक, धन, मकर
आग्नेयाम्:-ॐ नन्दिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥ नैऋत्याम्:-
ॐ नलिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥ वायव्याम्:- ॐ मैत्रायै
नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥ ऐशान्याम्:- उमायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि ॥ मध्ये ॐ पशुवर्धिन्यै नमः मंडल
मातृका देवताभ्यो नमः ॐ नन्दिनी नलिनी मैत्रा उमा च
पशुवर्धिनी ॥ आग्नेयादि क्रमेणैव शाखा स्तंभे प्रतिष्ठिताः ॥
ॐ मंडपाधिष्ठात्रि देवतायै नमः इति मंडपं गंधादिभिः संपूज्य
॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ ॥ आचार्यऋत्विजानां वरणम् ॥ ॐ

वरणं कुर्यात्:-ॐ विष्णुः२ श्रीमद्भगवतो. तिथौ सुतस्य वा
सुतायाः अमुककर्म प्रारंभनिमित्तं ग्रहयज्ञमहं करिष्ये ॥ ग्रहयज्ञांग
भूतेन आचार्यादीनां वरणार्चनं च करिष्ये ॥ ततो यजमानोत्थाय
अर्घं गृहीत्वा
प्रार्थयेत्:-ॐ आयुरारोग्य पुत्रादि सुखश्री प्राप्तये मम । आपद्विघ्न
विनाशाय शत्रुबुद्धि क्षयाय च ॥ विशेष काम्यहोमेतु सहितं
समिदादिभिः ॥ नवग्रहमखं देवकर्तुंयूयं प्रसीदथ । स्वागतं भो
द्विजा श्रेष्ठामदनुग्रह कारकाः ॥ इदमर्घ्यमिदं पाद्यं भवद्भिः

प्रतिगृह्यताम् ॥ अर्घो अर्घो अर्घः यजमानः- प्रतिगृह्यतां आचार्यः-
प्रतिगृह्णामि ॥ पुनस्तदर्घं यजमान हस्ते कृत्वा ।

आचार्यचरणौ प्रक्षालयेत्:- ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां
ज्येष्ठपुष्करे । तत्फलं पांडवाः श्रेष्ठा विप्राणां पादशौचने ॥
विप्रपाद तलघृष्ट क्षीयमाणस्तु यः करः । स करः कर विज्ञेयः
शेषाः कर्म कराः कराः ॥ अस्मिन्ग्रह यज्ञाख्ये कर्मणि अमुक
वेदमूर्ते आचार्याय एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं एषोऽर्घः
इदमत्र चंदनंच पुष्पं ॥ इति पादौ प्रक्षाल्य तत्पादौ गंधादिभिः
संपूज्य ॥

तिलकं कुर्यात्:- ॐ बृहस्पते ऽअतियदस्योऽअर्हाद्दियुमद्विभाति
क्क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्प्रजा ततदस्ममा
सुद्वविणन्धेहि चित्रम् ॥ ॐ शुञ्जते मनऽउत शुञ्जते धियो विप्रा
विप्रस्य बृहतो विपश्चितः । विहोत्रा दधे वयुनाविदेकऽ इन्मही
देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा ॥ ॐ इरावती धेनुमती हि भूतशं
सूयवसिनी मनवे दशस्या । व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधत्थं
पृथिवी मभितो मयूखैः स्वाहा ॥ ॐ नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥ ब्रह्मणे अर्चनं प्रीयताम् ॥ गंधाः
पांतु सुमंगल्यं चास्तु ॥ अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणि
पांतु सौश्रियमस्तु ॥ सकलाराधनैः स्वर्चितमस्तु ॥

यजमानः वरण सामग्रीं गृहीत्वा:- अद्यैतत्सत्यसंकल्पोक्त
फलप्राप्त्यर्थं अमुक प्रवरान्वित अमुक वेदांतरगत अमुक
शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं एभिः पूगीफलाक्षत द्रव्यैः
आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोस्मीति प्रत्युक्तिः ॥

आचार्यहस्ते कंकणं बध्नीयात्:- ॐ षदाबध्नाक्षायणा हिरण्यशं
शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मआबध्नामिशत शारदायायुष्मान्
जरदष्टिर्यथासम् ॥

यजमानस्य मस्तकोपरि अक्षतान्विकीरयेत् ॥ तत्र मंत्र ॥ ॐ
व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति
श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

यजमानप्रार्थनाः—आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥ यजमानः यथाविहितं
कर्म कुरु ॥ आचार्यः यथा ज्ञानतः करवाणि ।

ब्रह्मा वरणम्—अस्मिन्प्रहयज्ञाख्ये कर्मणि अमुक वेदमूर्ते ब्रह्मन्
एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं एषोऽर्घः इदमत्र चंदनंच
पुष्पं ॥ ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे । तत्फलं
पांडवाः श्रेष्ठा विप्राणां पादशौचने ॥ ॥ तत्पादौ गंधादिभिः
संपूज्य ॥

तिलकंकुर्यात्—ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽ
आवः । सबुध्याऽउपमाऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च
वि वः ॥ ॐ नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे
। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥ ॥
गंधाः पांतु सुमङ्गल्यं चास्तु ॥ अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु ॥
पुष्पाणि पांतु सौश्रियमस्तु ॥ सकलाराधनैः स्वर्चितमस्तु ॥
अद्यैतत्सत्यसंकल्पोक्त फलप्राप्त्यर्थं अमुक प्रवरान्वितं
अमुकशर्माणं एभिः पूगीफलाक्षतद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे
॥ वृतोस्मि ॥

कंकणंबध्नीयात्—ॐ षडाबध्नाक्षायणा हिरण्यथं शतानीकाय
सुमनस्यमानाः । तन्मआबध्नामि शतशारदायायुष्मान्
जरदष्टिर्यथासम् ॥

यजमानस्य मस्तकोपरि अक्षतान्विकीरयेत्—ॐ व्रतेन
दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति
श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

प्रार्थना ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः । तथात्वं
मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ यथा विहितं कर्म कुरु-
करवाणि ॥

ऋत्विक् वरणम्:-अस्मिन्ग्रहयज्ञाख्ये कर्मणि ऋत्विक् एतत्ते
पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं एषोऽर्घः इदमत्र चंदनं च पुष्पं ॥
तत्पादौ गंधादिभिः सम्पूज्य ॥ ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां
ज्येष्ठपुष्करे । तत्फलं पांडवाः श्रेष्ठा विप्राणां पादशौचने ॥

तिलकं कुर्यात् :- ॐ नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्र
पादाक्षिशिरोरुबाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी
युगधारिणे नमः ॥ गंधाः पांतु सुमङ्गल्यं चास्तु ॥ अक्षताः पांतु
आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणि पांतु सौश्रियमस्तु ॥ सकलाराधनैः
स्वर्चितमस्तु ॥

अद्यैतत्सत्यसंकल्पोक्त फलप्राप्त्यर्थं अमुक प्रवरान्वितं अमुक
वेदांतरगत अमुक शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं एभिः
पूगीफलाक्षत द्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोस्मि ॥

कंकणं बध्नीयात्:- ॐ यदाबध्नाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय
सुमनस्यमानाः । तन्मआबध्नामि शतशारदायायुष्मान्
जरदष्टिर्यथासम् ॥ ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्
। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

✽ ॥ वरण श्राद्धम् ॥ ✽

ततो यजमानः स्वपादौ प्रक्षाल्याचम्य वरणश्राद्धं कुर्यात् ॥
आचार्य प्रमुखेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः एतद्वः पाद्यं पादावने जनं पादप्रक्षालनं
एष वोऽर्घः इदमत्र चंदनं च पुष्पं ॥ स्वस्ति न इंद्रेति दिग्बंधः ॥
ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
वरुणश्राद्धोपहाराणां पवित्रास्तु ॥ देश-काल-पाक-
पात्र-द्रव्य-श्रद्धासंपदस्तु ॥

अद्येत्यादि मासेपक्षेतिथौवासरे अमुककर्मनिमित्तं वरुणश्राद्धमहं करिष्ये ॥

व्रतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इदमासनं ॥ व्रतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इदमर्घ्यं ॥ व्रतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इदमर्चनं ॥ यथादत्तं गंधाद्यर्चनं कुण्डलमुद्रिका वासांसि यज्ञोपवीतं च आचार्यप्रमुखेभ्यश्चाहं संप्रददे ॥ इदमर्चितं वो ज्योतिः सूर्यो ज्योतिर्दीपकं ज्योतिः पुष्पम् । अस्य वरुणश्राद्धविधेर्यनूनमतिरिक्तं तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् विधिवद्भवतु ॥ ततः दधिक्राव्येति दधि वंदनं ॥ ॐ दधिक्राव्यो अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूथं षितारिषत् ॥ काण्डात्काण्डादिति दूर्वामार्जनं ॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहंती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ ॐ याः फलनीति फलम् ॥ ॐ याः फलिनीर्षा अफला अपुष्पावाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चंत्वथं हसः ॥ हिरण्यगर्भेति मुद्रार्पणम् ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ॐ स्वस्तिनइन्द्रेति यजमानस्य तिलकं कुर्यात् :-

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजमानहस्तेरक्षिकां बध्नीयात्:-

ॐ यदाबध्नाक्षायणा हिरण्यथं शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥ येनबद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

यजमानपत्न्याः तिलकं वामहस्ते कंकणं (रक्षिकां) बध्नीयात्:-

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ ऽव्याप्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण
सर्वलोकम्मऽइषाण ॥

ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः । नाकं
गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधि रोचने दिवः ॥

❧ ❧ ❧ ॥ पुण्याहवाचनम् ॥ ❧ ❧ ❧

अथ यजमानो स्वलंकृतः दर्भपाणि प्राणानायम्य शुचिर्भूत्वा भद्रासने
उदङ्मुखोवोपविश्य, ईशानकोणे सप्तधान्योपरि कलशं संस्थाप्य
पुण्यजलैरापूरितं सपल्लवं मृण्मयं ताम्रं सौवर्णं वा
तण्डुलनिर्मिताष्टदलोपरि वा संस्थाप्य तदुपरि पञ्चरत्नानि निक्षिप्य
पञ्चपल्लवैः कृतशोभं तण्डुलपूरितं सफलं पात्रं निधाय
तत्पश्चिमदिग्भागे प्रशस्तप्रतिवचनसमर्थान् शुचीन् सोत्तरीयान्
प्राङ्मुखान् दर्भपाणिनः युग्मान् ब्राह्मणान् उपवेश्य तान् गंधपुष्पाक्षतैः
सम्पूज्य दक्षिणादिभिरुपतोष्य गणपति स्मरणं कुर्यात् ॥ तथा चः-
संकल्पंकुर्यात्ः- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य
विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽहि द्वितीयप्रहरार्धे
श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखण्डे श्रीशालिवाहनशके
बौद्धावतारे अस्मिन् वर्तमाने अमुक सम्बत्सरे रवेः अमुक अयने
अमुक ऋतौ मासानामुत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक
तिथौ अमुक वासरान्वितायां अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक शर्माऽहं
अमुक कर्मणि श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कलशस्थापनपूर्वकं ब्राह्मणैः
सह स्वस्तिपुण्याहवाचनं करिष्ये ।

❧ ॥ कलशस्थापनप्रयोगः ॥ ❧

अथ सप्तधान्योपरि तण्डुलपूरिताष्टदलोऽपरि वा स्थित
कलशस्याधारभूतां भूमिं स्पृशेत्

भूमिं स्पृष्ट्वाः—ॐ भूरसिभूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवी यच्छ पृथिवीं दृष्टं ह पृथवीं मा हिंशं सीः ॥ ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञमिमिक्षताम् पिपृतात्रो भरीमभिः॥

धान्य प्रक्षेपः—ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥ ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त थं राजन्पारयामसि

कलशस्थापनम्—ॐ आजिघ्न कलशं मह्या त्वा व्विशंत्विन्दवः। पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्माऽऽविशताद्रयिः ॥

जलपूरणम्—ॐ वरुणस्यो त्वाभनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऽऋतसदनमासीद ॥

गंध प्रक्षेपः—ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

सर्वोषधिप्रक्षेपः—ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामह थं शतं धामानि सप्त च ॥

दूर्वा प्रक्षेपः—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

पंचपल्लवप्रक्षेपः—ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णेवो व्वसतिष्कृता । गोभाजऽ इत्किलासथयत्सनवथ पुरुषम् ॥

सप्तमृदः प्रक्षेपः—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

पूगीफलप्रक्षेपः—ॐ याः फलिनीर्ब्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व थं हसः ॥

पंच रत्न प्रक्षेपः-परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

हिरण्यमुद्रा प्रक्षेपः-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय
हविषा विधेम ॥

रक्तसूत्रवेष्टनम्:-ॐ सुजातो ज्योतिषासह शर्म वरूथमासदत्स्वः
। वासो अग्रेविश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो ॥

पूर्णपात्रम्:-ॐ पूर्णादिव्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । व्वस्नेव
व्विक्रीणावहाऽ इषमूर्जं शं शतक्रतो ॥

श्रीफलं:-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्कन्याबहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौऽ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुंमऽ इषाण सर्वलोकं म
ऽ इषाण ॥

ध्यान आवाहनः-ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते
यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशं समान
आयुः प्र मोषीः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गम्
सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति र्ब्रह्ममिन्तनोत्वरिष्टं
यज्ञं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोऽं ॥ म्प्रतिष्ठ
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण देवता सुप्रतिष्ठितो वरदो भव, ॐ
भूर्भुवः स्वः अपांपतये वरुणाय नमः, इति वरुणं षोडशोपचारैः
सम्पूज्य ततः, अनामिकया कलशं स्पृष्ट्वा अभिमन्त्रयेत् देवता
आवाहयेच्च ।

अक्षतान् प्रक्षेपणम्:-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य
स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥1॥ कुक्षौ तु सागराः
सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः
॥2॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः । अत्र गायत्री

सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥३॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं
 दुरितक्षयकारकाः ॥ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायकः ।
 पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥
 आसनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥
 हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि
 ॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं समर्पयामि
 ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतं
 समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि उपवस्त्रं समर्पयामि
 ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान् समर्पयामि
 ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥ सुगंधितैलं
 समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ हस्तौ प्रक्षाल्य
 ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं
 समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥
 श्रीफलं समर्पयामि ॥ पुष्पआरार्तिकं समर्पयामि तत्त्वायामि इत्यनेन
 पुष्पाञ्जलिं समर्प्य ।

✠ ॥ प्रार्थयेत् ॥ ✠

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।

उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।

त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः ॥

सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।

सपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥१॥

प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ॥ अनेन पूजनेन
अपांपतिर्वरुण प्रीयताम् ।

❀ ॥ ब्राह्मण वरण ॥ ❀

अत्र युग्मब्राह्मणान् अन्यूनचतुरान् संस्थाप्य तथा अर्घ्यं संस्थाप्य
देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अमुक कर्मणि
सर्वाभ्युदयप्राप्तये ब्राह्मणैः पुण्याह वाचयिष्ये । तदङ्गतया चतुर्वर्णां
ब्राह्मणानां पूजन वरणं च करिष्ये । ब्राह्मणेभ्यो तिलक मन्त्रः-
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥१॥
एभिर्गन्धाक्षतैः पुष्पपूगीफलद्रव्यैः अमुककर्मणि सर्वाभ्युदयप्राप्तये
पुण्याहवाचनार्थं अमुकनामानं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे । ब्राह्मणः-
'वृतोस्मि' प्रतिवदेत् । एवं क्रमेण प्रत्येकं वृणुयात् ॥

सम्पूज्य गन्धमाल्याद्यै ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् ।

धर्मकर्मणि माङ्गल्ये संग्रामेऽद्भुतदर्शने ॥१॥

पुण्याहवाचनं दैवं ब्राह्मणस्य विधीयते ।

एतदेव निरोद्धारं कुर्यात् क्षत्रिय वैश्ययोः ॥२॥

अथ यजमानः- अवनि कृत जानु मण्डलः, (भूमौ दक्षिणजानुं
पातयित्वा) कमल मुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन
पाणिना ।

आचार्यः- दक्षिणेन पाणिना सुवर्ण पूर्णकलशं धारयित्वा ॥

यजमानः- आशिषः

प्रार्थयेत्- दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च, तेनायुः
प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु' इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

विप्राः-ॐ तेन आयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।

यजः- अपां मध्येस्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे । शिवा आपः
सन्तु ।

विप्राः-ॐ सन्तु शिवा आपः ।

यजः- लक्ष्मी र्वसति पुष्पेषु लक्ष्मी र्वसति पुष्करे ।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ॥ ॐ सौमनस्यमस्तु ।

विप्राः-ॐ अस्तु सौमनस्यम् ॥

यजः- अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशो बलम् ।

यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥ ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।

विप्राः-अस्त्वक्षतमरिष्टं च ।

यजः- गन्धप्रदेयो देवानामपत्यः पुष्टिदश्च नः ।

गन्धद्वारां दुराधर्षामिति मन्त्रेण भक्तितः ॥ गन्धाः पान्तु,

विप्राः-ॐ अस्तु सौमङ्गलम् ॥

यजः- ॐ पुष्पाणि पान्तु । विप्राः- ॐ सौश्रियमस्तु ।

यजः- ॐ ताम्बूलानि पान्तु । विप्राः ॐ ऐश्वर्यमस्तु ।

यजः- ॐ पूगीफलानि पान्तु । विप्राः- ॐ बहुफलमस्तु ।

यजः- ॐ दक्षिणाः पान्तु । विप्राः- बहुदेयं चास्तु ।

यजः- दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या
विनयो वित्तं चास्तु ।

विप्राः-ॐ बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु ।

यजः- यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः

शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः

सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं

भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।

विप्राः- वाच्यताम् ।

(ब्राह्मणानां हस्तेष्वक्षतान् दद्यात्) अथाशीर्वादः-

(आशीर्वादात्मकान् इमान् मन्त्रान् पठेयुः)

विप्राः-ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्व्वजत्राः

। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्व्यशे महि देवहितं ष्वदायुः ॥

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत
 ॥ ॐ सविता त्वा सवाना थं सुवतामग्निर्गृहपतीना थं सोमो
 वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो
 मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥ ॐ न तद्रक्षा थं सि न
 पिशाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमज थं ह्येतत् । यो बिभर्तिदाक्षायण
 थं हिरण्य थं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः
 ॥ ॐ उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद् भूम्या ददे । उग्र थं
 शर्म महि श्रवः ॥

यजः-व्रत जप नियम तपः स्वाध्याय क्रतुदयादमदान
 विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ॥

विप्राः- समाहितमनसः स्मः ।

यजः- प्रसीदन्तु भवन्तः विप्राः- प्रसन्ना स्मः ।

(प्रथम पात्रे जलं पूर्येत्)

ॐ शान्तिरस्तुपुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु
 अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवं
 कर्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु
 पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसम्पदस्तु
 (भूमौ) अनिष्ट निरसनमस्तु यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं
 तद्दूरे प्रतिहत मस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु (पुनः पात्रे) उत्तरे कर्मणि
 निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तर महरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः
 क्रियाः शुभाः शोभनाःसम्पद्यन्ताम् । तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र
 सम्पदस्तु तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नाधिदेवताः
 प्रीयन्ताम् तिथिकरणे सुमुहूर्ते सुनक्षत्रे सुग्रहे सुलग्ने सुदैवते
 प्रीयेताम् दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः
 प्रीयन्ताम् इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् वसिष्ठपुरोगा
 ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्
 अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् ऋषयः छन्दासाचार्या

वेदाः यज्ञाश्च प्रीयन्ताम् विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः
 प्रीयन्ताम् ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् आदित्यपुरोगाः
 सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम् ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्
 श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम् भगवती
 कात्यायनी प्रीयताम् भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् भगवती
 ऋद्धिकरी प्रीयताम् भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् भगवती
 सिद्धिकरी प्रीयताम् भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् भगवती
 तुष्टिकरी प्रीयताम् भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्
 भगवान् स्वामी महासेनः सपत्नीकः ससुतः सपार्षदः
 सर्वस्थानगतः प्रीयताम् हरिहरहिरण्यगर्भाः प्रीयन्ताम्
 सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्
 सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् (भूमौ) हताश्च ब्रह्मद्विषः
 हताश्च परिपन्थिनः हताश्चास्यकर्मणो विघ्नकर्तारः शत्रवः
 पराभवं यान्तु शाम्यन्तु घोराणि शाम्यन्तु पापानि शाम्यन्तु
 ईतयः शुभानि वर्द्धन्ताम् ॥

(पुनः प्रथम पात्रे)

शिवा आपः सन्तु शिवा ऋतवः सन्तु शिवा अग्रयः सन्तु
 शिवा आहुतयः सन्तु शिवा ओषधयः सन्तु शिवा वनस्पतयः
 सन्तु शिवा अतिथयः सन्तु अहोरात्रे शिवे स्याताम्
 ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो
 नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पन्ताम् ॥
 शुक्राङ्गारक बुध बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम सहिताः
 आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम् । विप्राः ॐ अस्तु
 यजः- ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम् ॐ भगवान् पर्जन्यः
 प्रीयताम् ॐ भगवान् स्वामी महासेन प्रीयताम्
 याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु प्रातः
 सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु एतत् कल्याणयुक्तं पुण्यं

पुण्याहं वाचयिष्ये ।

विप्राः- वाच्यताम्

यजः- ब्राह्मं पुण्यमहर्ष्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारणम् ।

वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥१॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य
अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः- ॐ पुण्याहम् ॐ पुण्याहम् ॐ पुण्याहम् ।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु विश्वा
भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥

यजः- पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम् ।

ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥२॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य
अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः- ॐ कल्याणम् ॐ कल्याणम् ॐ कल्याणम् ॥

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमा वदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्याथं
शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै
दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृद्धयतामुप मादो नमतु ॥

यजः- सागरस्य तु या ऋद्धि (वृद्धि) र्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।

सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥३॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य
अमुक कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। ।

विप्राः- ॐ ऋद्धयताम् । ॐ ऋद्धयताम् । ॐ ऋद्धयताम् ॥

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम । दिवं पृथिव्याऽ
अध्यारुहामाऽ विदाम देवान्स्वर्ज्योतिः ॥

यजः- स्वस्तिस्तुयाऽ विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा ।

विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥४॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य माणस्य
अमुक कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्राः-ॐ स्वस्ति ॐ स्वस्ति ॐ स्वस्ति ॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजः-मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा ।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥५॥

विप्राः-ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः ।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

यजः-शिव गौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सा ऽस्तु सद्गनि ॥६॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्य माणस्य अमुक कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो
ब्रुवन्तु।

विप्राः-ॐ अस्तु श्रीः । ॐ अस्तु श्रीः । ॐ
अस्तु श्रीः ॥

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशूनाथं रूपमन्नस्य
रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

यजः-प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ।

भगवान् शाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वतः ॥७॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य
माणस्य अमुक कर्मणः भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् ।

विप्राः-ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् (इति त्रिः)

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयथं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

यजः-आयुष्मते स्वस्ति मते यजमानाय दाशुषे ।

क्रियेरत्राशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥८॥

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोगृहे ।

एकलिङ्गे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ॥९॥

भो ब्राह्मणाः मम गृहे अस्य.....कर्मणः आयुष्मते स्वस्तिं भवन्तो
ब्रुवन्तु ।

विप्राः-ॐ आयुष्मते स्वस्ति (इति त्रिः) (तिलकं कुर्यात्)

यजमानस्य मस्तकोपरि अभिषेकं कुर्यात्:-

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान ऽऊर्जेदधातन ॥ महेरणाय चक्षसे

॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्यभाजयते हनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥

तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिञ्चथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः

शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं

शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ इति अभिषेकः ॥

अथ आशीर्वादः-

ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव । षड्भद्रं तन्नऽ आसुवा ॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।

शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥१॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।

ब्रह्मवक्त्रे सदा नित्यं निघ्नन्तु तव शत्रवान् ॥२॥

अक्षतान्विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः ।

चत्वारि तेषां वर्द्धन्ते आयुः मेधा यशो बलम् ॥३॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ।

धान्यं धनं बहुपशुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥

आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैव च ।

आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ने ॥

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोवाजि हस्ति धनधान्य
समृद्धिरस्तु ।

ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु रिपुक्षयोस्तु वंशे सदैव भवताम्
हरिभक्तिरस्तु ॥

ॐ अद्यः-कृतैतत्पुण्याह वाचन कर्मणः साङ्गता
सिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णं फल प्राप्त्यर्थं च पुण्याह
वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां
दक्षिणां विभज्य दातुमह मुत्सृजे।

अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट
ब्राह्मणानाम् वचनात् श्री महागणपति प्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु
अस्तु परिपूर्णः ॥

ततो नालिकेरं तदुपरि कटि निबद्ध पूगीफलं धृत्वा,
प्रार्थनाः-ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः ।

देवानाम् चैव दातारः पातारः सर्व देहिनाम् ॥

जप यज्ञैस्तथा होमैदनैश्चविविधै शुभैः।

देवानाञ्च पितृणाञ्च तृप्त्यर्थं याचकाः स्मृता ॥

येषान्देहे स्थिता देवा पावयन्ति जगत्त्रयम् ।

ते मां रक्षन्तु सततं जपयज्ञे व्यवस्थिताः ॥

अक्रोधनाः शौच पराः सततं ब्रह्मचारिणः ।

जप ध्यानपरानित्यं प्रसन्नाः सन्तु सर्वदा ॥

माश्लेष भाषणाः सन्तु मासन्तु पर निन्दकाः ।

ममाप्येते हि नियमाः भवन्तु सततं द्विजाः ॥

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया ।

सुप्रसादं प्रकर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम् ॥



➔ ॥ यज्ञ रक्षा विधान ॥ ⚡

ततो रक्षासामग्रीं गृहीत्वा ॥ तद्यथा ॥

यवान्कुशांस्तथा दूर्वा सर्षपान्गंध संयुतान् । गोमयं दधिसंयुक्तं
कारयेत्ताम्रभाजने ॥ तद्भाजनं करपुटे धृत्वा मंत्रान् पठेत् ॥
(अभिमन्त्रित करे)

गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ।

विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥

स्थान क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरं ।

धरणी गर्भ संभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥

दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ।

राहुकेतुं नमस्कृत्य यज्ञारंभे विशेषतः ॥

शक्राद्या देवताः सर्वा मुनीश्च कथयाम्यहम् ।

गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनि सत्तमम् ॥

वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम् ।

व्यासं कविं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदं ॥

सर्वे नमस्कृतास्ते मे यज्ञं रक्षंतु तत्पराः ॥ रक्षो हृषी ० २० पृष्ठे

गौरसर्षपान् विकीरयेत् ॥ (दसौ दिशाओं में पीली सरसों छोड़े)

पूर्वे रक्षतु गोविन्दः आग्नेयां गरुडध्वजः ।

याम्ये रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋते ॥

केशवो वारुणीं रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ।

उत्तरं श्रीधरो रक्षेदीशाने च गदाधरः ॥

ऊर्ध्वं गोवर्धनोरक्षेद्भरायां च त्रिविक्रमः ।

एवं दशदिशोरक्षेद्वासुदेव जनार्दनः ॥

यज्ञाग्रे रक्षकः शंखः पृष्ठे पद्मं हि रक्षतु ।

वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनः ॥

उपेन्द्रः पातु ब्रह्माणं आचार्यं पातु वामनः ।

अच्युतोऽवतु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥

कृष्णो रक्षतु सामाख्यमथर्वाणं च माधवः ।

विप्रान्चोपदृष्टान्तान् सदा दामोदरोऽवतु ॥

यजमानं सपत्नीकं पुंडरीकाक्षश्च रक्षतु ॥

अथ भूतोत्सादनं ॥ तत्र मंत्रौः-

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य देवताः । स्थानंत्यक्त्वातु
सर्वत्र यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ अपक्रामंतु भूतानि पिशाचाः सर्वतो
दिशं । सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभेत् ॥

ततो मंत्रवत्पंच गव्यं संपाद्य ॥ गायत्र्या गोमूत्रं ॥ गंधद्वारेति गोमयं
॥ आप्यायस्वेति क्षीरं ॥ दधिक्राव्येति दधि ॥ घृतंमिमिक्षेति
घृतं ॥ आपोहिष्टेति कुशोदकं ॥ प्रणवेन यज्ञियकाष्ठेन
निर्मथ्यालोढ्यश्च ॥ प्रणवेनाष्टवारमभिमंत्र्य ॥ आपोहिष्टेति
यागभूमिं सर्वतश्च संप्रोक्षयेत् ॥ पञ्चगव्यमात्रा ॥ (पलो में)
गौमूत्र-१६, गौमय-३२, पय-१२, दधि-२४, गौघृत-१६ ॥

ॐ ॥ कुण्डपूजनम् ॥ ॐ

आचार्यः-आचार्यानुज्ञयाकश्चिद्विप्रः कुण्डपश्चिमतः

उपविशेत् ॥ पुष्पांजलिं गृहीत्वा स्वस्तिनइन्द्रेति वेद्युपरि

क्षिपेत् ॥ देवा आयांतु ॥ यातुधानाअपयांतु ॥ विष्णो देवयजनं
रक्षस्व ॥

संकल्पः-तत्सदद्यादि-अमुक यागाख्ये अग्निस्थापनं कर्मणि
अंगतया सम्मार्जन, मेखला योनिकंठनाभिप्रभृति देवतानां
पूजनपूर्वकं पञ्चभूसंस्कारादि अग्नि स्थापनं पूजनं च करिष्ये ॥

कुशोदकेन कुण्डं संप्रोक्षयेत्:-

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान ऽ ऊर्जेदधातन ॥ महेरणाय चक्षसे
॥ यो वः-शिवतमो रसस्तस्यभाजयते हनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥

तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥

ततो हस्ते पुष्पाण्यादाय कुण्डं स्पृष्ट्वा आवाहयेत् ॥

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम् ॥

शरीरं यच्चते दिव्यमग्रधिष्ठानमद्भुतम् ॥

भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः । पुष्पाणि कुण्डोपरि निक्षिपेत् ॥

प्रार्थनाः-

ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुंडाङ्गे याश्च देवताः ।

ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं मुदान्विताः ॥

हे कुण्ड तव रूपं तु रचितं विश्वकर्मणा ।

अस्माकं वाञ्छितां सिद्धिं यज्ञसिद्धिं ददस्व च ॥

कुण्डमध्ये विश्वकर्मण पूजनम्:- ॐ विश्वकर्मन् हविषा वद्धिनेन

त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् । तस्मै विशां समनमन्त पूर्वोरयमुग्रो

विहव्यो यथासत् । उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मणऽ

एषते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ।

विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ सर्वोपचारार्थं

गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

प्रार्थयेत्:- अज्ञानतो ज्ञानतो वापि दोषा ये खननोद्भवाः ।

नाशयत्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन् नमोऽस्तुते ॥

१-मेखलापूजनम् प्रथम श्वेतवर्ण मेखलायां:- ॐ इदं विष्णु

र्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम् । समूढमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः । विष्णुमावाहयामि स्थापयामि

॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

२-मध्यरक्तवर्णमेखलायाम्:- ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः

सुरुचोव्वेनऽ आवः । सबुध्या ऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः सतश्च

योनिमसतश्चव्विवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ।

ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि

समर्पयामि ॥

३-तृतीयकृष्णवर्ण मेखलायां:- ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोतइषवे

नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः ।

रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

४-योनिपूजनम्:-प्राक् योन्यां गौरीं पूजयेत्:-ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः । गौरीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि । मात्वा हि ठं सीन्मामाहिठं सीः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः योन्यै नमः । योनिमावाहयामि स्थापयामि ॥ योन्युपरि दक्षिणे गोलार्धे-सूर्याय नमः । उत्तरगोलार्धे चन्द्रमसे नमः । सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

प्रार्थना:-सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः ।

चतुरशीतिलक्षाणि पत्रगाद्या सरीसृपा ॥

पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि ।

योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुकाः ॥

योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी ।

कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः ॥

५-कण्ठपूजनम्:-ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवथं रुद्राऽउपश्रिताः । तेषाथं सहस्रयो जनेव धन्वानितन्मसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठेरुद्राय नमः । रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

प्रार्थना:-कण्ठ मंगलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः ।

परितोमेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा ॥

६-नाभिपूजनम्:-ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽ पचितिर्भसत् । आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः । जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यै नमः । नाभिं आवाहयामि स्थापयामि ॥

सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

प्रार्थनाः- नाभे त्वं कुंडमध्ये तु देवैः सह प्रतिष्ठिता ।

अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव ॥

कुंडमध्ये नैर्ऋत्य कोणे वास्तुपूजनम्:- ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी
ह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रतितत्रो जुषस्वशत्रो
अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषाय नमः
। वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि ॥ सर्वोपचारार्थं
गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

प्रार्थनाः- वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव ।

शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वकामान्प्रयच्छ मे ॥

कुण्डपुरतः एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं संस्थाप्य बलिदानं
कुर्यात् ॥

हस्ते जलं गृहीत्वा:- ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषाय नमः अमुं
दध्योदनबलिं समर्पयामि ॥

अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन वास्तुपुरुषः प्रीयतां न मम ॥

❖❖❖ ॥ कुशकाण्डिका ॥ ❖❖❖

संकल्पः- अत्राद्य. अमुक गोत्रस्य यजमानस्य अमुक कर्मागतभूतं
अस्मिन्स्थंडिले पंचभूसंस्कार पूर्वकमग्नि स्थापनं करिष्ये ॥

त्रिभिर्द्वर्भैः परिसमुह्य ३ तान्कुशनैशान्यां क्षिप्त्वा ॥ गोमयेनोपलिप्य
३ ॥ स्रुवेणोल्लिख्य ३ मध्ये प्रदेशमात्रमुत्तरोत्तर क्रमेण स्रुवमूलेन

त्रिरुल्लिख्य ॥ उल्लेखन क्रमेणोद्धृत्य दक्षिणानामिकांगुष्ठाभ्यां
ईशान्यां क्षिपेत् ॥ कुशोदकेनाभ्युक्ष्य ३ ॥ सौभाग्यवत्या काँस्यपात्र

द्वय संपुटितेन तमग्निमानीयमात्माभिमुखेअग्रिकोणे प्रतिष्ठाप्य
॥ तस्मादाचार्यः हुँ फट् इति मंत्रेण क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यां क्षित्वा

तस्योपरि अक्षतान् विकीरयेत् ॥ आच्छादनं दूरीकृत्य ॥
आत्माभिमुखमग्निं स्थापयेत् ॥

ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्य वाहमुपब्रुवे । देवाँ २॥ आ सादयादिह
॥ ॐ आवो देवासऽईमहे वामं प्रयत्य ध्वरे । आवो देवास ऽ

आशिषो यज्ञियासो हवामहे ॥ इत्यग्निमुपसमाधाय ॥
 अथावाहनं ॥ रुद्र तेजस समुद्धृतं द्विमूर्द्धनिं द्विनासिकं । षण्नेत्रं
 च चतुः श्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम् ॥ याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे
 त्रिहस्तकम् । स्रुवं स्रुचिं च शक्तिं च अक्षमालां च दक्षिणे ॥
 तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं तु वामके । बिभ्रंतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं
 सप्तजिह्वकम् ॥ दक्षिणं च चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वमुत्तरं मुखम् ।
 द्वात्रिंशत्कोटिमूर्त्याख्यं द्विपंचाशत्कलायुतम् ॥ स्वाहा स्वधा
 वषट्कारैरंकितं मेषवाहनम् । रक्तमाल्यांबरधरं रक्तपद्मासन
 स्थितम् ॥ रौद्रं त्वां शिवनामानि वह्निमावाहयाम्यहं । त्वं मुखं
 सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते ॥ आगच्छ भगवन्नग्रे यज्ञेस्मिन्सन्निधो
 भव ॥

शान्तिके वरदवैश्वानराय नमः ॥

इत्यावाह्य संपूज्य ॥ अग्रेर्दक्षिणतः परिस्तरण भूमिमतिक्रम्य
 शुद्धमासनं यज्ञियवृक्षोद्धृतं पीठं वा निधाय ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनम्
 उत्तरतः प्रणीतासनम् ॥ तत्र ब्रह्मोपवेशनम् ॥

ब्रह्मापूजनम्:- ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे
 राजन्यः शूर ऽ इषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्धी
 धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो
 युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो
 वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
 ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽ आवः । सबुध्
 ग्रा ऽ उपमा ऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॥
 सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत्पुष्पाणि समर्पयामि ॥

यावत्कर्मसमाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव ॥ ब्रह्माभवामीति वदेत् ॥
 परिस्तरण भूमिमतिक्रम्य कुशैरासन द्वयं कल्पयित्वा ॥

(तत्र कुशानामग्रभागस्तु वटोस्तु मुखमीरितं ॥ मूलंतु
 पुच्छभागस्यादेवं कात्यायनोऽब्रवीत् ॥ ऊर्ध्वकेशो भवेत् ब्रह्मा

लंबकेशस्तु विष्टरः ॥ पंचाशतो भवेत् ब्रह्म तदर्द्धेनतु विष्टरः) अग्रेरुत्तरतः चमसं सव्य हस्ते कृत्वा दक्षिणहस्तेनोद्धृत्य पात्रांतरस्थोदकेन ॐ प्रणय ३ पूरयित्वा ब्रह्मणोमुखमवलोक्य पश्चिमासने निधायालभ्य पूर्वासने स्थापयेत् ॥

अथ परिस्तरणं :- बर्हिमुष्टिमादाय ईशानत आरभ्योदक पर्यंतं अग्रेः परिस्तरणं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ उपमूललूतबर्हिषां मुष्टि चतुर्थभागेन आग्नेयादीशानांतं प्राच्यां (पूर्वे) ॥१॥ तृतीयभागेन ब्रह्मणोग्नि पर्यंतं दक्षिणस्यां (दक्षिण) ॥२॥ द्वितीय भागेन नैऋत्याद्वायव्यंतं पश्चिमायां (पश्चिम) ॥३॥ शेषभागेन अग्रितः प्रणीता पर्यंतमुत्तरस्यां (उत्तर) ॥ ततोर्थवदासाद्य ॥ आसादनमुपयोग्य माना नामग्रेरुत्तरतः प्रणीता पश्चिमे प्राक्संस्थं उदक्संस्थं वा अग्रे पश्चाद्वा ॥ तद्यथा

पात्रासादनम्:- पवित्रच्छेदनार्थं कुश त्रयं ॥ पवित्रार्थमनंतर गर्भिणं साग्रं कुशपवित्र द्वयं ॥ प्रोक्षणीपात्रं ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्थाली ॥ सन्मार्जन कुशाः पंच ॥ उपयमन कुशाः सप्त ॥ प्रादेशमिति पालाश समिध त्रयः ॥ स्रुवः खादिरो हस्तमात्रः ॥ स्रुक्बाहुमात्रा ॥ आज्यं गव्यं ॥ दुग्धं च ॥ त्रिः प्रक्षालितास्तंडुलाः ॥ ब्रह्म दक्षिणार्थं पूर्णपात्रं ॥ होतृदक्षिणार्थं वस्त्रयुग्मं ॥ तिलयवग्रहसमिधाः ॥ सुवर्णकांस्यादीन्युप कल्पयेत् ॥

पवित्रकरणम्:- ततो वाग्यतो आसादित पवित्रच्छेदन कुशपत्र त्रयमादाय दक्षिणहस्ते गृहीत्वा वामहस्तेन कुशपत्र द्वयमादाया ॥ पवित्रच्छेदन कुशैरग्रतः प्रादेशमात्रं विहाय द्वयोरुपरि त्रीन्निधाय कुशद्वयमूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणी कृत्य छित्वात्तानपास्य पवित्राभ्यां प्रणीतोदकमुत्पूर्य ॥ प्रोक्षणीपात्रं प्रणीता सन्निधौ निधाय सपवित्रेण करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षण्यं निधाय ॥ पात्रांतरेण वा निक्षिपेत् ॥

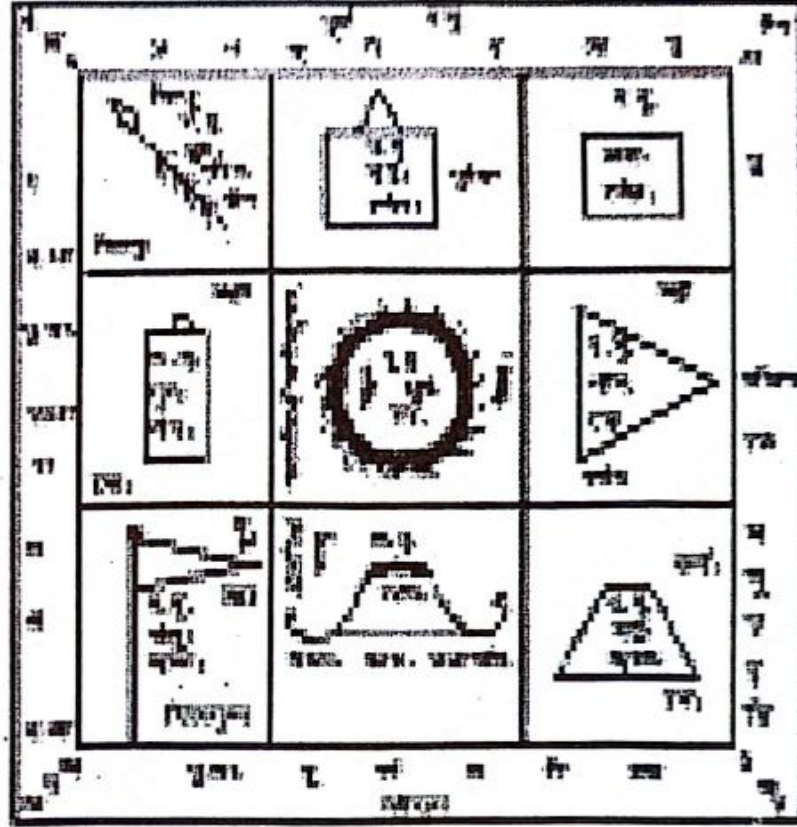
उदगग्रे पवित्रे सव्यहस्तयोरंगुष्ठानामिकाग्राभ्याम् तयोरादाय तन्मध्येन प्रोक्षण्युदकं भूमौ त्रिः क्षिप्त्वा पवित्रे प्रोक्षण्यां निधाय॥ तत्पात्रं दक्षिणहस्तेनादाय वामे निधाय दक्षिणहस्तनामिकांगुष्ठाभ्यां जलं किञ्चिदूर्ध्वमुत्क्षिप्य प्रणीता जलेन प्रोक्षणीरभिषिञ्च्य ॥ तज्जलेन यथा सादितं द्रव्यं सकृत्प्रोक्ष्य ॥ यथा ॥ आज्यस्थाल्यां प्रोक्षणं ॥ चरुस्थाल्यां प्रोक्षणं ॥ संमार्गकुशानां प्रोक्षणं ॥ उपयमन कुशानां प्रोक्षणं ॥ समिधानां प्रोक्षणं ॥ स्रुवस्य प्रोक्षणं ॥ स्रुचेः प्रोक्षणं ॥ तंडुलानां प्रोक्षणं ॥ पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणं ॥ सर्वेषां प्रोक्षणं॥ पवित्र शेषजलसहित पात्रं प्रणीताग्रयोरंतरे निधाय ॥ आज्यस्थाल्यामाज्यंनिरूप्य ॥ चरुस्थाल्यां तंडुलाः प्रक्षिप्य ॥ प्रणीतोदकेन तां स्त्रिः प्रोक्ष्य ॥ त्रिः प्रक्षाल्य प्रणीतोदकं दुग्धं च प्रक्षिप्य ॥ स्वयं चरुं ब्रह्मणाचाज्यं गृहीत्वाऽग्निपूर्वेणानीय दक्षिणत आज्यं उत्तरतः पायस चरुं श्रपणार्थं युगपदग्रौ निधाय॥ उल्मुकं सहविः काग्रेः प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा तत्रैव क्षिप्त्वा ॥ हस्तस्येतरथावृत्तिः ॥ उदकोपस्पर्शः ॥

★ ॥ अत्रावसरे ग्रहस्थापनं कुर्यात् ॥ ★

ततो ग्रहपीठे गत्वा तत्र शुक्लवस्त्रमास्तर्य ॥ तदुपरि तंडुलरेखया पद्माकारकं नवकोष्टकं मंडलं शान्तिपाठेन कुर्यात् ॥ सुवर्णपटैर्वा लेख्या गंधैर्मण्डलिकेशुभा ॥ अथवाक्षत पुंजेषु शक्त्या वित्तानुसारतः॥ अथ ग्रहाणां स्थान लक्षणं ॥ मध्येतु भास्करं विंद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे । दक्षिणे लोहितं विंद्याद्बुधं पूर्वोत्तरेणतु ॥ उत्तरेतु गुरुं विंद्यात्पूर्वैवतु भार्गवम् । पश्चिमेतु शनिं विंद्याद्ब्राह्मं दक्षिणपश्चिमे॥ पश्चिमोत्तरतः केतुं स्थाप्यावै शुक्लतंडुलैः । ग्रहाणां वै मण्डलानि कुंकुमेन समालिखेत् ॥

अथ स्थान प्रमाणं ॥ द्वादशांगुल सूर्यस्य सोमस्य द्विगुणं भवेत्॥

त्रिरंगुलं तु भौमस्य बुधस्य चतुरंगुलम् ॥ षडंगुलं गुरोः कृत्वा
नवांगुलं तु



भार्गवे । षडंगुलं शनेः कृत्वा राहोर्विशांगुलैरिदं ॥ नवांगुलं तु
केतूनां एते ग्रह प्रमाणतः ॥ अथ वर्णानि ॥ आदित्यांगारकौ
रक्तौ श्वेतौ शुक्र निशाकरौ । पीतो गुरु मुदग् बुधो शेषा कृष्ण
ग्रहा स्मृताः ॥ अथाकाराः ॥ वृत्तमण्डलमादित्ये चतुरस्रं निशाकरे।
महिपुत्रे त्रिकोणस्याद्बुधेवै बाण सन्निभम् ॥ गुरवेपट्टिशाकारं पंचकोणं
तु भार्गवे । धनुषाकृति मंदेच शूर्पाकारंतु राहवे ॥ केतूनां तु
ध्वजाकारं मंडलानि क्रमेणतु ॥

अथ मुखाः ॥ शुक्राको प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ ।
प्रत्यङ्मुखः शनिः सोमः शेषा दक्षिणतो मुखाः ॥ अतः जातयः॥
आदित्य प्रमुखाः सर्वे वर्णैरेभिः प्रशीतया ॥ ब्राह्मणौ भार्गवाचार्यौ

क्षत्रियौ रवि लोहितौ ॥ वैश्यौ सोमबुधौ ज्ञेयौ शेषाः शूद्राः प्रकीर्तिताः
॥ मुष्टिमात्रास्तथा श्वेता अभग्राश्चैव शालिजाः ॥ ग्रहाणां स्थापने
प्रोक्ता अर्द्धार्द्धं प्रति दैवतं ॥

ॐकारस्य ब्रह्माऋषिः परमात्मा देवता गायत्रीछन्दः व्याहृतीनां
विश्वामित्रजमदग्निर्भरद्वाज भृगव ऋषयः अग्निवायुः सूर्योदेवता
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसिसूर्याद्यावाहने विनियोगः ॥

१-सूर्यः-

(१) उदयंतं महातेजं तेजस्वी चाभय प्रदं । दुर्निरीक्षं ख गमनं
सूर्यमावाहयाम्यहं ॥

भो भो सूर्यग्रहाध्यक्ष कलिंग विषयोद्भव । रक्त काश्यपगोत्रेय
द्विभुजः पद्मलांछन ॥ सप्ताश्व वाहनागच्छ पद्ममध्ये वर प्रद ॥
अग्निंदूतेति मन्त्रेण रुद्ररूपी प्रतिष्ठितः ॥

(२) ॐ अग्निंदूतं पुरोदधे हव्यवा हमुपब्रुवे । देवां २ आसादयादिहा ॥

(३) ॐ आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयत्रमृतमर्त्यच । हिरण्ययेन
सवितारथेना देवोषाति भुवनानि पश्यन् ॥ मध्ये कलिंगदेशोद्भव
काश्यप सगोत्र सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ सूर्यायनमः ।
सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-चन्द्रः-(१) द्विजराजं सुरश्रेष्ठं तारापत्यं त्रिनन्दनम् । औषधीनां
पतिं चैव सोममावाहयाम्यहं ॥

अहो चन्द्र जगत्प्राण यमुना विषयोद्भव । सुश्वेतात्रेय गोत्रेय
गदापाणि वरप्रद ॥ दशाश्व वाहनायाहि उमारूपी समाविशः
। हुताशन दले देव मंत्रेणाप्स्वग्निनार्चितः ॥

(२) ॐ अप्स्वग्रे सधिष्टवसौषधीरनुरुध्यसे । गर्भसंजायसे पुनः ॥

(३) ॐ इमन्देवाऽसपत्कनथं सुबध्वम्महते क्षत्रायमहते
ज्ज्यैष्ठ्यायमहते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रमुष्यै
पुत्रमस्यै व्विशऽ एष वोमी राजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणानाथं राजा ॥

आग्नेम्यां यमुनातीरोद्भवात्रेय सगोत्र चन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ
चन्द्रायनमः । चन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-भौमः-(१)निर्जिता यज्ञबुद्धिं च यज्ञमाश्रित् देवताः ।
ऋषिभिस्तूयमानंतु भौममावाहयाम्यहं ॥

उज्जयिन्यां समुत्पन्नो भो भो भौम चतुर्भुज । भारद्वाज कुलेजात
शूलशक्ति गदाधर ॥ वरदो मेषमारूढ स्कंदप्राय तडित्प्रभो ।
स्योनापृथिवीति मन्त्रेण दलेयाम्ये प्रतिष्ठितः ॥

(२)ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म
सप्रथाः ॥

(३)ॐ अग्रिर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः-पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाथं
रेताथं सिजिन्वति ॥ दक्षिणे अवन्तीदेशोद्भव भारद्वाज सगोत्र भौम
इहागच्छ इहतिष्ठ भौमायनमः । भौममावाहयामि स्थापयामि ॥

४-बुधः-(१)बुधो बुद्धिप्रदातारं सौम्यदृष्टिं समाविषम् । यजमान
हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम् ॥४॥

अहो चन्द्रसुत श्रीमान्मागधायां समुद्भव । अत्रिगोत्रश्चतुर्बाहो
खड्ग खेटक धारक ॥ गदा वरदसिंहस्थ सुवर्णाभ समाविश ।
कृष्णवर्दि सपत्रे च इदं विष्णु प्रपूजयेत् ॥

(२)ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपाथं
सुरेस्वाहा ॥

(३)ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्ट्यापूर्ते सथं सृजेथामयञ्च
॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽ अद्ध्युत्त रस्मिन्विश्वे देवावजमानश्च
सीदत ॥ ईशान्यां मगधदेशोद्भवात्रेय सगोत्र बुध इहागच्छ इहतिष्ठ
बुधायनमः । बुधमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-गुरुः-(१)बुद्ध्यायस्य समोनान्यो देवानांचपुरोहितम् । त्रातारं
सर्वदेवानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥ अहो वाचस्पते पीत संजात
सिंधुमंडले । एह्यांगिरसगोत्रेय हयारूढ चतुर्भुज ॥ दंडाक्षसूत्र

वरद कमंडलु धर प्रभो । महाइंद्रेति संपूज्यो विधिवच्चोत्तरे दले ॥

(२) ॐमहांर इंद्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्मयच्छतु । हन्तुपाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि ॥

(३) ॐबृहस्पते ऽअतियदर्वोऽ अर्हाद्वियुमद्विभाति कक्रतु मज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजा ततदस्मा सुद्वविणन्धेहि चित्रम् ॥ उत्तरे सिंधुदेशोद्भवांगिरस गोत्र गुरो इहागच्छ इहतिष्ठ गुरवेनमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-शुक्रः-(१)सोमतुल्योदिति प्राज्ञदानवानां पुरोहितम् । त्रातारं सर्वदैत्यानां भृगुमावाहयाम्यहम् ॥ भो भो भोजकटेजात शुक्र श्वेताश्ववाहनः । समागच्छ चतुर्बाहो भृगुगोत्र विभूषण ॥ परिघाक्षा बलिं हस्त कमंडलुधर प्रभो । शक्रवत्पूर्वपत्रेच शुक्रज्योतिश्च पूजितः ॥

(२) ॐशुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च । शुक्रश्चऋतपाश्चात्यथं हाः ॥

(३) ॐअत्रात्परिस्त्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानर्तं शुक्रक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रिय मिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥ पूर्वे भोजकट देशोद्भव भार्गव सगोत्र शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ शुक्रायनमः । शुक्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

७-शनिः-(१)कृष्णाङ्गं कृष्णवर्णं च कृष्णाजिनधरं तथा । शूरमंदगतिं चैव शनिमावाहयाम्यहम् ॥

अहो सौराष्ट्र संजात छायापुत्र चतुर्भुज । कृष्णवर्णार्क गोत्रेय बाणहस्त धनुर्धर ॥ त्रिशूलीच समागच्छ वरदो गृध्रवाहन । प्रजापतेति संपूज्यो विधिवत्पश्चिमे दले ॥

(२) ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तत्रोऽस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयथं
स्याम पतयो रयीणां ॥

(३) ॐ शत्रोदेवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तुपीतये ॥ शंख्योरभिस्रवन्तुनः॥
पश्चिमे सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यप सगोत्र शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ
शनिश्चराय नमः । शनिश्चरमावाहयामि स्थापयामि ॥

८-राहुः-(१) रक्ताङ्गं रक्तवर्णं च रक्ताजिनधरं तथा । सिंहिका
गर्भं संभूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥ ८ ॥

राहोर्बर्बके देशे संजाताकाय वर्जित । गोत्रेपैठीनसेह्येहि सिंहारूढ
वर प्रद ॥ कराल वदन श्रेष्ठ कालरूपांजन प्रभो । आयंगौरिति
मन्त्रेण पूज्यो नैऋत्य पत्रके ॥

(२) ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमी दसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयंस्वः ॥

(३) ॐ कयानश्चित्रऽ आभुवदूती सदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्टया
वृता ॥ नैऋत्यां राठीनापुरोद्भव पैठीन सगोत्र राहो इहागच्छ इहतिष्ठ
राहवे नमः । राहुमावाहयामि स्थापयामि ॥

९-केतुः-(१) एह्येहि भगवन्केतो व्योमचारि महामते । ग्रहैस्तु
विविधैः सर्वैः केतुमावाहयाम्यहम् ॥ केतवो विविधाकारा मलयाद्रि
समुद्भवाः । द्विभुजा जैमिनी गोत्रा गदाहस्त वरप्रदा ॥

आगच्छन्तु कपोतस्थाः शोभने मारुते दले । ब्रह्मयज्ञान मन्त्रेण
चित्रगुप्तमिवार्चयेत् ॥

(२) ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽ आवः ।

सबुध्याऽ उपमाऽ अस्यविष्टाः सतश्च षोनिमसतश्चविवः ॥

(३) ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्षाऽ अपेशसे ॥ समुषद्भि
रजायथाः ॥

वायव्यां अंतर्वेदि समुद्भवा जैमिन सगोत्रा केतवः
इहागच्छंत्वितिष्ठंतु केतुभ्यो नमः केतु इहागच्छ इतिष्ठ केतवे
नमः । केतुमावाहयामि स्थापयामि ॥

प्रार्थनाः-ॐग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां
विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्जठं समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

ॐब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमिसुतो बुधश्च
। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु
॥ सूर्यः शौर्य मथेन्दुरूच्च पदवी सन्मङ्गलं मङ्गलः सद्बुद्धिं च
बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः । राहुर्बाहुबलं करोतु
सततं केतुः कुलस्योन्नतिं नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते
सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ॥ इति नवग्रह स्थापनं ॥

❖❖ ॥ अथाधिदेवानामावाहनम् :- ❖❖

तत्रैषानामानिः-शिवोगौरी तथा स्कंदो विष्णुब्रह्मापुरंदर ।

यमः कालश्चित्रगुप्तश्चाधिदेवा इमे स्मृताः ॥ अत्राधिदेवता
प्रत्यधिदेवता दक्षिण वाम पार्श्वे स्थाप्याः ॥ तद्यथा :-

१-शिवः-ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव
बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ सूर्यदक्षिणपार्श्वे शिव इहागच्छ
इतिष्ठ शिवाय नमः ॥ शिवमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-उमाः-ॐश्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कया बहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मइषाण
सर्वलोकंमइषाण ॥ चन्द्र दक्षिणपार्श्वे उमे इहागच्छ इतिष्ठ
उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि ॥

३-स्कंधः-ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा
पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं

ते ऽऽ अर्वन् ॥ भौम दक्षिणपार्श्वे स्कंद इहागच्छ इहतिष्ठ स्कंदाय नमः ॥ स्कंधं आवाहयामि स्थापयामि ॥

४-विष्णुः-ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्रज्रेस्थो विष्णोः स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ बुध दक्षिणपार्श्वे नारायण इहागच्छ इहतिष्ठ नारायणाय नमः ॥ नारायणं आवाहयामि स्थापयामि ॥

५-ब्रह्माः-ॐ आ ब्रह्मन्ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसीजायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योति व्याधी महारथो जायतांदोग्धी धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्षोषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ गुरोर्दक्षिणपार्श्वे ब्रह्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः ॥ ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ॥

६-इन्द्रः-ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँऽरप मृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः । उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा मरुत्वत ऽएषते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥ शुक्र दक्षिणपार्श्वे इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः ॥ इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि ॥

७-यमः-ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सथं स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥ शनि दक्षिणपार्श्वे यम इहागच्छ इहतिष्ठ यमाय नमः ॥ यमं आवाहयामि स्थापयामि ॥

८-कालः-ॐ कार्ष्णिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि । समापो अद्भिरगमत समोषधीभिरोषधीः ॥ राहु दक्षिणपार्श्वे काल इहागच्छ इहतिष्ठ कालाय नमः ॥ कालं आवाहयामि स्थापयामि ॥

९-चित्रगुप्तः-ॐ चित्रा वसोस्वस्तिते पारमशीय ॥ केतु दक्षिणपार्श्वे चित्रगुप्त इहागच्छ इहतिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः ॥

चित्रगुप्तं आवाहयामि स्थापयामि ॥१८॥ इत्यधिदेवतावाहनं ॥

अथ प्रत्यधिदेवानामावाहनम् :-

तेषांनामानि:- अग्निरापोमहीविष्णुरिन्द्र इन्द्राणिका तथा ।
प्रजापतिर्भुजंगाश्च ब्रह्मा प्रत्यधिदेवताः ॥ अथावाहनं :-

१-अग्निः-ॐ स नः पितेव सूनवेग्रे सूपायनो भव । सचस्वानः स्वस्तये ॥ सूर्य वामपार्श्वे अग्रे इहागच्छ इहतिष्ठ अग्रये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-अप (जल):-ॐ आपो अद्यान्वचारिषथं रसेन समसृक्षमहि । पयस्वा नग्रआगमंतं मा सथं सृजवर्चसा प्रजया च धनेन च ॥ चन्द्र वामपार्श्वे आप इहागच्छध्वं इहतिष्ठध्वम् अद्भ्यो नमः ॥ अपः आवाहयामि स्थापयामि ॥

३-पृथ्वी:-ॐ चिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद । परिचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवासीद ॥ भौमवामपार्श्वे पृथिवि इहागच्छ इहतिष्ठ पृथिव्यै नमः ॥ पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-विष्णुः-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्यपाथं सुरेस्वाहा ॥ ॐ बुधवामपार्श्वे विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवे नमः ॥ विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-इन्द्रः-ॐ इन्द्रआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरएतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयंतीनां मरुतो यंत्वग्रम् ॥ गुरु वामपार्श्वे इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः

इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-इन्द्राणी:-ॐ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानो भवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोनु वर्त्मानोऽभवन् । एवमिमं यजमानं दैवीश्चविशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥ शुक्र वामपार्श्वे इन्द्राणि इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राण्यै नमः ॥ इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि ॥

७-प्रजापतिः-ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव । अत्कामास्ते जुहुमस्तत्रो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता व्वयथं स्यामपतयोरयीणाथं स्वाहा ॥ शनि वामपार्श्वे प्रजापते इहागच्छ इहतिष्ठ प्रजापतये नमः । प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

८-सर्पः-ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवी मनु । ये ऽ अन्तरिक्षे षेदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ राहु वामपार्श्वे सर्पा इहागच्छत इहतिष्ठत सर्पेभ्योनमः । सर्पानावाहयामि स्थापयामि ॥

९-ब्रह्माः-ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽ आवः । सबुध्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॥ केतु वामपार्श्वे ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणेनमः । ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ इति प्रत्यधिदेवताः ॥

*** अथ गणपंचकानामावाहनम् :- ***

१-गणपतिः-ॐ गणानांत्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ शनिकेत्वोः पूर्वे गुरुसूर्ययोः पश्चिमे गणपति इहागच्छ इहतिष्ठ गणपतये नमः । गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-देवीः-ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ॥ गणेशादुत्तरे दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ दुर्गायै नमः । दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ॥

३-वायुः-ॐ वायोमेते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्सोमपीतये ॥ गणेशाद्वायव्यां वायो इहागच्छ इहतिष्ठ वायवे नमः । वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-आकाशः-ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसा पावानः पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश

5 उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ गणेश पश्चिमे आकाश इहागच्छ
इहतिष्ठ आकाशायनमः । अकाशमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-अश्विनीः-ॐ षावांकाशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ।
तयाबंजंमिमिक्षतम् ॥ गणेशात्पूर्वे अश्विनीकुमारौ इहागच्छतं
इहतिष्ठतं अश्विनीकुमाराभ्यां नमः । अश्विनीकुमारौ आवाहयामि
स्थापयामि ॥ इति पंचयज्ञ भूतात्मक लोकपालाः ॥

अथ पूर्वदितः अश्विन्यादि सप्त विंशतिनक्षत्राणि स्थापयेत्:-

१-अश्विनीः-ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्
। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्रायदधुरिन्द्रियम् ॥ अश्विनौ इहागच्छतं इहतिष्ठतं
अश्विन्यै नमः । अश्विनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-भरणीः-ॐ यमायत्वामखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे ॥ देवस्त्वा
सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सथं स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि
तपोसि ॥ यम इहागच्छ इहतिष्ठ यमाय नमः । यममावाहयामि
स्थापयामि ॥

३-कृत्तिकाः-ॐ अयमग्निः सहस्रिणो व्वाजस्य शतिनस्पतिः ।
मूर्द्धाकिवीरयीणाम् ॥ अग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ अग्रये नमः ।
अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-रोहिणीः-ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन
आवः । सबुध्याऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चविवः
॥ प्रजापते इहागच्छ इहतिष्ठ प्रजापतये नमः ।
प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-मृगशिराः-ॐ सोमो धेनुथं सोमो अर्वन्तमाशुथं सोमोवीरं
कर्मण्यं ददाति । सादन्यंविदत्थ्यथं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै
॥ सोम इहागच्छ इहतिष्ठ सोमाय नमः । सोममावाहयामि
स्थापयामि ॥

६-आर्द्राः-ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोतइषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ रुद्राय नमः । रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

७-पुनर्वसुः-ॐ अदितिद्यौरदितिरंतरिक्षमदिर्माता सपिता सपुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वं ॥ अदिते इहागच्छ इहतिष्ठ अदितये नमः । अदितिमावाहयामि स्थापयामि ॥ इति पूर्वे ॥ अथ दक्षिणे :-

८-पुष्यः-ॐ वाचस्पतये पवस्व वृष्णोऽ अथं शुभ्यांगभस्तिपूतः । देवो देवेभ्यः पवस्व येषां भागोसि ॥ बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः । बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

९-आश्लेषाः-ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु । ये अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ सर्पाः इहागच्छत इहतिष्ठत सर्पेभ्यो नमः । सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि ॥

१०-मघाः-ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ पितरः इहागच्छत इहतिष्ठत पितृभ्यो नमः पितृनावाहयामि स्थापयामि ॥

११-पूर्वाफाल्गुनीः-ॐ भगप्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः । भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ भग इहागच्छ इहतिष्ठ भगाय नमः । भगं आवाहयामि स्थापयामि ॥

१२-उत्तराफाल्गुनीः-ॐ दैव्या वध्वर्षू आगतथं रथेन सूर्षत्वचा । मध्वायज्ञथं समंजाथे ॥ अर्यमन् इहागच्छ इहतिष्ठ अर्यम्णे नमः । अर्यमाणमावाहयामि स्थापयामि ॥

१३-हस्तः-ॐ विबभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्द्धध
द्यज्ञपतावविहृतम् । वातजूतोषो अभिरक्षित्कमना प्रजाः
पुपोषपुरुधा विराजति ॥ सवित इहागच्छ इहतिष्ठ सवित्रे नमः
। सवितारमावाहयामि स्थापयामि ॥

१४-चित्राः-ॐ त्वष्टा तुरीपो अब्रुतऽ इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना ।
द्विपदा छन्दऽ इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः ॥ त्वष्ट इहागच्छ
इहतिष्ठ त्वष्ट्रे नमः । त्वष्टारमावाहयामि स्थापयामि ॥ इति
दक्षिणे ॥ अथ पश्चिमे :-

१५-स्वातिः-ॐ पीवो अत्रा रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति
नियुतामभिःश्रीः । ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि
चक्रुः ॥ वायो इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ वायवे नमः । वायुमावाहयामि
स्थापयामि ॥

१६-विशाखाः-ॐ इन्द्राग्नी आगतथं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्
। अस्य पातं धियेषिता । इन्द्राग्नि इहागच्छतं इहतिष्ठतं इन्द्राग्निभ्यां
नमः । इन्द्राग्नीमावाहयामि स्थापयामि ॥

१७-अनुराधाः-ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतथं
सपर्वत ॥ दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायशथं
शत ॥ मित्र इहागच्छ इहतिष्ठ मित्राय नमः । मित्रमावाहयामि
स्थापयामि ॥

१८-ज्येष्ठाः-ॐ सइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशी सथं स्रष्टा सयुध
इन्द्रो गणेन । सथं सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्धुग्राधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता
॥ पुरंदर इहागच्छ इहतिष्ठ पुरंदराय नमः । पुरंदरमावाहयामि
स्थापयामि ॥

१९-मूलः-ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्रिथं स्वे योनावभारुषा
। तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुञ्चतु
॥ निऋते इहागच्छ इहतिष्ठ निऋतये नमः । निऋतीतिमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२०-पूर्वाषाढा:-ॐ अपाघम किल्बिषमपा कृत्यामपो रपः ।
अपामार्ग त्वमस्मदपदुःस्वप्न्यथं सुव ॥ अप इहागच्छ इहतिष्ठ
अद्भ्यो नमः । अपः आवाहयामि स्थापयामि ॥

२१-उत्तराषाढा:-ॐ विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऽ ऊती विश्वे
भवन्त्वग्रयः समिद्धाः । विश्वे नो देवाऽ अवसागमन्तु विश्वमस्तु
द्रविणं वाजो अस्मे ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
विश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि ॥ ॥ इति पश्चिमे ॥

अथ उत्तरे :-

२२-अभिजित्:-ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि ।
धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः
। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

२३-श्रवणः:-ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्रज्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ विष्णो इहागच्छ
इहतिष्ठ विष्णवे नमः । विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥

२४-धनिष्ठा:-ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि
सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण
सुप्वा कामधुक्षः ॥ वसवः इहागच्छत इहतिष्ठत वसुभ्यो नमः ।
वसूनावाहयामि स्थापयामि ॥

२५-शतभिषा:-ॐ वरुणस्योत्तंभनसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी
स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि
वरुणस्यऋतसदनमासीद ॥ वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ वरुणाय
नमः । वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

२६-पूर्वाभाद्रपदः:-ॐ उतनोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽ एकपात्पृथिवी
समुद्रः । विश्वे देवाऽ ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता
ऽ अवन्तु ॥ अजैकपद इहागच्छ इहतिष्ठ अजैकपदाय नमः
। अजैकपदमावाहयामि स्थापयामि ॥

२७-उत्तराभाद्रपदः-ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते
अस्तुमामाहिष्ठं सीः । निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रास्योषाय
सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ अहिर्बुध्न्य इहागच्छ इहतिष्ठ
अहिर्बुध्न्याय नमः । अहिर्बुध्नमावाहयामि स्थापयामि ॥

२८-रेवतीः-ॐ पूषं तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन । स्तोतारस्त
इहस्मसि ॥ पूषन् इहागच्छ इहतिष्ठ पूष्णे नमः । पूष्णमावाहयामि
स्थापयामि ॥ इतिनक्षत्र देवताः ॥

१-योगाः-ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे । सखाय
ऽ इन्द्रमूतये ॥ मंडलाद्बहिरीशान्यां विष्कुंभादियोगानावाहयामि
स्थापयामि ॥

२-करणाः-ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं
पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाधं सस्तनूभिर्यशेम
हिदेवहितं यदायुः ॥ मंडलबहिराग्नेये बवादिकरणाः इहागच्छत
इहतिष्ठत करणेभ्यो नमः । करणानावाहयामि
स्थापयामि ॥

३-ध्रुवः-ॐ ध्रुवोसि ध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतने प्रजया
पशुभिर्भूयात् ॥ घृतेनद्यावा पृथिवी पूर्वथामिन्द्रस्यछदिरसि
विश्वजनस्य छाया ॥ आदित्यमंडले उत्तरे ध्रुव इहागच्छ इहतिष्ठ
ध्रुवाय नमः । ध्रुवमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-सरिताः-ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियंति सस्रोतसः । सरस्वतीतु
पंचधासो देशे भवत्सरित् ॥ सूर्यात्पश्चिमे शनिमंडले सरितः
इहागच्छत इहतिष्ठत सरिद्भ्यो नमः । सरितृन् आवाहयामि
स्थापयामि ॥

५-सप्तऋषयः-ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षंति
सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौ
सत्रसदौ च देवौ ॥ गुरुसूर्ययोर्मध्ये सप्तऋषयः इहागच्छत

इहतिष्ठत सप्तऋषिभ्यो नमः । सप्तऋषीनावाहयामि स्थापयामि ॥
 ६-सागराः-ॐ इमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय ।
 त्वामवस्युरा चके ॥ सूर्यात् पश्चिमे शनिमंडले सरितोधः
 सप्तसागराः इहागच्छत इहतिष्ठत सप्तसागरेभ्यो नमः ।
 सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि ॥

७-पर्वताः-ॐ प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिचऽ
 इयानाः । ताऽ आववृत्रन्न धरागुदक्ताऽ अहिर्बुध्न्यमनु रीयमाणाः
 ॥ विष्णो विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि
 ॥ पर्वता इहागच्छत इहतिष्ठत पर्वतेभ्यो नमः । पर्वतानावाहयामि
 स्थापयामि ॥

८-रैवंतः-ॐ जवोषस्ते वाजिन्निहितो गुहायः श्येनेपरीतो
 अचरच्चव्वाते । तेनो व्वाजिन्बलवान्बलेन वाजजिच्चभव
 समने च पारयिष्णुः । वाजिनो व्वाजजितोव्वाजथं सरिष्यंती
 बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत ॥ सूर्य पश्चिमे रैवंत इहागच्छ इहतिष्ठ
 रैवंताय नमः । रैवंतमावाहयामि स्थापयामि ॥

९-सुपर्णः-ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे
 पक्षौ । स्तोमऽ आत्मा छन्दाथं स्यङ्गानि यजूथंषि नाम । सामते
 तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोसि
 गरुत्मान्दिवं गच्छस्वः पत ॥ उत्तरे बुधमंडले गरुत्मन्निहागच्छ
 इहतिष्ठ गरुत्मते नमः । गरुडमावाहयामि स्थापयामि ॥

अत्रावसरे ग्रहमंडलादीशानकोणे रुद्रकलश स्थापनं :-

भूरसीति भूमिं प्रार्थ्यः-ॐ भूरसिभूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया
 विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवी यच्छ पृथिवीन्दृथं ह पृथिवीम्मा
 हिथं सीः ॥

धान्यमसीति धान्यं धृत्वाः-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय
 त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो

वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे
त्वा महीनां पयोसि ॥

आजिघ्नकलशेति कलशं संस्थाप्यः-ॐ आजिघ्न कलशं मह्या
त्वा व्विशंत्विन्दवः । पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा
पयस्वती पुनर्म्माऽऽविशताद्रयिः ॥

वरुणस्योत्तंभनसीति शुद्धोदकेनापूर्यः-ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि
व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थोव्वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि
व्वरुणस्यऽऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऽऋत- सदनमासीद ॥

या ओषधीत्यौषधी निक्षिप्यः-ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता
देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नु बभ्रूणामह ञं शतं धामानि सप्त च ॥

अश्वत्थेवेति पंचपल्लवान्प्रक्षेपः-ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे
वो व्वसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पुरुषम् ॥

परिवाजपति इति पंचरत्नानि प्रक्षेपः-ॐ परिवाजपतिः
कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

याः फलानीति फलं प्रक्षेपः-ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा
याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ञं हसः ॥

हिरण्यगर्भेति मुद्रार्पणम्-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य
जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै
देवाय हविषा विधेम ॥

सुजातो ज्योतिषेति वस्त्रेणावेष्टनम्-॥ सुजातो ज्योतिषा सह
शर्म वरूथमासदस्त्वः । वासो अग्रे विश्वरूपं सं व्ययस्व
विभावसो ॥

पूर्णादर्वीति पूर्णपात्रं-ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं शतक्रतो ॥

श्रीश्वतेति श्रीफलं-ॐ श्रीश्वते लक्ष्मीश्च पत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौऽव्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण
सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ कलशो परिस्थापयेत् ॥

१-ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् । तेषां
सहस्रयो जनेवधन्वानितन्मसि ॥ रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ रुद्राय
नमः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । सभूमिं सर्वत
स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ शनि मंडले विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ
विष्णवे नमः ॥ विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवानः
। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ नैऋत्यां
राहुमंडले वास्तोष्पते इहागच्छ इहतिष्ठ वास्तोष्पतये नमः
वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-ॐ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं
हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम ॥ आहमजानि
गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ केतुमण्डले गणपते इहागच्छ
इहतिष्ठ गणपतये नमः । गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽ अन्तरिक्षे
ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ आग्नेयां सोमदले क्षेत्रपाल इहागच्छ
इहतिष्ठ क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम ममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ॥ रुद्रकुंभाग्रे
चामुण्डे इहागच्छ इहतिष्ठ चामुण्डायै नमः । चामुण्डामावाहयामि
स्थापयामि ॥

७-ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव
मातरः ॥ दक्षिणे भौममण्डले मातरः इहागच्छत इहतिष्ठत मातृभ्यो
नमः । मातृनावाहयामि स्थापयामि ॥

ॐ ॥ अथ वेद स्थापनं ॥ ॐ

१-ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं
रत्नधातमम् ॥ पूर्वे ऋग्वेद इहागच्छ इहतिष्ठ ऋग्वेदाय नमः
। ऋग्वेदमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय
कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवाऽ
अयक्ष्मामावस्तेन ईशतमाघशथं सोध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात
बर्हीषजमानस्य पशून्पाहि ॥ दक्षिणे यजुर्वेद इहागच्छ इहतिष्ठ
यजुर्वेदाय नमः । यजुर्वेदमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-ॐ अग्रऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि
बर्हीषि ॥ पश्चिमे सामवेद इहागच्छ इहतिष्ठ सामवेदाय नमः
। सामवेदमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तुपीतये । शँखोरभिस्रवंतुनः
॥ उत्तरे अथर्वणवेद इहागच्छ इहतिष्ठ अथर्वणवेदाय नमः ।
अथर्वणवेदमावाहयामि स्थापयामि ॥

अथ दिक्पाल स्थापनं:- पूर्वदितः क्रमाद्विक्षु इन्द्रादीन्प्रपूजयेत् ॥

१-ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रथं हवे हवे सुहवथं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रथं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ पूर्वे
इंद्र इहागच्छ इहतिष्ठ इंद्राय नमः । इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥
२-ॐ त्वन्नो अग्रेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः
। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा थं सि प्र मुमुग्ध
यस्मत् ॥ आग्नेयां हुताशन इहागच्छ इहतिष्ठ हुताशनाय नमः ।
हुताशनावाहयामि स्थापयामि ॥

३-ॐ सुगन्नुपंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः ।
अपैतु मृत्युममृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु ॥ दक्षिणे
यम इहागच्छ इहतिष्ठ यमाय नमः । यममावाहयामि स्थापयामि ॥

४-ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा तऽ इत्या नमो देवि निऋते तुभ्यमस्तु ॥
नैऋत्यां निऋते इहागच्छ इहतिष्ठ नैऋत्यै नमः । नैऋतिमावाहयामि
स्थापयामि ॥

५-ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो व्वरुणे हबोध्युरुशथं समानऽआयुः प्रमोषीः ॥
पश्चिमे वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि
स्थापयामि ॥

६-ॐ आनोनियुद्धिः शतिनीभिरध्वरथं सहस्रिणीभिरुप याहि
यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः
सदा नः ॥ वायव्ये वायो इहागच्छ इहतिष्ठ वायवे नमः ।
वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

७-ॐ वयथं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि
॥ उत्तरे कुबेर इहागच्छ इहतिष्ठ कुबेराय नमः कुबेर मावाहयामि
स्थापयामि ॥

८-ॐ असंमृष्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधिभूम्याम् । तेषां थं
सहस्रयो जनेव धन्वा नितन्मसि ॥ ॐ तमीशानं जगतस्थुषस्पतिं
धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयं । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ईशाने रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ रुद्राय
नमः । रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

९-ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः
। यः श थं सते स्तुवते धायि पञ्चऽ इन्द्रज्येष्ठा अस्माँर अवन्तु
देवाः ॥ पूर्वशानयोर्मध्ये ब्रह्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः ।
ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

१०-ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म
सप्रथाः ॥ पश्चिमनैऋत्यमध्ये अनन्त इहागच्छ इहतिष्ठ अनन्ताय
नमः । अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

मूर्त्तिचेत्प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्तद्यथाः- प्रथमं मूर्त्तीनां अग्युत्तारणं एकस्मिन्पात्रे कारयेत् ॥ अत्राद्य. अस्यां सूर्यमूर्त्तेः अथवा आसांसूर्यादि मूर्त्तीनां लोहाद्युपघात दोष निवृत्यर्थं देवत्व सिद्ध्यर्थं पूज्यत्वाधिकार सिद्ध्यर्थंच अग्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठापनमहं करिष्ये ॥

प्रथमं दुग्धधारां पातयेत् ॥ तत्र मंत्राः-

ॐ हेमस्यत्वा जरायुणाग्रे परिव्ययामसि । पावको अस्मभ्यथं शिवो भव ॥१॥ उपज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वाम् । अग्रे पित्तमपामसि मण्डूकि ताराभिरागहि सेमन्नो यज्ञं पावकवर्णं थं शिवं कृधिः ॥२॥ अपामिदं न्ययनथं समुद्रस्य निवेशनम् । अन्यांस्ते अस्मत्तपंतु हेतयः पावको अस्मभ्यथं शिवो भव ॥३॥ समुद्रस्य त्वावकयाग्रे परिव्ययामसि । पावको अस्मभ्यथं शिवो भव ॥४॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे । अन्यांस्ते अस्मत्तपंतु हेतयः पावको अस्मभ्य थं शिवो भव ॥५॥ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः । अन्यांस्ते अस्मत्तपंतु हेतयः पावको अस्मभ्य थं शिवो भव ॥६॥ वह्निदोष निवृत्तिरस्तु । पुनरैभिर्मत्रैर्जलधारां पातयेत् ।

ततः पञ्चामृत स्नानम् ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यं तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यम् ॥ इति पयसा ॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत्प्रणः प्रायू थं षितारिषत् ॥ इति दध्ना ॥

ॐ घृतंमिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम । अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहा कृतं वृषभवक्षिहव्यं ॥ इति घृतेन ॥ ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव थं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२॥ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ इति मधुना ॥ ॐ अपा थं रसमुद्वय स थं सूर्येसंत

ॐ समाहितम् । अपाॐ रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयाम
गृहीतोसीन्द्रा यत्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्
॥ इति शर्करया ॥ आपोहिष्ठेति शुद्धोदकेन स्नाप्य ॥

प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात्:- ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं
हंसः सोहं अस्याः सूर्य मूर्तेः प्राणाः इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं
क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं अस्याः सूर्य मूर्तेः सर्वेन्द्रियाणि
॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं अस्याः सूर्य
मूर्तेः वाङ्मनत्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थ
प्राणा पानव्यानो दान समानाः स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा
॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्ति अस्यै प्राणाः क्षरन्ति च ॥ अस्यै
देवत्वमर्चायै मामहेति कश्चन ॥ गर्भाधानादि पंचदश संस्कार
सिद्ध्यर्थं पंचदश प्रणवावृत्तिं करिष्ये ॥ ॐ ॥

ततोऽध्यानं:- रक्तांभोधिस्थपातोल्लसदरुण सरोजाधिरूढाकराब्जैः,
पाशंकोदण्डमिक्षूद्रवमथगुणमप्यंकुशं पञ्चबाणान् । बिभ्राणं सृक्कपालं
त्रिनयनलसिता पीतवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी
प्राणशक्तिः परानः ॥

ततः प्रतिमास्थापनं मंडले कुर्यात् ॥

इति प्राणप्रतिष्ठा ॥

हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ ॐ तदस्तुमित्रा वरुणा तदग्रे शंभो
रस्मभ्य मिदमस्तु शस्तम् । अशीमहिगाधमुत प्रतिष्ठान्नमो दिवे
बृहते सादनाय ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्बस्य बृहस्पतिर्ब्रह्ममिमं
तनोत्विरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु । विश्वेदेवा सऽ इहमादयन्तामो
३॥ प्रतिष्ठ ॥ एषवै प्रतिष्ठानाम् यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन यजन्तेन
सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवतु ॥ श्रीसूर्यादयो ग्रहाः स्थापित देवता
रुद्रकलश सहिताः समंडपाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवंतु ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥

संकल्पः-अत्राद्य. मम सकलपीडोपशान्तिपूर्वक यथेप्सित धनधान्यानेक भोग पुत्रपौत्रादि सुख सिद्धयर्थं ग्रहयज्ञांगभूत रुद्रकलशसहित सूर्याद्यनंतानां समस्त स्थापित देवतानां च यथामिलितोपचारैः पूजनाद्यर्चनमहं करिष्ये ॥

श्री सूर्यादि ग्रहमंडलमध्यस्थ देवताभ्यो नमः आसनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः । पाद्यं समर्पयामि ॥ हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान् समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥ सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥ श्रीफलं समर्पयामि ॥ पुष्पआरातिकं समर्पयामि श्री सूर्यादि ग्रहमण्डलमध्यस्थ देवताभ्यो नमः रुद्रकलशाय नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ॥

प्रार्थनाः-ग्रहाः राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा राज्यं हरन्ति च । ग्रहैस्तु व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

अथ विशेषार्घ्यं ॥ पत्रंपुष्पं फलंतोयं रत्नानि विविधानि च । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं देहिमे वाञ्छितं फलम् ॥ रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि मे । पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरं । फलस्यार्घ्यं प्रदानेन सफलाः सन्तु मनोरथाः ॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ इति विशेषार्घ्यं ॥

हस्तेजलमादायः-अद्य. सूर्यादि नवग्रहाणां रुद्रकलश सहितानां स्थापित देवतानां च पूजन कृतस्य कर्मणो विधेर्यत्र्यूनमधिकं वा तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीसूर्यादि ग्रहाणां प्रसादात्सर्वविधेः परिपूर्णतामस्तु ॥

तत्रैक ऋत्विक् रुद्रकंलशं स्पृष्ट्वा स्वशाखीय रुद्रजपं कुर्यात् ॥ ततः आचार्यः स्थण्डिले आगत्य ॥ (शेष कुश काण्डिका) श्रुते चरौ स्रुवः प्रतपनम् ॥ तद्यथा ॥ स्रुवस्य प्रागग्रस्या वाङ्मुखस्याग्रौ प्रतपनमुत्तानस्य संमार्जन कुक्षौरग्रतोग्रान्मूलपर्यतम् ॥ मध्यैरेव मध्याग्रपर्यतम् ॥ मूलैरेव मूलादग्रपर्यतं संमार्जनम् ॥ प्रणीताद्भिरभ्युक्षणम् ॥ पुनः प्रतपनं ॥ दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ स्रुचेरपि एवं ॥ पाकेवृत्ते स्वयं आज्यमुद्वास्य चरोः पूर्वेण अग्रिपश्चिमे नीत्वा प्रणीतोत्तरतः प्रथमं निधाय ॥ चरुं तथैवोद्वास्याज्य पश्चिमेन नीत्वा ज्योत्तरे निधाय स्वपुरतः स्रुवोत्तरे आज्यं तदुत्तरतश्चरुं निधाय प्रोक्षणीतः पवित्रे समानीय ॥ आज्ये प्रोक्षीवदुत्पवनं ॥ पवित्रे प्रोक्षण्यन्निधाय ॥ आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तं निरस्य ॥ प्रोक्षण्युत्पवनं विधाय ॥ होम समाप्तिपर्यतं उपयमनकुशौर्वामिहस्ते उपग्रहं विधाय ॥

ॐ प्रजापतिं चिंतयतु तिष्ठन् प्रागग्रघृताक्त समित्रयं अग्रौ प्रक्षिप्य ॥ समिधोभ्यादाय स्वाहा ॥ ॐ (मनसा) प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ उपविशेत् ॥ प्रोक्षणीभिः सह विष्कमग्निं प्रणीता ब्रह्मसहितं च प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रेण दक्षिण चुलकेन गृहीतेन ईशानादि उदकपर्यतं एषोहि देवरिति पर्युक्ष्य ॥ पवित्रे प्रणीता सुनिधाय ॥ प्रोक्षणीपात्रं स्वस्थाने निदध्यात् ॥ होमशेष संस्रवं तस्य प्रणीतासुधारणं ॥

अथ होमाहुतयः ॥ आघारावाज्यभागौ महाव्याहृतयः सर्व प्रायश्चित्तं स्विष्टकृच्छेवं नित्यं सर्वत्र दक्षिणं जान्वाच्य ॥ ब्रह्मान्वारब्धेसति

होतव्याः ॥ यथाः- ब्रह्मणा कर वर्हिषान्वारब्धे सति होतव्या । दक्षिणं जानुं नमयित्वा प्राक् ऋजुरग्रेर्दक्षिण भागे ॥

(मनसा) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥१॥

अग्रेरुत्तरभागे ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥२॥

ततोत्तरपूर्वार्द्धे ॥ ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम ॥३॥ ततो

दक्षिणे पूर्वार्द्धे ॥ ॐ सोमायस्वाहा इदं सोमाय न मम ॥४॥

इत्याधारावाज्यभागं संस्रवं हुत्वा ॥

ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायव्ये

न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥

(आधारौ नासिका ज्ञेयौ आज्यभागौतु चक्षुषी । वक्रस्योदर कुक्षौ

च कटि व्याहृतिभिः स्मृतौ ॥१॥ शीर्षहस्तौ च पादौ च पंचवारुणकं

स्मृतम्)

ततो वायव्यकोणे अग्निं संपूजयेत् ॥

पुनरग्निं शांडिल्यगोत्रं शांडिल्यासितदेवलेति त्रि प्रवरं अरणिमातरं

वरुण पितरं पूजयेत् ॥ शान्तिके वरदनाम्ने वैश्वानराय नमः

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ (इत्यासनादि संपूज्य) ॥

प्रार्थनाः- ॐ अग्निं प्रज्वलितं वंदे जातवेदं हुताशनं । सुवर्ण

वर्णममलं समृद्धं विश्वतो मुखम् ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ ततो यजमानो

द्रव्यत्यागं कुर्यात् ॥

(आदित्यादि समस्त देवताभ्यः समिच्चर्वाज्य तिलादि हवनीय

द्रव्यं मया परित्यक्तं न मम यथा देवतमस्तु ॥

प्रथमं ग्रहाणां स्थापित देवतानांच समिधाज्यं चरुहोमस्तिल होमः

क्रमेणतु ॥ समिध काष्ठप्रमाणं ॥ अर्क पलाश खदिरो अपामार्गोथि

पिप्पलः । औदुम्बर शमी दूर्वा कुशाऽर्कात् समिधः क्रमात्

॥१॥ अलाभेतु प्रकर्त्तव्याः सर्वाः पालाश वृक्षजाः । प्रतिग्रहं

च जुहुयाच्छतमष्टोत्तरं तथा ॥२॥ अष्टाविंशतिरष्टौवा
यजेत्पंचामृतप्लुताः ॥ प्रतिद्रव्येन प्रतिग्रहं जुहुयात् ॥

१-अथ द्रव्य प्रमाणम्:- तिलभागश्चतुर्थांशं तन्दुलस्य त्रयं तथा
। यवभागं भवेदेकं यथेष्टं च सिताज्ययोः ॥ तिलाधिक्ये भवेद्बुद्धिः
समं शोक विवर्द्धनम् ॥

२-योगिनी मते:- तन्दुलस्य चतुर्भागं तिलभाग त्रयं तथा ।
यवभाग द्वयं प्रोक्तं सिताज्ये च यथा रुचिः ॥ घृताधिक्ये भवेद्राज्यं
शर्करायां रिपुक्षयम् । तिलाधिक्ये भवेत्सिद्धिः तन्दुलेन महद्धनम्
॥ यवाधिक्ये शोकमाहौ दृष्ट्वा वस्तूनि कल्पयेत् ॥

३-अथ मुद्रा लक्षणम्:- होमे मुद्रास्त्रयः प्रोक्ता मृगी हंसी च
शूकरी । शूकरी धनकामाय आयुः कामाय हंसिनी ॥ मृगी च
मोक्षकामाय मुद्रा त्रय उदाहृताः । शूकरी सर्वांगुली सार्द्धं मृगी
मुक्त कनिष्ठिका ॥ हंसी कनिष्ठतर्जन्योरेवं मुद्रा प्रकीर्तिताः ॥
अर्कादि समिद्धोमः- समिधादि द्रव्यैराकृष्णेनेत्या दिभिर्मन्त्रैरे
कैकाहुतिः महत्सु कर्मसु प्रतिद्रव्यं अष्टोत्तरशतं अष्टाविंशतिरष्टौवा
जुहुयात् ॥)

अथ सूर्यादि. समिद्धोमः-

प्रथमं गणपति मंत्रेणैकाहुतिः-ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे
प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे
वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ गं
गणपतये स्वाहा । इदं गणपतये न मम ॥

(१) ॐ आकृष्णेन रजसाव्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन
सवितारथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ सूर्याय स्वाहा
(कपिलाग्रौ) इदं सूर्याय न मम ॥१॥ (अर्क समिधा)

(२) ॐ इमन्देवाऽअसपत्न्यं सुबध्वम्महतेक्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय
महते जानराज्यायस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रमुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ

एष वोमी राजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणानाथं राजा ॥ चन्द्रमसे स्वाहा
(पिंगलाग्रौ) इदं चन्द्रमसे न मम ॥२॥ (पलाश समिधा)

(३) ॐ अग्रिर्मूर्द्धादिवःककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाथं
रेताथं सिजिन्वति ॥ भौमाय स्वाहा (धूम्रत्वग्रौ) ॥ इदं भौमाय
न मम ॥३॥ (खैर समिधा)

(४) ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सथं
सृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्सधस्थेऽअद्भ्युत्त रस्मिन्विश्वे देवा
यजमानश्च सीदत ॥ बुधाय स्वाहा (जाठराग्रौ) ॥ इदं बुधाय
न मम ॥४॥ (अपामार्ग समिधा)

(५) ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽअर्हाद्द्व्युमद्विभाति
क्क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजा ततदस्मा
सुद्वविणन्धेहि चित्रम् ॥ गुरवे स्वाहा (शिख्यग्रौ) ॥ इदं गुरवे
न मम ॥५॥ (पीपल समिधा)

(६) ॐ अन्नात्परिस्तुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः
सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋते नसत्यमिन्द्रियं विवपानठं
शुक्क्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदम्पयोमृतम्मधु शुक्राय स्वाहा
(हाटकाग्रौ) ॥ शुक्राय इदं न मम ॥६॥ (गूलर समिधा)

(७) ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तुपीतये ॥ शंखो
रभिस्रवन्तुनः ॥ शनैश्चराय स्वाहा (महोतेजाग्रौ) ॥ इदं शनैश्चराय
न मम ॥७॥ (शमी समिधा)

(८) ॐ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा ॥ कया
चिष्टया वृता ॥ राहवे स्वाहा (हुताशनाग्रौ) ॥ इदं राहवे न
मम ॥८॥ (दूर्वा)

(९) ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे ॥
समुषद्भिरजायथाः ॥ केतवे स्वाहा (रोहिताग्रौ) इदं केतवे न
मम ॥९॥ (कुशा) इति समिद्धोमः ॥

एता एव नवाज्याहुतयः एता एव नवचर्वाज्याहुतयः एताएव
नवतिलाहुतयः ॥ अन्याश्च तिला हुतयः सर्वे ॥

(लम्बोदरी पद्धत्यनुसारेण षोडश मातृका होमः—

ॐ गणानान्त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं
हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि
गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ गणपतये स्वाहा इदं न मम ॥
आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसन् मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥
गौर्यै स्वाहा इदं न मम ॥ हिरण्यरूपाऽउषसो विरोकऽ उभाविन्द्राऽ
उदिथः सूर्यश्च । आरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं
दितिं च मित्रोसि वरुणोसि ॥ पद्मायै स्वाहा इदं न मम ॥ कदाचन
स्तरोरसि नेन्द्रसश्चसि दाशुषे । उपोपेन्नु मघवन् भूयऽइन्नु ते
दानं देवस्य पृच्यते ॥ शच्यै स्वाहा इदं न मम ॥ मेधांमे वरुणो
ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता
ददातु मे स्वाहा ॥ मेधायै स्वाहा इदं न मम ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धीमहि । धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ सवित्र्यै स्वाहा
इदं न मम ॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ॥ उत । अनेश
न्नस्ययाऽइषवऽआभुरंस्य निषङ्गधिः ॥ विजयायै स्वाहा इदं न
मम ॥ यातेरुद्रशिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तथा नस्तन्वाशं
तमयागिरिशंताभिचाकशीहि ॥ जयायै स्वाहा इदं न मम ॥ देवानां
भद्रा सुमितिर्ऋजूयतां देवाना ॥ रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवानां
सख्यमुपसेदिमा वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ देवसेनायै
स्वाहा इदं न मम ॥ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।
अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥
स्वधायै स्वाहा इदं न मम ॥ स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं
करत् । अतिच्छन्दा ऽ इन्द्रियं बृहदृषभो गौर्ययो दधुः ॥ स्वाहायै
स्वाहा इदं न मम ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि । धियोयोनः

प्रचोदयात् ॥ मातृभ्यो स्वाहा इदं न मम ॥ भवतन्नः समनसौ सचेतसा वरेपसौ । मा यज्ञं हिंष्टं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः ॥ लोकमातृभ्यो स्वाहा इदं न मम ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्चयज्योतिरंतरमृतं प्रजासु । यस्मान्नऽऋते किंचनकर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ धृत्यै स्वाहा इदं न मम ॥ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशं स मान ऽ आयुः प्रमोषीः ॥ पुष्ट्यै स्वाहा इदं न मम ॥ बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हा द्युमद्विभाति ऋतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजा ततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ तुष्ट्यै स्वाहा इदं न मम ॥

प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा । अंबेऽ अंबिकेऽ म्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा इदं न मम ॥

वसोद्धारा होमः ॥

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवत्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ वसोद्धाराभ्यः स्वाहा इदं न मम ॥

मनसः काममाकूतिम् वाचः सत्यमशीय । पशूनां रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयिस्वाहा ॥ श्रियै स्वाहा । इदं न ममा । श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कया बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्याप्तम् । इष्णंनिषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकंमइषाण ॥ लक्ष्म्यै स्वाहा । इदं न मम ॥ इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा । उपसृजन् धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन् । रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा ॥ धृत्यै स्वाहा । इदं न मम ॥ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥ मेधायै स्वाहा । इदं न

मम ॥ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे
स्वाहाश्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा । स्वाहायै
स्वाहा । इदं न मम ॥ अत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च
अज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु । यस्मानऽऋते किञ्चन कर्मक्रियते
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ प्रज्ञायै स्वाहा । इदं न मम ॥
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्व्वाजिनीवति । यज्ञं व्वष्टुधियावसुः
। सरस्वत्यै स्वाहा इदं न मम ॥

हस्ते जल मादायः- इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत
मस्तु ॥

विशेषनवाहुतयः-

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ ३॥ आसादयादिह
स्वाहा ॥१॥ अप्सवग्रे सधिष्ठ वसौषधी रनुरुध्यसे । गर्भे सञ्जायसे
पुनः स्वाहा ॥२॥ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । अच्छ
नः शर्म सप्रथाः स्वाहा ॥३॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे
पदम् । समूढमस्यपाथं सुरे स्वाहा ॥४॥ महौँ ३॥ इन्द्रो
वज्रहस्तः षोडशी शर्म अच्छतु हन्तुपाप्मानं योस्मान्द्वेति स्वाहा
॥५॥ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च
। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यथं हाः स्वाहा ॥६॥ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो
विश्वा रूपाणि परि ता वभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽ अस्तु
व्वयथं स्यामप्रतयोरयीणाम् स्वाहा ॥७॥ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसन्
मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः स्वाहा ॥८॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं
पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन ऽ आवः । सबुध्या ऽ उपमा ऽऽ
अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः स्वाहा ॥९॥)

अथाधि देवता मंत्राः- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम्
। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो मुक्षीय माऽमृतात् । त्र्यम्बकं यजामहे
सुगंधिम्पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय माऽमुतः

॥ रुद्राय स्वाहा ॥१॥ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कग्रा बहोरात्रे पार्श्वे
 नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण
 सर्वलोकंमऽइषण ॥ श्रियै स्वाहा ॥२॥ षदक्रंदः प्रथमं जायमान
 ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू
 उपस्तुत्यं महि जातं तेऽ अर्वन् ॥ स्कन्दाय स्वाहा ॥३॥
 विष्णोरराटमसिविष्णोः श्रप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि
 । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ विष्णवे स्वाहा ॥४॥ आ ब्रह्मन्
 ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽ इषव्योतिव्याधी
 महारथो जायतां दोग्धी धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा
 जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य षजमानस्य वीरो जायतां
 निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः
 पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥५॥ सजोषा
 ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँऽरप
 मृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥६॥
 यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे । देवस्त्वा सविता
 मध्वानक्तु पृथिव्याः सथं स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि
 तपोसि ॥ यमाय स्वाहा ॥७॥ कार्ष्णिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽ
 उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ कालाय
 स्वाहा ॥८॥ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय ॥ चित्रगुप्ताय स्वाहा
 ॥९॥ इत्यधिदेवताः ॥

हस्ते जल मादायः-इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
 देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत मस्तु॥
 अथ प्रत्यधि देवताः-ॐसनः पितेव सूनवेग्रे सूपायनो भव ।
 सचस्वानः स्वस्तये ॥ अग्रये स्वाहा ॥१॥ आपोअद्यान्वचारिथं
 समसृक्ष्महि । पयस्वानग्रआगमतं मा सथं सृजवर्चसा प्रजया
 च धनेन च ॥ अद्भय स्वाहा ॥२॥ चिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद्
 ध्रुवा सीद । परिचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवासीद ॥ पृथिव्यै

स्वाहा ॥३॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्यपाथं
सुरे स्वाहा ॥ विष्णवे स्वाहा ॥४॥ इन्द्रासात्रेता बृहस्पतिर्दक्षिणा
यज्ञः पुरऽएतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयंतीनां मरुतो
यंत्वग्रम् ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥५॥ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानो
भवन्त्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोनु विवर्त्मानो ऽभवन् । एवमिमं
यजमानं दैवीश्चविशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥ इन्द्राण्यै
स्वाहा ॥६॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता
वभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तत्रोऽ अस्तु व्वयथं स्यामपतयोरयीणाम्
स्वाहा ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥७॥ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी
मनु । ये ऽ अन्तरिक्षे येदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ सर्पेभ्यो
स्वाहा ॥८॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन ऽ
आवः । सबुध्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्टाः सतश्च योनि
मसतश्चव्विवः ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥९॥

हस्ते जल मादायः-इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत
मस्तु ॥

अथ गणपंचकं:-ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां
त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो
मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ गणपतये
स्वाहा ॥१॥ जातवेदसे सुनवामसो ममराती यतो निदहाति वेदः
। सनः पर्षदिति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ॥ दुर्गायै
स्वाहा ॥२॥ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि ।
नियुत्वान्तसोमपीतये ॥ वायवे स्वाहा ॥३॥ घृतं घृतपावानः
पिवतव्वसां वसा पावानः पिवतान्तक्षिस्य हविरसि स्वाहा ।
दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश ऽ उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ आकाशांय
स्वाहा ॥४॥ ऋवांकाशा मधुमत्यश्विनां सूनृतावती ।
तयायज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ अश्विनीकुमाराभ्यां स्वाहा ॥५॥

अथ नक्षत्र देवता मंत्राः-

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेंद्रो
बलेनेन्द्रायदधुरिन्द्रियम् ॥ अश्विन्यै स्वाहा ॥१॥ यमाय त्वा मखाय
त्वा सूर्यस्यत्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः
सथं स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥ भरण्यै स्वाहा
॥२॥ अयमग्निः सहस्रिणो व्वाजस्य शतिनस्पतिः । मूर्द्धाकवी
रयीणाम् ॥ कृत्तिकायै स्वाहा ॥३॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः । स बुध्याऽ उपमाऽ अस्य विष्टाः
सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥ रोहिण्यै स्वाहा ॥४॥ सोमो
धेनुथं सोमो अर्वन्तमाशुथं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति । सादन्यं
विदथ्यथं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ मृगशिरसे स्वाहा
॥५॥ नमस्ते रुद्रमन्त्र्यव ऽउतोतऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः
॥ आद्रायै स्वाहा ॥६॥ अदितिद्यौरदितिरंतरिक्षमदितिर्माता सपिता
सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्
॥ पुनर्वसवे स्वाहा ॥७॥

वाचस्पते पवस्व वृष्णोऽ अथं शुभ्यांगभस्तिपूतः । देवो देवेभ्यः
पवस्वयेषां भागोसि ॥ पुष्याय स्वाहा ॥८॥ नमोस्तु सर्पेभ्यो
ये के च पृथिवी मनु । ये ऽ अन्तरिक्षे येदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो
नमः ॥ अश्लेषायै स्वाहा ॥९॥ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा
नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः नमः । अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः
पितरः शुन्धध्वम् ॥ मघायै स्वाहा ॥१०॥ भग प्रणेर्भग सत्यसाधो
भगेमां धियमुदवा ददन्नः । भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र
नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ पूर्वा फाल्गुन्यै स्वाहा ॥११॥ दैव्या
वध्वर्यू आगतथं रथेन सूर्यत्वचा । मध्वायज्ञथं समंजाथे ॥
उत्तरा फाल्गुन्यै स्वाहा ॥१२॥ विष्भ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं
मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतं । वातजूतोषो अभिरक्षित्मना प्रजाः

पुपोषपुरुधा विराजति ॥ हस्ताय स्वाहा ॥१३॥ त्वष्टा तुरीपो
 अद्भुतऽ इन्द्राग्री पुष्टिवर्धना । द्विपदा छन्दऽ इन्द्रियमुक्षा गौर्न
 वयो दधुः ॥ चित्रायै स्वाहा ॥१४॥ पीवो अत्रा रयिवृधः सुमेधाः
 श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिःश्रीः । ते वायवे समनसो वि
 तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥ स्वात्यै स्वाहा ॥१५॥ इन्द्राग्री
 आगतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्य पातं धियेषिता ॥
 विशाखायै स्वाहा ॥१६॥ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे
 महोदेवायतदृतं सपर्य्यत ॥ दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय
 सूर्षायशं सत ॥ अनुराधायै स्वाहा ॥१७॥ सऽइषुहस्तैः
 सनिषंगिभिर्वशीसं स्रष्टा सयुध इन्द्रोगणेन । सं सृष्टजित्सोमपा
 बाहुशर्धुग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ज्येष्ठायै स्वाहा ॥१८॥
 मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निं स्वै योनावभारुषा । तां
 विश्वैदेवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुञ्चतु ॥ मूलाय
 स्वाहा ॥१९॥ अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः । अपामार्ग
 त्वमस्मदपदुःष्वप्यं सुव ॥ पूर्वाषाढायै स्वाहा ॥२०॥ विश्वे
 अद्य मरुतो विश्वऽ ऊती विश्वे भवन्त्वग्रयः समिद्धाः । विश्वे
 नो देवाऽ अवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ॥
 उत्तराषाढायै स्वाहा ॥२१॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि
 । धियो योनः प्रचोदयात् ॥ अभिजिते स्वाहा ॥२२॥ विष्णोरराटमसि
 विष्णोः श्रप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि
 विष्णवे त्वा ॥ श्रवणाय स्वाहा ॥२३॥ वसोः पवित्रमसि शतधारं
 वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
 पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ धनिष्ठायै स्वाहा ॥२४॥
 वरुणस्योत्तंभनसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य
 ऋतसदन्यसि वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन मासीद
 ॥ शतभिषायै स्वाहा ॥२५॥ उतनोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽ
 एकपात्पृथिवी समुद्रः । विश्वे देवाऽ ऋतावृधो हुवानाः स्तुता

मन्त्राः कविशस्ताऽ अवन्तु ॥ पूर्वाभाद्रपदायै स्वाहा ॥२६॥
शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मा माहिं सीः।
निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय
सुवीर्याय ॥ उत्तभाद्रपदायै स्वाहा ॥२७॥ ॐ पूषन् तवव्रते
वयन्नरिष्येम कदाचन । स्तोतारस्तऽ इहस्मसि ॥ रेवत्यै स्वाहा
॥२८॥ इति नक्षत्र देवताः ॥

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे । सखायऽ इन्द्रमृतये
॥ योगेभ्यः स्वाहा ॥१॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं
पश्येमाक्षभिर्वजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ङं सस्तनूभिर्व्यशेमहि
देवहितं षदायुः ॥ करणेभ्यः स्वाहा ॥२॥ ध्रुवोसि ध्रुवोऽयं
यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् । घृतेनद्यावा पृथिवी
पूर्वेषामिन्द्रस्यच्छदिरसि विश्वजनस्य छाया ॥ ध्रुवाय स्वाहा ॥३॥
पंचनद्यः सरस्वतीमपियंति सस्रोतसः । सरस्वतीतु पंचधासो
देशे भवत्सरित् ॥ सरिद्भ्यः स्वाहा ॥४॥ सप्तऋषयः प्रतिहिताः
शरीरे सप्तरक्षंति सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र
जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ ॥ सप्तऋषिभ्यः स्वाहा
॥५॥ इमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके
॥ सागरेभ्यः स्वाहा ॥६॥ प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति
स्वसिचऽ इयानाः । ताऽ आववृत्रन्नधरागुदक्ताऽ अहि बुध्यमनु
रीयमाणाः ॥ पर्वतेभ्यः स्वाहा ॥७॥ षवोयस्ते वाजिन्निहितो
गुहायः श्येनेपरितो अचरच्चवाते । तेननो व्वाजिन्बलवान्बलेन
वाजजिच्च भव समने च पारयिष्णुः वाजिनो व्वाजजितोव्वाज
ङं सरिष्यंतो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत ॥ रैवंताय स्वाहा ॥८॥
सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ।
स्तोमऽ आत्मा छन्दा ङं स्यद्भानि यजू ङं षि नाम । साम ते
तनूर्वामिदेव्यं षज्ञाषज्ञियम्पुच्छं धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोसि

गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वःपत ॥ गरुत्मते स्वाहा ॥९॥ असंख्याता
 सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् । तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि
 तन्मसि ॥ रुद्राय स्वाहा ॥१०॥ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः
 सहस्रपात् । सभूमिं सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ विष्णवे
 स्वाहा ॥११॥ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्वावेशोऽ अनमीवो
 भवानः । यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो अस्तुद्विपदे शं चतुष्पदे
 ॥ वास्तोष्पतये स्वाहा ॥१२॥ गणानांत्वा गणपति ठं हवामहे
 प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे
 वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ गणपतये
 स्वाहा ॥१३॥ नमोस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु । ये अंतरिक्षे
 ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥१४॥

जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति
 दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ॥ चामुण्डायै स्वाहा
 ॥१५॥ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव
 मातरः ॥ मातृभ्यो स्वाहा ॥१६॥

हस्ते जल मादायः- इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
 देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत
 मस्तु ॥

अथ वेदाः-

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम्
 ॥ ऋग्वेदाय स्वाहा ॥१॥

इषे त्वोर्जे त्वा वयव स्थ देवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय
 कर्मणऽ आप्यायध्वमध्याऽ इंद्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा
 मा वस्तेनऽ ईशतमाघश थं सोध्रुवाऽ अस्मिन्गोपतौ स्यात
 बहीर्षजमानस्य पशून्पाहि ॥ यजुर्वेदाय स्वाहा ॥२॥

अग्र ऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोतासत्सिबर्हिषि
॥ सामवेदाय स्वाहा ॥३॥ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तुपीतये
। शँब्धोरभिस्रवन्तुनः ॥ अथर्ववेदाय स्वाहा ॥४॥

ॐ अथ दिक्पाल होम ॐ

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं थं हवे हवे सुहवथं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय
स्वाहा ॥१॥ त्वन्नो अग्रेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव
यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा थं
सि प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥ हुताशनाय स्वाहा ॥२॥ सुगन्नुपंथां प्रदिशन्न
एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः । अपैतु मृत्युरमृतं म
ऽआगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु ॥ यमाय स्वाहा ॥३॥
असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सा तऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥
नैऋतये स्वाहा ॥४॥ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते
यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणे हबोध्युरुश थं स मा
न ऽ आयुः प्र मोषीः ॥ वरुणाय स्वाहा ॥५॥ आनोनियुद्धिः
शतिनीभिरध्वरथं सहस्रिणीभिरुप याहि ऋज्ञम् । वायो
अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ वायवे
स्वाहा ॥६॥ वयथं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः
सचेमहि ॥ कुबेराय स्वाहा ॥७॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ रुद्राय स्वाहा ॥८॥ अस्मे रुद्रा
मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः श थं सते
स्तुवते धायि पञ्चऽ इन्द्रज्येष्ठा अस्माँर अवन्तु देवाः ॥ ब्रह्मणे
स्वाहा ॥९॥ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः
शर्म सप्रथाः ॥ अनन्ताय स्वाहा ॥१०॥

बृहत्कर्मसु प्रधानहोमोऽत्र कुर्यात् ॥

हस्ते जल मादायः- इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत मस्तु ॥

गुग्गुल होमः-अद्य पूर्वोच्चारित तिथौ मम गृहे भूत प्रेत पिशाच दोष परिहारार्थं त्र्यम्बकमन्त्रेण गुग्गुल होम महं करिष्ये ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् । त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम्पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय माऽमुतः स्वाहा ॥

सर्षपहोमः- सर्षपान् घृतेनाभिधार्य । अद्यपूर्वोच्चारित मम गृहे सर्षपरिष्ट परिहारार्थं सर्व शत्रु बल क्षयार्थं सर्षपहोम महं करिष्ये ॥

ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँऽरप मृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा ॥

अथ लक्ष्मी होमः ॥ तन्दुलाज्य दुग्धशर्करामृत द्रव्येण श्रीश्चते, मनसः काममा, श्रीसूक्तेन च होम कार्यः ॥ अद्यपूर्वोच्चारित मम गृहे अलक्ष्मी विनाशार्थं दशविध लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं लक्ष्मी होम महं करिष्ये ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कया बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनौऽव्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण स्वाहा ॥

ॐ मनसः काममाकूतिम् वाचः सत्यमशीय । पशूनाथं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आषह स्वाहा ॥१॥ ॐ तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् स्वाहा ॥२॥ ॐ अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् स्वाहा ॥३॥ ॐ कांसोस्मितां
 हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मेस्थितां पद्मवर्णां
 तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा ॥४॥ ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा
 ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमिं शरणमहं
 प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि स्वाहा ॥५॥ ॐ आदित्यवर्णे
 तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः । तस्य फलानि
 तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः स्वाहा ॥६॥ ॐ
 उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेस्मिन्
 कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे स्वाहा ॥७॥ ॐ क्षुत्पिपासामलां
 ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिंच सर्वानिर्णुद
 मे गृहात् स्वाहा ॥८॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ।
 ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् स्वाहा ॥९॥ ॐ मनसः
 काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः
 श्रयतां यशः स्वाहा ॥१०॥ ॐ कर्द्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव
 कर्द्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् स्वाहा ॥११॥
 ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्रीत वस मे गृहे । निच देवीं
 मातरं श्रियं वासय मे कुले स्वाहा ॥१२॥ ॐ आर्द्रा यः करिणीं
 यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो
 म आवह स्वाहा ॥१३॥ ॐ आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां
 पद्ममालिनीं । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह स्वाहा
 ॥१४॥ ॐ तांमऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां
 हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् स्वाहा ॥१५॥
 यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् । सूक्तं पञ्चदशर्चं
 श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

प्रार्थनाः—अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने । धनं मे जुषतां
 देवि सर्वकामाँश्च देहि मे ॥ पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे
 रथम् । प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥ धनमग्निर्धनं

वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः । धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ
 ॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु बृत्रहा । सोमं धनस्य सोमिनो
 मह्यं ददातु सोमिनः ॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा
 मतिः । भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥ पद्मानने
 पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे । तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं
 लभाम्यहम् ॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् ।
 श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते । धान्यं धनं
 बहुपशुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ इति मन्त्रैः संप्रार्थ्य ॥
 ततो व्याहृति होमश्च कर्त्तव्यः स्वेच्छया तिलैः ॥

ततः सर्वहविषां स्विष्टकृद्धोम ॥ तद्यथा :-

हुत शेषादभिधार्यः-ॐ अग्रये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ इदमग्रे
 स्विष्टकृते न मम ॥

ततो अनादिष्ट प्रायश्चित्त संज्ञका नवा हुतयः-

ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे
 न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्रे व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽ अवयासिसीष्ठाः॥
 यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥
 इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥

ॐ सत्वन्नोऽ अग्रेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽ अस्याऽउषसोव्युष्टौ ॥
 अवयक्ष्वनो वरुणथं रराणोव्वीहिमृडीकथं सुहवो न एधि स्वाहा॥
 इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्य मित्वमयाअसि ॥ अयानो
 यज्ञंवहास्य यानोधेहि भेषजथं स्वाहा॥ इदमग्रयेअयसे न मम ॥६॥

ॐ येते शतंवरुणं षेसहस्रं यज्ञियाः पाशाविततामहान्तः ॥
 तेभिर्त्रोऽअद्यसवितोत

विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे
विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध्यमथंश्रथाय ॥
अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं
वरुणाय आदित्याय अदितये च न मम ॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥९॥

ततो होमांते स्थापित सूर्यादि ग्रहपीठ देवतानां पुनः पूजन संकल्पं
कृत्वा ॥

अत्राद्य. सग्रहमख अमुक होमकर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं स्थापित
देवतानां उत्तर पूजनं च करिष्ये ॥ रुद्रकलशसहित सूर्यादि नवग्रहमंडल
मध्य स्थापित देवताभ्यो नमः इत्यासनादिभिः संपूज्य ॥

(विवाहे कन्ययाः वामहस्ते श्रीश्चतेति वरश्चेद्दक्षिणहस्ते यदा
बध्नेति कंकणं बध्नीयात् ॥ यथा ॥ अंजलिस्थ तंदुलेषु सफलं
मदनफलयुतं कंकणत्रिधाय स्थापित देवतोपरिसमर्प्य ॥ तत्र
मंत्रः ॥ ॐ स्वस्तिर्या या विनाशाख्या धर्म कल्याण वृद्धिदा ।
विनायक प्रिया नित्यं तां त्वां स्वस्तिं ब्रुवंतुनः ॥ नमस्कृत्य कंकणं
सतिलकं बध्नीयात् ॥)

तत इन्द्रादि दशदिक्पालानां बलिः ॥ तद्यथा ॥

अत्राद्य. सग्रहमख अमुक होमकर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं वा
ग्रहयज्ञकर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं इन्द्रादि दश दिक्पालादि देवतानां
प्रीत्यर्थं यथामिलितोपचारैः पूजनं बलिदानं च करिष्ये ॥

माषभक्तबलिदीप सहित बलिना पूजयेत् ॥

१-पूर्वः-अहो इन्द्रः गजेन्द्रस्थः वज्रहस्तः प्रपूजितः ॥ त्रातारमिंद्र
मंत्रेण प्राचीं रक्षतु दिक्पते ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं
हवे हवे सुहवथं शूरमिंद्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति
नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ पूर्वे इन्द्राय नमः । इन्द्रस्यानुचरेभ्यो

नमः । गंधाद्युपचारान्समर्पयामि इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्रदिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥

अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥

२-अग्निः-अहो सप्तार्चिमेषस्थ हव्य वाहन पूजित ॥ त्वन्नो अग्रेति मंत्रेण रक्षाग्रेय्यां दिशांपते ॥ ॐ त्वन्नो अग्रेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ आग्रेय्यां अग्रये नमः अग्रेरनुचरेभ्यो नमः गंधाद्युपचारान्समर्पयामि अग्रये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो अग्रे दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम् ॥

३-दक्षिणः-अहो महिषमारूढ दण्डपाणि वर प्रद । पूज्यः सुगन्धुपंथेति दक्षिणां दिशिपालक ॥ ॐ सुगन्धुपंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः । अपैतु मृत्युममृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु ॥ दक्षिणे यमाय नमः यमस्यानुचरेभ्यो नमः गंधाद्युपचारान्समर्पयामि यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो यमदिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन यमः प्रीयतां ॥

४-नैऋत्यः-अहो नैऋत्य दिक्पाल नैऋत्ये खड्गधारक । आगच्छ कौशिकारूढ असुन्वंतेति पूजितः ॥ ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ

स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा तऽ इत्या
नमो देवि निऋते तुभ्यमस्तु ॥ नैऋत्यां निऋतये नमः
निऋत्यानुचरेभ्यो नमः । गंधाद्युपचारान्समर्पयामि नैऋते सांगाय
सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप
माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो निऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष
यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता
निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन निऋतिः
प्रीयताम् ॥

५-पश्चिमः-अहो वरुण वारुण्यां मकरपृष्ठि समाश्रित । अर्चितः
पाशहस्तश्च तत्त्वायामीति मंत्रतः ॥ ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा
वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो व्वरुणेह
बोध्युरुषथं समानऽआयुः प्रमोषीः ॥ पश्चिमे वरुणाय नमः
वरुणस्यानुचरेभ्यो नमः गंधाद्युपचारान्समर्पयामि वरुणाय सांगाय
सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप
माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष
यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता
निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम् ॥

६-वायव्यः-अहो वायव्यदिक्पाल मृतपृष्ठ समाश्रित ।
आनोनियुद्धि मन्त्रेण वायवीं रक्ष पूजितः ॥ ॐ आनोनियुद्धिः
शतिनीभिरध्वरथं सहस्त्रिणीभिरुपयाहि षज्ञम् । व्वायो
अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ वायव्यां
वायवे नमः वायोरनुचरेभ्योनमः । गंधाद्युपचारान्समर्पयामि वायवे
सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप
माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो वायोदिशं रक्ष बलिं भक्ष
यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता
निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम् ॥

७-उत्तरः-अहोनरविमानस्थ गदापाणि वरप्रद । कौबेरीं च दिशं
रक्ष वयं सोमेति पूजितः ॥ ॐवयथं सोमव्रते तव मनस्तनूषु
बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ उत्तरे कुबेरायनमः
कुबेरस्यानुचरेभ्यो गंधाद्युपचारान्समर्पयामि कुबेराय सांगाय
सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप
माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो कुबेरदिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्य
आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता
शुभदो वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन कुबेरः प्रीयताम् ॥

८-ईशानः-अहो वृषभमारूढ शूलपाणि वरप्रद । रुद्राणां पूजितो
रक्ष तमीशानेति मंत्रतः ॥ ॐतमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
रक्षिता पायुरब्धः स्वस्तये ॥ ईशानायनमः ईशानस्यानुचरेभ्यो
नमः । गंधाद्युपचारान्समर्पयामि ईशानाय सांगाय सपरिवाराय
सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप माषभक्तबलिं
समर्पयामि ॥ भो ईशानदिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्य आयुकर्ता
शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो
वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम् ॥

९-पूर्वेशानयोर्मध्येः-अहोहंसस्थित ब्रह्मन् व्योमरक्षतु दिक्पते ।
कमण्डलुधरः साक्षी अस्मे रुद्रेति पूजितः ॥

ॐअस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः
शथं सते स्तुवते धायि पञ्चऽ इन्द्रज्येष्ठा अस्माँर अवन्तु देवाः ॥
पूर्वेशानयोर्मध्ये ब्रह्मणेनमः ब्रह्मण अनुचरेभ्योनमः ।
गंधाद्युपचारान्समर्पयामि ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय
सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥
भो ब्रह्मन्दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता
शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥
अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम् ॥

१०-पश्चिमवायोर्मध्ये:-अहो गरुडमारूढ शंखचक्र गदाधर ।
पालयाधोदिशं रक्षस्योना पृथिवि मंत्रतः ॥ ॐस्योना पृथिविनो
भवानृक्षरा निवेशनी । वच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

पश्चिमवायोर्मध्ये अनंतायनमः अनंतस्यानुचरेभ्यो नमः ।
गंधाद्युपचारान्समर्पयामि अनंताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय
सवाहनाय सशक्तिकाय अमुं सदीप माषभक्तबलिं समर्पयामि
॥ भो अनंतदिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता
शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥
अनेन बलिदानेन अनंतः प्रीयताम् ॥

॥ अथवा ॥

समुदायात्मकं इन्द्रादि देवता बलिदानं ॥ यथा :-

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे
स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे
स्वाहो दीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहो धर्वाया दिशे
स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवथं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इन्द्रादि
दशदिक्पालेभ्यो नमः गंधाद्युपचारान्समर्पयामि इन्द्रादि
दशदिक्पालेभ्यः सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय
सशक्तिकाय अमुं सदीप माषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्रादि
दशदिक्पालाः दिशः रक्षन्तु बलिं भक्षयंतु मम यजमानस्य आयुः
कर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता
शुभदाः वरदाः भवन्तु ॥

अनेन बलिदानेन इन्द्रादि दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ॥

गणपति पायस बलिः-

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ गणपत्यादि देवताभ्यो नमः गंधाद्युपचारान्समर्पयामि ॥ गणपत्यादि देवताभ्योनमः एष गंधार्चित पायसबलिं समर्पयामि ॥ भो गणपत्यादि देवताः दिशं रक्षन्तु बलिं भक्षन्तु यजमानस्य आयुकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदाः वरदाः भवन्तु ॥ अनेन बलिदानेन गणपत्यादेवताः प्रीणन्तु ॥

नवग्रह पायस बलिः-

उदयंत महातेज तेजस्वी चाभयप्रद । दुर्निरीक्ष ख गमन बलिं भक्ष जगत्पते ॥

ॐ आकृष्णेन रजसाव्वर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवोषाति भुवनानि पश्यन् ॥ रुद्रकलश सहित सूर्यादि नवग्रहमंडलमध्यस्थ देवताभ्यो नमः एष गंधाद्यर्चित पायसबलिं समर्पयामि ॥ भो रुद्रकलश सहित सूर्यादि नवग्रहमंडलमध्यस्थ देवताः दिशं रक्षन्तु बलिं भक्षन्तु यजमानस्य आयुकर्तारः क्षेमकर्तारः शुभकर्तारः शान्तिकर्तारः शुभदातारः वरदातारः भवन्तु ॥ अनेन बलिदानेन रुद्रकलशसहित श्रीसूर्यादि नवग्रहमण्डलमध्यस्थ समस्तदेवता प्रीयन्ताम् ॥

(बृहत्कर्मणि सुयोगिनी क्षेत्रपालानां बलिं च दत्त्वा)

अथ क्षेत्रपाल बलिः- ततो नैर्ऋत्यां चतुर्वर्तियुत महीदीप सहित माषभक्तशष्कुलीं शूर्पपात्रे धृत्वा ॥ क्षेत्रपाल समागच्छ जगत्सर्वास्पदास्पद । क्षत्रस्यत्वेति मंत्रेण बलिं गृह्ण्य यागप ॥ ॐ क्षत्रस्य त्वा परस्पाय ब्रह्मणस्तन्वं पाहि । विशस्त्वा धर्मणा

वयमनु क्रामाम सुविताय नव्यसे ॥ श्री क्षेत्रपालाय नमः ।
इत्यासनादि संपूज्य ॥

कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण तिमिर नीलो
व्याल यज्ञोपवीती । ऋतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति
बटुकनाथ सिद्धिदः साधकानाम् ॥

क्षेत्रपालाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय
भूतप्रेतपिशाच शाकिनीडाकिनी ब्रह्मराक्षस वेतालादि परिवारयुताय
इमं गंधाद्यर्चितं सदीपं, सताम्बूलं, सदक्षिणाकं, दधिमाषभक्त
बलिं समर्पयामि ॥

ॐ हिकाराय स्वाहा हिकृतायस्वाहा क्रंदतेस्वाहा वक्रंदायस्वाहा
प्रोथतेस्वाहा प्रप्रोथायस्वाहा गन्धायस्वाहा घ्रातायस्वाहा
निविष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहा सन्दितायस्वाहा वल्गते स्वाहा
सीनाय स्वाहा शयानायस्वाहा स्वपतेस्वाहा जाग्रतेस्वाहा
कूजतेस्वाहा प्रबुद्धायस्वाहा विजृम्भमाणायस्वाहा विचृत्तायस्वाहा
सथं हानाय स्वाहोपस्थितायस्वाहायनाय स्वाहा प्रायणायस्वाहा ॥
भो भो क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहाण मम यजमानस्य आयुकर्त्ता
क्षेमकर्त्ता भव ॥

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ॥ इमं बलिं चतुष्पथे गृहद्वारे
स्थापयेत् ॥

हस्तौपादौ प्रक्षाल्याचम्य ॥ (बृहत्सुकर्मणि सुतर्पणं अत्रैव)
अथ पूर्णाहुतिं कुर्यात् ॥ आज्यस्थाल्यामाज्यं निर्वापः ॥
आज्याधिश्रयणं ॥ स्रुक् स्रुवौ प्रतप्य संमृज्य पुनः प्रतप्य निदध
यात् ॥ आज्यमुद्वास्य उत्पूयावेक्ष्यापद्रव्यं निरस्य ॥ चतुर्गृहीतमाज्यं
स्रुचं पूरयित्वा ॥ तदुपरि घृतपूर्णं श्रीफलं वह्न्यभिमुखं धृत्वा ॥
संकल्पः-अत्राद्य. श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं मम मनोभिलषित
धर्मार्थकामादि यथेप्सितानेक भोग पुत्रपौत्रायुरारोग्यैश्वर्याभि

वृद्धयर्थं च कृतस्य ग्रहमखांग हवन कर्मणः साद्गुण्यार्थं पूर्णाहुति
होममहं करिष्ये ॥

तदादौ पूर्णाहुति पूजनं मृडनामाग्नि पूजनं च करिष्ये ॥

ॐ पूर्णां दर्विं परापत सुपूर्णां पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा
इषमूर्जं शतक्रतो ॥ पूर्णाहुत्यै एकोनपंचाशन्मरुद्गणेभ्यो नमः ।
इत्यासनादि संपूज्य ॥

ॐ वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिः ।
इतो जातो विश्वमिदं विचष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण ॥ मृडनामाग्रये
नमः । इत्यासनादि संपूज्य ॥

सपत्नीको यजमानः पूर्णाहुतिं गृहीत्वोत्थाय तदुपरि न्युब्जं स्रुवं
निधाय स्रुचिमूलं नाभिमूले धृत्वा ॥

विनियोगः- ॐ मूर्धानं मिति मन्त्रस्य भारद्वाज ऋषि वैश्वानर
देवता त्रिष्टुप्छन्दः पूर्णाहुति होमे विनियोगः ॥

ब्राह्मणाः मन्त्रान्पठेयुः :-

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।
कविं संप्राजमतिथिं जनानामासत्रा पात्रं जनयन्त देवाः ॥ पूर्णां
दर्विं परा पत सुपूर्णां पुनरा पत ॥ वस्नेवविक्रीणा वहाऽइषमूर्जं
शतक्रतो ॥ चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवाऽ
इहागमन्वीतिहोत्रा ऽ ऋतावृधः । पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि
विश्वकर्मणे विश्वाहादाभ्यं हविः ॥ सप्त ते अग्रे समिधः सप्त
जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्तधा
त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥ शुक्रज्ज्योतिश्च
चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च । शुक्रश्च
ऋतपाश्चात्यं हाः ॥ ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ्
च । मितश्च सम्मितश्च सभराः ॥ ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च
धरुणश्च । धर्ता च व्विधर्ता च व्विधारयः ॥ ऋतजिच्च
सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च । अन्तिमित्रश्च दूरेऽ अमित्रश्च

गणः ॥ ईदृक्षास ऽ एतादृक्षास ऽ ऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास
 ऽ एतन । मितासश्च सम्मितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे
 अस्मिन् ॥ स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च ।
 क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च
 ॥ सासह्राँश्चा भियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥ पुनस्त्वाऽदित्या
 रुद्रा वसवः समिन्धतां पुर्नब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ॥ घृतेन त्वं
 तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ स्वाभिमुखं
 पूगीफलं (वा)श्रीफलं हुत्वा ॥

(वसोद्धारा) घृतधारांकुर्यात्:-

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँर उदारदुपाथं शुना सममृतत्वमानट् । घृतस्य
 नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥१२॥ वयत्राम
 प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः । उप ब्रह्मा
 शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद्वौरऽ एतत् ॥१३॥ चत्वारिशृङ्गा
 त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽ अस्य । त्रिधा बद्धो
 वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँर आविवेश ॥१४॥ त्रिधा हितं
 पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् । इन्द्रऽ एकथं
 सूर्यऽ एकं जनान वेनादेकथं स्वधया निष्टतक्षुः ॥१५॥ एता ऽ
 अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे । घृतस्य धाराऽ
 अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ॥१६॥ सम्यक्
 स्रवन्ति सरितो न धेना ऽ अन्तहृदा मनसा पूयमानाः । एते
 अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगाऽ इव क्षिपणोरीषमाणाः ॥१७॥ सिन्धोरिव
 प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यद्वाः । घृतस्य धाराऽ
 अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥१८॥ अभिप्रवन्त
 समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽ अग्रिम् । घृतस्य धाराः
 समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्षति जातवेदाः ॥१९॥ कन्याऽ इव
 वहतुमेतवा ऽ उ अञ्ज्जाना ऽ अभि चाकशीमि । यत्र सोमः

सूयते षत्र षज्ञो घृतस्य धाराऽ अभि तत्पवन्ते ॥२०॥ अभ्यर्षत
 सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त । इमं षज्ञं नयत
 देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥२१॥ धामं ते विश्वं भुवनमधि
 श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि । अपामनीके समिथे यऽ
 आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं तऽ ऊर्मिम् ॥ वसोः पवित्रमसि
 शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु
 वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ इति वसोर्धारां
 पातयेत् ॥ घृतं च रुद्रकलशे त्यागः ॥ इदमग्रये मरुद्गणेभ्यश्च
 न मम ॥ अथ भस्म वंदनम् ॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने ललाटे ॥
 कश्यपस्यत्र्यायुषं ग्रीवायां ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषं दक्षिणस्कंधे ॥ तन्नो
 अस्तुत्र्यायुषं वामस्कंधे ॥ शतायुशं नाभौ ॥ बलायुषं शिरसि ॥
 अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा ततोग्निं प्रार्थयेत्:-

ॐ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानोऽ भवन् । एवमिमं षजमानं
 दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥९॥ इमथं स्तनमूर्जस्वन्तं
 धयापां प्रपीनमग्रे सरिरस्य मध्ये । उत्सं जुषस्व
 मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियथं सदनमा विशस्व ॥१०॥ घृतम्मिमिक्षे
 घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम । अनुष्वधमावह मादयस्व
 स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥११॥ ॐ चतुर्भिश्चचतुर्भिश्च
 द्वाभ्यां पंचभिरेव च ॥ हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः
 ॥ ॐ स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम् । आयुष्यं
 तेजमारोग्यं देहि मे हव्य वाहन ॥

ततो होम संकल्पः ॥ स्रुक्मध्ये जलगंधाक्षतान्निक्षिप्य ॥

आधारावादि पूर्णाहुतिपर्यन्तं यद्यत् द्रव्यं यावद्द्यावत्संख्याकं येन
 येन मन्त्रेण यया यया कामनया यस्यै यस्यै देवतायै हुतं तत्तद्द्रव्यं
 तावत्तावत्संख्याकं तेन तेन मन्त्रेण तया तया कामनया तस्यै तस्यै
 देवतायै सुहुत हुतमस्तु ॥ ताः ताः देवताः प्रीयन्तां ते देवाः

शान्तिदाः पुष्टिदा तुष्टिदा वरदा भवन्तु ॥ संस्रवः प्राशनं ॥
 आचमनं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥ ॐ सुमित्रियान आपऽओषधयः
 सन्तु इति शिरसि मार्जनं ॥ ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टि
 यं चवयं द्विष्मः इति प्रणीतोदकमीशान्यां क्षिप्त्वा ॥ प्रणीता
 विमोक तज्जलेन मार्जनम्:- आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः
 शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ पवित्रे अग्रौ प्रक्षिप्य ॥
 उपयमनमग्रौ प्रक्षेपः ॥ ततस्तरण क्रमेण बर्हिनुत्थाप्याज्येनाभिधार्य ॥
 ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वागातुमित । मनसस्पत इमं देव
 यज्ञं स्वाहा वातेधाः ॥ अथवा दिव्याय नभसे स्वाहा ॥ इति
 बर्हिहोमः ॥

ब्रह्मणे पूर्णपात्र दानं ॥ अत्राद्य. ग्रहयज्ञहवनकर्मणि कृताकृता
 वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इमानि तंडुल तिलपात्र
 घृतपात्र शर्करापात्राणि दक्षिणासहितानि नाना देवतानि यथा
 यथा नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥

कृतैतत् ग्रहयज्ञ हवन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं आचार्यप्रमुखेभ्यो
 ऋत्विग्भ्यो होतृभ्यश्च यथा यथा विभागं दक्षिणां संप्रददे ॥
 कृतैतत् ग्रहयज्ञहवन कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं यथा संपन्नेनात्रेन
 तृप्तिपर्यन्तेन यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् कुमीरिका त्रयं बटुकमेकं
 भोजयिष्ये ॥

कृतैतत् ग्रहयज्ञहवन कर्मणि न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं नाना
 नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः यथोत्साहां भूयसीं दक्षिणां विभज्य
 दातुमहमुत्सृजे ॥

कृतैतत् ग्रहयज्ञहवन कर्मणि न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं पक्षीभ्यः
 अन्नं गोभ्यः तृणं दास्ये ॥

चतुर्भिश्चचतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च ॥ हूयते च पुनर्द्वाभ्यां
 तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥ अस्य ग्रहयज्ञहवनकर्मणो विधेर्ययूनमधिकं

तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीसूर्यादि नवग्रहाणां प्रसादाच्च
सर्वविधेः परिपूर्णमस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णम् ॥ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु
॥ गृहेवृद्धि शतानि भवन्तु ॥

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽ
इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥ इति उत्सर्जनं ब्रह्मणः ब्रह्मग्रंथि विमोकः ॥
यांतु देवगणाः सर्वे पूजामादाय पार्थिवीम् । इष्टकाम समृद्धयर्थं
पुनरागमनाय च ॥ इति ग्रहादीन् विसर्जयेत् ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ
स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥
इत्यग्निं विसृज्य ॥

अभिषेके वामतः पत्नीः- ततो यजमानं सपत्नीकं सपरिवारं
प्रागभिमुखासीनं उदङ्मुखा आचार्य ऋत्विजश्च
रुद्रकलशादुदुकमादाय दूर्वापल्लवैश्च अभिषेकं कुर्यात् ॥

अभिषेके पत्नी वामतः ॥

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे
॥१॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः
॥२॥ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा
च नः ॥३॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवथं
शूरमिन्द्रम । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः
॥४॥ ॐ व्वरुणस्योस्तंभनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो
वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य
ऋतसदनमासीद ॥५॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा
धियः । पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥६॥ ॐ
पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेण देव दीध्यत् । अग्रेकृत्वा ऋतूँ १ रनु
॥७॥ ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥८॥ ॐ
समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिताय त्वा वाताय
स्वाहा । अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय

स्वाहा ॥९॥ ॐ इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत् ।
 यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेषे अभीरुणम् ॥१०॥ ॐ अग्रिमीले
 पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् ॥११॥ ॐ पंचनद्यः
 सरस्वतीमपिषंति सस्रोतसः । सरस्वतीतु पंचधासो देशे भवत्सरित्
 ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्यम् । भवा
 वाजस्य सङ्गथे ॥

अथ पौराणिक मंत्राः—सुरास्त्वामभिषिंचंतु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः
 । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥१॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च
 भवंतु विजयाय ते । नारदाद्या ऋषिगणा ये चान्ये च तपोधनाः
 ॥२॥ भवन्तु यजमानस्य आशीर्वाद परायणाः ।
 आखण्डलोग्रिर्भगवान् यमोवै निऋतिस्तथा ॥३॥ वरुणः पवनश्चैव
 धनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्माचैव तथानंतो दिक्पालाः पांतु वः
 सदा ॥४॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
 बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥५॥
 एतास्त्वामभिषिंचंतु देवपत्न्यः समागताः ॥

ततो ग्रह मंत्राः—ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षण कारकः । विषम
 स्थान भृतां पीडां दहतु ते रविः ॥१॥ रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रं
 सुधासनः । विषमस्थान संभूतां पीडां दहतु ते विधुः ॥२॥ भूमिपुत्रो
 महातेजो जगतां भयकृत् सदा । वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु
 ते कुजः ॥३॥ उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः । सूर्य
 प्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु ते बुधः ॥४॥ देवमन्त्री विशालाक्षः
 सदा लोकहिते रतः । अनेक शिष्यैः सम्पूर्णः पीडां दहतु ते
 गुरुः ॥५॥ दैत्यमन्त्री भृगुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ।
 प्रंभुस्ताराग्रहाणां च पीडां दहतु ते भृगुः ॥६॥ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो
 विशालाक्षः शिव प्रियः । मंदचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु ते
 शनिः ॥७॥ महाशनो महावक्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
 अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां दहतु ते तमः ॥८॥ अनेक रूपवर्णैश्च

शतशोथ सहस्रशः । उत्पातरूपो जगतां पीडां दहतु ते शिखी
 ॥ ॐ तच्छन्योरा वृणीमहे गातुं यज्ञायगातुं यज्ञपतये दैवीः
 स्वस्तिरस्तुनः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिघातु भेषजं शत्रोऽ
 अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ भूर्भुवः
 स्वरमृताभिषेकोऽस्तु ॥ इत्यभिषेकः ॥

ततस्तिलकाशीर्वादिः-ॐ शतंजीवशरदो वर्द्धमानः शतंहेमन्ताच्छत
 मुवसन्तान् ॥ शतमिन्द्राग्निसविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं
 पुनर्दुः ॥ ॐ शतमिन्नुशरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
 पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ मंत्रार्थाः
 सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु
 मित्राणामुदयस्तव ॥१॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
 ब्रह्मवाक्यैस्तुतैर्नित्यं हन्यन्ते तव शत्रवः ॥२॥ अक्षतान्विप्रहस्तेभ्यो
 नित्यं विन्दन्ति ये नराः । चत्वारि वृद्धिमायांतु आयुः कीर्तियशो
 बलम् ॥३॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्य मारोग्यमा विधात्पवमानं महीयते ।
 धान्यं धनं पशु पुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥४॥ आयुष्कामो
 यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैव च । आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा
 भवन्तु मे ॥५॥ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोवाजि
 हस्ति धनधान्य समृद्धिरस्तु ।

ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु रिपुक्षयोस्तु वंशो सदैव भवताम्

हरिभक्तिरस्तु ॥६॥

इति यजमान हस्ते अक्षतान्दद्यात् ॥ अखण्डसौभाग्यवती
 पुत्रपौत्रवती भवेति यजमानस्य पत्न्यै दद्यात् ॥

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम् । ब्रह्मैव तेन गंतव्यं
 ब्रह्मकर्म समाधिना ॥

इति यजुः शाखीय ग्रहमख प्रयोगः समाप्तः ॥

देवछन्द विहीनस्य सुतः प्रोक्ताः भुजंगमाः । मूकादयो नेत्रवर्जाः
 ऋषिहीनस्तु कारयेत् ॥१॥ तथा प्रकारांतरेण माध

यंदिनिशाखायामाचर्येण कारिकाः ॥ अन्तहीनो भवेद्राष्ट्रं मन्त्रहीनस्तु
 ऋत्विजः । ऋषिछन्दविहीनस्य आचार्यः कुशल कर्मणे ।
 द्रव्यहीनेतु कर्त्तरिं पत्निहीनं न कारयेत् । गन्धहीने भवेद्रोगं दीपहीने
 कुलक्षयम् । वस्त्रहीने स्त्रियोघातं पूगहीने धनक्षयः । चरुहीने
 भयाग्नि घृतहीने सुतं हतः । होमहीने महादुखं सधूम्रे नेत्रदाहकः ।
 दानहीनेतु तत्कर्म बलिहीने तथाऽसुखम् । स्रुवहीने करोहंता
 श्रुचिहीनेतु पंगुताः । विधिहीनेतु वैधव्यं हविहीने गृहं तथा ।
 तोयहीने च वृष्टिघ्नं धूपहीने च दुर्मती । भावहीने न सा सिद्धि
 कुण्डहीने कुलक्षयम् । यजमानमदाक्षण्यम् नास्ति यज्ञ समो रिपुः॥
 याज्ञवल्क्यः-पत्न्याभावे द्विजातीनां कुशहेमादि कारयेत् ।
 कुण्डाभावे स्थण्डिलं स्यात् एकदन्तं च मण्डपम् ॥ द्रव्यं च
 वित्तशक्तिनां समर्थानांच कारयेत् । आचार्य कर्मकुशलं सर्वसिद्धि
 प्रजायते ॥

वशिष्ठः-वशिष्ठः सर्व कल्याणं नवग्रहमखं शुभम् । शान्तिदं
 राज्यदं श्रीदं आयुरारोग्यवृद्धिदम् ॥ शान्तिके ये पठेन्नित्यं श्रद्धया
 यः शृणोति च । सानुकूला ग्रहास्तस्य सर्वकालं भविष्यति ॥

❖ ॥ अथ चौल संस्कार प्रयोगः ॥ ❖

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा ॥

संकल्पः-अद्येत्यादि० मम सुतस्य चौलसंस्कारस्य स्वकालाति
 क्रमदोषप्रत्यवायपरिहारार्थम् अर्धकृच्छ्ररूपं प्रायश्चित्तं
 रजतप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥ अनेन अर्धकृच्छ्ररूप
 प्रायश्चित्तकृतेन मम अमुकशर्मणः सुतस्य चौलसंस्कार
 कर्मण्यधिकार सिद्धिरस्तु ॥

अद्येत्यादि० मम सुतस्य चौलसंस्कार कर्मण्यधिकारार्थं सूत्रोक्तान्
 त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथासंपन्नेनात्रेनाहं भोजयिष्ये ॥
 हस्ते जलमादाय ॥

अद्येत्यादि० मम सुतस्य बीजगर्भ समुद्भवैनोनिबर्हणेन बलायुर्वर्चोभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं चौलसंस्काराख्यं कर्म करिष्ये ॥

तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धयर्थं श्रीमहागणपतेः पञ्चोपचारैः पूजनं करिष्ये ॥

ध्यानम्:-ॐ गणानान्त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भधम् ॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत्पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ततो बहिः शालायां स्थण्डिले पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं सभ्यनामाग्रेः स्थापनम् ॥

ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्येत्यादि चरुवर्जं पात्रासादनान्तं कुर्यात् ॥ पात्रासादनानन्तरम् उपकल्पनीयानि ॥ शीतोदकम् ॥ उष्णोदकम् ॥ नवनीतपिण्डो घृतपिण्डो दधिपिण्डो वा त्र्येणी शलली ॥ साग्राणि सप्तविंशतिकुशतरुणानि ॥ ताम्रपरिष्कृत आयसः क्षुरः ॥ आनडुहगोमयपिण्डः ॥ नापितः वरश्चेति ॥ (ठण्डाजल, गर्मजल, मखन, घी, दही, और सहली का काँटा, २७ कुश पुंज, ताम्र परिष्कृत उस्तरा, बैल का गोबर, नाई और बालक) पवित्री करणादि पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् ॥ दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मान्वारब्ध आघारावाज्यभागौ जुहुयात् ॥ (मनसा) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥१॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥२॥ ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम ॥३॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥४॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ चौले सभ्यनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत्पुष्पाणि समर्पयामि ॥ भूरादिनवाहुतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्रे व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ॥
यजिष्ठोवहितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्
स्वाहा ॥ इदमग्रीवरुणाभ्यां न ममः ॥४॥

ॐ सत्त्वन्नोऽ अग्रेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽ अस्याऽउषसोव्युष्टौ ॥
अवयक्ष्वनो वरुणथं रराणोव्वीहिमृडीकथं सुहवो न एधि स्वाहा ॥
इदमग्रीवरुणाभ्यां न ममः ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानो
यज्ञंवहास्ययानोधेहि भेषजथं स्वाहा ॥ इदमग्रयेअयसे न मम ॥६॥

ॐ येते शतंवरुण येसहस्रं यज्ञियाः पाशाविततामहान्तः ॥
तेभिर्त्रोऽअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा
॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध्यमथं श्रथाय ॥
अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं
वरुणायादितये न मम ॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥९॥ नवाहुतीर्हुत्वा
स्विष्टकृतादिकं कुर्यात् ॥ ॐ अग्रये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्रये
स्विष्टकृते न मम ॥ संस्त्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥
अग्रौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ ब्रह्मन् पूर्णपात्रम् अयं ते वरः प्रतिगृह्यताम् ।
एवं आचार्याय पूर्णपात्रं दत्त्वा पश्चिमे प्रणीताविमोकः तज्जलेन
च मार्जनम् :-

आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु
भेषजम् ॥

1-ततः अद्येत्यादि० अस्य कुमारस्य चूडाकर्मकर्तुमधिकारार्थं दक्षिणगोदानं मुण्डनं च करिष्ये ॥ ततएकस्मिन्पात्रे शीतास्वप्सूष्णाऽप आसिंचति ॥

ॐ उष्णेन वायुदकेनेह्यदिते केशान्वप ॥ अथात्र नवनीतपिंडं घृतपिंडं दध्नो वा पिंडं प्रास्यति ॥ ततः उदकमादाय दक्षिणगोदानमुंदति ॥

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्याऽआपऽ उन्दन्तुतेतनूम् ॥ दीर्घायुत्वायवर्चसे ॥ ततस्त्र्येण्या शलल्या केशान् विनीय ॥ त्रीणि कुशतरुणान्यंतर्दधाति ॥ ॐ ओषधेत्रायस्व ॥ इत्यनेनमंत्रेण ॥ ॐ शिवोनामतिलो हक्षुरमादधाति ॥ ॐ शिवोनामा सिस्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ अस्तु मामाहिंसीः ॥ निवर्तयामीति मंत्रेण केश कुशक्षुर संलग्नीकरणम् ॥ निवर्तयाम्या युषेन्नाद्द्या यप्प्रजननायरा यस्पोषा यसुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥

ततः छेदनम् ॥ छेदनमंत्रः ॥

ॐ षेनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्यराज्ञो व्वरुणस्यव्विद्वान् ॥ तेनब्रह्मणोवपते दमस्या युष्यंजरदष्टिर्यथासम् ॥ अनेन सकेशानि कुशतरुणानि प्रच्छिद्यानडुहे गोमयपिंडे प्रास्यत्यग्रेरुत्तरतो द्वियमाणे ॥१॥ (कुशा के साथ छेदन करे और बैल के गोबर में भुआ की गोद में झेले और दो जुडियो को चुपचाप इसीप्रकार काट ले) एवं द्विरपरं तूष्णीम् ॥ तद्यथा उन्दनम् । विनयनम् । त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरग्रहणम् । संलग्नीकरणम् ॥ छेदनम् ॥ आनडुहे गोमयपिंडे प्राशनम् ॥२॥ पुनः उन्दनम् । विनयनम् । त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरग्रहणम् । संलग्नीकरणम् ॥ छेदनम् ॥ आनडुहे गोमयपिंडे प्राशनम् ॥३॥ इति दक्षिणगोदानम् ॥

2-पुनर्जलमादायः-अस्य कुमारस्य चूडाकर्मकर्तुमधिकारार्थं पश्चिम गोदानं मुंडनं च करिष्ये ॥ उन्दनम्-ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्याऽआपऽ उन्दन्तुतेतनूम् ॥ दीर्घायुत्वायवर्चसे ॥ त्र्येण्या शलल्या

विनयनम् ॥ ततः त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् ॥ ॐ ओषधेत्रायस्व ॥
 इत्यनेनमंत्रेण ॥ ॐ शिवोनामा सिस्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ
 अस्तु मामाहिष्ठं सीः ॥ इति लोहक्षुरमादाय ॥ निवर्त्तयाम्या
 युषेत्राद्द्या यप्प्रजननायरा यस्पोषा यसुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥
 इति लोहक्षुरं केशानामुपरि निधाय केशच्छेदने मंत्रविशेषः ॥
 ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्यत्र्यायुषम् । यद्देवेषुत्र्यायुषं तन्नोऽ
 अस्तुत्र्यायुषम् ॥ एवं तूष्णीं वारद्वयम् ॥ यथा उन्दनम् । विनयनम् ।
 त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरग्रहणम् । संलग्नीकरणम् ॥ छेदनम् ॥
 गोमयपिंडे निधानम् ॥२॥ पुनः उन्दनम् । विनयनम् ।
 त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरग्रहणम् । संलग्नीकरणम् ॥ छेदनम् ॥
 गोमयपिंडे निधानम् ॥३॥ इति पश्चिम गोदानम् ॥

३-हस्ते जलमादाय- अस्य कुमारस्य चूडाकर्मकर्तुमधिकारार्थं
 उत्तर गोदानं मुण्डनं च करिष्ये ॥ ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्याऽआपऽ
 उन्दन्तुतेतनूम् ॥ दीर्घायुत्वायवर्चसे ॥ त्रेण्या शलल्या विनयनम् ॥
 त्रिकुशतरुणान्तर्धानकरणम् ॥ ॐ ओषधेत्रायस्व ॥ इत्यनेनमंत्रेण ॥
 ॐ शिवोनामा सिस्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ अस्तु मामाहिष्ठं
 सीः ॥ इति लोहक्षुर मादाय ॥ निवर्त्तयाम्या युषेत्राद्द्या
 यप्प्रजननायरा यस्पोषा यसुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ इति लोहक्षुरं
 केशानामुपरि निधाय केशच्छेदने मंत्रविशेषः ॥

ॐ येनभूरिश्चरादिवंज्योकपश्चाद्धिसूर्यम् ॥ तेनतेवपामिब्रह्मणा
 जीवातवेजीवनायसुश्लोकयायस्वस्तये ॥ इति छेदनम् ॥ गोमयपिंडे
 प्राशनम् ॥१॥ एवं तूष्णीं द्विरपरम् ॥ यथा पुनः-उन्दनम् ।
 विनयनम् । त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरग्रहणम् । संलग्नीकरणम् ॥
 छेदनम् ॥ गोमयपिंडे निधानम् ॥२॥ पुनः उन्दनम् । विनयनम् ।
 त्रिकुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरग्रहणम् । संलग्नीकरणम् ॥ छेदनम् ॥
 गोमयपिंडे निधानम् ॥३॥ इति उत्तरगोदानम् ॥

ततस्त्रिः क्षुरेण शिरः प्रदक्षिणं परिहरति ॥ ॐ यत्क्षुरेण
मज्जयतासुपेशसावप्तावावपति केशाञ्छिन्धिशिरोमास्यायुः
प्रमोषीः ॥ इति सकृन्मन्त्रेण द्विस्तूष्णीम् ॥ ततस्तेनैवोदकेन सर्वं
शिर आर्द्रं कृत्वा क्षुरं नापिताय प्रयच्छति ॥ ॐ अक्षुण्वन्परिवप ॥
वपामीति नापितो ब्रूयात् ॥ नापितः उद्ङ्मुख स्थितस्य कुमारस्य
प्राक्संस्थं प्राङ्मुख स्थितस्योदक्संस्थं केशवपनं कुर्यात् ॥
(कुलव्यवस्थया शिखास्थापनं केशशेषं करोति) ॥ ततः सर्वान्
केशान् गोमयपिंडे वस्त्रादिनाऽऽवेष्टय अनुगुप्तं कृत्वा गवां
गोष्ठे स्थापयेत् अथवा तडागे जलमध्ये वा प्रक्षिपेत् ॥ ततः
कुमारं स्नापयित्वा मस्तके स्वस्तिकं तथाच ललाटे तिलकं
कुर्यात् ॥ (गां केशान्ते संवत्सरं ब्रह्मचर्यमवपनं च । केशान्ते
द्वादशरात्रं षड्रात्रं त्रिरात्रमंततः ॥)

संकल्पः—कृतस्य चौलाख्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं स्मृत्युक्तान्
दशसंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथा संपन्नेनात्रेनाहं भोजयिष्ये ॥
तेनकर्मागदेवता प्रीयताम् न मम ॥ लम्बो दरनमस्तुभ्यं सततं
मोदकप्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ चौलविधेः
परिपूर्णताऽस्तु ॥ अस्तुपरिपूर्णता

❀ ॥ अथ उपनयन संस्कार प्रयोगः ॥ ❀

तत्रोदगयने ज्योतिः शास्त्रोक्त शुभे मासे शुभे दिने सुमुहूर्ते उपनयनं
कर्तुं तत्पूर्वेद्युः यजमानः पत्नी कुमाराभ्यां सह मंगलस्नानं कृत्वा
अहतवाससी परिधायालंकृत्य धृततिलको बहिः शालायां शुभासने
प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणः पत्नीं तद्दक्षिणतः संस्कार्यं बटुं
चोपवेश्य ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चैकेत्यादि पठित्वा अद्येत्यादि०
अमुकशर्मणो मम सुतस्य उपनयन संस्कार कर्मणि
अधिकारसिद्धयर्थं त्रीन्संख्याकान् प्राजापत्यान् रजतप्रत्याम्नायद्वारा
अहमाचरिष्ये ॥

अनेन मम सुतस्य उपनयनसंस्कार कर्मण्यधिकार सिद्धिरस्तु॥
(इस प्रकार बालक से भी प्रायश्चित्त संकल्प करावे) एवं
कुमारस्यापि प्रायश्चित्तं कारयेत् ॥ यथा

अद्येत्यादि० मम कामचार-कामवाद कामभक्षणादि दोषनिवृत्ति
पूर्वकोपनयन संस्कार कर्माधिकारार्थं त्रीन्संख्याकान् प्राजापत्यान्
रजतप्रत्याम्नायद्वारा अहमाचरिष्ये ॥ तेन मम कामचारकामवाद
कामभक्षणादि दोषनिवृत्ति पूर्वकोपनयन संस्कार कर्मण्यधिकार
सिद्धिरस्तु ॥

अद्येत्यादि० । आचार्यो हस्ते जलमादाय अमुकशर्मा आचार्योऽहं
अमुकशर्मणो यजमानसुतस्य उपनयन संस्कारकर्माधिकारार्थं
द्वादशसहस्रगायत्रीजपमहं करिष्ये ॥

ततो यजमानोहस्ते जलं गृहीत्वा अद्येत्यादि० अमुकगोत्रोत्पन्नामुक
शर्माहं मम सुतस्य द्विजत्वसिद्धयै वेदाध्ययनाधिकारार्थम्
उपनयनाख्यं कर्म करिष्ये ॥ पुनः

अद्येत्यादि० करिष्य माणोपनयन कर्माङ्गभूतं निर्विघ्नतासिद्धयर्थं
षोडशोपचारैः वा पंचोपचारैः महागणपति पूजनमहं करिष्ये॥
ॐ गणानान्त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं
हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि
गर्भधमा त्वमजासिगर्भधम् ॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि ॥

ततः कुमारस्य वपनं (मुंडनं) कारयेत्:- देशकालौ संकीर्त्य
अद्येत्यादि० मम सुतस्य उपनयनं कर्त्तुं तत्प्राच्याङ्गभूतं वपनं च
कारयिष्ये ॥ एवं वपनं कारयित्वा स्नापयेत् (कुमारस्य मुंडनं
कृत्वा) ॥

ततो ब्राह्मण त्रयभोजनम् अद्येत्यादि० अमुकशर्मणः मम सुतस्य
उपनयन कर्मण्यधिकारार्थं त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् अद्याहं
भोजयिष्ये ॥ तेन अमुकशर्मणो मम सुतस्य उपनयन कर्मण्यधिकार

सिद्धिरस्तु ॥ (ब्राह्मण बालको के साथ बटुक भी दूधचावल खाये) ततो ब्राह्मणपङ्क्तौ मुंडित शिरसं कुमारमपि भोजयेत् ॥ (मातासह भुञ्जीत यथाचारं वा) ततो कुमारपिता बहिः शालायां वेद्युपरि पञ्चभूसंस्कार पूर्वकं समुद्रवनामानं लौकिकाग्निं स्थापयेत् ॥

❧❧❧ ॥ प्रथम वेदी संस्कार ॥ ❧❧❧

प्रथमस्थन्डिलोपरि पञ्चभूसंस्कारान् कृत्वा:- ॐ दर्भैः परिसमुह्य
३ गोमयेनोपलिप्य ३ स्रुवेणोल्लिख्य ३ अनामिकांऽगुष्ठेनोद्धृत्य
३ उदकेनाऽभ्युक्ष्य अग्निमुप समाधाय (तत्पश्चात् अग्नि सुहासिन के हाथ से काँस्य पात्र में ढककर मँगाना) ॥

ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ २॥ आ सादयादिह ॥
ॐ आवो देवासऽ ईमहे वामं प्रयत्य ध्वरे । आवो देवास ऽ
आशिषो यज्ञियासो हवामहे ॥ इत्यग्निमुपसमाधाय ॥
अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं, उत्तरतः
प्रणितासनम् तत्र ब्रह्मोऽपवेशनम् यावत् कर्म समाप्यते तावत्
त्वं ब्रह्म स्थिरो भव ॥ .

पूजनम्:- ॐ ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत्पुष्पाणि
समर्पयामि ॥

(पश्चात् आचार्य बालक को अग्नि के पीछे पूर्वाभिमुख और अपने दक्षिण भाग में बैठा देवे । अब आचार्य मङ्गल पाठ इन पद्यों से करे और बालक पर पुष्प और अक्षत फेंके ॥)

ततः पुष्पमालादिभिरलंकृतं बटुम् आचार्य समीपमानयति ॥ ततः
मध्येऽन्तर्पटं धारयित्वा ॥ ब्राह्मणाः सुमङ्गल पद्यानि पठेयुः ॥
भास्वान्काश्यप गोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः ॥ षट्त्रिंशो
दशशोभनो गुरुशशीभौमेषुमित्रं सदा ॥ शुक्रो मन्दरिपुः
कलिङ्गजनितश्चाग्नीश्वरौ देवते मध्ये वर्तुलपूर्वदिग्दिनकरः कुर्यात्
बटोर्मगलम् ॥१॥

ॐ मनो जुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्विरिष्टं यज्ञ
 र्ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोऽँ ॥ म्प्रतिष्ठ
 ॥ एषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रै तेन यज्ञे यजन्तेन सर्वमेव प्रतिष्ठितं
 भवति । ॐ मुहूर्ते सुप्रतिष्ठितमस्तु ॥ इति मंत्रमाचाराद् द्विजाः
 पठेयुः ॥ (ततः आचार्यः अंतर्पटं निः सार्य कुमारः आचार्य पादौ
 प्रणमति, स्वदक्षिणतः पश्चादग्रेस्तमवस्थापयेत्) ॥ ततः
 प्रेषद्वयम्:-

(बालक आचार्य के हाथ जोड़े तब आचार्य कहे)

बटुक गुरु से आज्ञा माँगे:- ब्रह्मचर्यमागामिति ॥

बटुक खड़ा रहे तथा बटुक उवाच:- ॐ ब्रह्मचर्य मागाम् ॥

गुरु उवाच:- ॐ ब्रह्मचार्यसानि

तत्पश्चात् बटुक को वस्त्र धारण कराना :- (पुराने वस्त्रों को
 उतरवादे)

विनियोग:- ॐ अथैनं माणवकम् आचार्यो वासः परिधापयति
 येनेन्द्रायेति मंत्रस्य आङ्गिरस ऋषिः बृहतीच्छंदः बृहस्पतिर्देवता
 वासः परिधाने विनियोगः

ॐ अथैनं वासः परिधापयति जितेन्द्राय बृहस्पति र्वासः
 पर्यदधादमृतम् । तेनत्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय
 बलायवर्चसे ॥

आचमनम् ॥ (बालक की कमर में मेखला बांधे)

मेखला विनियोग:- इयं दुरुक्त मिति वामदेव ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
 मेखला देवता मेखला बंधने विनियोगः ॥

ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमानावर्णं पवित्रं पुनतीमऽआगात् ॥
 प्राणापानाभ्यां बलमादधानास्वसा देवी सुभगामेखलेयम् ॥ मेखलां
 बध्नीयात् ॥ (इति माणवकस्य मंत्रपाठः)

कोपीन धारणः:- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ
 श्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा

देवयन्तः॥ (कोपीन धारण कराकर बटुक को बैठा देवें)॥
 आचमनम्॥ अत्रावसरे आचारात् यज्ञोपवीतदानम्॥
 ततो यज्ञोपवीतपरिधानम् ॥ तत्रादावाचार्येण आपोहिष्ठे-
 ति त्रिभिर्मन्त्रैर्यज्ञोपवीतं प्रक्षाल्य ॥ (यज्ञोपवीत प्रक्षालन करें)
 विनियोगः- आपोहिष्ठेति तिसृणां सिंधुद्वीप ऋषिः गायत्रीछन्दः
 आपो देवता यज्ञोपवीत प्रक्षालने विनियोगः ॥

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे
 ॥१॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः
 ॥२॥ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजनयथा
 च नः ॥३॥ इति यज्ञोपवीतं प्रक्षाल्य करसम्पुटे धृत्वा दशधा
 गायत्र्या अभिमन्त्र्य ॥ (यज्ञोपवीत को अंगुष्ठ पर तीन बार घुमावें)
 ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन ऽ आवः ।
 सबुध्या ऽ उपमा ऽऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॥
 ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्यपा थंसुरेस्वाहा ॥
 ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव ऽउतोत ऽ इषवे नमः । बाहुभ्या मुतते नमः
 ॥ इति त्रिभिर्मन्त्रैरंगुष्ठमुपवीते भ्रामयित्वा ॥

ततो नवतंतुषु देवता आवाहयेत्॥ (अक्षतपुष्प लेकर यज्ञोपवीत पर छोड़े)

प्रथम तंतौः- ॐ काराय नमः । ॐ कारमावाहयामि स्थापयामि ॥
 द्वितीय तंतौः- ॐ अग्रये नमः । अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥
 तृतीय तंतौः- ॐ नागेभ्यो नमः । नागानावाहयामि स्थापयामि ॥
 चतुर्थ तंतौः- ॐ सोमाय नमः । सोममावाहयामि स्थापयामि ॥
 पंचम तंतौः- ॐ पितृभ्यो नमः । पितृनावाहयामि स्थापयामि ॥
 षष्ठ तंतौः- ॐ प्रजापतये नमः । प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ॥
 सप्तम तंतौः- ॐ अनिलाय नमः । अनिलमावाहयामि स्थापयामि ॥
 अष्टम तंतौः- ॐ यमाय नमः । यममावाहयामि स्थापयामि ॥

नवम तंतौः- ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । विश्वान्देवानावाहयामि
स्थपयामि ॥

❖ ॥ ततः यज्ञोपवीत ग्रन्थि देवतानामावाहनम् ॥ ❖

ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि ॥

ॐ विष्णवे नमः । विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि ॥

ॐ रुद्राय नमः । रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि ॥

ततो ध्यानम्:- प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पास सूत्रोद्भव
ब्रह्मसूत्रम् ॥ ब्रह्मत्वसिद्धयै च यशः प्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु
ब्रह्मसूत्रम् ॥ इति ध्यात्वा ॥

ॐ प्रणवादि नवतंतु देवता सहित ब्रह्म विष्णु रुद्रेभ्यो नमः
सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत्पुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति संपूज्य ॥
सूर्याय दर्शयेत् ॥

(यज्ञोपवीत को सूर्य नारायण भगवान को दिखाये)

विनियोगः-उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छंदः सूर्योदेवता
सूर्यावलोकने विनियोगः॥

ॐ उदुत्यज्ञात वेदसन्देवं वहन्तिकेतवः । दृशोव्विश्वाय सूर्यम्
॥ इति सूर्याय दर्शयित्वा धारणम् ॥ (बालक को यज्ञोपवीत
धारण करवायें) (पहले मूंज की फिर सूत की)

विनियोगः-यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
लिंगोक्ता देवता श्रौतस्मार्त कर्मानुष्ठान सिद्धयर्थे यज्ञोपवीत
धारणे विनियोगः ॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्रं
प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ॥ यज्ञोपवीत मसि यज्ञस्यत्वा
यज्ञोपवीतेनो पनह्यामि ॥ इति मंत्रं पठित्वा दक्षिणबाहुमुद्धृत्य
वामस्कंधे यज्ञोपवीतं धारयेत् ॥ आचमनम् ॥ अथाचार्यो

माणवकस्याजिनं प्रयच्छति ॥ (बालक को मृगचर्म धारण करवायें)
विनियोगः- मित्रस्य चक्षुरिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छंदः
लिंगोक्ता देवता अजिन धारणे विनियोगः ॥

मंत्रः- ॐ मित्रस्य चक्षुर्वरुणं बलीयस्तेजो यशस्वीस्थविर ठं
समिद्धम् ॥ आवाहमस्मिन् वरुणं च जिष्णुं कृष्णाजिनं
परिमृज्याजिनन्दधेयम् ॥ (इति माणवकस्य मंत्र) ॥ आचमनम् ॥
ततः आचार्यो माणवकस्य दंडं प्रयच्छति ॥ (एड़ी से मस्तक
पर्यंत पलाश का दंड बालक को धारण करवायें)

विनियोगः- योमे दंड इति प्रजापति ऋषिः यजुश्छंदः दंडो देवता
दंडग्रहणे विनियोगः ॥

मंत्रः- ॐ योमेदंडः परापतद्वै हायसोऽधिभूम्याम् ॥

तमहम्पुनरादधाम्यायुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥

बटुक उवाचः- दंडं प्रति गृह्णामि ॥

तत आचार्यः स्वांजलिना अद्भिर्बटोरंजलिं पूरयति, आचार्य
पठितैस्त्रिभिर्मन्त्रैः माणवकः सूर्यायार्घत्रयं दद्यात् ॥

(आचार्य जल से अपनी अञ्जलि भरे और उसी जल को बालक
की अञ्जलि में भर दें बालक सूर्य को तीन बार अर्घ दें)

मंत्रः- ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय
चक्षसे । श्री सूर्याय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम ॥१॥ यो वः शिवतमो
रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः । श्री सूर्याय नमः
इदमर्घ्यं दत्तं न मम ॥२॥ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय
जिन्वथ । आपो जनयथा च नः । श्री सूर्याय नमः इदमर्घ्यं
दत्तं न मम ॥३॥ ततः आचार्यो माणवकं प्रेषयति, सूर्यमुदीक्षस्वेति,
ततो माणवकस्तच्चक्षुरिति सूर्यं पश्यति ॥ (बाद में बटुक को
सूर्य के सामने खडा करें तथा उपस्थान के लिये दोनों हाथ
उठावें)

विनियोगः—तच्चक्षुरिति दध्यङ्गथर्वण ऋषिः उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्यदर्शने विनियोगः ॥

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतर्षं शृणुयामशरदः शतम्प्रव्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् ॥

तत आचार्यो माणवकस्य दक्षिणस्कंधोपरि हस्तं नीत्वा तस्य हृदयमालभते ॥

(आचार्य बालक के दाहिने कन्धे और हृदय का अपने दाहिने हाथ से स्पर्श करें)

विनियोगः—मम व्रते इति मंत्रस्य प्रजापति ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयालंभने विनियोगः ॥

मंत्रः—ॐ मम व्रते ते हृदयंदधामि, ममचित्त मनुचित्तन्तेऽस्तु, मम वाचमेकमना जुषस्व, बृहस्पतिष्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥

तत आचार्यो माणवकस्य दक्षिणहस्तं गृहीत्वाऽऽह ॥

(आचार्य बालक का दक्षिण हाथ अपने दक्षिण हाथ में लेकर प्रश्न करें)

आचार्यः—को नामासि (क्या नाम है तुम्हारा)

बटुक जवाब देः—अमुक शर्माऽहं भो,

(बटुक अपना नाम उच्चारण करें)

आचार्यः—कस्य ब्रह्मचार्यसि (आप किसके शिष्य हैं)

बटुकः—भवतः (मैं आपका शिष्य हूँ)

आचार्यः—इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्याग्रिराचार्य स्तवाहमाचार्यः ॥ स्तवासौ

अमुकशर्मन्निति

(इन्द्र और अग्नि भी आप के आचार्य हैं और मैं भी तुम्हारा आचार्य हूँ)

अथैनं माणवकं भूतेभ्यः परिददात्याचार्यः ॥ यथा ॥

(आचार्य बटुक के पञ्चभूत शरीर के रक्षणार्थ निम्न मंत्र उच्चारण करें)

विनियोगः-प्रजापतयेत्वा इत्यादीनां मन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः
यजुश्छंदः लिङ्गोक्ता देवता कुमार रक्षणे विनियोगः ॥ (सभी
दिशाओं में प्रणाम करें)

मंत्रः-ॐ प्रजापतयेत्वा परिददामि प्राच्याम् (पूर्व) ॥ ॐ देवायत्वा
सवित्रे परिददामि इति दक्षिणस्याम् (दक्षिण) ॥
ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि इति प्रतीच्याम् (पश्चिम) ॥
ॐ द्यावापृथिवीभ्यान्त्वा परिददामि इति उदीच्याम् (उत्तर) ॥
ॐ विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यः परिददामि इति अधः (नीचे) ॥
ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै इति ऊर्ध्वम् (ऊपर) ॥
(इत्याचार्य पठितमन्त्रेण माणवकस्य रक्षणम्)

(बटुक अग्नि की एक प्रदक्षिणा कर बैठ जावे)

(प्रदक्षिणमग्निं पर्यक्ष्योपविशत्याचार्यस्योत्तरतो माणवकः) ॥

ततो ब्रह्मोपवेशनादि चरुवर्ज्यं सर्वं प्रकृतिवत् पवित्रप्रणीतानिधानान्ते
दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मान्वारब्धः स्रुवेण ॥ मनसा ॥

(ॐ प्रजापतये स्वाहा) इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा
इदं इन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम ॥ ॐ
सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥
ॐ अग्रे नयसुपथा रायेऽ अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥
व्रतादौ जातवेदसः नाम्ने वैश्वानराय नमः गंधाक्षत पुष्पाणि
समर्पयामि ॥

विनियोगः-भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवता उपनयनाङ्गप्रधान
होमे विनियोगः ॥

ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे
न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्रे व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ॥
 षजिष्ठोवहितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्
 स्वाहा ॥ इदमग्रीवरुणाभ्यां न नमः ॥४॥

ॐ सत्त्वन्नोऽ अग्रेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽ अस्याऽउषसोव्युष्टौ ॥
 अवयक्ष्वनो वरुणथं रराणोव्वीहिमृडीकथं सुहवो न एधि स्वाहा ॥
 इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानो
 षज्ञंवहास्ययानोधेहि भेषजथं स्वाहा ॥ इदमग्रयेअयसे न मम ॥६॥

ॐ षेते शतंवरुणं षेसहस्रं षज्ञियाः पाशाविततामहान्तः ॥
 तेभिन्नोऽअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥
 इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च
 न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध्यमथंश्रथाय ॥
 अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं
 वरुणायादितये न मम ॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥९॥

ॐ अग्रये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अग्रये स्विष्टकृते न मम ॥
 संस्त्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् अग्रौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥
 ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य उपनयनाख्यस्य कर्मणः
 सांगतासिद्धयर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ पश्चिमे
 प्रणीताविमोकः तज्जलेन मार्जनम् ॥

आपः शिवाः शिवतमास्तास्ते ॥

तत आचार्यः कुमारं शिक्षयतिः—(आचार्य बालक को शिक्षा दें)

आचार्यः—ब्रह्मचार्यसि (तुम ब्रह्मचारी हो)

बटुकः—असानि (अवश्य ब्रह्मचारी हूँ)

आचार्यः—आपोशान (भोजन करने से पहले उसी भोजन में से आपोशान निकालना चाहिये वह इस प्रकार है भोजन के चारो और जल का मंडल करके)

ॐ भूपतये नमः । ॐ भुवनपतये नमः । ॐ भूतानांपतये नमः ॥
(इन मंत्रों से तीन ग्रास भूमि पर रख कर जल छोडे ॥ फिर घृत मिश्रित पांच ग्रास इन मंत्रों से ग्रहण करे) ॥

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा,
ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा ।

बटुकः—अशनानि (अवश्य करूँगा)

आचार्यः—कर्म कुरु (कर्म करना होगा)

बटुकः—करवाणीति (मैं वैदिक कर्म करूँगा)

आचार्यः—मा दिवा सुषुप्थाः (दिन में कभी मत सोना)

बटुकः—न स्वपानि (नहीं सोया करूँगा)

आचार्यः—वाचं यच्छ (सत्य वाणी बोलना होगा)

बटुकः—यच्छानि (अवश्य सत्य बोलूँगा)

आचार्यः—समिधमाधेहि (समिधा हवन करना होगा)

बटुकः—आदधानि (अवश्य करूँगा)

तत्रादौः—आचारात्कांस्यपात्रे तंडुलान्प्रसार्य तत्र सुवर्णशलाकया
ॐ कारव्याहृतिपूर्वकं गायत्री मंत्रं लिखित्वा ॥

(आचार्य कांसी की थाली में चावल फैलाकर सोने की शलाका से गायत्री मंत्र लिखकर उसकी पूजन कर आचार्य गायत्री मंत्र बालक को सुनावें)

बटुर्जलं-गृहीत्वा-संकल्पः—अद्येत्यादि०मम ब्रह्मवर्चस सिद्धि पूर्वक वेदाध्ययनाधिकारसिद्धयर्थं गायत्र्युपदेशाङ्गविहितं गायत्रीपूजनमाचार्यपूजनं चाहं करिष्ये ॥ तत्रादौ गणपतेः पञ्चोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ॥

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥ गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥ इदम् मोदकम् श्रीफलास्यार्घं मुद्रार्पणम् प्रदक्षिणा नमस्कारं पूजनं परिपूर्णतास्तु ॥ ततः क्षौमं कार्पासिकं वा वस्त्रमवगुण्ठय उपदेशं माणवकाय दद्यात् ॥

(बटुक गुरु जी के चरण पकड़ कर अपना मस्तक नवावें ॥ बटुक के दक्षिण कर्ण में आचार्य बटुक का दक्षिण हस्त अपने हाथ में पकड़ कर ऊपर अबोट वस्त्र ओढाकर शंख (गरुड) घंटी की ध्वनि में तीनबार गायत्री मंत्र का उपदेश करें) :

विनियोगः-ॐ तत्सवितुरिति विश्वमित्र ऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता उपदेश ग्रहणे विनियोगः॥ तत आचार्यो गायत्री ब्रूयात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् । ॐ स्वस्ति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । ॐ स्वस्ति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥ ॐ स्वस्ति ॥

गुरवे दक्षिणां समर्पयेत् प्रणामं च विदधीत ॥

(गुरु जी बालक की थोड़ी सी चोटी काट ले बालक गुरु जी को यथा शक्ति दक्षिणा दे और प्रणाम करें) (गुरु जी बालक को आशीर्वाद दें)

आचार्यः-आयुष्मान् भव सौम्य ॥

(बटुक द्वारा घी में डुबोकर पाँच छाँणा रा टुकडा होमावें)

विनियोगः-अग्ने सुश्रवादीनां ब्रह्माऋषिः यजुश्छन्दः अग्निर्देवता संधुक्षणे विनियोगः ॥

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव संमाकुरु ॥१॥ (स्वाहा)

ॐ यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवाऽअसि ॥२॥ (स्वाहा)

ॐ एवंमाथं सुश्रवः सौश्रवसंकुरु ॥३॥ (स्वाहा)

ॐ यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपाऽअसि ॥४॥ (स्वाहा)

ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्यनिधिपोभूयासम् ॥५॥ (स्वाहा)
बटुक एक अग्नि की प्रदक्षिणा करे ॥ (बटुक को खड़ा कर
समिधा देवे)

(और इसी मंत्र से तीन समिधा एक एक करके अग्नि के अर्पण करावे)
विनियोगः—अग्ने समिधमिति प्रजापतिऋषिः आकृतिच्छन्दः सविता
देवता समिदाधाने विनियोगः ॥

ॐ अग्ने समिध महार्षम्बृहते जातवेदसे ॥ यथात्वमग्ने समिधा
समिध्यसऽ एवमहमायुषा मेधयावर्चसा प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसे
न समिधे जीवपुत्रोममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिरा करिष्णु र्यशास्वी
तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासथं स्वाहा ॥

इत्यनेन मंत्रेण प्रथमां तथा द्वितीयां तथैव तृतीयां जुहुयात् ॥
उपविश्य ॥

(पुनः बटुक द्वारा घी में डुबोकर पाँच छाँणा रा टुकड़ा होमावे)
विनियोगः—अग्ने सुश्रवादीनां ब्रह्माऋषिः यजुश्छन्दः अग्निर्देवता
संधुक्षणे विनियोगः ॥

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव संमाकुरु ॥१॥ (स्वाहा)

ॐ यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवाऽअसि ॥२॥ (स्वाहा)

ॐ एवंमाथं सुश्रवः सौश्रवसंकुरु ॥३॥ (स्वाहा)

ॐ यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपाऽअसि ॥४॥ (स्वाहा)

ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्यनिधिपोभूयासम् ॥५॥ (स्वाहा)

ततः तूष्णीं पाणी प्रतप्य ॥ तनूपाऽअग्नेसि इत्यादि सप्तभिर्मन्त्रैः
प्रतिमंत्रं मुखविमर्शनं करोति ब्रह्मचारी ॥

(बटुक चुपचाप अपने हाथों को अग्नि में तपाकर प्रत्येक मंत्र
के अन्त में मुँहपर लगावे)

विनियोगः—तनूपाअग्नेइत्यादि सप्तमंत्राणां बृहदेवा ऋषयः यजुश्छंषि
छन्दांसि अग्निर्देवता मुखविमर्शने विनियोगः ॥

ॐ तनूपाऽअग्नेसि तन्वम्मेपाहि ॥१॥

ॐ आयुर्दाऽ अग्रेस्यायुर्मे देहि ॥२॥

ॐ वर्चोदाऽ अग्रेसिवर्चोमे देहि ॥३॥

ॐ अग्नेयन्मे तन्वाऽ ऊनन्तन्मऽ आपृण ॥४॥

ॐ मेधाम्मेदेवः सविताऽ आदधातु ॥५॥

ॐ मेधाम्मे देवी सरस्वतीऽ आदधातु ॥६॥

ॐ मेधामश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्त्रजौ ॥७॥ इत्येते मुखविमर्शन मंत्राः ॥

(बटुक अपने दक्षिण हाथ से शरीर के अंगो का स्पर्श करे)
अत्र शिष्टाचारतोऽनुष्ठेयाः पदार्थाः ॥ (बालक विनियोग करें)
विनियोगः—अंगानिचैत्यादिनां प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः लिंगोक्ता देवता अंगाप्यायने विनियोगः ॥

ॐ वाक्चमऽ आप्यायतामिति मुखालंभनम् ॥ (मुख का स्पर्श करें)

ॐ प्राणश्चमऽ आप्यायतामिति नासिकयोरालंभनम् ॥ (नाक का स्पर्श करें)

ॐ चक्षुश्चमऽ आप्यायतामिति नेत्रयोरालंभनम् ॥ (नेत्रों का स्पर्श करें)

ॐ श्रोत्रञ्चमऽ आप्यायतामिति दक्षिणकर्णमालभ्यानेनैव मन्त्रेण वामकर्णालंभनम् ॥

(दोनों कानों का स्पर्श करें)

ॐ यशोबलञ्चमऽ आप्यायतामिति मन्त्रजपः ॥ (दोनों भुजाओं का स्पर्श करें)

अत्रावसरे भस्म धारणम् ॥

विनियोगः—त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः अग्निर्देवता भस्मना तिलककरणे विनियोगः ॥

ॐ त्र्यायुषं जमदग्रेरिति ललाटे ॥ ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ॥ ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति स्कन्धे ॥ ॐ तन्नोऽ अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि ॥

ततो गोत्रनाम पूर्वकं वैश्वानरादीनाम् अभिवादनम् ॥

(बटुक गोत्र और नाम का उच्चारण कर सभी को प्रणाम करें और आशीर्वाद लें)

अमुकगोत्रः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्मा अहं भो वैश्वानर त्वामभिवादयामि ॥ आयुष्मान् भव सौम्य ॥

भो गुरो त्वाम् अभिवादयामि ॥ आयुष्मान् भव सौम्य ॥

भो आचार्य त्वाम् अभिवादयामि ॥ आयुष्मान् भव सौम्य ॥

भो मातापितरौ युवाम् अभिवादयामि ॥ आयुष्मान् भव सौम्य ॥

भो सूर्याचन्द्रमसौ युवाम् अभिवादयामि ॥ आयुष्मान् भव सौम्य ॥

सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादयामि ॥ आयुष्मान् भव सौम्य ॥

इत्यभिवादनम् ॥

अथ भिक्षाचरणम् ब्रह्मचारी दण्डं भिक्षापात्रं च प्रतिगृह्य सावित्र्या आदित्यमुपस्थाय अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य प्रथमं मातरं भिक्षेत् ॥

(भिक्षापात्र के लिये बाँसरी छावडी १, (गरणां श्वेत) या चावल ४ डोवे, खाजा ७ सेवियांरा लाडू ७ या (मूँग के), नारियल १, रूपये ११, २१, ५१, १०१, इत्यादि ॥)

(ब्रह्मचारी भिक्षापात्र ले पावडी पहने हाथ में दण्ड लेकर अग्नि की एक परिक्रमा करके । प्रथम माता से भिक्षा ले माता चार पस्से चावल रखें । सात खाजे रखे सात लड्डू रखें एक नारियल रखें । दक्षिणा रखें फिर बालक अन्य लोगों से भिक्षा ले पहली भिक्षा आचार्य जी को । दूसरी भिक्षा मामी जी को । और तीसरी भिक्षा माँ को दे दें)

१-ॐ भवति भिक्षां देहि ॥ ॐ स्वस्ति ॥ (इति ब्राह्मणः) ॥

२-ॐ भिक्षां भवति देहि ॥ (इति क्षत्रियः) ॥

३-ॐ भिक्षां देहि भवति ॥ (इति वैश्यः) ॥

तिस्रः षट् द्वादश वा अपरिमिता भिक्षा ग्राह्याः ॥ आचार्याय भैक्ष्यं निवेदयित्वा भुंक्व इति आचार्यानुज्ञातो भिक्षां स्वीकुर्यात् ॥

(प्रथम भिक्षा में प्राप्त सामग्री गुरु को भेंट करे)

ॐ वाग्यतोऽहश्शेषं तिष्ठेदित्येकेऽ हिर्ष सन्नरण्या आहृत्य
तस्मिन्नग्रौ पूर्ववत आधाय ततः पाणिनाऽग्रिं परिसमूहति ॥

(मन वचन और कर्म से ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये ब्रह्मचारी
रहे । और निम्न धर्मों का पालन करे)

॥ ब्रह्मचारिधर्माः ॥

प्राचीनः—अधः शयीत। (धरती पर सोये) अक्षारलवणाशी स्यात्।
(खारा भोजन न करे) दण्डधारणम्। (दण्ड धारण करे)
अग्रिपरिचरणं समिदाधानं कर्तव्यम्। (अग्रि पूजन और समिदाधान
करे) गुरुसुश्रूषा कर्तव्या। (गुरु सेवा करे) भिक्षाचर्यं
कर्तव्यम्। (भिक्षा माँगे) मधुमांसाशनं न कर्तव्यम्। (मधु, मांस
भोजन न करे) मज्जनं न कर्तव्यम्। (पानी में डूब कर स्नान
न करे) पर्यासने नोपविशेत्। (अपने से बड़ों के सामने ऊँचे
आसन पर न बैठे) स्त्रीणां मध्येऽवस्थानं न कर्तव्यम्। (स्त्रियों
के बीच में न बैठे) अदत्तं न गृह्णीयात्। (बिना दिये कोई चीज
न ले) अनृतं न वदेत्। (झूट न बोले) अस्तसमये भास्करावलोकनं
न कुर्यात्। (सूर्यास्त के समय सूर्य को न देखे) कांस्यपात्रे
मृन्मयपात्रे भोजनं न कुर्यात्। (काँसी के पात्र और मिट्टी के बर्तन
(चीनी) में भोजन न करे) तांबूलभक्षणं न कुर्यात्। (पान का
बीडा न चबाये) अभ्यंगमक्षणोरंजनमुपानच्छत्रादर्शं च वर्जयेत्
॥(आखों में काजल न लगाये, जूते धारण न करे, छाता न
लगावे और काँच न देखे) इति नियमाः ॥

आधुनिकः—अथ क्षारलवण मधुमांसादि निवृत्तिः उद्धृत जलस्नान
दण्डकृष्णाजिनधारणम् । वृक्षारोहण विषम भूमिलंघन-
नग्नस्त्रीनिरीक्षण- स्त्रीसम्भोग व्यसनव्यावृत्तिरूपा लघुशंका
शौचकाले दक्षिणकर्णे यज्ञोपवीत धारणम् प्रत्यहं संध्योपासना
गायत्रीजपश्च ब्रह्मचारिणो नियमाः ॥

खारी चीजे नमक, शहद, मांस शराब बासी रोटी आदि न खाये। किसी का झूठा न खाना, किसी की हिंसा न करना, झूठ न बोलना, जल को अलग निकालकर स्नान करना। दण्ड और काला मृगचर्म धारण करना। नग्न स्त्री को न देखना, मैथुन और दुर्व्यसनों से अत्यन्त दूर रहना। वृक्ष पर न चढ़ना। ऊँची नीची भूमि पर न कूदना। किसी की बुराई नहीं करना। उदय अस्त सूर्य को नहीं देखना। लघुशंका शौच जाते समय दक्षिणवाम कर्ण में यज्ञोपवीत धारण करना। प्रतिदिन संध्योपासना कर गायत्री की कम से कम २१, ११, ५, माला तो फेरनी ही चाहिये। ये सब नियम ब्रह्मचारी को करने होंगे ॥

पिता हस्ते जलमादायः—कृतस्य मम पुत्रस्योपनयनाख्यस्य कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं स्मृत्युक्तान् पंचाशत्संख्याकान् ब्राह्मणान् यथासंपन्नेनात्रेनाहं भोजयिष्ये तेन कर्मागिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ यथाशक्त्या उपनयनविधेः परिपूर्णताऽस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णता ॥

❀ ॥ द्वितीय वेदी वेदारंभ संस्कार ॥ ❀

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चैकेत्यादि पठित्वा ॥

संकल्पः—अद्येत्यादि० अस्य ब्रह्मचारिणः स्वशाखापूर्वकं वेदारंभमहं करिष्ये ॥

द्वितीय स्थण्डिलोपरि पञ्चभूसंस्कारान् कृत्वाः— ॐदभैः परिसमुह्य ३ गोमयेनोपलिप्य ३ स्रुवेणोल्लिख्य ३ अनामिकांऽगुष्ठेनोद्धृत्य ३ उदकेनाऽभ्युक्ष्य । अग्निमुप समाधाय ॥ ॐअग्निन्दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ २॥ आ सादयादिह ॥ अग्निं आवाहयामि स्थापयामि ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं, उत्तरतः प्रणितासनम्, तत्र ब्रह्मोऽपवेशनम्, यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्म स्थिरोभव ॥ पूजनम्ः—ॐ ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत्पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ब्रह्मान्वारब्धे स्रुवेण होमः ॥ मनसा ॥ (ॐ प्रजापतये स्वाहा)
इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥
ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं
सोमाय न मम ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥

ॐ अग्ने नयसुपथा रायेऽ अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥
व्रतादेशो समुद्भव नाम्ने वैश्वानराय नमः ॥ गंधाक्षत पुष्पाणि
समर्पयामि ॥

ततः सर्वाश्च वेदाहुतयो होतव्याः ॥ यथा :-

अथ यजुर्वेदाहुतयः- ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं अन्तरिक्षाय
न मम । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥

अथ ऋग्वेदाहुतयः- ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न मम ।
ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे
न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥

अथ सामवेदाहुतयः- ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे न मम । ॐ
सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे
न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥

अथ अथर्वणवेदाहुतयः- ॐ दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो न मम ।
ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । ॐ देवेभ्यः स्वाहा
इदं देवेभ्यो न मम । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यो न
मम । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै न मम । ॐ मेधायै स्वाहा
इदं मेधायै न मम । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये न
मम । ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अनुमतये न मम ।

ततो नवाहुतयः-

ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवःस्वाहा इदं वायवे न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्रे व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥

ॐ सत्त्वन्नोऽ अग्रेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽ अस्याऽउषसोव्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनो वरुणथं रराणोव्वीहिमृडीकथं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानो यज्ञंवहास्ययानोधेहि भेषजथं स्वाहा ॥ इदमग्रयेअयसे न मम ॥६॥ ॐ येते शतंवरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशाविततामहान्तः ॥ तेभिन्नोऽअद्यसवितोत

विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध्यमथंश्रथाय ॥ अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायादितये न मम ॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥९॥

ॐ अग्रये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अग्रये स्विष्टकृते न मम ॥ संस्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्रौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य वेदारंभसाङ्गता सिद्धयर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ पश्चिमे प्रणीताविमोकः तज्जलेन मार्जनम् ॥ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ कृतस्य वेदारंभकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथासंपन्नेनात्रेनाहं भोजयिष्ये तेन कर्माणि देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

✧ ॥ ततः काशी गमनम् ॥ ✧

ततः शिष्टाचारात् वेदसरस्वती पूजनम् ॥

संकल्पः—अद्येत्यादि० तिथौ ब्रह्मवर्चससिद्धयर्थं वेदसरस्वती पूजनमहं करिष्ये ॥

ॐ व्वेदोसियेन त्वन्देवव्वेद देवेभ्यो व्वेदोभवस्तेनमहं व्वेदोभयाः ॥

ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती ।

यज्ञं व्वष्टुधियावसुः । ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते वेदनारायणाय

नमः तथाच भगवतीमहासरस्वत्यै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ॥

अंजलौ पुष्पाण्यादाय ॥ शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमामाद्यां

जगद्व्यापिनीं, वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यांधकारापहाम्

॥ हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां, वंदे

तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः

भगवत्यै महासरस्वत्यै नमः प्रार्थनां समर्पयामि ॥ अनया पूजया

वेदसरस्वत्यौ प्रीयेतां न मम ॥

ततो यजुर्वेदादिमारभेत्—श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय

कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवाऽ

अयक्ष्मामावस्तेन ईशतमाघशथं सोध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात

बह्वीर्षजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ स्वस्ति ॥ यजुर्वेदाय नमः ॥

ॐ अग्रिमिले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम्

॥ ॐ स्वस्ति ॥ ऋग्वेदाय नमः ॥

ॐ अग्रऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि

बर्हिषि ॥ ॐ स्वस्ति ॥ सामवेदाय नमः ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय

आपो भवन्तुपीतये । शँब्धोरभिस्रवंतुनः ॥ ॐ स्वस्ति ॥

अथर्वणवेदाय नमः ॥ एवं वेदाध्ययनं कृत्वा संकल्पयेत् ॥

कृतस्य वेदारम्भाख्यास्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथाशक्ति
ब्राह्मणान् भोजयिष्ये तेन श्रीकर्माङ्गदेवता प्रीयतां न मम ।
वेदारम्भविधेः परिपूर्णतास्तु । अस्तु परिपूर्णता ॥

➔ ॥ तृतीय वेदी समावर्तन संस्कार प्रयोगः ॥ ←

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चैकेत्यादि पठित्वा ॥

संकल्पः—अद्येत्यादि० अस्य ब्रह्मचारिणः पश्चाद् गृहस्थाश्रमप्राप्ति
द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं समावर्तनाख्यं कर्म करिष्ये ॥

भो आचार्य अहं स्नास्यामि इति ब्रह्मचारिणः प्रश्नः ॥

स्नाहीति गुरुः ॥ पूर्ववदुपसंगृह्य गुरुम् ॥

तृतीय स्थण्डिलोपरि पञ्चभूसंस्कारान् कृत्वाः— ॐ दभैः परिसमुह्य

३ गोमयेनोपलिप्य ३ स्रुवेणोल्लिख्य ३ अनामिकांऽगुष्ठेनोद्धृत्य

३ उदकेनाऽभ्युक्ष्य । अग्निमुप समाधाय ॥ ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे

हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ २॥ आ सादयादिह ॥ अग्निं आवाहयामि

स्थापयामि ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं, उत्तरतः प्रणितासनम्, तत्र

ब्रह्मोऽपवेशनम्, यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्म स्थिरोभव ॥

पूजनम्ः— ॐ ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत्पुष्पाणि

समर्पयामि ॥

ब्रह्मान्वारब्धः । स्रुवेण होमः ॥ मनसा ॥ (ॐ प्रजापतये स्वाहा)

इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥

ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं

सोमाय न मम ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥

ॐ अग्रे नयसुपथा रायेऽ अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तं विधेम ॥

व्रतविसर्गे सूर्य नाम्ने वैश्वानराय नमः ॥ गन्धाक्षत पुष्पाणि

समर्पयामि ॥ इति सम्पूज्य

ततः सर्वाश्च वेदाहुतयो होतव्याः ॥ यथा :-

अथ ऋग्वेदाहुतयः-ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं अन्तरिक्षाय न मम । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥

अथ यजुर्वेदाहुतयः-ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न मम । ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥

अथ सामवेदाहुतयः-ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे न मम । ॐ सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम ॥

अथ अर्थवणवेदाहुतयः-ॐ दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो न मम । ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे न मम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो न मम । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यो न मम । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यो न मम । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै न मम । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै न मम । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये न मम । ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अनुमतये न मम ।

ततो नवाहुतयः-

ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवःस्वाहा इदं वायवे न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्रे व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥

ॐ सत्त्वन्नोऽ अग्रेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽ अस्याऽउषसोव्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनो वरुणथं रराणोव्वीहिमृडीकथं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानो
 यज्ञंवाहास्ययानोधेहि भेषजथं स्वाहा ॥ इदमग्रयेअयसे न मम ॥६॥
 ॐ षेते शतंवरुणं षेसहस्रं यज्ञियाः पाशाविततामहान्तः ॥
 तेभिर्त्रोऽअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥
 इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च
 न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध्यमथंश्रथाय ॥
 अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं
 वरुणायादितये न मम ॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥९॥

ॐ अग्रये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अग्रये स्विष्टकृते न मम ॥
 संस्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्रौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥
 ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य समावर्तनाख्यस्य कर्मणः
 साङ्गतासिद्धयर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥
 पश्चिमे प्रणीताविमोकः तज्जलेन मार्जनम् :-

आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥

(पुनः बटुक द्वारा घी में डुबोकर पाँच छाँणा रा टुकडा होमावे)

अत्र पूर्ववदग्रेः सन्धुक्षणं पञ्चभिर्मन्त्रैरिन्धन प्रक्षेपणम् ॥ तद्यथा:-

पाणिनाऽग्निं परिसमूहति

विनियोगः-अग्ने सुश्रवादीनां ब्रह्मात्रृषिः यजुश्छन्दः अग्निर्देवता
 संधुक्षणे विनियोगः ॥

१-ॐ अग्रे सुश्रवः सुश्रव संमाकुरु ॥१॥ (स्वाहा)

२-ॐ यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवाऽअसि ॥२॥ (स्वाहा)

३-ॐ एवंमाथं सुश्रवः सौश्रवसंकुरु ॥३॥ (स्वाहा)

४-ॐ यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपाऽअसि ॥४॥ (स्वाहा)

५-ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्यनिधिपोभूयासम् ॥५॥ (स्वाहा)

(बटुक को खड़ा कर समिधा देवें बटुक अग्नि की प्रदक्षिणा करें)
(और इसी मंत्र से तीन समिधा एक एक करके अग्नि के अर्पण करावें)
विनियोगः—अग्ने समिधमिति प्रजापतिर्ऋषिः आकृतिच्छन्दः सविता
देवता समिधाधाने विनियोगः ॥

ॐ अग्ने समिध महार्षम्बृहते जातवेदसे ॥ यथात्वमग्ने समिधा
समिध्यसऽ एवमहमायुषा मेधयावर्चसा प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसे
न समिधे जीवपुत्रोममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिरा करिष्णु र्यशस्वी
तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासथं स्वाहा ॥

इत्यनेन मंत्रेण प्रथमां तथा द्वितीयां तथैव तृतीयां जुहुयात् ॥
तत उपविश्य पुनः ॥

(पुनः बटुक द्वारा घी में डुबोकर पाँच छाँणा रा टुकडा होमावें)
अत्र पूर्ववदग्नेः सन्धुक्षणं पञ्चभिर्मन्त्रैरिन्धन प्रक्षेपणम् ॥ तद्यथाः—
पाणिनाऽग्निं परिसमूहति

विनियोगः—अग्ने सुश्रवादीनां ब्रह्माऋषिः यजूश्छन्दः अग्निर्देवता
संधुक्षणे विनियोगः ॥

१-ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव संमाकुरु ॥१॥ (स्वाहा)

२-ॐ यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवाऽअसि ॥२॥ (स्वाहा)

३-ॐ एवंमाथं सुश्रवः सौश्रवसंकुरु ॥३॥ (स्वाहा)

४-ॐ यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपाऽअसि ॥४॥ (स्वाहा)

५-ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्यनिधिपोभूयासम् ॥५॥ (स्वाहा)

(बटुक अपने दोनों हाथों को अग्नि में तपाकर प्रत्येक मंत्र के
अन्त में मुँहपर लगावें)

ततः अग्नेपर्युक्षणम् । पाणी प्रतप्य मुखं विमृष्टयेत् ॥

विनियोगः—तनूपाअग्नेइत्यादि सप्तमंत्राणां बृहदेवा ऋषयः यजुश्ऋषि
छन्दांसि अग्निर्देवता मुखविमर्शने विनियोगः ॥

१-ॐ तनूपाऽअग्नेसि तन्वम्मेपाहि ॥१॥ (स्वम्हा)

२-ॐ आयुर्दाऽ अग्नेस्यायुर्मे देहि ॥२॥ (स्वम्हा)

- ३-ॐवर्चोदाऽ अग्रेसिवर्चोमे देहि ॥३॥ (स्वाहा)
 ४-ॐअग्नेयन्मे तन्वाऽ ऊनन्तन्मऽ आपृण ॥४॥ (स्वाहा)
 ५-ॐमेधाम्मेदेवः सविताऽ आदधातु ॥५॥ (स्वाहा)
 ६-ॐमेधाम्मे देवी सरस्वतीऽ आदधातु ॥६॥ (स्वाहा)
 ७-ॐ मेधामश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥७॥ इत्येते
 मुखविमर्शन मंत्राः ॥

अत्रावसरे भस्म धारणम् ॥

विनियोगः-त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः अग्निर्देवता
 भस्मना तिलककरणे विनियोगः ॥

मंत्रः-ॐत्र्यायुषं जमदग्रेरिति ललाटे ॥ ॐकश्यपस्य त्र्यायुषमिति
 ग्रीवायाम् ॥ ॐयद्देवेषुत्र्यायुषमिति स्कन्धे ॥ ॐ तन्नोऽ
 अस्तुत्र्यायुषमिति हृदि ॥

ततः आचार्य परिश्रितस्योत्तरतः भूयसीत्यादिना क्रमेण
 अष्टानामुदकुम्भानां दक्षिणोत्तरागतानां स्थापनं कुर्यात् ॥

(अथः ताम्रस्य अष्ट कुम्भ दक्षिण से उत्तर की तरफ स्थापित करे) ॥

१-अथ कलश स्थापन मंत्रः-ॐभूरसि भूमिरस्य दितिरसि
 विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवीयच्छ पृथिवीन्द्र
 र्ठ ह पृथिवीम्माहिर्ठ सीः ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ २-ॐधान्यमसि
 धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु
 प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण
 पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥ इति यवान्निक्षिप्य ॥

३-ॐआजिघ्र कलशं मह्या त्वा व्विशंत्विन्दवः । पुनरुज्जा
 निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माऽ
 ऽविशताद्रयिः ॥ इति कुम्भं संस्थाप्य ॥

४-ॐवरुणस्योत्तं भनमसि व्वरुणस्यस्कं भसर्जनीस्तथो
 व्वरुणस्यऋत सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋत
 सदनमासीद ॥ इति जलं प्रपूर्य ॥

५-ॐ त्वां गन्धर्वाऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत ॥ इति गन्धम् ॥

६-ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च ॥ इति सर्वोषधी प्रक्षेपः ॥

७-ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ इति दूर्वाः ॥

८-ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो व्वसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ इति पंचपल्लवान् ॥

९-स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ इति मृत्तिकाप्रक्षेपः ॥

१०-ॐ याः फलिनीर्षाऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वहं हसः ॥ इति पूगीफलम् प्रक्षेपः ॥

११-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इति हिरण्यम् ॥

१२-ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्यकमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति पंचरत्नानि प्रक्षेपः ॥

१३-ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म व्वरूथमासदत्स्वः । वासो अग्रे विश्वरूपशं संव्ययस्व विभावसो ॥ इति मंत्रेण सूत्रवेष्टनम् ॥

१४-ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत ॥ व्वस्ने वव्विक्रीणा वहाऽइषमूर्ज ठं शतक्रतो ॥ इति तण्डुल पूर्णपात्रम् निधाय ॥

प्रतिष्ठाः-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्जस्य बृहस्पतिर्ब्रह्मि मन्तनोत्वरिष्टं ब्रह्म ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ॐ म्प्रतिष्ठ ॥ इति मंत्रेण प्रतिष्ठा कार्या ॥

ॐ उदकुंभाधिष्ठातृदेवताः सुप्रतिष्ठा वरदा भवन्तुः ॥

ॐ उदकुंभाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति गंधादिपञ्चोपचारैः पूजनं कुर्यात् ॥

ॐ तदस्तुमित्रा वरुणा तदग्रे शँख्यो रस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहिगा धमुत प्रतिष्ठान्नमो दिवे बृहते सादनाय ॥ इति मन्त्रेण
प्रतिष्ठा पूजनं परिपूर्णतामस्तु ॥

(तत् पश्चात् निम्न मंत्रेणानुसार बालक पर कलशों के जल से मार्जन करे)

१-प्रथम कलशः-ॐ येऽअप्स्वन्तरग्रयः प्रविष्टागोह्यऽ
उपगोह्योमयूषोमनो हास्खलो विरुजस्तनृदूषुरिन्द्रियहातान्विजहामि
यो रोचनस्तमिह गृह्णामि ॥ इतिमंत्रेण प्रथमकलशादुदकं गृहीत्वा
तेनोदकेन ॥ ॐतेनमामभिषिञ्चामिश्रियै यशसेब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥

२-द्वितीय कलशः-येन श्रियमकृणुतां येनावमृशताथं सुराम् ।
येनाक्ष्यावभ्यषिंचतांयद्वांत दश्विनायशः ॥

३-तृतीय कलशः-ॐआपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन ।
महेरणाय चक्षसे ॥

४-चतुर्थ कलशः-ॐषो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह
नः । उशतीरिव मातरः ॥

५-पञ्चम कलशः-ॐतस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥

६-षष्ठ कलशः-ॐउदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध
य मथंश्रथाय ॥ अथावयमा दित्यव्रते तवानागसोऽ अदितये
स्याम ॥

७-सप्तम कलशः-ॐउदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध
य मथंश्रथाय ॥ अथावयमा दित्यव्रते तवानागसोऽ अदितये
स्याम ॥

८-अष्टम कलशः- तूष्णीधारेण (ॐउदुत्तमंवरुण) धीरे धीरे
बोलकर स्नान करावें तथा मेखला छोड़ें व दण्ड रख देवें

(ॐ वासोन्यत परिधादिस मुपतिष्ठते) नये वस्त्र धारण करें तथा सूर्य प्रार्थना करें:-

ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्प्रातर्यावभिरस्था दशसनिरसि दशसनिंमा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्था द्विवायावभिरस्थाच्छत सनिरसिशत सनिंमाकुर्वा विदन्मागममयोद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्सा यंयावभिरस्थात्सहस्रसनिरसिसहस्र सनिंमाकुर्वाविदन्मागमयेति ॥ ततस्तुष्णीं दधि तिलान्वा प्राश्य

अतः दधि तिलान्न प्राशनम् तथा जटा लिरावैः- (ॐ जटान् लोमानषाँ च ठ हसः) जटा लोमनखान्संहृत्य ॥

(दही तिल खाकर आचमन करें फिर गूलर की दांतून करें)

औदुम्बरेण काष्ठेन दन्तान् धावयेत्:-

विनियोगः-अत्राद्येति मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता दन्तधावने विनियोगः ॥

ॐ अत्राद्यायव्यूहध्व ॐ सोमोराजायमागमत् । समेमुखंप्रमाक्ष्यते यशसा च भगेन च ॥

ततो दन्तकाष्ठं परित्यज्य ॥ आचम्य ॥ तत उदकेन मुखशोधनम् ॥

स्नानं कृत्वा गन्ध लेपनम्:- ॐ प्राणापानौ मे तर्पय ॥ (नाक के लगावे) चक्षुर्मे तर्पय ॥ (नेत्रों के लगाये) श्रोत्रम्मे तर्पय ॥ (कानों के लगायें)

ततः पाण्योरवनेजनं कृत्वा तदुदकमादाय ॥ अपसव्यं कृत्वा ॥ दक्षिणाभिमुखो भूत्वा तदुदकं दक्षिणस्यां दिशि निनयेत् ॥

(इसके बाद पितरों का तर्पण करे दक्षिण दिशा की और मुख करके अपसव्य होकर अँजली ले अंगूठे के नीचे से जल छोड़े ॥)

यथा:-

विनियोगः—ॐ पितरः शुन्धध्वमिति प्रजापतिऋषिः यजुश्छन्दः
अश्वीन्द्रासरस्वती देवताः पाण्यावनेजनस्य दक्षिणस्यां दिशि
निषेके विनियोगः ॥

मंत्रः—ॐ पितरः शुन्धध्वमिति पितरः शुन्धध्वम् । सव्यम् ॥
उदकस्पर्शः

ततः पूर्ववत् द्वितीय यज्ञोपवीतधारणं कुर्यात् ॥

(बालक को द्वितीय यज्ञोपवीत धारण करवायें)

विनियोगः—यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
लिंगोक्ता देवता श्रौतस्मार्त कर्मानुष्ठान सिद्धयर्थे यज्ञोपवीत धारणे
विनियोगः ॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥

आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ॥ यज्ञोपवीत
मसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनो पनह्यामि ॥ इति मंत्रं पठित्वा
दक्षिणबाहुमुद्धृत्य वामस्कंधे यज्ञोपवीतं धारयेत् ॥ आचमनम् ॥
बालक को सुन्दर वस्त्र पहनावें ॥ पुष्पमाला पहनाये ॥ सुवर्ण
कुण्डल धारण करवाये ॥

नवीनवस्त्रधारणम्—ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ
श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो
मनसा देवयन्तः ॥

सुवर्ण कुण्डल धारणम्—ॐ अलङ्करणमसि

भूयोलङ्करणम्भूयात् । पुनर्वामकर्णे च ॥

ततो वृत्रस्येत्यक्षिणी अञ्जेत् (प्रथमं दक्षिणं ततो वाममनेनैव
मन्त्रेण)

(मामी जी बालक के काजल लगायें पहले दक्षिण नेत्र में
फिर वाम नेत्र में) यथाः—

कज्जल धारण विनियोगः-वृत्रस्येति मंत्रस्य प्रजापतिऋषिः
गायत्रीछन्दः अञ्जनो देवता चक्षुरञ्जने विनियोगः ॥

मंत्रः-ॐ वृत्रस्यासिकनीनकश्चक्षुर्द्वाऽ असिचक्षुर्मे देहि ॥ ततो
रोचिष्णुरसि ॥ आदर्शो आत्मानं दर्शयेत् ॥ (काँच देखे)

संस्त्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ कृतस्य समावर्तनाख्यस्य कर्मणः साङ्गता
सिद्धयर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ पश्चिमे

प्रणीताविमोकः तज्जलेन मार्जनम् :- आपः शिवाः शिवतमाः
शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ कृतस्य

समावर्तनाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान्
बटुकान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च यथाकाले यथासंपन्नेनात्रेनाहं
भोजयिष्ये तेन कर्माग देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

कृतस्य समावर्तनाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं नानागोत्रेभ्यो
ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं भूयसी दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे तेन श्री
कर्माग देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

तत आचार्यादीन् गंधवस्त्रादिना संपूज्य तेभ्यश्च दक्षिणां दत्त्वा
तेषामाशिषो गृहीयात्

आशीर्वादः-ॐ शतञ्जीवशरदो वर्द्धमानः शतंहेमन्ताच्छत
मुवसन्तान् ॥ शतमिन्द्राग्निसविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं

पुनर्दुः ॥ ॐ शतमिन्नुशरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं
तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः

॥ ॐ विश्वानिदेव सवितर्द्दुरितानि परासुव ॥ यद्ब्रह्मन्तत्रऽआसुव ॥

॥ इति समावर्तन संस्कार प्रयोगः ॥

☞ अथ गृहवास्तु पूजनम् ॥ ☞

आचम्य प्राणानायम्य शान्तिसूक्तं पठेत् ॥ ततः सुमुखश्चेत्यादि
पठित्वा ॥

संकल्पः-अद्येत्यादि० मम सर्वापिच्छान्ति पूर्वकं दीर्घायुर्विपुल

धनधान्य पुत्रपौत्रघनवच्छिन्नसन्तति वृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्ट सिद्धयर्थं भवनदोषपरिहारार्थं नानाविध जीवहिंसादिजन्य सकलदोष परिहारपूर्वक सर्वारिष्टोप शान्त्यर्थम् अस्मिन्गृहे चिरकालनिवासार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये सग्रहमखां शालाकर्मपूर्विकां वास्तुशान्तिं करिष्ये ॥ तदंगतया दिग्रक्षणं कलशाराधनं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोद्धरिरायुष्यमंत्रजपं नान्दीश्राद्धं ब्रह्माचार्यऋत्विग वरणं च करिष्ये ॥

(यजमान गृहद्वार पर वर्धनीकलश व देहली इत्यादि पूजन करे, शुभ लाभ इत्यादि लिखे)

गृह-द्वारपरः-ततः सपत्निको यजमानो वर्धनीकलशं गृहीत्वा गृहाद्बहिर्निष्क्रम्य द्वारदेवतानां पूजनं कुर्यात् ॥ इति संकल्प्य तानि ग्रहशान्तिवत् कुर्यात् ॥

अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वाः-पूर्वद्वारे-ग्रामणीपीठे ॐपक्षीन्द्राय नमः ।

दक्षिणेः-ॐचण्डाय नमः । वामेः-ॐप्रचण्डाय नमः ।

ऊर्ध्वः-ॐद्वारश्रियै नमः ।

देहल्यां द्वारपीठस्यमध्येः-ॐवास्तुपुरुषाय नमः ।

दक्षिणशाखायांः-ॐगंगायै नमः ।

वामशाखायांः-ॐयमुनायै नमः । दक्षिणेः-ॐशंखनिधये नमः ।

वामेः-पद्मनिधये नमः । द्वारस्यऊर्ध्वः-आग्नेय्यां-गणपतये नमः ।

अधः- नैऋत्यां दुर्गायै नमः । अधः- वायव्यांः- सरस्वत्यै

नमः । ऊर्ध्वम्-ईशान्यां क्षेत्रपालाय नमः । द्वारश्रियाद्यावाहित

देवताभ्यो नमः । सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

तोरणाय नमः । सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

ततो यजमान आचार्यं पृच्छेत् । ब्रह्मन् प्रविशामि । आचार्येण

प्रविशास्व इत्युक्तेः-

ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये इत्युक्त्वा शान्तिसूक्तं पठित्वा ॥ दक्षिणपादपुरः

सरं स्वदक्षिणस्कन्धेन द्वारवामशाखां च देहलिं स्पृशन् गृहान्तः
प्रविश्य वर्द्धनीकलशमैशान्यां स्थापयेत् ॥

ॐ ॥ नैऋत्यकोणे वास्तुदेवतास्थापनम् ॥ ॐ
तत्रादौ वास्तुपीठे श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि तंदुलैरेकाशीतिपदं
वास्तुमंडलं कृत्वा हस्तेजलमादायः-अद्येत्यादि० प्रारब्धस्य
कर्मणः सांगतासिद्धर्थं वास्तुमंडले देवतास्थापनं पूजनं चाहं
करिष्ये ॥ तत्रादौ वास्तुपीठस्य आग्नेयादिकोणेषु चतुरः शंकून्
रोपयेत् ॥

१-ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ।

अस्मिन् गृहेऽवतिष्ठन्तामायुर्बल कराः सदा ॥

इति मंत्रेण शंकुम् रोपयेत् ॥

अनेनैव मंत्रेण द्विगुणीकृतसूत्रेण सर्वेषां वेष्टनं कुर्यात् ॥

आग्नेयादि कोणेषु क्रमेण शंकुपार्श्वे माषभक्त दध्योदनबलिं दद्यात् ॥

तत्र मंत्राः :-

१-अग्निकोणे :- ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये
तान्समाश्रिताः । बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम् ॥
अग्रये नमः इमं बलिं समर्पयामि ॥

२-नैऋत्य कोणे :- ॐ नैऋत्याधि पतिश्चैव नैऋत्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥ नैऋतये नमः
इमं बलिं समर्पयामि ॥

३-वायव्य कोणे :- ॐ नमो वै वायु रक्षेभ्यो ये चान्ये
तान्समाश्रिताः । बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥
वायवे नमः इमं बलिं समर्पयामि ॥

४-ईशान कोणे :- ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥ ईशानाय नमः
इमं बलिं समर्पयामि ॥

(ततो वेद्युपरि प्रसारितवस्त्रे कुंकुमादि सुवर्णरजतादि शलाकया नाममंत्रैः॥)

१-रेखा-करणम्:-पश्चादारभ्यः प्रागन्ता च उकद्संस्थाः समा अंगुलद्वयान्तरा गृह वास्तुत्वादेकाशीति पदमण्डले दश रेखाः कुर्यात् ॥

रेखादेवताः स्थापयेत्:-शान्तायै नमः । यशोवत्यै नमः । कान्त्यै नमः । विशालायै नमः । प्राणवाहिन्यै नमः । सत्यै नमः । सुमत्यै नमः । नन्दायै नमः । सुभद्रायै नमः । सुरथायै नमः ।

२-रेखा-करणम्:-तथैव दक्षिणारंभा उदगन्ताः प्राक्संस्थाः दश रेखाः कुर्यात् ।

रेखादेवताः स्थापयेत्:-हिरण्यायै नमः । सुव्रतायै नमः । लक्ष्म्यै नमः । विभूत्यै नमः । विमलायै नमः । प्रियायै नमः । जयायै नमः । ज्वालायै नमः । विशोकायै नमः । इडायै नमः ।

प्रतिष्ठा:- ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्घस्य बृहस्पति र्व्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ॐ म्प्रतिष्ठ ॥ रेखादेवताभ्यो नमः ॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ अथ एकाशीतिपदवास्तुमण्डल देवतास्थापनम् ॥ ॐ

१-ऐशान कोणे पदे:- ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः । शिखिनमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-तद्दक्षिणैकपदे:-पर्जन्याय नमः । पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-तद्दक्षिणपदद्वये:-जयन्ताय नमः । जयन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-तद्दक्षिणपदद्वयैः-कुलिशायुधाय नमः । कुलिशायुधमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-तद्दक्षिणपदद्वये:-सूर्याय नमः । सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

- ६-तद्दक्षिणपदद्वयेः-सत्याय नमः । सत्यमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ७-तद्दक्षिणपदद्वयेः-भृशाय नमः । भृशमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ८-तद्दक्षिणैकपदेः-आकाशाय नमः । अकाशमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ९-तद्दक्षिणाग्नेयकोणेपदेः-वायवे नमः । वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥
- १०-तत्पश्चिमैकपदेः-पूष्णे नमः । पूषाणमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ११-तत्पश्चिमपदद्वयेः-वितथाय नमः । वितथमावाहयामि स्थापयामि ॥
- १२-तत्पश्चिमपदद्वयेः-गृहक्षताय नमः । गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि ॥
- १३-तत्पश्चिमपदद्वयेः-यमाय नमः । यममावाहयामि स्थापयामि ॥
- १४-तत्पश्चिमपदद्वयेः-गन्धर्वाय नमः । गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि ॥
- १५-तत्पश्चिमपदद्वयेः-भृङ्गराजाय नमः । भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि ॥
- १६-पश्चिमोपरिस्थितैकपदेः-मृगाय नमः । मृगमावाहयामि स्थापयामि ॥
- १७-तत्पश्चिमे नैऋत्यकोणेपदेः-पितृभ्यो नमः । पितृनावाहयामि स्थापयामि ॥
- १८-तदुत्तरैकपदेः-दौवारिकाय नमः । दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि ॥
- १९-तदुत्तरपदद्वयेः-सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २०-तदुत्तरपदद्वयेः-पुष्पदन्ताय नमः । पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

- २१-तदुत्तरपदद्वयेः-वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २२-तदुत्तरपदद्वयेः-असुराय नमः। असुरमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २३-तदुत्तरपदद्वयेः-शोषाय नमः। शोषमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २४-तदुत्तरोपरिस्थितैकपदेः-पापाय नमः। पापमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २५-तदुत्तरवायव्यकोणेपदेः-रोगाय नमः। रोगमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २६-तत्प्रागेकपदेः-अहये नमः। अहयमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २७-तत्प्राक्पदद्वयेः-मुख्याय नमः। मुख्यमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २८-तत्प्राक्पदद्वयेः-भल्लाटाय नमः। भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि ॥
- २९-तत्प्राक्पदद्वयेः-सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि ॥
- ३०-तत्प्राक्पदद्वयेः-सर्पाय नमः। सर्पमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ३१-तत्प्राक्पदद्वयेः-अदित्यै। अदितिमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ३२-तत्प्रागुपरिस्थितैकपदेः-दित्यै नमः। दितिमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ३३-तद्दक्षिणे शिखिपदाधः-आपाय नमः। अपः आवाहयामि स्थापयामि ॥
- ३४-आग्नेय वायुपदाधः-सवित्राय नमः। सवित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ३५-नैऋत्यपितृपदाधः-जयाय नमः। जयमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ३६-वायव्यरोगपदाधः-रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ३७-मध्येनवपदात्पूर्वं पदत्रयेः-अर्यम्णे नमः। अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि ॥

३८-तद्दक्षिणाग्रेयकोणैकपदेः-सवित्रे नमः । सवित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

३९-तत्पश्चिमपदत्रयेः-विवस्वते नमः । विवस्वन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

४०-तत्पश्चिमनैऋत्यकोणैकपदेः-विबुधाधिपाय नमः । विबुधाधिपमावाहयामि स्थापयामि ॥

४१-तदुत्तरपदत्रयेः-मित्राय नमः । मित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

४२-तदुत्तरवायव्यकोणैकपदेः-राजयक्ष्मणे नमः । राजयक्ष्मणमावाहयामि स्थापयामि ॥

४३-तत्प्राक्पदत्रयेः-पृथ्वीधराय नमः । पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि ॥

४४-तत्पाक् ईशानकोणैकपदेः-आपवत्साय नमः । आपवत्समावाहयामि स्थापयामि ॥

४५-मध्ये नवपदेषुः-ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

मण्डलाद्बहिः श्वेतपरिधौ :-

४६-ईशान्याम्:-चरक्यै नमः । चरकीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४७-आग्नेय्याम्:-विदार्यै नमः । विदारीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४८-नैऋत्याम्:-पूतनायै नमः । पूतनामावाहयामि स्थापयामि ॥

४९-वायव्याम्:-पापराक्षस्यै नमः । पापराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि ॥

↔ मण्डलाद्बहिः-↔

५०-पूर्वेः-स्कन्दाय नमः । स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥

५१-दक्षिणेः-अर्यम्णे नमः । अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि ॥

५२-पश्चिमेः-जृम्भकाय नमः । जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि ॥

५३-उत्तरेः-पिलिपिच्छाय नमः । पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि ॥

मण्डलाद्बहिः- ५४-पूर्वेः-इन्द्राय नमः । इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

५५-आग्नेय्याम्ः-अग्रये नमः । अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥

५६-दक्षिणस्याम्ः-यमाय नमः । यममावाहयामि स्थापयामि ॥

५७-निर्ऋत्याम्ः-निर्ऋतये नमः । नैर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

५८-पश्चिमेः-वरुणाय नमः । वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

५९-वायव्याम्ः-वायवे नमः । वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

६०-उत्तरेः-कुबेराय नमः । कुबेरमावाहयामि स्थापयामि ॥

६१-ईशान्याम्ः-ईश्वराय नमः । ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥

६२-पूर्वेशानयोर्मध्येः-ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

६३-निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्येः-अनन्ताय नमः । अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

६४-पूर्वेइन्द्रादुत्तरतः-उग्रसेनाय नमः । उग्रसेनमावाहयामि स्थापयामि ॥

६५-दक्षिणेयमादुत्तरतः-डामराय नमः । डामरमावाहयामि स्थापयामि ॥

६६-पश्चिमे वरुणादुत्तरतः-महाकालाय नमः । महाकालमावाहयामि स्थापयामि ॥

६७-उत्तरे सो मादुत्तरतः-पिलिपिच्छाय नमः । पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि ॥

—❧❧❧ तृतीयकृष्णपरिधौ देवतास्थापनम् :- ❧❧❧—

६८-पूर्वेः-हेतुकाय नमः । हेतुकमावाहयामि स्थापयामि ॥

६९-आग्नेय्याम्ः-त्रिपुरान्तकाय नमः । त्रिपुरान्तकमावाहयामि स्थापयामि ॥

७०-दक्षिणेः-अग्निवैतालाय नमः । अग्निवैतालमावाहयामि स्थापयामि ॥

७१-नैऋत्याम्:-असिवैतालाय नमः । असिवैतालमावाहयामि स्थापयामि ॥

७२-पश्चिमे:-कालाय नमः । कालमावाहयामि स्थापयामि ॥

७३-वायव्याम्:-करालाय नमः । करालमावाहयामि स्थापयामि ॥

७४-उत्तरे:-एकपादाय नमः । एकपादमावाहयामि स्थापयामि ॥

७५-ईशान्याम्:-भीमरूपाय नमः । भीमरूपमावाहयामि स्थापयामि ॥

७६-पूर्वेशानयोर्मध्ये:-खेचराय नमः । खेचरमावाहयामि स्थापयामि ॥

७७-निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये:-

तलवासिने नमः । तलवासिनावाहयामि स्थापयामि ॥

ॐवास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नोऽस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे आवाहयामि स्थापयामि ॥

प्रतिष्ठा:-ॐमनो जूतिर्जुषतामाज्जस्य बृहस्पति र्ध्वं जमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञं ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ॐ म्प्रतिष्ठ ॥ वास्तुमंडलदेवताभ्यो नमः ॥

(ततो मध्य ताम्रकलशं संस्थाप्य तत्र वास्तुध्रुवमूर्त्यौ अग्न्युत्तरण पूर्वकं प्राण प्रतिष्ठा कृत्वा मूर्त्यौ कलशोपरि संस्थाप्य ॥)

वास्तुध्रुवमूर्तिभ्यां नमः षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

पूजनं कुर्यात्:-आसनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥ हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान्

समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि
 ॥ सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि
 ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं
 समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥
 श्रीफलं समर्पयामि ॥

मंत्रः-वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो ।

मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा ॥

ततो नाममंत्रेण पायसबलिं दद्यात् ॥

(हवन इत्यादि के पश्चात्)

ततः पूर्वादिक्रमेण ध्वजापताकां रोपयेत् ॥ त्रिरावृत्तेन सूत्रेण
 रक्षोघ्नमंत्रेण गृहं वेष्टयेत् ॥

दुग्धजलेन गृहस्य परितः पवमानरक्षोघ्नसूक्तं पठन् अविच्छिन्नधारां
 पातयेत् ॥

तथा आग्नेयकोणे जानुपरिमितगर्तं खनयित्वा मृत्पेटिकायां
 शैवालादिकं क्षित्वा तत्र वास्तुमूर्तिं संस्थाप्य सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत
 पुष्पाणि समर्पयामि ॥ ततः पेटिकां गर्ते शनैर्निक्षिपेत् । तस्मिन्
 गर्ते शनैर्जलं मृदं च निक्षिपेत् ॥ ततो गोपयेनोपलिप्य सर्वोपचारार्थं
 गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पञ्चगव्येन, पुण्याहवाचन जलेन
 गृहं प्रोक्षयेत् ॥ इति गृहवास्तुमण्डलपूजन ॥

॥ चतुः षष्टिपद वास्तुमण्डल देवानांस्थापनम् ॥

ॐ तत्सद्य पूर्व संकल्पानुसारेण चतुः षष्टिपद वास्तु मण्डलोपरि
 शिख्यादि देवतां सह वास्तु पुरुष देवता स्थापन पूजनबलि दानञ्च
 करिष्ये ॥

वास्तुपीठस्याग्नेयादि कोणेषु प्रदक्षिणा क्रमेण शंकु चतुष्टयं रोपयेत् ॥

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ।

मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बल कराः सदा ॥ इति मंत्रेण

शंकुम् रोपयेत्

आग्नेयादि रोपण क्रमेण शंकूनां पार्श्वे बलिदानम् कुर्यात् ॥

१-अग्निकोणे:- ॐ अग्निभ्यो ऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥

२-नैर्ऋत्य कोणे:- ॐ नैर्ऋत्याधि पतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥

३-वायव्य कोणे:- ॐ नमो वै वायु रक्षेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥

४-ईशान कोणे:- ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥

रेखा करणम्:- पश्चिमारम्भाः प्रागन्ता उकद्संस्थाः समा नवरेखाः तथा दक्षिणारम्भाः उदगन्ता प्राक्संस्था नवरेखाः कुर्यात् ॥

पश्चिमारम्यः रेखापूजनम्:- ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ यशोवत्यै नमः ॥ ॐ कान्तायै नमः ॥ ॐ सुप्रियायै नमः ॥ ॐ विमलायै नमः ॥

ॐ शिवायै नमः ॥ ॐ सुभगायै नमः ॥ ॐ सुमत्यै नमः ॥ ॐ इडायै नमः ॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

दक्षिणारम्भाः- ॐ धान्यायै नमः ॥ ॐ प्राणायै नमः ॥ ॐ विमलायै नमः ॥ ॐ स्थिरायै नमः ॥ ॐ भद्रायै नमः ॥ ॐ जयायै नमः ॥

ॐ निशायै नमः ॥ ॐ विरजायै नमः ॥ ॐ विभवायै नमः ॥ ॐ रेखा देवताभ्यो नमः ॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

१-ईशानकोण दक्षिणार्ध पदे रक्तम्:- ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवा यच शिवतरा यच ॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः । शिखिनमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-तदक्षिणे सार्धपदे पीतवर्णेः-ॐ शत्रो व्वातः पवताथं शं नस्तपतु
सूर्यः । शं नः कनिक्रद्देवः पर्जन्यो ऽअभिवर्षतु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः । पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-तदक्षिणेद्विपदे पीतवर्णेः-ॐ मर्माणिते व्वर्मणाच्छादयामि
सोमस्त्वा राजा मृतेनानुवस्ताम् । उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु
जयन्तन्त्वातु देवा मदन्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्ताय नमः ।

जयन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-तदक्षिणेद्विपदेपीतवर्णेः-ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः
सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँरऽरप मृधोनुदस्वाथाभयं
कृणुहि विश्वतो नः ॥१॥ ॐ आयात्विन्दोऽवसऽ उप न ऽइहस्तुतः

सवमादस्तु शूरः । वववृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीद्यौर्न क्षत्रमभिभूति
पुष्यात् ॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशायुधाय नमः ।

कुलिशायुधमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-तदक्षिणेद्विपदे रक्त वर्णम्ः- ॐ आकृष्णे नरजसा
व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सवितारथेना देवोवाति
भुवनानि पश्यन् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः ॥ सूर्यमावाहयामि

स्थापयामि ॥

६-तदक्षिणेद्विपदे श्वेतवर्णम्ः-ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति
दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ ॐ भूर्भुवः

स्वः सत्याय नमः ॥ सत्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

७-तदक्षिणेसार्धपदे कृष्ण वर्णः-ॐ आत्वाहार्ष मन्तर भूर्ध्रुवस्तिष्ठा
विचाचलिः । व्विशस्त्वा सर्वा व्वाञ्छन्तु मा त्वद्द्रष्टु मधिब्रशत्

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भृशाय नमः भृशमावाहयामि स्थापयामि ॥

८-तदक्षिणेअर्धपदे कृष्ण वर्णः-ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना
सूनृतावती । तयायज्ञं मिमिक्षतम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय

नमः ॥ आकाशमावाहयामि स्थापयामि ।

१-तत्पश्चिमे अर्द्धपदे धूम्रवर्णः-ॐ वायो षे ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान्तसोमपीतये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः ॥ वायुमावाहयामि स्थापयामि ।

१०-तत्पश्चिमेसार्द्धपदे रक्तवर्णः-ॐ पूषन् तव व्रते व्वयं नरिष्येम कदाचन । स्तोस्तारस्तऽइह स्मसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूषणे नमः ॥ पूषाणमावाहयामि स्थापयामि ॥

११-तत्पश्चिमेद्विपदेश्वेतवर्णः-

ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्भ्याकर्तोर्विततर्ठसञ्जभार । षदेदयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्मै ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वितथाय नमः ॥ वितथमावाहयामि स्थापयामि ॥

१२-तत्पश्चिमेद्विपदे पीतवर्णः-ॐ अक्षत्रमीमदन्तह्य व प्रियाऽअधूषत । अस्तोषतस्व भानवो विप्रान विष्टुया मती योजान्निन्द्रते हरिः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गृहक्षताय नमः ॥ गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि ॥

१३-तत्पश्चिमेद्विपदे कृष्ण वर्णः-ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः ॥ यममावाहयामि स्थापयामि ।

१४-तत्पश्चिमेद्विपदे रक्त वर्णः-ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्ये यजमानस्य परिधिरस्य गिरिडऽईडितः । इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यया रिष्ट्यै यजमानस्य परिधि रस्यग्नि रिडऽईडितः । मित्रा वरूणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्या रिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यगिरिडऽईडितः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः ॥ गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि ॥

१५-तत्पश्चिमेसार्द्धपदे कृष्ण वर्णः-ॐ सौरी बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः । पुरुषवाक्श्वाविद्भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते

श्रुकः पुरुषवाक् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भृङ्गराजाय नमः ॥
भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि

१६-तत्पश्चिमेअर्द्धपदे पीतवर्णः-ॐ मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः
परावतऽआजगन्था परस्याः । सृकर्ठं सठं शाय पविमिन्द्रतिग्मं
विशत्रून्ताढिव्विमृधो नुदस्व ॥१॥

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत । श्रोत्राद्वा
युश्चप्प्राणश्च मुखा दग्निरजायत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः॥
मृगमावाहयामि स्थापयामि ॥

१७-तत्दुत्तरेअर्द्धपदेरक्तवर्णः-ॐ उशान्तस्त्वा निधीमह्युशान्तः
समिधीमहि । उशान्नुशतऽआवह पितृन्हविषेऽअत्तवे ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः पितृगणेभ्यो नमः ॥ पितृगणान् आवाहयामि स्थापयामि ॥

१८-तत्दुत्तरेसार्द्धपदे रक्त वर्णः-ॐ द्वे विरूपे चरतः स्वर्थेऽ
अन्त्यान्या व्वत्समुपधापयेते ॥ हरिरन्यन्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो
ऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः ॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिकाय नमः॥
दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि ॥

१९-तत्दुत्तरेद्विपदे श्वेत वर्णः-ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवथं
रुद्राऽउपश्रिताः । तेषाथंसहस्रयो जनेव धन्वानितन्तसि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सुग्रीवाय नमः ॥ सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि ॥

२०-तत्दुत्तरेद्विपदे रक्त वर्णः-ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो
नमोनमो व्वातेभ्यो व्वातपतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्यो
गृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्चवो
नमोनमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्ताय नमः ॥ पुष्पदन्तमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२१-तत्दुत्तरेद्विपदे श्वेत वर्णः-ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या
च मृडय । त्वा मवस्युरा चके ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः
॥ वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

२२-तत्तुत्तरेद्विपदे पीत वर्णः-ॐ यमश्विना नमुचेरा सुरा दधि सरस्वत्य सुनोदिन्द्रियाय । इमं तथं शुक्रं मधुमन्त मिन्द्र थं सोम थं राजानमिह भक्षयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असुराय नमः ॥ असुरमावाहयामि स्थापयामि ॥

२३-तत्तुत्तरेसार्द्ध पदे कृष्ण वर्णः-ॐ शत्रोदेवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तुपीतये ॥ शंखो रभिस्रवन्तुनः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शोषाय नमः ॥ शोषमावाहयामि स्थापयामि ॥

२४-तत्तुत्तरे वायव्यपदार्धे पीत वर्णः-

ॐ एतत्तेरुद्रावसंतेनपरोमूजवतोतीहि । अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहि र्ठ सन्नः शिवोतीहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पापाय नमः ॥ पापमावाहयामि स्थापयामि ॥

२५-तत्पूर्वे अर्द्धपदे रक्त वर्णः-ॐ द्रापेऽअन्ध सस्पते दरिद्रनी ललोहित । आसाम्प्रजानामे षाम्पशूनाम्माभेर्म्मा रोड्मोचनः किञ्चनाममत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रोगाय नमः ॥ रोगमावाहयामि स्थापयामि ॥

२६-तत्पूर्वेसार्द्धपदे रक्त वर्णः-ॐ अहिरिवभोगैः पर्वेतिवाहुंज्याया हेतिम्परि बाधमानाः । हस्तगघ्नो विश्वाव्वयनुनानि विद्वान्पुमान्पुमाथं सम्परिपातु विश्वतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः ॥ अहिर्बुध्न्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

२७-तत्पूर्वेद्विपदे रक्त वर्णः-ॐ अवतत्यधनुष्ट्व र्ठ सहस्राक्ष शते षुधे । निशीर्यशल्या नाम्मुखा शिवोनः सुमनाभव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्याय नमः ॥ मुख्यमावाहयामि स्थापयामि ॥

२८-तत्पूर्वेद्विपदे कृष्ण वर्णः- ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिने क्षयद्वीरायप्प्र भरामहेमतीः । यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे व्विश्वम्पुष्टमष्ट्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाटाय नमः ॥ भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि ॥

२९-तत्पूर्वेद्विपदे श्वेत वर्णः-ॐ व्वय र्ठ सोमव्रते

तवमनस्तनूषुविब्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
सोमाय नमः ॥ सोममावाहयामि स्थापयामि ॥

३०-तत्पूर्वेद्विपदे कृष्ण वर्णः- ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवी
मनु । ये ऽ अन्तरिक्षे येदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः सर्पेभ्यो नमः ॥ सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि ॥

३१-तत्पूर्वेसाद्धपदे पीत वर्णः- ॐ इड ऽ एह्यदित ऽ एहि
काम्या ऽ एत । मयि वः कामधरणं भूयात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
अदित्यै नमः ॥ अदितिमावाहयामि स्थापयामि ॥

३२-तत्पूर्वेअर्द्धपदे पीत वर्णः- अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता
स पिता स पुत्रः । विश्वे देवाऽ अदितिः पञ्च जनाऽ
अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दित्यै नमः ॥
दितिमावाहयामि स्थापयामि ॥

३३-ततो मध्य पदेषु ईशान पदोत्तरार्द्धे श्वेत वर्णः- ॐ आपोहिष्ठा
मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः अद्भ्यो नमः ॥ अप आवाहयामि स्थापयामि ॥

३४-आग्नेय पदोत्तरार्द्धे श्वेत वर्णः- ॐ हस्त आधाय सविता
विभ्रद्भ्रिः हिरण्ययीम् । इग्नेर्ज्योतिर्त्रिचाय पृथिव्याऽ अद्भ्या
भरदानुष्टुभेनच्छदसाङ्गिरस्वत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सवित्राय नमः ॥
सवित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

३५-नैर्ऋत्यपदोत्तरार्द्धे श्वेत वर्णः- ॐ अषाढं व्युत्सु पृतनासु पप्त्रिंशं
स्वर्षामिप्सां वृजनस्य गोपाम् भरेषुजाशुसुक्षितिं सुश्रवसं जयन्तं
त्वामनुमदेम सोम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जयाय नमः ॥ जयमावाहयामि
स्थापयामि ॥

३६-वायव्यपदोत्तरार्द्धे रक्त वर्णः- ॐ अवरुद्रमदीमह्य
वदेवन्त्र्यम्बकम् । यथानोवस्य सस्करद्यथानः श्रेयसस्कर द्यथानो
व्यवसाययात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः ॥ रुद्रमावाहयामि
स्थापयामि ॥

३७-पूर्वपदद्वये कृष्ण वर्णः-ॐ यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगाऽअभि
सूर्य ॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः
॥

अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि ॥

३८-आग्नेयपददक्षिणाद्धै रक्त वर्णः-ॐ विश्वानि देव
सवितर्द्दुरितानि परासुव । बद्ध्रन्तन्न आसुव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
सवित्रे नमः ॥ सवितारमावाहयामि स्थापयामि ॥

३९-तत्पश्चिमेपदद्वये श्वेत वर्णः-ॐ असि यमोऽअस्या दित्यो
ऽअर्व्वत्रसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते
त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वते नमः ॥
विवस्वन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

४०-नैर्ऋत्यपदपूर्वाद्धै रक्त वर्णः-ॐ सबोधि सूरिर्मघवा वसुपते
वसुदावन् । युयोध्यस्मद् द्वेषाथंसि विश्वकर्मणे स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विबुधाधिपाय नमः ॥ विबुधाधिपमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४१-उत्तरेपदद्वये श्वेत वर्णः-ॐ मित्रो नऽएहि सुमित्रधऽइन्द्रस्यो
रुमाविश दक्षिण मुशान्नुशान्त थं स्योनः स्योन् ।
स्वानब्भाङ्गारेऽबम्भारे हस्त सुहस्त कृशानवे ते वः सोमक्रयणास्ता
नुक्षद्वं मावो दधन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः ॥
मित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

४२-वायव्यपददक्षिणाद्धै रक्त वर्णः-ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसिऽ
उपचितामसि । शतस्य वक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः राजयक्ष्मणे नमः ॥ राजयक्ष्मणमावाहयामि स्थापयामि ॥

४३-तत्प्राक्पदद्वये रक्त वर्णः-ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा
निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधराय
नमः ॥ पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि ॥

४४-तत्प्राक् ईशानकोण दक्षिणाद्धे एकपदेः-ॐ आते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामया गिरा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आपवत्साय नमः ॥ आपवत्समावाहयामि स्थापयामि ॥

४५-ततोमध्ये चतुष्पदे पीत वर्णेः- ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन ऽ आवः । सबुध्या ऽ उपमा ऽऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ॥ ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

४६-ब्रह्मोत्तरेः-वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्वावेशो अनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु पुरुषाय नमः ।

४७-मण्डलाद्वहि ईशाने धूम्रवर्णेः-ॐ इन्धानास्त्वा शतशं हिमा द्युमन्त शं समिधीमहि । वयस्वन्तो वयस्कृत शंसहस्वन्तः सहस्कृतम् । अग्ने सपत्नदम्भन मदब्धासोऽअदाभ्यम् । चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चरक्यै नमः । चरकीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४८-आग्नेयां रक्तवर्णेः-असुन्वन्तमयजमान मिच्छस्ते नस्येत्यामन्विहितस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छसा तऽइत्या नमो देविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विदार्यै नमः । विदारीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४९-नैर्ऋत्यां पीत वर्णेः-ॐ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा ॥ कया चिष्टया वृता ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूतनायै नमः । पूतनामावाहयामि स्थापयामि ॥

५०-वायव्यां कृष्ण वर्णेः-इन्द्रऽआसान्रेता बृहस्पति र्दक्षिणावज्ञः पुरऽएतुसोमः । देवसेनाना मभिभञ्जतीनाञ्जयन्ती नाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः । पापराक्षसी मावाहयामि स्थापयामि ॥

५१-पूर्वे रक्तवर्णेः-ॐ त्वन्नो अग्रेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा थं सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः । स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥

५२-दक्षिणे कृष्ण वर्णेः-यदद्य सूरऽउदितेऽनागा मित्रोऽअर्यमा । सुवाति सविता भगः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः । अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि ॥

५३-पश्चिमे रक्तवर्णेः-ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृतायस्वाहा क्रंदतेस्वाहा वक्रंदायस्वाहा प्रोथतेस्वाहा प्रप्रोथायस्वाहा गन्धायस्वाहा घ्रातायस्वाहा निविष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहा सन्दितायस्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानायस्वाहा स्वपतेस्वाहा जाग्रतेस्वाहा कूजतेस्वाहा प्रबुद्धायस्वाहा विजृम्भमाणायस्वाहा विचृत्तायस्वाहा सथं हानाय स्वाहो पस्थितायस्वाहायनाय स्वाहा प्रायणायस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भकाय नमः । जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि ॥

५४-उत्तरेपीत वर्णेः-ॐ रक्षोहणोवो व्वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहनोऽ उप दधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छाय नमः । पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि ॥

५५-पूर्व पीत वर्णेः-ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र थं हवे हवे सुहवथं शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र थं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ इन्द्राय नमः । इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

५६-आग्नेयां रक्तवर्णेः-ॐ त्वन्नो अग्रेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा थं सि प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥ ॐ अग्नये नमः । अग्निमावाहयामि

स्थापयामि ॥

५७-दक्षिणे कृष्ण वर्णः-ॐ सुगन्तुपंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं म ऽआगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु ॥ ॐ यमाय नमः । यममावाहयामि स्थापयामि ॥

५८-नैऋत्यां नील वर्णः-ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा तऽ इत्या नमो देवि निऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ निऋतये नमः । नैऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

५९-पश्चिमे श्वेत वर्णः-ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणे हबोध्युरुशं स मा न ऽ आयुः प्र मोषीः ॥ ॐ वरुणाय नमः । वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

६०-वायव्यां धूम्र वर्णः-ॐ आनोनियुद्धिः शतिनीभिरध्वरथं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ वायवे नमः । वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

६१-उत्तरे पीत वर्णः-ॐ वयथं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ कुबेराय नमः । कुबेरमावाहयामि स्थापयामि ॥

६२-ईशाने श्वेत वर्णः-ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ ईश्वराय नमः । ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥

६३-ईशान पूर्वयो मध्ये रक्तवर्णः-ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः श थं सते स्तुवते धायि पञ्चऽ इन्द्रज्येष्ठा अस्माँर अवन्तु देवाः ॥

ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

६४-नैऋत्यर्त्यपश्चिमयो र्मध्ये कृष्ण वर्णः- ॐस्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । वच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ ॐ अनन्ताय नमः । अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

प्रतिष्ठाः- ॐ मनो जुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्व्यज्ञमि मन्तनोत्व्रिष्टं वज्ञ ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ॐ म्प्रतिष्ठ ॥

शिख्यादि वास्तु मण्डलस्थ देवानां सुप्रतिष्ठा भव यथा मिलितोपचार द्रव्यैः सम्पूज्य ।

तत्र मण्डल मध्ये चतुः पदे पीत वर्णे कोष्ठोपरि ताम्रादि कलशं स्थापनं कुर्यात् ॥ तदुपरि प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक वास्तु मूर्तिं संस्थाप्य । वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि ॥ आसनादि षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

पूजनं कुर्यात्:- आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥ हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान् समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥ सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥ श्रीफलं समर्पयामि ॥ पुष्पआरार्तिकं समर्पयामि ॥ मन्त्रपुष्पांजलिः- ये वास्तु देवाः भुवन प्रधान शिख्यादिका वास्तुगण प्रतिष्ठा । पुष्पाञ्जलिं मे सुमनोवदातं गृहन्तु देवाः

मम कार्य सिद्धिः ॥ प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ प्रार्थना पूर्वक नमस्कारं समर्पयामि ॥

मण्डलाग्रे पायसबलिं दद्यात्:- ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविशन् । सखा सुशेवऽएधिनः स्वाहा । ॐ वास्तु पुरुषाय बलिद्रव्याय नमः । संपूज्य भो शिख्यादि गणा सहिता वास्तुपुरुष इमं बलिं समर्पयामि । जलमुत्सृजेत् ॥

प्रार्थना:- भो वास्तु पुरुष इमं बलिं गृहाण गृहाण मम (यजमानस्य) गृहे आयु कर्ता क्षेम कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता निर्विघ्न कर्ता कल्याण कर्ता भव ।

नमस्कार:- नमामि वास्तु पुरुष सशिख्यादि गणवृतः ।

पूजां बलिं गृहाणेमाम् सोम्यो भवतु सर्वदा ॥

अनेन पूजा बलि दानेन शिख्यादि वास्तु मण्डलस्थ देवताभिः सह वास्तु पुरुषः प्रीयताम् ॥

✠ ॥ योगिनी मण्डल पूजनम् ॥ ✠

वाम भागे वेद्युपरि वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि चतुः षष्टि कोष्ठानि विधाय तस्योपरि त्रीणि त्रिकोणानि कृत्वा क्रमेण दक्षिणतः आरभ्योदगन्ता कलशानि प्रतिष्ठाप्य तत्र महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती च पूजयेत् । चतुः षष्टियोगिन्य प्रागन्ता उदगन्ता वा पूजयेत्

संकल्प:- देशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं अस्मिन् यज्ञे महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती पूजन पूर्वक दिव्यादि चतुः षष्टि योगिनीनां स्थापनं पूजनं बलिदानम् च करिष्ये ।

ध्यान:- आवाहयाम्यहं देवीर्योगिनीः परमेश्वरीः । योगाभ्यासेन संतुष्टाः परं ध्यानसमन्विताः ॥ दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्यज्वाला स्त्रिलोचनाः । मूर्तिमतीर्ह्यमूर्त्ताश्च उग्राश्चैवोग्ररूपिणीः ॥ अनेकभावसंयुक्ताः संसारार्णवतारिणीः । यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं

श्रेयो यच्छन्तु मातरः॥

१-प्रथमकलशपूर्णपात्रोपरि:- ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न
मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः । महाकालीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२-तदुत्तरतः द्वितीयकलश पूर्णपात्रोपरि:- ॐ श्रीश्वते
लक्ष्मीश्वपत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौऽव्यात्तम् ।
इष्णान्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-तदुत्तरतस्तृतीयकलश पूर्णपात्रोपरि:- ॐ पावकानः सरस्वती
वाजे भिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टुधियावसुः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
महासरस्वत्यै नमः । महासरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ॥

प्रागन्तात्-प्रथमाष्ट पंक्तिः-

१-ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे
वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्ययोगायै नमः । दिव्य योगिनीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२-ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽ
इषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्धी धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो
जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः
पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महायोगायै
नमः । महायोगिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३-ॐ महाँ३॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु हन्तुपाप्मानं
योस्मान्द्वेष्टि उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्महेन्द्राय
त्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धयोगायै नमः । सिद्ध

योगिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसन् मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश्वर्यै नमः । गणेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५-ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम् ।
परिवृङ्धि हरसा माभिमथंस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रेताक्ष्यै नमः ।

प्रेताक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-ॐ स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुकक्रः स्वाहा
स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
डाकिन्यै नमः । डाकिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

७-ॐ सत्यञ्चमे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनञ्चमे विश्वञ्चमे महश्चमे
क्रीडाचमे मोदश्चमे जातञ्चमे जनिष्यमाणञ्चमे सूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः । कालीमावाहयामि स्थापयामि ॥

८-ॐ भायै दार्वारहारं प्रभायाऽअग्नेधम्ब्रध्नस्य विष्टपाया भिषेत्तारं
वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय
प्रकरितारं ॐ सर्वेभ्यो लोकेभ्यऽ उपसेक्तरमवऽ ऋत्यै
व्वधायोपमन्थि तारम्मेधाय व्वासः पल्पूली प्रकामाय रजयित्रीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्र्यै नमः । कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥

द्वितीषष्टक पंक्तिः-

९-ॐ जिह्वा मे भद्रं व्वाङ्महो मनो मन्युः स्वराङ् भामः ।
प्रमोदाऽअङ्गुली रङ्गानि मित्रं मे सहः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निशाचर्यै
नमः । निशाचरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

१०-ॐ ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृतायस्वाहा क्रंदतेस्वाहा
वक्रंदायस्वाहा प्रोथतेस्वाहा प्रोथायस्वाहा गन्धायस्वाहा

घ्रातायस्वाहा निविष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहा सन्दितायस्वाहा
 वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानायस्वाहा स्वपतेस्वाहा
 जाग्रतेस्वाहा कूजतेस्वाहा प्रबुद्धायस्वाहा विजृम्भमाणायस्वाहा
 विचृत्तायस्वाहा सथं हानाय स्वाहोपस्थितायस्वाहायनाय स्वाहा
 प्रायणायस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः हुँकार्यै नमः ।
 हुँकारीमावाहयामि स्थापयामि ॥

११-ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमेर्क्षश्चमे सूर्यश्चमे प्राणश्चमे
 श्वमेधश्चमे पृथिवीचमेदितिश्चमे दितिश्चमे द्यौश्चमेङ्गुलयः
 शक्करयो दिशश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि
 वैतालिन्यै नमः । सिद्धिवैतालीमावाहयामि स्थापयामि ॥

१२-ॐ पूषन् तवव्रते वयन्न रिष्येम कदाचन । स्तोता रस्तऽ
 इहस्मसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः खर्पर्यै नमः । खर्परीमावाहयामि
 स्थापयामि ॥

१३-ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम् । यूपेन
 यूपऽ आप्यते प्रणीतोऽ अग्निरग्निना ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भूतयामिन्यै
 नमः । भूतयामिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

१४-ॐ अयमग्निः सहस्रिणो व्वाजस्य शतिनस्पतिः । मूर्द्धा
 कवी रयीणाम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्ध्वकेश्यै नमः । ऊर्ध्व
 केशीमावाहयामि स्थापयामि ॥

१५-ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वा मवस्युराचके ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः विरूपाक्ष्यै नमः । विरूपाक्षीमावाहयामि
 स्थापयामि ॥

१६-ॐ यमाय यमसूमर्थर्व्वभ्यो वतोका थं संवत्सराय
 पर्ज्यायिणीं परिवत्सराया विजाता मिदावत्सराया तीत्वरी

मिद्द्वत्सराय तिष्कद्वरीं व्वत्सराय विजर्जराथं संवत्सराय पलिक्नी
मृभुब्भ्योऽ जिनसन्ध ठं साध्येभ्यश्चर्मम्रम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
शुष्काङ्ग्यै नमः । शुष्काङ्गीमावाहयामि स्थापयामि ॥८॥

तृतीयाष्टक पंक्ति :-

१७-ॐ असि यमो अस्यादित्योऽ अर्वत्रसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेनसमया व्विपृक्क्तऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मांसभोजिन्यै नमः । मांस भोजिनीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

१८-ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोवो देवस्य सानसि । द्युम्नं चित्र
श्रवस्तमम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्कार्यै नमः । फेत्कारीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

१९-ॐ अग्रे बृहन्नुषसामूर्ध्वोऽ अस्थान्निर्जगन्वान्तमसो
ज्ज्योतिषागात् ॥ अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्गऽ आजातोव्विश्वा
सद्धान्यप्प्राः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वीर भद्राक्ष्यै नमः ।
वीरभद्राक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२०-ॐ भगप्प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान्धिय मुदवाददन्नः ।
भगप्प्रनो जनय गोभिरश्वैर्भग प्प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः धूम्राक्ष्यै नमः । धूम्राक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२१-ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे
पक्षौ । स्तोमऽ आत्मां छन्दाथं स्यङ्गानि यजूथंषि नाम । साम
ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोसि
गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कलह प्रियायै
नमः । कलहप्रियामावाहयामि स्थापयामि ॥

२२-ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।
अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्ध

वम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रक्तायै नमः । रक्तामावाहयामि
स्थापयामि ॥

२३-ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्यस्कंभसर्जनीस्तथो
व्वरुणस्यऋत सदन्यसि व्वरुण ऋतसदन मसि व्वरुणस्य ऋत
सदनमासीद ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घोर रक्ताक्ष्यै नमः ।
घोररक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२४-ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रवोविश्वाभिरूतिभिः । करतात्रः
सुराधसः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विरूपाक्ष्यै नमः ।
विरूपाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥

चतुर्थाष्ट पंक्तिः क्रमेणः-

२५-ॐ ह ठ सः शुचि षद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदि षद
तिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरस दृत सद्द्व्योम सदब्जा गोजाऽ
ऋतजाऽअद्द्रिजा ऽऋतम् बृहत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भयंक्यै
नमः । भयंकरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२६-ॐ सुसन्दृशं त्वा व्वयं मघवन् वन्दिषीमहि ॥ प्रनूनं पूर्ण
बन्धुरः स्तुतो यासि वंशौ २॥ ऽअनु योजान्विद्रते हरी ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः चौरिकायै नमः । चौरिकामावाहयामि स्थापयामि ॥

२७-ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्य नुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे
त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मारिकायै नमः
। मारिकामावाहयामि स्थापयामि ॥

२८-ॐ देवीरापो ऽअपान्नपाद्यो वऽऊर्मिर्हविष्य ऽ
इन्द्रियावान्मदिन्तमः । तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां
भागस्थ स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चण्ड्यै नमः ।
चण्डीमावाहयामि स्थापयामि ॥

२९-ॐ देवी द्वारो ऽ अश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती । प्राणं न
व्वीर्यं नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं व्वसुवने व्वसुधेयस्य व्यन्तु यज

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः । वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥
 ३०-ॐ देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन् । श्रोत्रं न
 कर्णयोर्यशो जोष्ट्रीभ्यां दधुरिन्द्रियं व्वसुवने व्वसुधेयस्य व्यन्तु
 यज ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मुण्डधारिण्यै नमः ।

मुण्डधारिणीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३१-ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो
 हस्ताभ्याम् । अश्विनोर्भेषज्ज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि
 सरस्वत्यै भेषज्ज्येन व्वीर्यायान्नाद्याया भिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण
 बलाय श्रियै यशसेऽ भिषिञ्चामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भैरव्यै नमः ।
 भैरवीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३२-ॐ कदा चनस्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे । उपोपेत्रु मघवन्
 भूयऽ ऽइनुते दानं देवस्य पृच्यते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चक्रिण्यै
 नमः । चक्रिणीमावाहयामि स्थापयामि ॥८॥

पंचमाष्टक पंक्ति क्रमेणः-

३३-ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
 स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः क्रोधायै नमः । क्रोधामावाहयामि स्थापयामि ॥

३४-ॐ इषे त्वोज्जे त्वा वयव स्थ देवोवः सविता प्रार्पयतु
 श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इंद्राय भागं
 प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा वस्तेनऽ ईशतमाघश ः सोध्रुवाऽ
 अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्षजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः दुर्मुख्यै नमः । दुर्मुखीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३५-ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने
 पृथिव्याः । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
 प्रेत वाहिन्यै नमः । प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३६-ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रन्तत्रऽ

आसुव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कंटक्यै नमः । कंटकीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

३७-ॐ असुन्वन्तम वजमान मिच्छस्ते नस्येत्या मन्विहि
तस्करस्य । अन्यमस्म दिच्छ सा तऽ इत्या नमो देवि निरर्हते
तुभ्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दीर्घ लम्बोष्ठ्यै नमः ।
दीर्घलम्बोष्ठीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३८-ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमेर्क्षश्चमे सूर्यश्चमे प्राणश्चमे
श्वमेधश्चमे पृथिवीचमेदितिश्चमे दितिश्चमे द्यौश्चमेङ्गुलयः
शक्करयो दिशश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मालिन्यै
नमः । मालिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३९-ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिच्चश्चा कृणोति
समनावगत्य । इषुधिः सङ्गाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति
प्प्रसूतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मंत्र योगिन्यै नमः । मंत्र
योगिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४०-ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतोत ऽ इषवे नमः । बाहुभ्या
मुतते नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कालाग्न्यै नमः ।
कालाग्नीमावाहयामि स्थापयामि ॥८॥

षष्ठाष्टक पंक्ति क्रमेणः-

४१-ॐ ऋतञ्चमे मृतञ्चमे यक्ष्मञ्चमे नामयच्चमे जीवातुश्चमे दीर्घा
युत्वञ्चमे नमित्रञ्चमे भयञ्चमे सुखञ्चमे शयञ्चमे सूषाश्चमे सुदिनञ्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मोहिन्यै नमः ।
मोहिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४२-ॐ तेऽ आचरन्तो समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभ्रतामुपस्थे ।
अपशत्रून्विध्यता थं संविदाने ऽ आत्नींऽ इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चक्र्यै नमः । चक्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४३-ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते वर्हिषा वर्हिरिन्द्रियम् । यूपेन
यूपऽ आप्यते प्रणीतो ऽ अग्नि रग्निना ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कंकाल्यै

नमः । कंकालीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४४-ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजे भिर्वा जिनीवती यज्ञं वष्टु
धियावसुः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भुवनेश्वर्यै नमः ।
भुवनेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४५-ॐ अस्कन्नमद्य देवेभ्य ऽआज्य ठ संभ्रियासममिङ्घ्रणा विष्णो
मा त्वा वक्र मिषं वसुमति मग्रे ते च्छायामुपस्थेषं विष्णो
स्थानमसीतऽ इन्द्रो व्वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वर ऽआस्थात् ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः कुण्डलाक्ष्यै नमः । कुण्डलाक्षीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४६-ॐ तेऽ आचरन्तो समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभ्रतामुपस्थे ।
अपशत्रून्विध्यता ः संविदाने ऽ आर्त्नीऽ इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लुह्यै नमः । लुहीमावाहयामि स्थापयामि ॥

४७-ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञम्मिमिक्षताम् पिपृतात्रो
भरीमभिः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४८-ॐ उपयाम गृहीतो ऽसि सावित्रोसि चनोधाश्चनोधा ऽअसि
चनो मयि धेहि । जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यमदूत्यै नमः । यमदूतीमावाहयामि स्थापयामि ॥

सप्तमाष्टक पंक्ति क्रमेणः-

४९-ॐ आप्या यस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्यम् । भवा
व्वाजस्य सङ्गथे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः करालिन्यै नमः ।
करालिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५०-ॐ कार्ष्णिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽ उन्नयामि । समापो
अद्भिरगमत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कौशिक्यै
नमः । कौशिकीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५१-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव

बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् । ॐ भूर्भुवः स्वः भक्षिण्यै नमः ।
भक्षणीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५२-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्याप्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽ
इषण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यक्ष्यै नमः । यक्षीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

५३-ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्रज्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
कौमार्यै नमः । कौमारीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५४-ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेय ठं सुधातु
दक्षिणम् । अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः यन्त्रवाहिन्यै नमः । यन्त्रवाहिनीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

५५-ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्वजत्राः
। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाथं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं षदायुः ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः विशालायै नमः । विशालामावाहयामि स्थापयामि ॥

५६-ॐ एकाचमे तिस्रश्चमे तिस्रश्चमे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्तचमे
सप्तचमे नवचमे नवच मऽ एकादशचमऽ एकादशचमे
त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्च दशचमे सप्तदशचमे
सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽ एकविंशति शतिश्चमऽ
एकविंशति शतिश्च मे त्रयोविंशति शतिश्चमे त्रयोविंशति शतिश्चमे
पञ्चविंशति शतिश्चमे पञ्चविंशति शतिश्चमे सप्तविंशति शतिश्चमे सप्तविंशति
शतिश्चमे नवविंशति शतिश्चमे नवविंशति शतिश्चमऽ एकत्रिंशति
शच्चमऽ एकत्रिंशति शच्चमे त्रयस्त्रिंशति शच्चमे षड्जेनकल्पन्ताम्
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कामुक्यै नमः । कामुकीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

अष्टमाष्टक पंक्ति क्रमेणः-

५७-ॐ प्रेताजयता नरऽ इन्द्रो वः शर्मयच्छतु । उग्रावः सन्तु
बाहबोनाधृष्या यथासथ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः व्याघ्र्यै नमः ।
व्याघ्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५८-ॐ असङ्ख्याता सहस्राणियेरुद्राऽ अधिभूम्याम् । तेषां थं
सहस्रयोजनेवधन्वा नितन्मसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षिण्यै नमः ।
यक्षिणीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५९-ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरेपक्षौ ।
स्तोमऽ आत्माछन्दाथं स्यङ्गानि यजूथंषिनाम । साम तेतनूर्वामिदेव्यं
यज्ञावज्ञियंपुच्छं धिष्य्याः शफाः । सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ
स्वः पत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रेतभूषिण्यै नमः । प्रेतभूषिणीमा
वाहयामि स्थापयामि ॥

६०-ॐ याते रुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी । तयानस्तन्वाशं
तमयागिरिशंताभिचा कशीहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धूर्जटायै नमः ।
धूर्जटामावाहयामि स्थापयामि ॥

६१-ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने
पृथिव्याः । मखायत्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
विकटायै नमः । विकटामावाहयामि स्थापयामि ॥

६२-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्यपा
थंसुरेस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घोरायै नमः । घोरामावाहयामि
स्थापयामि ॥

६३-ॐ वृष्ण ऽ ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णऽ
ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि । वृष सेनो ऽसि राष्ट्रदा
राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कपालायै नमः । कपालामावाहयामि
स्थापयामि ॥

६४-ॐ भायै दाव्वा हारं प्रभायाऽ अग्नयेधं ब्रध्नस्य
 व्विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय
 पेशितारं मनुष्य लोकाय प्रकरितार ठ सर्वेभ्यो लोकेभ्योऽ
 उपसेक्तारमव ऽऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय व्वासः पल्पूर्लीं
 प्रकामाय रजयित्रीम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लांगल्यै नमः ।
 लांगलीमावाहयामि स्थापयामि ॥

प्रतिष्ठाः-ॐ मनो जुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति
 र्व्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं षज्ञ ठ समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह
 मादयन्तामो ङ् ॥ म्प्रतिष्ठ ॥

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिता दिव्यादि चतुः
 षष्ठि योगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ ततः षोडशोपचारैः
 पूजयेत् ॥

पूजनं कुर्यात्-आसनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं
 समर्पयामि ॥ हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं
 जलं समर्पयामि ॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत
 स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥
 यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं
 समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान्
 समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥
 सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥
 नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं
 समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥
 श्रीफलं समर्पयामि ॥

पुष्पाञ्जलिः-दिव्यादि योगिन्यः महा प्रभावाः भूमौ तथा खे
 दिवि संचरतः । पुष्पाञ्जलि मञ्जुल केसराद्यां किरामि तत्पाद
 वराम्बुजेषु ॥

मण्डलाग्रे पायस बलिं दद्यात्:-ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे
वाजे हवामहे । सखाय ऽ इन्द्रमूतये ॥ ॐ योगिन्यः बलि
दद्यात् नमः । गंधादिभिः सम्पूजयेत् ।

भो महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता दिव्यादि चतुः
षष्टियोगिनीभ्यः इमं बलिं गृह्णन्तु । जल मुत्सृजेत् ।

प्रार्थना:- भो दिव्यादि चतुः षष्टि योगिन्यः इमं सदीप पायसात्र
बलिं गृह्णत गृह्णत मम गृहे आयु कर्ता क्षेम कर्ता शान्ति कर्ता
पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता वरदा भवत ॥

अनया पूजया श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिताः
दिव्यादि चतुः षष्टि योगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम ॥

➔ ॥ क्षेत्रपाल मण्डल पूजनम् ॥ ⬅

संकल्प:- देशकालौ संकीर्त्य मया पूर्वोच्चारित संकल्पाऽङ्गतया
अजरादि पावन पर्यन्तानां क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवानामावाहनं
पूर्वकं पूजनं बलि दानञ्च करिष्ये ॥

क्षेत्रपाल पीठे वस्त्रं प्रसार्य नव कोष्ठानि कुर्यात् । अन्य दिक्षु
विदिक्षु अष्ट कोष्ठेषु षड्दलानि कृत्वा मध्ये अष्ट दलोपरि
कलशं स्थापयेत् अजरादीन् पूजयेत् ॥

पूर्व कोष्ठे षड्दले:-

१-ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याम्यां रक्षां रक्ष्यते
स्यग्ने । ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऽ ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः
पुराणाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अजराय नमः । अजरमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२-ॐ प्रथमा वा रथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि
विश्वा । अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा
दिशन्ता ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः व्यापकाय नमः । व्यापकमावाहयामि
स्थापयामि ॥

३-ॐ इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रा वरुणयोस्त्वा प्रशास्रोः प्रशिषा युनज्मि । अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रियेण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रचौराय नमः । इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासोऽ अभ्यर्चन्त्यर्कैः । स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमधूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र मूर्तये नमः । इन्द्र मूर्ति मावाहयामि स्थापयामि ॥

५-ॐ उक्षा समुद्रो ऽअयणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश । मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रज सस्पात्यन्तौ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उक्षाय नमः । उक्षमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्च कृमा वयम् । अग्निर्मा तस्मा देनसो विश्वान्मुञ्चत्व ठ हसः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डाय नमः । कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥६॥

अग्नि कोणे षडदलेः-

७-ॐ स नऽइन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरूद्भ्यः । वरिवो वित्परि स्रव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः । वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

८-ॐ बाहू मेबल मिन्द्रियथं हस्तौ मे कर्मवीर्यम् । आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बटुकाय नमः । बटुकमावाहयामि स्थापयामि ॥

९-ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत । अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद् देव किल्विषात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः । विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

१०-ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत थं समाः । एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लिप्तकाय नमः । लिप्तमावाहयामि स्थापयामि ॥

११-ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवहियमाणः सलिलः
 प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजाशं सि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा ।
 या पत्येते ऽअप्रतीता सहोभि विष्णुऽअगन्वरुणा पूर्वहूतौ ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः लीलाकाय नमः । लीलाकमावाहयामि स्थापयामि ॥
 १२-ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमोनमो व्वातेभ्यो
 व्वातपतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो
 व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्चवो नमोनमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
 एकदंष्ट्राय नमः । एकदंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि ॥१२॥

दक्षिण कोष्ठे षड्दले:-

१३-ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपं तवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्याया विपालं
 तेजसेऽजपाल मिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहप
 र्ठ श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्या यानुक्षत्तारम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ऐरावताय
 नमः । ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि ॥

१४-ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नु
 बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ओषधीघ्राय
 नमः । ओषधीघ्नमावाहयामि स्थापयामि ॥

१५-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव
 बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः ।
 बन्धनमावाहयामि स्थापयामि ॥

१६-ॐ देव सवितः प्रसुवयज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो
 गन्धर्वः केतपूः केतनः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा
 ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यकायाय नमः । दिव्यकायमावाहयामि
 स्थापयामि ॥

१७-ॐ सीसेन तन्त्र मनसा मनीषिणऽ ऊर्णासूत्रेण कवयो
 वयन्ति । अश्विना यज्ञं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो

भीषज्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः ।
कम्बलमावाहयामि स्थापयामि ॥

१८-ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्कन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतं शं सेनाऽ अजयत्साकमिन्द्रः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणाय नमः । भीषणमावाहयामि स्थापयामि ॥१८॥

नैऋत्य कोणे षड्दलेः-

१९-ॐ इमं साहस्रं शतधारमुत्सं व्यच्यमानं सरिरस्य मध्ये । घृतं दुहाना मदितिं जनायाग्ने माहिंसीः परमे व्योमन् । गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वान तन्वो निषीद । गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गवयाय नमः । गवयमावाहयामि स्थापयामि ॥

२०-ॐ कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भोऽ अन्तः । प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽ उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टाभिधाय नमः । घण्टाभिधमावाहयामि स्थापयामि ॥

२१-ॐ आक्रन्दय बलमोजो नऽ आधा निष्टनिहि दुरिता बाधमानः । अप प्रोथदुन्दुभे दुच्छुनाऽ इतऽ इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः व्यालाय नमः । व्यालमावाहयामि स्थापयामि ॥

२२-ॐ इन्द्रा याहि तूतुजानऽ उप ब्रह्माणि हरिवः । सुते दधिष्व नश्चनः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अणुस्वरूपाय नमः । अणुस्वरूपमावाहयामि स्थापयामि ॥

२३-ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि । रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं शं हरिरेति कनिक्रदत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः । चन्द्रवारुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

२४-ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽ अर्तं नं घोषाय भषमन्ताय बहुवादि

नमनन्ताय मुकथं शब्द याडम्बराघातं महसे व्वीणावादं क्रोशाय
तूणवध्ममवरस्पराय शंखध्मं वनाय व्वनपमन्त्र्यतोरण्याय दावपम्
॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पटाटोपाय नमः । पटाटोपमावाहयामि
स्थापयामि ॥२४॥

पश्चिम कोणे षड्दले:-

२५-ॐ उग्रलौहिते न मित्र ठ सौव्रत्येन रूद्रन्द्रौर्वत्ये
नेन्द्रम्प्रक्रीडेनमरुतो बलेनसाद्ध्यान्प्रमुदा । भवस्य कण्ठयर्ठ
रुद्रस्यान्तः पाश्वर्यम्महा देवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः
पुरीतत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जटालाय नमः । जटालमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२६-ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् । अग्ने क्रत्वा
क्रतूँरऽरनु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतवे नमः । क्रतुमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२७-ॐ आजिघ्न कलशं मह्या त्वा व्विशंत्विन्दवः । पुनरुज्जा
निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माऽ
ऽविशताद्रयिः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः ।
घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥

२८-ॐ वायो शुक्रोऽ अयामिते मध्वोऽअग्रं दिविष्टिषु । आयाहि
सोमपीतये स्पर्हो देव नियुत्वता ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विटङ्काय
नमः । विटङ्कमावाहयामि स्थापयामि ॥

२९-ॐ दैव्या होताराऽ ऊर्ध्वं मध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् ।
कृणुतं नः स्विष्टिम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मणिमानाय नमः ।
मणिमानमावाहयामि स्थापयामि ॥

३०-ॐ त्रीणि तऽआहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे ।
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा तऽआहुः परमं जनित्रम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणबन्धाय नमः । गणबन्धमावाहयामि
स्थापयामि ॥३०॥

वायव्य कोणे षड्दलेः-

३१-ॐ प्रतिश्रुत्काया ऽ अर्तं नं घोषाय भषमन्ताय बहुवादि
नमनन्ताय मुकथं शब्द याडम्बराघातं महसे व्वीणावादं क्रोशाय
तूणब्रध्ममवरस्परायशंखधमं व्वनाय व्वनपमत्र्यतोरण्याय दावपम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः डामराय नमः । डामरमावाहयामि स्थापयामि ॥

३२-ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणि बालस्तऽआश्विनाः
श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता
रौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ॥ॐ भूर्भुवः स्वः दुण्डिकर्णाय नमः ।
दुण्डिकर्णमावाहयामि स्थापयामि ॥

३३-ॐ वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूयाऽअस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः ।
गोभिः सन्नद्धोऽअसि वीडयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः । स्थविरमावाहयामि स्थापयामि ॥

३४-ॐ सुपर्ण वस्ते मृगोऽअस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति
प्रसूता । यत्रा नरः सं च विच द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म
यथं सन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः । दन्तुर मावाहयामि
स्थापयामि ॥

३५-ॐ अग्नेऽ अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव । प्रनो
यच्छ सहस्रजित् त्वथं हि धनदाऽ असि स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः धनदाय नमः । धनदमावाहयामि स्थापयामि ॥

३६-ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्ब्रजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाथं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ॐ भूर्भुवः
स्वः नागकर्णाय नमः । नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि ॥३६॥

उत्तर कोणे षड्दलेः-

३७-ॐ बाहू मे बलमिन्द्रिय थं हस्तौ मे कर्म वीर्यम् । आत्मा

क्षत्रमुरो मम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः ।

महाबलमावाहयामि स्थापयामि ॥

३८-ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिरऽ इन्द्रोदबर्तयः । विश्वा यदजय
स्पृधः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः । फेत्कारमावाहयामि
स्थापयामि ॥

३९-ॐ इदथं हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर थं सर्वगणथं
स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि अग्निः
प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽस्मासुधत्त ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
चीत्काराय नमः । चीत्करमावाहयामि स्थापयामि ॥

४०-ॐ या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति । श्येनं पतत्रिण
ठं सि ठं हठं सेमं पात्व ठं हसः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय
नमः । सिंहमावाहयामि स्थापयामि ॥

४१-ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽ आजगन्था
परस्याः । सृक ठं स ठं शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्तादि
विमृधो नुदस्व ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः । मृगमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४२-ॐ इन्दुर्दक्षः श्येनऽ ऋतावा हिरण्यपक्षः शंकुनो भुरण्युः ।
महान्तसधस्थे ध्रुवऽआ निषत्तो नमस्ते अस्तु मामाहिथंः सीः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षप्रियाय नमः । यक्षप्रियमावाहयामि स्थापयामि
॥४२॥

ईशान कोणे षड्दलेः-

४३-ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे ।
अनाविद्धया तन्वा जयत्व ठं सत्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः । मेघवाहन मावाहयामि
स्थापयामि ॥

४४-ॐ तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह
वाजयन्तः । अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँ १९

रनपव्ययन्तः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तीक्ष्णोष्ठाय नमः ।
तीक्ष्णोष्ठमावाहयामि स्थापयामि ॥

४५-ॐ वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छार्गेन्यग्रोधश्चमसैः
शल्मलिर्वृद्धया । एषस्य राथ्यो वृषा पङ्भिश्चतु भिरिदगन्ब्रह्मा
कृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्रये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अनलाय नमः ।
अनलमावाहयामि स्थापयामि ॥

४६-ॐ अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धत्री विष्टम्भनी
दिशामधिपत्नी भुवनानाम् । ऊर्मिर्द्रप्सो ऽपामसि विश्वकर्मा
तऽऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
शुल्कतुण्डाय नमः । शुल्कतुण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥

४७-ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छद्रं पृणातु ते । सूर्यस्ते
नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तरिक्षाय
नमः । अन्तरिक्षमावाहयामि स्थापयामि ॥

४८-ॐ सं बर्हिरंम्रक्ष्ताथं हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः
सम्मरुद्भिः । समिन्द्रो विश्वदेवेभिरंम्रक्ष्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत्
स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बरकाय नमः । बर्बरकमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४९-ॐ पवमानः सोऽ अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता
स पुनातु मा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः । पावनमावाहयामि
स्थापयामि ॥४९॥

५०-पवनाय नमः ॥ ५१-युधामन्यवे नमः ॥ ५२-क्षेत्रपालाय
नमः (५२भैरव)

ॐ अजरादि पावनान्त क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवेभ्यो नमः ।
मध्ये अष्टदले कलशं स्थापयेत् । कलशोपरि स्थानक्षेत्रपाल
मूर्तिं श्रीफलं वा स्थापयेत् । तत्र क्षेत्रपाल मावाहयेत् ॥

ध्यानम्:- भाजच्चन्द्र जटाधरं त्रिनयनं नीलाञ्जनाद्रिप्रभं दोर्दण्डान्त
गदा कपालमरुण स्रग्गन्ध वस्त्रावृतम् । घण्टाघुर्घुर

मेखलध्वनि मिलद् धूंकारभीमं विभुं । वन्दे संहित सर्प कुण्डलधरं
श्रीक्षेत्रपालं भजे ॥

ॐ नहि स्पशामविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरात्पुरऽ एतारमग्नेः ।
एमेनमवृधन्नमृताऽ अमर्त्य वैश्वानरं क्षेत्रजित्यायं देवाः ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः । क्षेत्राधिपतिमावाहयामि
स्थापयामि ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ
र्षं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ङं ॥ म्प्रतिष्ठ ॥
अजरादिपावनान्त क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवाः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु ॥
क्षेत्राधिपतये नमः ॥ ततः षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

पूजनं कुर्यात्:- आसनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं
समर्पयामि ॥ हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं
समर्पयामि ॥ सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं
समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥
यज्ञोवपीतं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं
समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान्
समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥
सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥
नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं
समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥
श्रीफलं समर्पयामि ॥

पुष्पाञ्जलि:- ध्याये नीलाद्रि कान्तं शशि शकलधरं मुण्ड मालं
महेशं । दिग्वस्त्रं पिंगकेशं डमरुमथ सृणि खड्ग पाशाभयानि ॥
नागं घण्टां कपालं कर शिरसि रुहैर्विभ्रतं भीमदंष्ट्रं । सर्पा कल्पं
त्रिनेत्रं मणिमय विलसत् किंकिणी नूपुराढ्यम् ॥

नीलाञ्जनाद्रि निभमूर्ध्वं पिंशागकेश, वृत्तोग्र लोचनमुपात्त गदा

कपालम् । रक्ताम्बरं भुजग भूषण मुग्रदंष्ट्रं, क्षेत्राधिप कुसुमपुञ्ज
गृहाण शीघ्रम् ॥ पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

प्रार्थनाः-क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रमः । क्षेत्राणां
रक्षणार्थाय प्रणमामि पुनः पुनः ॥

मण्डलाग्रे पायस बलिदद्यात्:-ॐ क्षेत्रस्य पतिनां वयं हितेनेव
जयामसि । गामश्व पोषयित्वा स नो मृलाती दृशे । क्षेत्रपाल
बलिद्रव्याय नमः। भो क्षेत्रपाल इमं बलिं समर्पयामि । जलमुत्सृजेत्
भो क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहाण गृहाण मम सकुटुम्बस्य सर्वान्
विघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् मनोरथान् पूरय पूरय स्वाहा ॥

अनेन पूजा बलि दानेन क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवाः क्षेत्राधिपति
प्रीयताम् ॥

ॐ ॥ सर्वतोभद्र मण्डल देवतानाम् पूजनम् ॥ ॐ

तत्सदद्य-अस्मिन् कर्मणि महावेद्यां सर्वतोभद्रमण्डले ब्रह्मादि
देवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये ।

१-मध्येकर्णिकायाम्:-ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः
सुरुचोव्वेन ऽ आवः । सबुध्या ऽ उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च
द्योनिमसतश्चव्विवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ।
ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥

२-उत्तरे वाप्याम्:-ॐ वयथं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत ।
प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः ।
सोममावाहयामि स्थापयामि ॥

३-ऐशान्यां खण्डेन्दौ:-ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ।
ईशानमावाहयामि स्थापयामि ॥

४-पूर्वे वाप्याम्:-ॐ त्राता रमिन्द्रम वितारमिन्द्रथं हवे हवे सुहवथं

शूरमिंद्रम् । ह्यामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा
धात्विन्द्रः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः । इन्द्रमावाहयामि
स्थापयामि ॥

५-आग्नेयां खण्डेन्दौ:- ॐ त्वन्नो अग्ने व्वरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडो
अवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवहितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाथंसि
प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहां ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्रये नमः ।
अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥

६-दक्षिणे वाप्याम्:- ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा घर्माय स्वाहा स्वाहा घर्म पित्रे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय
नमः । यममावाहयामि स्थापयामि ॥

७-नैऋत्यां खंडेन्दौ:- ॐ असुन्वन्तमयजमान मिच्छस्तेनस्येत्या
मन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा तऽ इत्या नमो देवि
निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः ।
निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

८-पश्चिमे वाप्याम्:- ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते
यजमानो हविर्बिभः । अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुश थं स मा
न आयुः प्रमोषीः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः ।
वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥

९-वायव्यां खंडेन्दौ:- ॐ आनोनियुद्धिः शतिनीभिरध्वरं
सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः ।
वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

१०-वायुसोमयो-र्मध्ये भद्रे:- ॐ सुगावो देवाः सदनाऽअकर्म
यऽआजग्मेद र्ठ सवनं जुषणाः । भरमाणा वहमाना हवीथं ष्यस्मे
धत्त वसवो वसूनि स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः
। अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि ॥

११-सोमेशानयोर्मध्ये भद्रेः-ॐ रुद्राः स ठ सृज्यपृथिवीम्वृहज्योतिः
समीधिरे । तेषां भानुरजस्रऽ इच्छुक्रो देवेषुरोचते ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः । एकादश रुद्रानावाहयामि
स्थापयामि ॥

१२-ईशानेन्द्रयो मध्येभद्रेः-ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो
भवता मृडयन्तः । आवोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ठ होश्चिद्या
वरिवोवित्तरा सत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः ।
द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि ॥

१३-इन्द्राग्रयोर्मध्ये भद्रेः-ॐ यावांकाशा मधुमत्यश्विना
सूनृतावती । तयायज्ञंमिमिक्षतं ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां
नमः । अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ॥

१४-अग्रियमयोर्मध्येभद्रेः-ॐ विश्व देवासऽआगत शृणुता मइम
ठ हवम् । एदं बर्हिर्निषीदत । उपयामगृहीतोऽसि विश्वभ्यस्त्वा
देवेभ्यऽएषते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । विश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि ॥

१५-यमनिर्ऋति मध्यभद्रेः-अभित्यं देवठ सवितारमोण्योः
कविक्रतुमर्चामि सत्यसवठ रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम् ।
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भाऽ अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरभिमीत
सुक्रतुः कृपा स्वः प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनु
प्राणिहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः ।
सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि ॥

१६-निर्ऋति वरुणमध्येभद्रेः- नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी
मनु । ये ऽ अन्तरिक्षे येदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः अष्टकुलनागेभ्यो नमः । अष्ट कुलनागानावाहयामि
स्थापयामि ॥

१७-वरुणवायुमध्यभद्रेः- ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौ
षधयोप्सरसो मुदो नाम । सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै
स्वाहाव्वाट्ताभ्यः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सररोभ्यो
नमः । गन्धर्वाप्सरसमावाहयामि स्थापयामि ॥

१८-ब्रह्मसोमयोर्मध्येवाप्याम्:- ॐ षदक्रंदः प्रथमं जायमानऽ
उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं
महि जातं ते ऽ अर्वन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः ।
स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥

१९-तत्रैव वाप्यां स्कन्दुत्तरेः-आशुः शिशानो वृषभोन भीमो
घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः
शतं ठं सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दिने नमः ।
नन्दिनमावाहयामि स्थापयामि ॥

२०-तत्रैव नन्द्युत्तरेः- ॐ कार्ष्णिर्सि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽ
उन्नयामि । समापो अद्भिरगमत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः । शूलमहाकालमावाहयामि
स्थापयामि ॥

२१-ब्रह्मेशानयोर्मध्ये वल्ल्याम्:- *दुर्गाष्टौ ललाषा*
ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे
देवाऽ अदितिः पञ्च जनाऽ अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादि-सप्तगणेभ्यो नमः ।
दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि ॥

२२-ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये वाप्याम्:- ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न
मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः । दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ॥

२३-तत्रैव दुर्गापूर्वेः- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
समूढमस्यपाथं सुरे स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः ।
विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥

२४-ब्रह्माग्रयोर्मध्ये ^{ॐ १२०} वल्ल्याम्:- ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः । स्वधामावाहयामि स्थापयामि ॥

२५-ब्रह्मयमयोर्मध्ये वाप्याम्:- ॐ परम्मृत्योऽनुपरेहि पन्थां यस्ते ऽअन्य इतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमिमानः प्रजाथं रीरिषो मोतवीरान् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगाभ्यां नमः । मृत्युरोगामानावाहयामि स्थापयामि ॥

२६-ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये ^{ॐ १२०} वाप्याम्:- ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः । गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥

२७-ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये:- ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः । अपः आवाहयामि स्थापयामि ॥

२८-ब्रह्मवायोर्मध्ये ^{ॐ १२०} वल्ल्याम्:- ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो व्विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः । मरुतमावाहयामि स्थापयामि ॥

२९-ब्रह्मपादमूले कर्णिकायाम्:- ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । षच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः । पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ॥

३०-अत्रैव कर्णिकायाम्:- ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वा मवस्युरा चके ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः । गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि ॥

३१-तत्रैव:- ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा । मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा । अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः । सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि ॥

३२-ब्रह्मणः मस्तके कर्णिकोपरि:- ॐ परित्वागिर्वणोगिरऽ इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धाय मनुवृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः । मेरुमावाहयामि स्थापयामि ॥

३३-प्रथमश्वेतपरिधौ उत्तरे:- ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः । गदामावाहयामि स्थापयामि ॥

३४-ईशाने:- ॐ त्रि ठं शब्दामविराजति वाक्पतङ्धीयते । प्रति वस्तोरहद्युभिः ॥ ॐ त्रिशूलाय नमः । त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि ॥

३५-पूर्वे:- ॐ महौं३॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म वच्छतु हन्तुपाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि । उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥ ॐ वज्राय नमः । वज्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

३६-आग्नेयाम्:- ॐ वसुचमे व्वसतिश्वमे कर्मचमे शक्तिश्वमेथश्वमऽ एमश्वमऽ इत्याचमे गतिश्वमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ॐ शक्तये नमः । शक्तिमावाहयामि स्थापयामि ॥

३७-दक्षिणे:- ॐ इडऽ एह्यदितऽ एहि काम्याऽ एत । मयि वः कामधरणं भूयात् ॥ ॐ दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥

३८-नैऋत्याम्:- ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्रे रक्षसामिन्द्रा सूकरः सिर्षो हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ ॐ खड्गाय नमः । खड्गमावाहयामि स्थापयामि ॥

३९-पश्चिमे :- ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमश्रथाय ॥ अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितयेस्यामस्वाहा ॥ इदं वरुणायादितये न मम ॥ ॐ पाशाय नमः । पाशमावाहयामि स्थापयामि ॥

४०-वायव्या:- ॐ अर्थाशुश्चमे रश्मिश्चमे दाढ्यश्चमे धिपतिश्चमऽ उपाशुश्चमेन्तर्यामिश्चमऽ ऐन्द्रवायवश्चमे मैत्रा वरुणश्चमऽ आश्विनश्चमे प्रतिप्रस्थानश्चमे शुक्रश्चमे मन्थीचमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ॐ अंकुशाय नमः । अंकुशमावाहयामि स्थापयामि ॥

४१-द्वितीय रक्तपरिधौ उत्तरे:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ गौतमाय नमः । गौतममावाहयामि स्थापयामि ॥

४२-ईशान्याम्:- अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्यमनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब् ग्रैष्मीत्रिष्टुभः स्वारम् । स्वारादन्तर्यामोऽन्तर्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाजऽ ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ ॐ भरद्वाजाय नमः । भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि ॥

४३-पूर्वे:- ॐ इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्रोत्रं सौवर्तं शरच्छौत्रनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभऽ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिनऽ एकविंशऽ एकविंशाद् वैराजं विश्वामित्रऽ ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः । विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

४४-आग्नेयाम्:-ॐत्र्यायुषं जमदग्रेः कश्यपश्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषुत्र्यायुषं तन्नोऽ अस्तुत्र्यायुषम् ॥ ॐ कश्यपाय नमः ।
कश्यपमावाहयामि स्थापयामि ॥

४५-दक्षिणे:-ॐअयं पश्चाद् विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं
वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्याऽ ऋकसमम् । ऋकसमाच्छुक्रः
शुक्रत्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापति गृहीतया
त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ ॐ जमदग्नये नमः ।
जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥

४६-नैर्ऋत्याम्:-ॐअयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः
प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपाथं शुरुपाथं
शोस्त्रिवृत त्रिवतो रथन्तरं वसिष्ठऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया
प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ ॐ वशिष्ठाय नमः । वशिष्ठमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४७-पश्चिमे:-ॐ अत्र पितरो मायद्ध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ।
अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायित ॥ ॐ अत्रये नमः ।
अत्रिमावाहयामि स्थापयामि ॥

४८-वायव्यां:-ॐतम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा
हिरण्यैः । नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधि
रोचने दिवः ॥ ॐ अरुन्धत्यै नमः । अरुन्धतीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

४९-तृतीयकृष्णपरिधौ पूर्वे:-ॐआदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽ
उष्णीषः । पूषासि घर्म्मयि दीष्व ॥ ॐ ऐन्द्र्यै नमः ।
ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५०-आग्नेयाम्:-ॐअम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति
कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥
ॐकौमार्यै नमः । कौमारीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५१-दक्षिणेः-ॐ इन्द्रायाहि धियेषितोव्विप्प्रजूतः सुतावतः ।
उपब्रह्माणि व्वाघतः ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीमावाहयामि
स्थापयामि ॥

५२-नैऋत्याम्ः-ॐ आयङ्गैः पृश्निरक्रमीदसन् मातरं पुरः । पितरं
च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५३-पश्चिमेः-ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥ ॐ चामुण्डायै
नमः । चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि ॥

५४-वायव्याम्ः-ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः
सोमव्वृष्ण्यम् । भवाव्वाजस्य सङ्गथे ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः ।
वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५५-उत्तरेः-ॐ यातेरुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी । तयानस्तन्वा
शन्तमयागिरिशन्ता भिचाकशीहि ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः ।
माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ॥

५६-ऐशान्याम्ः-ॐ समख्ये देव्या धिया यन्दक्षिणयोरुचक्षसा ।
मामऽआयुः प्रमोषीष्मोऽअहं तवव्वीरं विद्रेष्य तवदेवि सन्दृशि ॥
ॐ वैनायक्यै नमः । वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि ॥

प्राण-प्रतिष्ठाः-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्जस्य बृहस्पति
र्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञं ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह
मादयन्तामो ३ ॥ म्प्रतिष्ठ ॥

ॐ ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताः सुप्रतिष्ठा भवन्तु
॥ ततः षोडशोपचारैः पूजयेत् :-

पूजनं कुर्यात् :- आसनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं
समर्पयामि ॥ हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं
जलं समर्पयामि ॥ सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रितं पंचामृतं
स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकं स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि
॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं

समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं समर्पयामि ॥ अक्षतान्
समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥ परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥
सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥
नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं
समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥ द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥
श्रीफलं समर्पयामि ॥

पुष्पाञ्जलिः—ये सर्वतोभद्रदलेषु देवाः, ब्रह्मादयः सर्षिगणा
दिगीशाः । पुष्पाञ्जलि मर्जु मनोददातं गृह्णन्तु देवा कुरु कार्यं
सिद्धिम् ॥

प्रार्थनाः—जानामिनाऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं, लोकाऽर्तिपुञ्जमतुलं
क्षपयन्तु नित्यम् । ब्रह्मादिभद्रविबुधाः सुखमाकिरन्तु, कुर्वन्तु
दूरमनिशं दुरितान्समन्तात् ॥

अनेन पूजनेन ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम् ॥

ॐ वास्तु मण्डलस्थ देवतानां होमः ॥ ॐ

(मन्त्रभाग पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

ॐ शिखिने स्वाहा । पर्जन्याय स्वाहा । जयन्ताय स्वाहा ।
कुलिशायुधाय स्वाहा । सूर्याय स्वाहा । सत्याय स्वाहा । भृशाय
स्वाहा । आकाशाय स्वाहा । वायवे स्वाहा । पूष्णे स्वाहा ।
वितथाय स्वाहा । गृहक्षताय स्वाहा । यमाय स्वाहा । गन्धर्वाय
स्वाहा । भृङ्गराजाय स्वाहा । मृगाय स्वाहा । पितृभ्यो स्वाहा ।
दौवारिकाय स्वाहा । सुग्रीवाय स्वाहा । पुष्पदन्ताय स्वाहा ।
वरुणाय स्वाहा । असुराय स्वाहा । शोषाय स्वाहा । पापाय
स्वाहा । रोगाय स्वाहा । अहये स्वाहा । मुख्याय स्वाहा ।
भल्लाटाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । सर्पेभ्यो स्वाहा । अदित्यै
स्वाहा । दित्यै स्वाहा । अद्भ्यो स्वाहा । सवित्राय स्वाहा ।
जयाय स्वाहा । रुद्राय स्वाहा । अर्यम्णे स्वाहा । सवित्रे स्वाहा ।

विवस्वते स्वाहा । विबुधाधिपाय स्वाहा । मित्राय स्वाहा ।
 राजयक्ष्मणे स्वाहा । पृथ्वीधराय स्वाहा । आपवत्साय स्वाहा ।
 ब्रह्मणे स्वाहा । वास्तोष्पतये स्वाहा । चरक्यै स्वाहा । विदार्यै
 स्वाहा । पूतनायै स्वाहा । पापराक्षस्यै स्वाहा । स्कन्दाय स्वाहा ।
 अर्यम्णे स्वाहा । जृम्भकाय स्वाहा । पिलिपिच्छाय स्वाहा ।
 इन्द्राय स्वाहा । अग्रये स्वाहा । यमाय स्वाहा । निऋत्यै स्वाहा ।
 वरुणाय स्वाहा । वायवे स्वाहा । कुबेराय स्वाहा । ईश्वराय
 स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा । अनन्ताय स्वाहा ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवानः ।
 यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नोऽस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥
 (गृहवास्तु में यह आहुतियाँ और दे ॥)

(उग्रसेनाय स्वाहा । डामराय स्वाहा । महाकालाय स्वाहा ।
 पिलिपिच्छाय स्वाहा । हेतुकाय स्वाहा । त्रिपुरान्तकाय स्वाहा ।
 अग्रिवैतालाय स्वाहा । असिवैतालाय स्वाहा । कालाय स्वाहा ।
 करालाय स्वाहा । एकपादाय स्वाहा । भीमरूपाय स्वाहा ।
 खेचराय स्वाहा । तलवासिने स्वाहा ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवानः ।
 यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नोऽस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥
 (अनेन हवनेन वास्तु मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम्)

हस्ते जल मादायः—इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
 देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत
 मस्तु ॥



❖❖ योगिनी मण्डलस्थ देवतानां होमः ॥ ❖❖

(मन्त्रभाग पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

ॐ महाकाल्यै स्वाहा । महालक्ष्म्यै स्वाहा । महासरस्वत्यै स्वाहा ।
 दिव्ययोगायै स्वाहा । महायोगायै स्वाहा । सिद्धयोगायै स्वाहा ।
 गणेश्वर्यै स्वाहा । प्रेताक्ष्यै स्वाहा । डाकिन्यै स्वाहा । काल्यै
 स्वाहा । कालरात्र्यै स्वाहा । निशाचर्यै स्वाहा । हुँकार्यै स्वाहा ।
 सिद्धिवैतालिन्यै स्वाहा । खर्पर्यै स्वाहा । भूतयामिन्यै स्वाहा ।
 ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा । विरूपाक्ष्यै स्वाहा । शुष्कांग्यै स्वाहा ।
 मांसभोजिन्यै स्वाहा । फेत्कार्यै स्वाहा । वीरभद्राक्ष्यै स्वाहा ।
 धूम्राक्ष्यै स्वाहा । कलहप्रियायै स्वाहा । रक्तायै स्वाहा ।
 घोररक्ताक्ष्यै स्वाहा । विरूपाक्ष्यै स्वाहा । भयंकर्यै स्वाहा ।
 चौरिकायै स्वाहा । मारिकायै स्वाहा । चण्ड्यै स्वाहा । वाराह्यै
 स्वाहा । मुण्डधारिण्यै स्वाहा । भैरव्यै स्वाहा । चक्रिण्यै स्वाहा ।
 क्रोधायै स्वाहा । दुर्मुख्यै स्वाहा । प्रेतवाहिन्यै स्वाहा । कंटक्यै
 स्वाहा । दीर्घलम्बोष्ठ्यै स्वाहा । मालिन्यै स्वाहा । मंत्रयोगिन्यै
 स्वाहा । कालाग्न्यै स्वाहा । मोहिन्यै स्वाहा । चक्रयै स्वाहा ।
 कंकाल्यै स्वाहा । भुवनेश्वर्यै स्वाहा । कुण्डलाक्ष्यै स्वाहा ।
 लुह्यै स्वाहा । लक्ष्म्यै स्वाहा । यमदूत्यै स्वाहा । करालिन्यै
 स्वाहा । कौशिक्यै स्वाहा । भक्षिण्यै स्वाहा । यक्ष्यै स्वाहा ।
 कौमार्यै स्वाहा । यन्त्रवाहिन्यै स्वाहा । विशालायै स्वाहा ।
 कामुक्यै स्वाहा । व्याघ्र्यै स्वाहा । यक्षिण्यै स्वाहा । प्रेतभूषिण्यै
 स्वाहा । धूर्जटायै स्वाहा । विकटायै स्वाहा । घोरायै स्वाहा ।
 कपालायै स्वाहा । लांग्ल्यै स्वाहा ॥

(अनेन हवनेन महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिता दिव्यादि
 चतुः षष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम)

हस्ते जल मादायः—इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
 देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत् मस्तु ॥

ॐ ॥ क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवतानां होमः ॥ ॐ

(मन्त्रभाग पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

ॐ अजराय स्वाहा । व्यापकाय स्वाहा । इन्द्रचौराय स्वाहा ।
 इन्द्रमूर्त्तये स्वाहा । उक्षाय स्वाहा । कुष्माण्डाय स्वाहा । वरुणाय
 स्वाहा । बटुकाय स्वाहा । विमुक्ताय स्वाहा । लिप्तकाय
 स्वाहा । लीलाकाय स्वाहा । एकदंष्ट्राय स्वाहा । ऐरावताय
 स्वाहा । ओषधीघ्नाय स्वाहा । बन्धनाय स्वाहा । दिव्यकायाय
 स्वाहा । कम्बलाय स्वाहा । क्षोभणाय स्वाहा । गवये स्वाहा ।
 घण्टाभिधाय स्वाहा । व्यालाय स्वाहा । अणुस्वरूपाय स्वाहा ।
 चन्द्रवारुणाय स्वाहा । पटाटोपाय स्वाहा । जटालाय स्वाहा ।
 क्रतवे स्वाहा । घण्टेश्वराय स्वाहा । विटङ्काय स्वाहा ।
 मणिमाणाय स्वाहा । गणबन्धाय स्वाहा । डामराय स्वाहा ।
 दुण्ढिकर्णाय स्वाहा । स्थविराय स्वाहा । दन्तुराय स्वाहा ।
 धनदाय स्वाहा । नागकर्णाय स्वाहा । महाबलाय स्वाहा ।
 फेत्काराय स्वाहा । चीत्काराय स्वाहा । सिंहाय स्वाहा ।
 मृगाय स्वाहा । यक्षप्रियाय स्वाहा । मेघवाहनाय स्वाहा ।
 तीक्ष्णोष्ठाय स्वाहा । अनलाय स्वाहा । शुक्लतुण्डाय स्वाहा ।
 अन्तरिक्षाय स्वाहा । बर्बरकाय स्वाहा । पावनाय स्वाहा ।

(अनेन हवनेन क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम् न मम)

हस्ते जल मादायः- इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
 देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत
 मस्तु ॥

→ ॥ सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवतानां होमः ॥ ←

(मन्त्रभाग पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । सोमाय स्वाहा । ईशानाय स्वाहा । इन्द्राय
 स्वाहा । अग्रये स्वाहा । यमाय स्वाहा । निऋतये स्वाहा ।
 वरुणाय स्वाहा । वायवे स्वाहा । अष्टवसुभ्यः स्वाहा ।
 एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा । द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा । अश्विभ्यां
 स्वाहा । विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा ।
 अष्टकुलनागेभ्यः स्वाहा । गंधर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा । स्कन्दाय
 स्वाहा । नन्दीश्वराय स्वाहा । शूलकालाभ्यां स्वाहा ।
 दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा । दुर्गायै स्वाहा । विष्णवे स्वाहा ।
 स्वधायै स्वाहा । मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा । गणपतये स्वाहा ।
 अद्भ्यः स्वाहा । मरुद्भ्यः स्वाहा । पृथिव्यै स्वाहा । गंगादि
 नदीभ्यः स्वाहा । सप्तसागरेभ्यः स्वाहा । मेरवे स्वाहा । गदायै
 स्वाहा । त्रिशूलाय स्वाहा । वज्राय स्वाहा । शक्तये स्वाहा ।
 दण्डाय स्वाहा । खड्गाय स्वाहा । पाशाय स्वाहा । अंकुशाय
 स्वाहा । गौत्तमाय स्वाहा । भारद्वाजाय स्वाहा । विश्वामित्राय
 स्वाहा । कश्यपाय स्वाहा । जमदग्रये स्वाहा । वशिष्ठाय
 स्वाहा । अत्रये स्वाहा । अरुन्धत्यै स्वाहा । ऐन्द्र्यै स्वाहा ।
 कौमार्यै स्वाहा । ब्राह्म्यै स्वाहा । वाराह्यै स्वाहा । चामुण्डायै
 स्वाहा । वैष्णव्यै स्वाहा । माहेश्वर्यै स्वाहा । वैनायक्यै स्वाहा ।
 (अनेन हवनेन ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम् न मम)
 हस्ते जल मादायः—इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण
 देवताः ताभ्यस्ताभ्यः परित्यक्तानि इदं न मम ॥ यथा देवत मस्तु ॥

ॐ ॥ मण्डप पूजनम् ॥ ॐ

१-मध्य वेदीशानं कोणे रक्तवर्णं स्तम्भे ब्रह्माणं पूजयेत् ॥
 ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽ आवः ।
 सबुध्या ऽ उपमाऽ अस्यविष्टाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः
 ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि
 ॥ गंधादिभिः संपूज्य ।
 तत्रैव ॐ सावित्र्यै नमः । ॐ वास्तुपुरुषाय नमः । ब्राह्म्यै नमः ।
 गंगायै नमः ॥

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्वं ऽ ऊषुण ऽ ऊतये तिष्ठता देवो न
 सविता । ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्विर्व्विह्वयामहे ॥
 स्तम्भशिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
 प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत् ॥
 ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
 प्रजाभ्योभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ ब्रह्माद्यावाहित देवताः
 प्रीयन्ताम् न मम ॥

२-आग्नेय कोणे कृष्णवर्णं स्तम्भे विष्णुं पूजयेत् ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्यपाथं
 सुरेस्वाहा ॥ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि
 स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
 ॐ आदित्यायै नमः । ॐ वैष्णव्यै नमः । संपूज्य ॥

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्वं ऽ ऊषुण ऽ ऊतये तिष्ठता देवो न सविता ।
 ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनितां यदञ्जिभिर्व्वाघद्विर्व्विह्वयामहे ॥
 स्तम्भशिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
 प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत् ॥
 ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु

प्रजाभ्योभयं

नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ विष्णवाद्यावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

३-नैर्ऋत्य कोणे श्वेत स्तम्भे शंकरं पूजयेत् ॥

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोतइषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥

भूर्भुवः स्वः शंकराय नमः शंकरमावाहयामि स्थापयामि ॥

गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ गौर्यै नमः । ॐ माहेश्वर्यै नमः ।

ॐ शोभनायै नमः । भद्रायै नमः । सम्पूज्य ॥

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।

ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्विर्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदेन्मातरं पुरः । पितरंच

प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु

प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ शंकराद्यावाहित देवताः

प्रीयन्ताम् न मम ॥

४-वेद्या वायव्य कोणे पीतवर्ण स्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवः शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि

शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ भूर्भुवः स्वः

इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥

तत्रैव ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः । ॐ आनन्दायै नमः । ॐ विभूत्यै

नमः । ॐ अदित्यै नमः । सम्पूज्य ॥

स्तम्भ मालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न

सविता । ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्विर्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदेन्मातरं पुरः । पितरंच

प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ इन्द्राद्यावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

५-(ततो बाह्ये ईशानादारभ्य उत्तरेशान मध्यपर्यन्तं द्वादश
स्तम्भान्पूजयेत्) ॥

ईशान कोणे रक्त स्तम्भे सूर्यं पूजयेत् ॥

ॐ आकृष्णे नरजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन
सवितारथेना देवोषाति भुवनानि पश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥
तत्रैव ॥ ॐ सौर्यै नमः । ॐ भूत्यै नमः । ॐ सावित्र्यै नमः ।
ॐ मंगलायै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भ मालयेत्:- ॐ ऊर्ध्वं ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न
सविता । ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदङ्गिभिर्वाघिर्द्विर्विह्वयामहे ॥
स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ सूर्याद्यावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

6-ईशान पूर्वयोर्मध्ये श्वेतवर्ण स्तम्भे गणेशं पूजयेत् ॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं
हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि
गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये
नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥

तत्रैव ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः । विघ्नहरायै नमः । जयायै नमः ।
संपूज्य ।

स्तम्भ मालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न
सविता । ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघिद्धिर्विह्वयामहे ॥
स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
नमस्कारम् ॥

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ गणपत्याद्यावाहित
देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

७-पूर्वाग्रेयोर्मध्ये कृष्णवर्ण स्तम्भे यमं पूजयेत् ॥

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे । देवस्त्वा सविता
मध्वानक्तु पृथिव्याः सथं स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि
तपोसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ॥
गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ सन्ध्यायै नमः । ॐ आञ्जन्यै
नमः । ॐ क्रूरायै नमः । ॐ नियन्त्र्यै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भ मालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न
सविता । ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघिद्धिर्विह्वयामहे ॥
स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
नमस्कारम् ॥

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योभयं
नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ यमाद्यावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

८-अग्रिकोणे कृष्णवर्ण स्तम्भे नागराजं पूजयेत् ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो षेके च पृथिवी मनु । ये ऽ अन्तरिक्षे
 वेदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नागराजाय
 नमः नागराजमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥
 तत्रैव ॥ ॐ मध्यमसंध्यायै नमः । ॐ धरायै नमः । ॐ पद्मायै
 नमः । ॐ महापद्मायै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भ मालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽ ऊषुण ऽ ऊतये तिष्ठा देवो न
 सविता । ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघिद्भिर्विह्वयामहे ॥
 स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
 प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
 नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
 प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चिनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ नागराजाद्यावाहित देवताः
 प्रीयन्ताम् न मम ॥

९-अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेतवर्ण स्तम्भे स्कन्दं पूजयेत् ॥

ॐ षदक्रंदः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
 श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते ऽऽ अर्वन् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥
 गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ पश्चिमसंध्यायै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽ ऊषुण ऽ ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
 ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघिद्भिर्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
 प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
 नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
 प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ स्कन्दाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

१०-दक्षिण नैऋत्ययोर्मध्ये धूम्रवर्ण स्तम्भे वायुं पूजयेत् ॥

ॐ वायो येते सहस्रिणो रथासस्ते भिरागहि । नियुत्वान्सोमपीतये ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥

गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ वायव्यै नमः । ॐ गायत्र्यै

नमः । ॐ मध्यमसंध्यायै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।

ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच

प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्

नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु

प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ स्कन्दाद्यावाहित

देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

११-नैऋत्यै पीतवर्ण स्तम्भे सोमं पूजयेत् ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य

सङ्गथे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि

स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥

ॐ सावित्र्यै नमः । ॐ अमृतकलायै नमः । ॐ पश्चिमसंध

यायै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।

ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच

प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्

नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ सोमाद्यावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

१२-नैऋत्य पश्चिमयोर्मध्ये श्वेतवर्ण स्तम्भे वरुणं पूजयेत् ॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वा मवस्युरा
चके ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि
॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ वारुण्यै नमः । पाशधारिण्यै
नमः । ॐ बृहत्यै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भमालभेत्- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्विर्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि- ॐ आयङ्गैः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ वरुणाद्यावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

13-पश्चिम वायव्ययोर्मध्ये श्वेतवर्ण स्तम्भे अष्टवसून् पूजयेत् ॥

ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यत्वादित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी
मित्रावरुणौत्वा पृष्ट्यावताम् । व्यन्तु व्ययोक्त थं रिहाणा मरुतां
पृषतीर्गच्छ व्वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह
चक्षुष्पाऽअग्नेऽसि चक्षुर्मै पाहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भू अष्टवसुभ्यो
नमः वसूनावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥ तत्रैव ॥
ॐ विनतायै नमः । ॐ अणिमायै नमः । ॐ भूत्यै नमः ।
ॐ गरिमायै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्विर्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ अष्टवसुवाद्यावाहित
देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

१४-वायव्य कोणे पीतवर्ण स्तम्भे धनदं पूजयेत् ॥

ॐ सोमो धेनुश्छं सोमो अर्वन्तमाशुश्छं सोमोवीरं कर्मण्यं ददाति ।
सादन्यंविदत्थ्यश्छं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः धनदाय नमः धनदमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः
संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ आदित्यायै नमः । ॐ लघिमायै नमः ।
ॐ सिनिवालयै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्विर्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ धनदाद्यावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

१५-उत्तरवायव्योर्मध्ये पीतस्तम्भे गुरुं पूजयेत् ॥

ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्षोऽअर्हा द्युमद्विभाति ऋतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजा ततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ

भूर्भुवः स्वः भू गुरवे नमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः
संपूज्य ॥ तत्रैव ॥ ॐ पौर्णमास्यै नमः । ॐ सावित्र्यै नमः । संपूज्य ।
स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे ॥
स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । संपूज्य । शाखाबन्धनानि पूजयेत्
नमस्कारम् ॥

ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ गुर्वावाहित देवताः
प्रीयन्ताम् न मम ॥

१६-उत्तरेशानयोर्मध्ये रक्तवर्ण स्तम्भे विश्वकर्माणं पूजयेत् ॥
ॐ विश्वकर्म्महविषा वद्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् । तस्मै
विशः समनमन्त पूर्वोरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥ ॐ विश्वकर्म्मणे
नमः । विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥
तत्रैव ॥ ॐ सिनिवालयै नमः । ॐ सावित्र्यै नमः ।
ॐ वास्तुदेवतायै नमः । संपूज्य ।

स्तम्भमालभेत्:- ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभि व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे ॥

स्तम्भ शिरसि:- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरंच
प्रयंत्स्वः ॥ नागमात्रे नमः । शाखा बन्धनानि संपूज्य, नमस्कारम् ।
ॐ षतो षतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु
प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ प्रणमेत् ॥

अनेन कृताऽर्चनेनास्मिन् स्तम्भाधिष्ठातृ विश्वकर्माद्यावाहित
देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

ततः पश्चिमद्वारेण निर्गत्य पूर्वादि तोरणद्वार पूजां कुर्यात् :-

१-पूर्वद्वारे:- ॐ अग्रिमिले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं

रत्नधातमम् ॥ ॐ ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः ।
सुदृढतोरणमावाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः संपूज्य । तत्र ।
ॐ कृतयुगाय नमः । तत्रैव । ॐ राहवे नमः । राहुमावाहयामि
स्थापयामि । बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि । राहुबृहस्पतिभ्यां
नमः । गंधादिभिः संपूज्य । भूमौ कलशं स्थापयेत् । कलशे
ॐ ध्रुवाय नमः । संपूज्य । प्रणमेत् ।

२-दक्षिणद्वारे:- ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवा
अयक्ष्मामावस्तेन ईशतमाघशथं सोध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात
बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ यजुर्वेदाधिष्ठिताय विकट तोरणाय
नमः । त्रेतायुगाय नमः । संपूज्य । ॐ सूर्याय नमः आवाहयामि
स्थापयामि । ॐ अङ्गारकाय नमः आवाहयामि स्थापयामि ।
सूर्याङ्गारकाभ्यां नमः आवाहयामि स्थापयामि । संपूज्य । तत्रैव ।
कलशं संस्थाप्य । तस्मिन्कलशे ॐ धरायै नमः संपूज्य ॥

३-पश्चिमेद्वारे:- ॐ अग्र ऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ सामवेदाधिष्ठिताय सुभीमतोरणाय नमः ।
द्वापरयुगाय नमः । संपूज्य । तत्र शुक्राय नमः । बुधाय नमः ।
ॐ शुक्रबुधाभ्यां नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥ संपूज्य । तत्रैव
कलशं स्थापयेत् । कलशे वाक्पतये नमः । संपूज्य ॥

४-उत्तरद्वारे:- ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये । शँष्वो
रभिस्त्रवंतुनः ॥ अथर्ववेदाधिष्ठिताय सुप्रभ तोरणाय नमः ।
कलियुगाय नमः । गंधादिभिः संपूज्य । तत्र ॐ सोमाय नमः ।
ॐ केतवे नमः । ॐ शनैश्चराय नमः । सोमकेतु-शनैश्चरेभ्यो
नमः । संपूज्य । तत्रैव । कलशं स्थापयेत् । कलशे ॐ विघ्नेशाय
नमः । संपूज्य ।

५-पुनः पूर्वद्वारे गत्वा:- प्रतिद्वारशाखां कलशद्वयं संस्थाप्य ।

कलशाभ्यां ऐरावतदिग्गजं आवाहयामि स्थापयामि ॥ गंधादिभिः
संपूज्य । कलशोपरि घृतेन दीपो देयः ॥

१-ॐ अग्रिमिले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं
रत्नधातमम् ॥ ऋग्वेदमूर्तये नमः । गंधादिभिः संपूज्य । द्वारकलशे
संपूज्य ।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवथं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय
नमः । संपूज्य ।

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतं सेनाऽ अजयत्साकमिन्द्रः ॥
इतिमंत्रेण पीतौ पताकाध्वजावुच्छ्रयेत् ।

द्वारशाखयोः- दक्षिणेः ॐ धात्रे नमः । उत्तरे ॐ विधात्रे नमः ।
ऊर्ध्वः- ॐ द्वारश्रियै नमः । ॐ गणपतये नमः । ॐ वास्तुपुरुषाय
नमः । अधः- द्वारदेहल्यै नमः । दक्षिण स्तम्भेः- ॐ गणेशाय
नमः । वामस्तम्भेः- ॐ स्कन्दाय नमः ।

दक्षिणकलशोः- ॐ गंगायै नमः । वामकलशोः- ॐ यमुनायै
नमः । बलिदद्यात्- ॐ इन्द्राय इमं बलिं समर्पयामि ॥

2-आग्नेयां पूर्ववत्- कलशं स्थापयेत्- ततः ॐ पुण्डरीकाय
नमः । ॐ अमृताय नमः । पुण्डरीकामृताभ्यां नमः । संपूज्य ।
दीपं दद्यात् ।

कलशोः- ॐ त्वन्नोऽ अग्नेतवदेव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य ।
त्रातातोकस्य तनये गवामस्य निमेषं रक्षमाणस्तवव्रते ॥
ॐ अग्नये नमः । संपूज्य ।

ॐ अग्रिंदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवां र आसादयादिह ॥
इति मंत्रेण रक्त पताका ध्वजावुच्छ्रयेत् । बलिदद्यात् ।

३-दक्षिणेः- प्रतिद्वार शाखा कलशद्वयं संस्थाप्य । तत्र वामनाख्य

दिग्गजमावाहयेत् । ॐ वामनाख्यादिग्गजाय नमः । संपूज्य । दीपं दद्यात् ।

यजुर्वेदमूर्तिं पूजयेत्- ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा वायवस्य देवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्याऽ इंद्रायभागं प्रजावतीरनमीवा अयक्षमामावस्तेन ईशतमाघशं सोध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ यजुर्वेदमूर्तये नमः । द्वारकलशे यमं पूजयेत् । ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः । कृष्णवर्ण पताका ध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ संपूज्य । दक्षिण शाखाबलाय नमः । उत्तरशाखायां- बलाय नमः । ऊर्ध्वं श्रियै नमः । गणपतये नमः । अधः देहल्यै नमः । वास्तुपुरुषाय नमः । दक्ष स्तम्भे- ॐ पुष्पदन्ताय नमः । वाम स्तम्भे- ॐ कपर्दिने नमः । कलशे गोदावर्यै नमः । कृष्णायै नमः । संपूजयेत् । बलिंदद्यात् ।

४-नैर्ऋत्यै कोणे कलशं स्थापयेत्:- ॐ मुकुदमावाहयामि स्थापयामि । दुर्जयमावाहयामि स्थापयामि । मुकुददुर्जयाभ्यां नमः । संपूज्य । दीपो दद्यात् ।

ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा तऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋत्यै नमः । संपूज्य । नीलवर्ण पताका ध्वजावुच्छ्रयेत्- ॐ मोषूणऽ इंद्रात्र पृत्सुदेवैरस्तिहिष्माते शुष्मिन्नवयाः । महश्चिद्यस्यमीदुषोयव्या हविष्मतो मरुतोवन्दतेगीः ॥ संपूज्य । बलिं दद्यात् ।

५-पश्चिमे:- कलशाद्वयं स्थापयेत्- तत्रैव- अजङ्गनाख्य दिग्गजमावाहयेत्- पूजयेत् । सामवेद मूर्तये नमः । विप्रं पूजयेत् । ॐ अग्रऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि

बर्हिषि ॥ द्वारकलशे वरुणं पूजयेत् । श्वेत पताका ध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ ॐ इममे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वा मवस्युरा चके ॥

द्वारशाखयोः दक्षिणे- जयाय नमः । वामे- विजयाय नमः । ऊर्ध्व- द्वारश्रियै नमः । गणपतये नमः । अधः देहल्यै नमः । वास्तुपुरुषाय नमः । स्तम्भयोः नन्दिने नमः । चन्द्राय नमः । कलशे- रेवायै नमः । नर्मदायै नमः । बलिं दद्यात् ॥

६-वायव्य कोणेः-कलशं स्थापयेत् तत्र पुष्पदन्ताय नमः । सिद्धार्थाय नमः । संपूज्य । तत्रैव । ॐ आनोनियुद्धिः शतिनीभिरध्वरथं सहस्रिणीभिरुप याहि ऋज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ वायवे नमः । संपूज्य । धूमौवर्ण पताका ध्वजावुच्छ्रयेत् । ॐ वायो षेते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्सोमपीतये ॥ बलिं दद्यात् ॥

७-उत्तरे पूर्ववत्:-प्रतिशाखाकलशौ स्थापयेत्- तत्र-सार्वभौमदिग्गजाय नमः । पूजयेत् तथा दीपो दद्यात् । अथर्वेदमूर्तिं पूजयेत्- ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शँख्यो रभिस्रवंतुनः ॥ कलशेः- सोमं संपूज्य । ॐ वयथं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ सोमाय नमः । तत्र हरित पताका ध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वंतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ उत्तरशाखायां- चण्डाय नमः । दक्षिणशाखायां प्रचण्डाय नमः । ऊर्ध्व द्वारश्रियै नमः । गणपतये नमः । अधः देहल्यै नमः । वास्तुपुरुषाय नमः । दक्षिण स्तम्भे महाकालाय नमः । वाम स्तम्भे भृङ्गिणे नमः । तत्रैव । कलशे वारुण्यै नमः । वेण्यै नमः । बलिं दद्यात् ।

८-ऐशान्यां:-कलशं स्थापयेत् तत्र- ॐ सुप्रतीकाय नमः ।
 ॐ मंगलाय नमः । संपूज्य । ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
 धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
 रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ईशानाय नमः । गंधादिभिः संपूज्य ।
 श्वेतवर्ण पताका ध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
 धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे
 रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ^{उत्तरे पताका ध्वजावुच्छ्रयेत्-} बलिं दद्यात् ॥

९-ईशान पूर्वयोर्मध्ये:-कलशं स्थापयेत् तत्र- ब्रह्माणं पूजयेत्-
 ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽ आवः ।
 सबुध्याऽउपमाऽ अस्यविष्टाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥
 ॐ ब्रह्मणे नमः । ^(रेवत) रक्तवर्ण पताका ध्वजावुच्छ्रयेत् । बलिं दद्यात् ॥
 १०-पश्चिम ^{जैत्रत्ये} वायव्योर्मध्ये- श्वेतस्तम्भे- ^{अनन्त} अष्टवसून्
 पूजयेत्:-नैर्ऋति वरुणयोर्मध्ये अधः तत्र अनन्तं पूजयेत्:- ॐ
 आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥
 ॐ अनन्ताय नमः । ^{रेवत} श्रूमवर्ण पताकाध्वजावुच्छ्रयेत् । बलिं दद्यात् ॥

❖ ॥ मण्डपमध्ये पञ्चवर्णी महाध्वजां पूजयेत् ॥ ❖

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽ आवः ।
 सबुध्याऽउपमाऽ अस्यविष्टाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥
 ॐ ब्रह्मणे नमः । संपूज्य । अनेन पूजनेन ब्रह्मा प्रीयताम् न
 मम ॥ ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽ आदित्यानां मरुतां
 शर्द्धऽउग्रम् । महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां
 जयतामुदस्थात् । इति उच्छ्रयेत् । तत्र इन्द्रं पूजयेत् ॥
 ततः मण्डपाद् बहि पूर्वशान समीपे- भूमिं गोमयेनोपलिप्य अष्टदलं
 कृत्वा- ॐ गणपतये नमः ॥

प्रार्थयेत्:- त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च । ब्रह्मविष्णु
 शिवैः साद्धं रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ॥ देवदानव गन्धर्वो यक्ष राक्षस

पन्नगाः । ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च । सर्वे
ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विता ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च क्षेत्रपाल
गणैः सह । रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः ॥

ततो अक्षतपुंजेषु पूर्वादि क्रमेणः-ॐ त्रैलोक्य स्थावरभूतेभ्यो
नमः । त्रैलोक्यस्थानि चराणि भूतेभ्यो नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः
। ॐ विष्णवे नमः । ॐ शिवाय नमः । ॐ देवेभ्यो नमः ।
ॐ दानवेभ्यो नमः । ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः । ॐ यक्षेभ्यो नमः
। ॐ राक्षसेभ्यो नमः । ॐ पन्नगेभ्यो नमः । ॐ ऋषिभ्यो नमः
। ॐ मनुष्येभ्यो नमः । ॐ देवमातृभ्यो नमः । संपूज्य । प्रत्येकं
बलिं दद्यात् । ततो यजमानः साचार्यात्त्विक् हस्तौ प्रक्षाल्य
मण्डपं प्रविशेत् । ब्राह्मणान् अभिवादयेत् ॥

ॐ विवाह संस्कार प्रयोगः ॥ ॐ

तत्र तावत्कन्यापिता अर्हणवेलायां मंडपे उदङ्मुख उपविश्य
स्वदक्षिणतः पत्नीं चोपविश्य मंडपं समागताय वरायोपवेशनार्थं
शुद्धमासनं दत्त्वा तत्र प्राङ्मुखं वरमूर्ध्वं जानुं तिष्ठंतं
मधुपर्केणार्चयेत् ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा ॥ कन्यापिता
हस्ते जलमादाय ॥

संकल्पः-अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ कन्यार्थिनं मंडपम् आगतं
वरं मधुपर्केणार्चयिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन दिग्रक्षणं कलशाराधनं गणपति
पूजनं च करिष्ये ॥ (तानि कृत्वा)

(ॐ षडर्घ्या भवंत्याचार्य ऋत्विग्वैवाह्यो राजा प्रिय स्नातक इति
प्रति संवत्सरानर्हये युक्ष्यमाणास्त्वृत्विजः । आसनमाहार्याह)
(आचार्य, ऋत्विक्, विवाहयोग्य, राजा, प्रिय और स्नातक ये
छः अर्घ्य योग्य होते हैं)

विनियोगः-साधु भवानास्ता मिति मंत्रस्य प्रजापति ऋषिः ब्रह्मा
देवता वरार्चने विनियोगः ॥

साधु भवानास्ता मर्चयिष्यामो भवन्तम् (कन्या पिता वदेत्)

अहं भवामि मां अर्चयेति (वरः प्रति वदेत्)

ततः कन्या पिता पंचविंशति कुशात्मकं विष्टरं गृहीत्वा ॥

ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः ॥ (इति आचार्यः वदेत्)

विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ॥ (कन्या पिता वदेत्)

विष्टरं प्रतिगृह्णामि ॥ (वरो प्रति वदेत्)

(ततो यजमान विष्टरं वर हस्ते दद्यात् वरो विष्टरं गृहीत्वा)

विनियोगः—वर्ष्मोस्मीत्यथर्वण ऋषि विष्टरो देवता अनुष्टुप्छन्दः

उपवेशने विनियोगः ॥

ॐ वर्ष्मोस्मि समानाना मुद्यता मिव सूर्यः । इमन्तममितिष्ठामि

यो माकश्चा भिदासति ॥

विष्टरम् आसने निधाय तस्योपरि उपविशति ॥

पाद्यम्—ततः कन्या पिता पाद्यपात्रं गृहीत्वा ॥

ॐ पाद्यम् पाद्यम् पाद्यम् ॥ (इति आचार्यः वदेत्)

ॐ पाद्यम् प्रतिगृह्यताम् ॥ (कन्या पिता वदेत्)

ॐ पाद्यम् प्रतिगृह्णामि ॥ (वरः प्रतिगृह्णामि इति प्रति वदेत्)

हस्ते पाद्यपात्रमादाय

(सव्यं पादं प्रक्षाल्य दक्षिणं प्रक्षालयति ॥ ब्राह्मणश्चेद्दक्षिणं प्रथमम् प्रक्षालयेत्)

विनियोगः—विराजो दोहोसीति मंत्रस्य प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दः

आपो देवता पाद प्रक्षालने विनियोगः ।

ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयिपाद्यायै विराजो

दोहः ॥ इत्युक्त्वा वरेण स्वयमेव पादप्रक्षालनं कर्तव्यम् ॥

द्वितीयः विष्टरः—ततः कन्यापिता पंचविंशति कुशात्मकं विष्टरं

गृहीत्वा ॥

विष्टरो विष्टरो विष्टरः (कन्या पिता वदेत्) इत्युक्ते प्रतिगृह्णामि

वरेणोक्ते पूर्ववत् द्वितीय विष्टरं वरहस्ते दद्यात् ॥ ततो वरः—

ॐवर्षोस्मि समानाना मुद्यता मिव सूर्यः । इमन्तममितिष्ठामि
यो माकश्चा भिदासति ॥ (इत्येनमभ्युपविशति)

इति द्वितीय विष्टरं भूमौ निधाय तस्योपरि पादौ करोति

अर्घम्:-ततः कन्यापिता अर्घ्यपात्रं गंधपुष्पाक्षत फलोदक सहितं
गृहीत्वा ॥

अर्घो अर्घो अर्घः ॥ (इति आचार्यः वदेत्)

अर्घं प्रतिगृह्यताम् ॥ (कन्या पिता वदेत्)

अर्घं प्रतिगृह्णामि ॥ (वरः प्रति वदेत्) वरहस्ते अर्घ्यं दद्यात् ॥

ततो वरः-

विनियोगः-आपः स्थ इतिमंत्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
आपो देवताऽर्घ धारणे विनियोगः ॥

ॐआपस्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि (इति शिरसार्घवंदनं
कृत्वानिनयत्रभि मंत्रयते)

विनियोगः- समुद्रं वः इति मंत्रस्य अर्थवण ऋषिः बृहती छन्दो
वरुणो देवता अर्घ जल प्रवाहे विनियोगः ॥

ॐसमुद्रं वः प्रहिणोमिस्वां योनिमभि गच्छत । अरिष्टाऽअस्माकं
वीरामापरासेचिमत्पयः ॥ (प्राग्वाउदग्वा क्षिपेत्)

(पूर्व या उत्तर मे अर्घ जल डाल दे)

आचमनम्:-ततः कन्यापिता आचमनीय पात्रं गृहीत्वा ॥

आचमनीयम् आचमनीयम् आचमनीयम् ॥ (आचार्यः वदेत्)

आचमनीयम् प्रतिगृह्यताम् (कन्या पिता वदेत्)

आचमनीयम् प्रतिगृह्णामीति वरेणोक्ते वरहस्ते आचमनीयपात्रं
दद्यात् ॥

वरःविनियोगः-ॐआमागन्निति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिर्बृहती
छन्द आपो देवता आचमने विनियोगः ।

मंत्रः-ॐआमागन्यशसासर्ठ सृजवर्चसा ॥ तम्मा कुरुप्रियं

प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् (इति मन्त्रेण सकृदाचमनं कुर्यात् ॥ द्विस्तूष्णीम्) (दो बार चुपचाप, आचमन करें)

ततः कन्यापिता कांस्यपात्रे दधिमधुघृतम् एकीकृत्य ॥

(पलमेकं घृतं चैव द्विपलंदधि प्रोच्यते ॥ पलमेकं मधु कुर्यान्मधुपर्क विधिः स्मृतः)

ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः (आचार्यः वदेत्)

मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम् ॥ (यजमानः वदेत्)

मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि ॥ (वरः प्रति वदेत्)

विनियोगः—मित्रस्येति मंत्रस्य प्रजापति ऋषिः पंक्तिश्छन्दो मित्रो देवता मधुपर्क दर्शने विनियोगः ॥

वरः कन्यापितुर्हस्त स्थितं मधुपर्कम् ईक्षते ॥ ॐ मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ॥

वरःविनियोगः—ॐ देवस्य त्वेति मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता मधुपर्क ग्रहणे विनियोगः ॥

आचार्यः—ॐ देवस्यस्त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताब्ध्याम् प्रतिगृह्णामि ॥ इत्युक्त्वा मधुपर्कं पाणिभ्यां गृहीत्वा वामहस्ते कृत्वा ॥

वरःविनियोगः—ॐ नमः श्यावेति मंत्रस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता मधुपर्कालोडने विनियोगः ॥

वरः दक्षिणहस्तस्यानामिकया त्रि वारं प्रदक्षिणमालोडयति ॥

आचार्यः—ॐ नमः श्यावाश्यायान्नशनेयुक्तऽ आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि ॥

वरः मधुपर्कं त्रिवारमालोड्य अनामिकांगुष्ठाभ्यां भूमौ क्षिपेत् त्रिवारम् ॥

तत्र त्रिः प्राश्नाति ॥

वरःविनियोगः—ॐ यन्मधुनेति मंत्रस्य प्रजापति ऋषिर्मधुपर्को देवता

अनुष्टुप्छन्दः मधुपर्क प्राशने विनियोगः ॥

प्राशनं:- ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ रूपमन्नाद्यम् ॥ तेनाहं मधुनो
मधव्येन परमेणरूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि ॥

त्रि प्राशनाति, प्रति प्राशने चैतद् मंत्र पाठः

ॐ मधुमतीभिर्वा प्रत्यृचं पुत्रायांते वासिनेवोत्तरतः आसीनायोच्छिष्टं
दद्यात् ॥ सर्ववा प्राशनीयात् प्राग्वासंचरे निनयेत् ॥ आचमनं कुर्यात् ॥

(तीन बार मधुपर्क का प्राशन करे फिर आचमन करे)

ततो यजमान वरः वामहस्ते जलं दद्यात् ॥ वरः अङ्गन्यासं कुर्यात् ॥

१-ॐ वाङ्मऽआस्येस्तु ॥१॥ (प्राणान् संमृशति मुखं करग्रेण)

(मुख का स्पर्श करे)

२-ॐ नसोर्मे प्राणोस्तु ॥२॥ (तर्जन्य अङ्गुष्ठाभ्यां)

(नाक का स्पर्श करे)

३-ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥३॥ (अनामिका अङ्गुष्ठाभ्याम्)

(नेत्रों का स्पर्श करे)

४-ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥४॥ (मध्यमा अङ्गुष्ठाभ्याम्)

(कान का स्पर्श करे)

५-ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥५॥ (करग्रेण) (हाथों का स्पर्श करे)

६-ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥६॥ (युगपद्धस्तेन)

(दोनो भुजाओं का स्पर्श करे)

(शिरः प्रभृति पादान्तानि सर्वाङ्गानि उभाभ्यां हस्ताभ्याम्)

७-ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वामे सहसन्तु इत्यास्यादि प्रत्येकं
सर्व गात्राणि स्पृशेत् ॥

(आचान्तोदकाय सासमादायगौरीति त्रिः प्राहप्रत्याह)

(कुशा लेकर उच्चारण करे)

गौ गौ गौः ॥ (गाय के लिये कुछ द्रव्य छुड़वावे)

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाथं स्वसादित्या नाममृतस्य नाभिः ॥

प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट मम चामुष्य
चा मुकशर्मणो यजमानस्योभयोः पाप्माहतः ॥ इति उपांशु ॥
(कुशा का छेदन करा दे) ततः उच्चैः-ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु ॥
इति ब्रूयात्:- (ॐ नत्वेवा माधुंसोर्घः स्यादधि यज्ञ मधि विवाहं
कुरुतेत्येव ब्रूयाद्यद्यप्य सकृत्संवत्सरस्य सोमेनयजेत कृताध्यांस
इति श्रुतेः ॥)

कन्या पिता प्रयोग करे:- आचमनं प्राणायामं कृत्वा
इहेत्यादि मम सुताया विवाहोत्सव कर्म प्रारम्भ निमित्तं वस्त्रादान
निमित्तं वरस्य अर्चन महं करिष्ये ॥

वरस्य ललाटे यजमानो गंधं कुर्यात्:- ॐ सुचक्षाऽ अहमक्षीभ्यां
भूयासर्ष सुवर्चा मुखेन ॥ सुश्रुत्कर्णाभ्याम्भूयासम् ॥

वरस्य ललाटे अक्षतान् दद्यात्:- ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेरा
धिपत्यऽ आयुर्ममेदाः ॥ पुत्रवती दक्षिणतऽ इन्द्रस्याधिपत्ये
प्रजाम्मेदाः सुषदापश्चा देवसय सवितुराधिपत्ये चक्षुर्ममेदाऽ आ
श्रुतिरूत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषममेदाः ॥ विधृति
रूपतिष्ठाद्बृहरूपते राधिपत्यऽ ओजो मेदा विश्वाभ्यो
मानाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥

वराय यज्ञोपवीत दानम्:- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं
प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं
बलमस्तुतेजः ॥

वराय वस्त्रं दद्यात्:- ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय
जरदष्टिरस्मि ॥ शतंच जीवामि शरदः पुरुचीरायस्पोषमभि
संव्ययिष्ये ॥

यजमानो हस्ते जलमादाय अनेन मधुपर्कार्चनेन लक्ष्मीनारायणौ
प्रीयेताम् ॥

(ततो वरो विवाह वेद्यां गत्वा शुभासने उपविश्य आचम्य

प्राणानायम्य ॥)

संकल्पः-अद्ये० तिथौ धर्मार्थं कामप्रजासिद्ध्यर्थं दारपरिग्रहणं करिष्ये ॥ तथा च पंचभूसंस्कार पूर्वकं योजकनामाग्निप्रतिष्ठापनं करिष्ये ॥ इति पुनः संकल्प्य योजकनामाग्निं स्थापयेत् ॥ ततः कन्यामानयेत् । अन्तर्पटं कुर्यात् ॥ अत्रावसरे मंगलघोषं कारयेत् ॥ ब्राह्मणाश्च मंगलाष्टकं पठेयुः ॥

ॐ अथ मंगलाष्टकम् ॐ

- १-श्रीमत्पङ्कज विष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-
श्चन्द्रो भास्कर वित्तपाल वरुणः प्रेताधिपादिग्रहाः ।
प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगुरुश्चिन्तामणिः कौस्तुभः
स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥१॥
- २-गौरी श्रीरदिति र्दितिश्चसुभगा कण्डूः सुपर्णा शिवा
सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्यव्रताऽरुन्धती ।
स्वाहा जाम्बवती च रूक्मभगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी
वेला चांबुनिधेः सुमीन मकरा कुर्यात् सदा मंगलम् ॥२॥
- ३-वाल्मीकः सनकः सनंदन मुनिर्व्यासो वसिष्ठो भृगु-
जर्बालि र्जमदग्निजहनु जनको गर्गो गिरा गौतमः ।
मान्धाता ऋतुपर्ण वेन सगरा धन्यो दिलीपो नलः
पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषौ कुर्यात् सदा मंगलम् ॥३॥
- ४-नेत्राणि त्रितयं महत्पशुपते रग्रेस्तु पादत्रयं
तद्वद्विष्णु पदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम् ।
गंगौघस्य गतित्रयं सुविमलं तद्वदृषीणां त्रयं
संध्यायास्त्रितयं द्विजैरभिमतं कुर्यात् सदा मंगलम् ॥४॥
- ५-गंगा गोमति गोपति र्गणपति र्गोविंद गोवर्धनौ
गीता गोमय गोरजो गिरिसुता गंगाधरो गौतमः ।
गायत्री गरुडो गदाधर गया गंभीर गोदावरी

गांधर्व गृह गोपगोकुलधरः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥५॥

६-अश्वत्थो वटवृक्ष चन्दनतरुर्मदार कल्पद्रुमो
जांबुर्निम्बकदंबकाम्र सरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः ।
सर्वैस्तैः फलपुष्प पल्लव वरैर्युक्तैः सदा मंडितं
रम्यं चैत्ररथं सनंदनवनं कुर्यात् सदा मंगलम् ॥६॥

७-गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयूर्महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ।

क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गंडकी
पुण्याः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥७॥

८-लक्ष्मीः कौस्तुभ पारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चंद्रमा
गावः कामदुघा सुरेश्वरगजो रंभादि देवाङ्गनाः ।

अश्वः सप्तमुखः सुधा हरिधनुः शंखो विषं चांबुधे
रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वै मङ्गलम् ॥८॥
एवं मङ्गलाष्टकं पठित्वा ततो अन्तर्पटं निस्सार्य ।।

(वधूवरौ परस्परं समंजयतः)

ॐ समंजंतु विश्वे देवाः समापो हृदयानिनौ । सम्मातरिश्वा संधाता
समुदंष्ट्री दधातुनौ ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कया वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ ऽव्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण
सर्वलोकम्मऽइषाण इति मंत्रेण (कन्यापाद प्रक्षालनम्)

(अत्रावसरे कन्यापिता वाचनिक श्राद्धं कुर्यात् ॥) यथा-आचम्य ॥
प्रजापति स्वरूपिणे वराय एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं
हस्ताभ्याम् एष तेऽर्घः ॥

इदमत्रोदकं चंदनं पुष्पम् ॥ पादोदकं परित्यज्य ॥

गौरीस्वरूपिणि कन्यके एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनम्
एष तेऽर्घः ॥ पादोदकं परित्यज्य ॥ आचम्य ॥ स्वपादौ करौ
प्रक्षाल्याचम्य ॥ दिग्बंधनम् ॥ ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः

स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ कन्यादान निमित्तं वाचनिक
श्राद्धोपहाराणां सर्वेषां पवित्रतास्तु ॥ देशकाल पाकपात्रोपहार
द्रव्यश्रद्धा संपदस्तु ॥

कन्यापिता हस्ते जलमादायः-अद्येत्यादि०मम एकोत्तरशत
कुलोद्धारणार्थं कन्यादानारम्भाङ्ग- निमित्तं वाचनिकश्राद्धमहं
करिष्ये ॥ प्रजापति स्वरूपिणे वराय इदमासनम् ॥ गौरी
स्वरूपकन्यकायै इदमासनम् ॥ प्रजापतिस्वरूपिणे वराय यथादत्तं
गंधाद्यर्चनं कंकण कुंडलमुद्रिका वासांसि भोजनपात्रादीनि
नानादैवतानि गंधपुष्पाद्यर्चितानि तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यं वा तुभ्यमहं
संप्रददे ॥ गौरी स्वरूपकन्यकायै यथादत्तं गंधाद्यर्चनं कंकण
कुंडलमुद्रिका वासांसि भोजनपात्रादीनि नानादैवतानि
गंधपुष्पाद्यर्चितानि तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यं वा तुभ्यमहं संप्रददे ॥
दीपादीनां प्रसादात् इदं वो ज्योतिः सुज्योतिः शेषोपचाराः संपूर्णाः
संभवन्तु ॥

भोजन संकल्पः-यथातृप्ति पर्यन्तं ब्राह्मणभोजनं सपरिवाराय
प्रजापतिस्वरूपिणे वराय अहं दास्ये वा अत्राद्येनाहं तर्पयिष्ये ॥
यथातृप्ति०गौरीस्वरूपकन्यकायै अहं दास्ये ॥

दक्षिणा संकल्पः-प्रजापतिस्वरूपिणे वराय फलमुखवासतांबूलं
हिरण्यदक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ गौरीस्वरूपकन्यकायै फल० ॥ अस्य
हिरण्यश्राद्धविधेः परिपूर्णताऽस्तु अस्तुपरिपूर्णता ॥

हस्ते जल मादायः-ॐ विष्णु विष्णु विष्णु.....एवम् गुण
विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अस्मिन्पुण्याहे अस्याः
कन्याया अनेन वरेण धर्म प्रजया उभयोः वंश वृद्धयर्थं तथा
च मम समस्त पितृणां निरति शयानन्द ब्रह्मलोका वाप्त्यादि
कन्यादान कल्पोक्त फलावाप्तये अनेन वरेण अस्यां कन्याया
मुत्पादयिष्यमाण संतत्यां दश पूर्वान् दशपरान् मां च

एकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुं ब्रह्म विवाह विधिना श्रीमहालक्ष्मी
नारायण प्रीतये गोत्रोच्चार पूर्वकं कन्यादान महं करिष्ये ॥

ततः आचार्य वर हस्ते सुप्रोक्षितादि करणम् :-

शिवा आपः सन्तु । सन्तु शिवा आपः ॥ सौमनस्यमस्तु ।
अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु । अस्त्वक्षतमरिष्टं
च ॥ अन्नाः पान्तु सुप्रोक्षितमस्तु ॥ गन्धाः पान्तु सौमंगल्यं चास्तु ॥
अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणि पान्तु सौश्रियमस्तु ॥

(भूमौ) यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु ॥

(कन्या के मातापिता, कन्या के हाथों में हल्दी लगाये)

अथ हरिद्रया हस्तलेपनम्:-लक्ष्मीप्रिया हर्षदात्री लक्ष्मीरिव
जनप्रिया । सौभाग्यदा सदा स्त्रीणां हरिद्रे श्रीः सदास्तु मे ॥

अथ शाखोच्चारणम् (गोत्रोच्चार)

ततः गोत्रोच्चारः वरस्य प्रथमं पश्चाद् कन्यायाः ॥

(गोत्र उच्चारण करें पहले वर का फिर कन्या का)

वरस्य पिता:-

मम पूर्व पुरुषाणां गोत्र प्रवर वाचन महं करिष्ये:-

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकवेदस्य अमुक
शाखाध्यायिनः अमुकशर्मणः(प्रपौत्राय)

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकवेदस्य अमुक
शाखाध्यायिनः अमुकशर्मणः (पौत्राय)

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकवेदस्य अमुक
शाखाध्यायिनः अमुकशर्मणः (पुत्राय)

अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय शुक्लयजुर्वेदाम्नायवाजि माध्यंदिनीय
शाखाध्यायिने अमुक-

शर्मणे वराय स्थिरस्थावर संयोगो बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु ॥

ततः कन्याया गोत्रोच्चारः ॥

अतः वधु पिताः- मम पूर्व पुरुषाणां गोत्र प्रवर वाचन महं करिष्ये:-

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकवेदस्य अमुक शाखाध्यायिनः अमुकशर्मणः(प्रपौत्रीम्)

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकवेदस्य अमुक शाखाध्यायिनः अमुकशर्मणः (पौत्रीम्)

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकवेदस्य अमुक शाखाध्यायिनः अमुकशर्मणः (पुत्रीम्)

अमुकगोत्राम् अमुकप्रवराम् अमुकनाम्नीं श्रीरूपिणीमिमां कन्यां दास्ये ॥ उभयोः पाणिग्रहणं भवतु ॥ एवं पुनः द्विवारं पठित्वा ॥ (दो बार और पढे)

अथ वरमातुल पक्षगोत्रोच्चारः ॥

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः (प्रदौहित्राय)

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः (दौहित्राय)

अमुक शर्मणे वराय ॥

ततः कन्यामातुल पक्षगोत्रोच्चारः ॥

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः (प्रदौहित्रीम्)

अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः (दौहित्रीम्)

अमुक नाम्नी श्रीरूपिणीमिमां कन्यां दास्ये ॥

अथ कन्यादान संकल्पः-हस्ते शंखे जलमादायः-

ॐविष्णु विष्णु विष्णुः अथ मंडपाधस्तात्कुलशील सौभाग्य सामुद्रिक लक्षण लावण्या वयवारोग्यां कांचन कुंडल कंकण वलय नुपूर कटिमेखला भुजचूडिकेयूरांगद भूषितां यवनालिकेरहस्तां भ्रमर ध्वनि सुगंधि मालालंकृतां कर्पूरागरूधूपितां गंधयक्षकर्म द्रव्यादि सहितां मुकुटमालादि

विविधालंकृतां शृंगारराशिशय्याम् आसनछत्रोपानवासः कमंडलु
कांस्यपात्र सौवर्ण रौप्यमुद्रिकोपेतां गजदंतकंकणान्विताम् एतेषां
वस्तुमात्राणां स्वहस्तोपार्जित गृहवित्तानुसारेण भक्ष्यभोज्यपयः
पानादिकिंचिन्मात्र द्रव्यादि सहितां श्रौत स्मार्त कर्मदक्षां प्रियंवदां
कुंकुम कज्जल मुक्ताफलमालालंकृतां व्रीहिअंजलि पूरिताम्
आदर्शहस्तां मदनफलवद्धां त्रिमातुलशुद्धां दशपुरुषविख्यातां
वेदशास्त्र पुराणनिगमान्वितां दूर्वाकुर प्रसारित प्रयाग
वटशाखाविस्तारेण एकोत्तरशत कोटिकुलोद्धारश्रेयसे अमुकगोत्राय
अमुकप्रवरान्विताय यजुर्वेदमाध्यन्दिनीशाखाध्यायिने अमुकशर्मणे
वराय मधुपर्केण पूजिताय तत्संतान परंपरावृद्धये आचंद्रार्कं यावत्
इमां कन्यां यथाशक्त्यलंकृतां गृहमंडपोप विष्टस्वजन
साक्षिभिर्विष्णु वद्वि ब्राह्मण सन्निधौ वेदशास्त्र पुराणोक्त शतगुणीकृत
ज्योतिष्टोमातिरात्र फलप्राप्तिकामः भार्यत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे ॥
(इत्युक्त्वा सकुशजलाक्षत कन्यादक्षिणहस्तं वरदक्षिण हस्त दद्यात् ॥)

ॐ स्वस्ति (इति वरों वदेत्)

तेन भगवन्तौ लक्ष्मीनारायणौ प्रीयेताम् न मम ॥

कृतस्य कन्यादानस्य साङ्गतासिद्धयर्थं सुवर्ण निष्कर्यो दक्षिणां
तुभ्य महं संप्रददे ॥

ततः कन्यामाता पितरौ उभौ पठतः ॥

(कन्या के माता पिता प्रार्थना करे)

कन्यां लक्षण संपन्नां कनका भरणैर्युताम् । दास्यामि ब्रह्मणे तुभ्यं
ब्रह्मलोक जिगीषया ॥ ऋषय सर्व भूतानां साक्षिण्यः सर्वदेवताः ।
इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणाय च ॥ कन्या दानं महादानं
सर्व दानेषु दुर्लभम् । तदद्य देव योगेन त्वं गृहाण वरोत्तम ॥
मम वंशकुले जाता यावद्वर्षाणि पोषिता । तुभ्यं वर मया दत्ता
पुत्रपौत्र विवर्धिनी ॥ गौरीं कन्यामिमां विप्र यथाशक्ति विभूषिताम् ।
गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय ॥ “मयापि दत्ता” (इति

माता वदेत्) “मया प्रतिगृहीता” (इति वरः) कोदात् इति पठेत्:- ॐ कोदात्कस्मा ऽअदात्कामायादात् । कामोदाताकामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते ॥ (यस्त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह धर्मे चार्थे च कामे च त्वयेयं नातिचरितव्या “अहं न अतिचरामि” इति वरः एवं त्रिवारं पठित्वा)

(इस कन्या को धर्म अर्थ कामादि मे हमेशा साथ रखना है)
(वर कहे मै हमेशा इसके साथ चतुर्वर्ग धर्म का पालन करूँगा)
(स रजतां तांबूलरागं वधू वरयोः करे स्थापयेत् ॥ वधू वरयोः कंधे वर मालां च आरोपयेत्) (तांबूलकत्था पीसकर हथलेवा जोड़ देवें) (मंगलां च ग्रंथि बध्नीयात्)

हरिद्रा रक्त रंजित सूतग्रंथि वरमाला वधु वरस्य च कण्ठे धारयित्वा ॥

(वर मालार्पणम्) वर माला मंत्रः- ॐ पतित्वा गिर्व्वणो गिरऽइमा भवन्तु व्विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥ वस्त्रग्रन्थीबन्धनम्:- (छेडाछेडी) ॐ वदाबध्ंदाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मऽआबध्मामि शतशारदा यायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥ मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः । मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनो हरिः ॥

गोदानम्:- हस्ते जलमादाय-कन्यादान सांगतासिद्धयर्थं मिमांसां रुद्रदेवत्यां वा गोनिष्क्रयी भूतमिदं द्रव्यं प्रजापतिरूपिणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे ॥

ततः कन्यामाता कृतांजलिः कन्यादक्षिणकर्णे पठति- ब्रह्मासावित्रीनुं सौभाग्य मिले और ईश्वर पार्वती के जैसा सौभाग्य प्राप्त हो ॥

ततः आचारप्राप्तं स्वस्ति पुण्याहवाचनं कुर्यात् ॥

ततः आपोहिष्ठेति त्रिभिर्मन्त्रैः पंचवारुणैर्वाऽभिषेकः ॥

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे
 ॥१॥ षो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः
 ॥२॥ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो
 जनयथा च नः ॥३॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवथं
 शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः
 ॥४॥ ॐ व्वरुणस्योस्तंभनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो
 वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य
 ऋतसदनमासीद ॥५॥

वधुपिता-विनियोगः- कन्यादान कर्मणः कृते सांगतासिद्धयर्थं
 यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् कुमारिकाः बटुकान् सुवासिन्यादीन्
 अद्याहं भोजयिष्ये ॥

पुनः कृतस्य कन्यादान कर्मण सांगतासिद्धयर्थं नानानामगोत्रेभ्यो
 ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं दक्षिणां दास्ये ॥

पुनः कन्यादान कृतस्य यन्न्यूनाति रिक्तं सर्वं भवतां ब्राह्मणानां
 वचनात् श्री गणेश गोत्रदेव्या प्रसादात् सर्वं परिपूर्णं मस्तु ॥

अथ विवाहहोमः-

(वर वधू चवरी में प्रवेश करे वर कन्या दोनों दक्षिण पैर चवरी
 में रखे)

वरहस्ते जलमादाय ॥

संकल्पः- अद्येत्यादि० प्रारीप्सितकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं
 भार्यात्वसिद्धयर्थं विवाह होममहं करिष्ये ॥ तदंगत्वेन गणपति
 पूजनमहं करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिं षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥
 ततः आचार्यः पंचभूसंस्कार पूर्वकम् अग्निं स्थापयेत् ॥

पञ्च भू संस्कारं कृत्वाः- अत्राद्य. अमुक गोत्रस्य यजमानस्य
 अमुक कर्मागतभूतं अस्मिन्स्थंडिले पंच भूसंस्कारपूर्वकमग्नि
 स्थापनं करिष्ये ॥ तद्यथा ॥

त्रिभिर्दूर्ध्वैः परिसमुह्य ३ तान्कुशानैशान्यां क्षिप्त्वा ॥
 गोमयेनोपलिप्य ३ ॥ स्रुवेणोल्लिख्य ३ मध्ये प्रदेशमात्रमुत्तरोत्तर
 क्रमेण स्रुवमूलेन त्रिरुल्लिख्य ॥ उल्लेखन क्रमेणोद्धृत्य
 दक्षिणानामिकांगुष्ठाभ्यां ॥ ईशान्यां क्षिपेत् ॥ कुशोदकेनाभ्युक्ष्य ३ ॥
 सौभाग्यवत्या कास्यपात्र द्वय संपुटितेन तमग्रिमानीय मात्माभिमुखे
 अग्रिकोणे प्रतिष्ठाप्य ॥ तस्मादाचार्यः हुँ फट् इति मंत्रेण क्रव्यादांशं
 नैर्ऋत्यां क्षित्वा तस्योपरि अक्षतान् विकीरयेत् ॥ आच्छादनं
 दूरीकृत्य ॥ आत्माभिमुखमग्निं स्थापयेत्

ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्य वाहमुपब्रुवे । देवाँ २॥ आ सादयादिह ॥
 ॐ आवो देवासऽईमहे वामं प्रयत्यध्वरे । आवो देवास ऽ आशिषो
 यज्ञियासो हवामहे ॥ इत्यग्निमुपसमाधाय ॥

दक्षिणतो ब्रह्मासनम् ॥ उत्तरतः प्रणितासनम् ॥ ततः ब्रह्मोपवेशनम्
 यावत् कर्म समाप्यते । तावत् त्वं ब्रह्मा स्थिरो भव ॥

ब्रह्मापूजनम्:- ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे
 राजन्यः शूर ऽ इषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री
 धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो
 युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो
 वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
 आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥
 हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥
 सर्वांगे स्नानं समर्पयामि ॥ मिश्रित पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥
 शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ वस्त्रं समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतं
 समर्पयामि ॥ उपवस्त्रं समर्पयामि ॥ चन्दनं समर्पयामि ॥ गंधं
 समर्पयामि ॥ अक्षतान् समर्पयामि ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥
 परिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥ सुगंधितैलं समर्पयामि ॥ धूपं
 आघ्रापयामि ॥ दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ आचमनीयं

जलं समर्पयामि ॥ ऋतुफलं समर्पयामि ॥ ताम्बूलं समर्पयामि ॥
द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥ श्रीफलं समर्पयामि ॥ मंत्रपुष्पाञ्जलिम्
समर्पयामि प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ॥
ब्रह्मासनमास्तीर्येत्यादि चरुवर्ज्य पात्रासादनादि प्रोक्षण्याः
प्रत्युत्पवनान्तं कर्म कृत्वा ॥
तत्र उपकल्पनीयानि ॥ उत्तरे शमीपलाश मिश्रालाजाः ॥ अश्मा ॥
अखंडलोहितम् आनडुहं चर्म ॥ कुमारीभ्राता ॥ शूर्पम् ॥ दृढपुरुषः ॥
पूर्णपात्रं वरो वा ॥ (प्रोक्षणकाले उपकल्पनीयानां प्रोक्षणम्)
ततः उपयमन कुशानादाय तिष्ठन् समिधोभ्याधाय स्वाहा ॥
प्रोक्षणी शेषोदकेन अग्निं प्रदक्षिणी कृत्य इतरथावृत्तिः ॥ पवित्रयोः
प्रणीतासु निधानम् ॥ (वरेणान्वारब्ध आचार्यो वा)
ब्रह्मणा दक्षिणहस्तेनान्वारब्धः वरः दक्षिणं जान्वाच्य स्रुवेण
जुहुयात् ॥ (मनसा) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम
॥१॥ अग्रेरुत्तरभागे ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥२॥
ततोत्तरपूर्वार्द्धे ॥ ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम ॥३॥ ततो
दक्षिणे पूर्वार्द्धे ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥४॥
इत्याधारावाज्यभागं संस्रवं हुत्वा ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥
ॐ अग्नेनय सुपथारायऽअस्मान्निश्वा निदेवव्वयुनानि विद्द्वान् ।
युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्तेनमऽउक्तिं विधेम ॥ विवाहे
योजकनाम्ने वैश्वानराय नमः । सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि ॥ इत्यग्निं संपूज्य अष्टप्रायश्चित्ताहुती जुहुयात् ॥
ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवःस्वाहा इदं वायवे
न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥
ॐ त्वन्नोऽ अग्रे व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ॥
यजिष्ठोवहितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥
इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥

ॐ सत्वत्रोऽ अग्रैवमो भवोतीनेदिष्ठोऽ अस्याऽ उषसोव्युष्टौ ॥
अवयक्ष्वनो वरुणं रराणोव्वीहिमृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥
इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानो
यज्ञंवाहास्ययानोधेहि भेषजं स्वाहा ॥ इदमग्रयेअयसे न मम ॥६॥

ॐ षेते शतंवरुण षेसहस्रं यज्ञियाः पाशाविततामहान्तः ॥
तेभिर्त्रोऽ अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा
॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं विमद्ध्यमं श्रथाय ॥
अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितयेस्याम स्वाहा ॥
इदं वरुणायादितये न मम ॥८॥

❖ । । अथः राष्ट्रभृद्धोमः ॥ ❖

वरो हस्ते जलं गृहीत्वाः-

विनियोगः- ऋताषाडित्यादि द्वादशानां प्रजापतिर्ऋषिः
तत्तन्मन्त्रोक्ता देवताः यजुश्छन्दः राष्ट्रभृद्धोमे विनियोगः ॥

वर आज्येन जुहुयात् ॥

ॐ ऋताषाडृत धामाग्निर्गन्धर्वः सनऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै
स्वाहा वाट् ॥ इदमृताषाहे ऋतधाम्ने अग्रये गंधर्वाय न मम ॥१॥

ॐ ऋताषाडृत धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयो प्सरसोमुदो
नामताभ्यः स्वाहा ॥ इदमौषधिभ्यो प्सरोभ्यो मुद्भ्यो न मम ॥२॥

ॐ सथं हितो विश्वसामासूर्यो गन्धर्वः सनऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु
तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं सथं हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गंधर्वाय
न मम ॥३॥

ॐ सथं हितो विश्वसामासूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयो प्सरसऽ
आयुवो नामताभ्यः स्वाहा ॥ इदं मरीचिभ्यो प्सरसोभ्यऽ आयुभ्यो
न मम ॥४॥

ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चंद्रमा गंधर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै
स्वाहा वाट् ॥ इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चंद्रमसे गंधर्वाय न मम ॥५॥

ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चंद्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो
नामताभ्यः स्वाहा ॥ इदं नक्षत्रेभ्यो प्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम ॥६॥

ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै
स्वाहा वाट् ॥ इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गंधर्वाय न मम ॥७॥

ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वस्तस्यापोऽप्सरसऽऊर्जो
नामताभ्यः स्वाहा ॥ इदमद्भयो प्सरोभ्यऽऊर्गर्भ्यो न मम ॥८॥

ॐ भुज्युः सुपर्णोयज्ञो गंधर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा
वाट् ॥ इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गंधर्वाय न मम ॥९॥

ॐ भुज्युः सुपर्णोयज्ञो गंधर्वस्तस्य दक्षिणाऽअप्सरसस्ता
वानामताभ्यः स्वाहा ॥ इदं दक्षिणाभ्यो प्सरोभ्यस्तावाभ्यो न
मम ॥१०॥

ॐ प्रजापति विश्वकर्मा मनोगंधर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै
स्वाहा वाट् ॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गंधर्वाय न मम ॥११॥

ॐ प्रजापति विश्वकर्मा मनोगंधर्वस्तस्यऽ ऋक्सामान्यप्सरसऽ
एष्टयोनामताभ्यः स्वाहा ॥ इदं ऋक्सामभ्यो प्सरोभ्यऽ
एष्टिभ्यो न मम ॥१२॥ इति राष्ट्रभृद्धोमः ॥

❀ अथ जयाहोमः ॥ ❀

विनियोगः-ॐ चित्तं चेत्यादित्रयोदश मंत्राणां परमेष्ठी ऋषिः
सर्वाणि यजुश्छंषि छन्दांसि लिंगोक्ता देवताः विवाह कर्मणि जयाहोमे
विनियोगः ॥

ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय न मम ॥१॥

ॐ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै न मम ॥२॥

ॐ आकूतं च स्वाहा इदं आकूताय न मम ॥३॥

ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदं आकूत्यै न मम ॥४॥

ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय न मम ॥५॥

ॐ विज्ञातिश्च च स्वाहा इदं विज्ञात्यै न मम ॥६॥

ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे न मम ॥७॥

ॐ शकवर्यश्च स्वाहा इदं शकवरीभ्यो न मम ॥८॥

ॐ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय न मम ॥९॥

ॐ पौर्णमासं च स्वाहा इदं पौर्णमासाय न मम ॥१०॥

ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते न मम ॥११॥

ॐ रथन्तरं च स्वाहा इदं रथन्तराय न मम ॥१२॥

ॐ प्रजापति र्जया निन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु ।
तस्मै विशः समनमन्त सवाः सऽउग्रः सऽइहव्यो बभूव स्वाहा ॥
इदं प्रजापतये जयानिन्द्राय न मम ॥१३॥ इति जयाहोमः ॥

⇒ अथाभ्यातानहोमः ॥ ⇐

विनियोगः—अग्निभूताना मित्याद्यष्टा दशानां मंत्राणां प्रजापति ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः तत्तन्मंत्रोक्ता देवताः अभ्यातानहोमे विनियोगः ॥

ॐ अग्निभूताना मधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥१॥ इदमग्रये भूतानामधिपतये न मम ॥

ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥२॥ इदिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम ॥

१-अन्तर्पटं कुर्यात्:-

ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥३॥ इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न मम ॥

(दक्षिणस्याम् अन्यपात्रं निधाय तन्मध्ये त्यागः) ॥

अन्तर्पटं निःसार्य ॥ प्रणीतोदक स्पर्शः ॥

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारणं स्मृतम् ।

तथा देवोपघातानां शान्ति भवति वारणम् ॥१॥

शान्तिरस्तु ॥ पुष्टिरस्तु ॥ तुष्टिरस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥

ॐ वायुरन्तरिक्षानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥४॥ इदं वायवे अन्तरिक्षानामधिपतये न मम ॥

ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या
माशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं
स्वाहा ॥५॥ इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये न मम ॥

ॐ चंद्रमा नक्षत्राणामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मि
न्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं
स्वाहा ॥६॥ इदं चद्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न मम ॥

ॐ बृहस्पति ब्रह्मणोऽधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥७॥ इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न मम ॥

ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥८॥ इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न मम ॥

ॐ वरुणोऽपामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥९॥ इदं वरुणयापामधिपतये न मम ॥

ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥१०॥ इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये न मम ॥

ॐ अन्नं साम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्

क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥११॥ इदमत्राय साम्राज्यानापतये न मम ॥

ॐ सोमऽओषधीनामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥१२॥ इदं सोमाय ओषधीनामधिपतये न मम ॥

ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥१३॥ इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम ॥

२-अन्तर्पटं कुर्यात् ॥

ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥१४॥ इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम ॥

(ऐशान्याम् अन्यपात्रं निधाय तन्मध्ये त्यागः॥

अन्तर्पटं निःसार्य ॥ प्रणीतोदक स्पर्शः

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारणं स्मृतम् ।

तथा देवोपघातानां शान्ति भवति वारणम् ॥

शान्तिरस्तु ॥ पुष्टिरस्तु ॥ तुष्टिरस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥

ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा
॥१५॥ इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम ॥

ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामा
शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा ॥१६॥
इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम ॥

ॐ मरुतो गणानामधिपतयः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामा
शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्याथं स्वाहा ॥१७॥
इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो न मम ॥

३-अन्तर्पटं कुर्यात् ॥

ॐ पितरः पितामहाः परेवरे ततास्ततामहाः समावत्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन्क्षेत्रेस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां
देवहृत्याथं स्वाहा ॥१८॥ इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः
परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्च न मम ॥

(दक्षिणाग्न्योर्मध्ये अन्य पात्रं निधाय तन्मध्ये त्यागः)

अन्तर्पटं निः सार्यं ॥ प्रणीतोदक स्पर्शः

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारणं स्मृतम् ।

तथा देवोपघातानां शान्ति भवति वारणम् शान्तिरस्तु ॥

पुष्टिरस्तु ॥ तुष्टिरस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥ इति अभ्यातानहोमः ॥

❀❀ अथ अग्रिरित्यादि पञ्चाहुतयः ॥ ❀❀

विनियोगः—अग्रिरैत्वित्यादि पञ्चानां प्रजापति ऋषि रंतिमस्य
संकर्षणर्षि रग्रिर्देवता चतुर्थस्य वैवस्वतो देवता पंचमस्य मृत्युर्देवता
त्रिष्टुच्छन्दः सर्वेषां होमे विनियोगः ॥

ॐ अग्रिरैतु प्रथमो देवतानाथं सोस्यै प्रजांमुञ्चतु मृत्युपाशात् ।
तदय ठराजा वरुणो नुमन्यतां यथेयथं स्त्रिपौत्रमघन्नरोदात् स्वाहा
॥१॥ इदमग्रये न मम ॥

ॐ इमामग्नि स्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतुदीर्घमायुः ।
अशून्योपस्था जीवतामस्तु मातापौत्रमानंदमभिविबुध्यता मियथं
स्वाहा ॥२॥ इदमग्रये न मम ॥

ॐ स्वस्तिनोऽ अग्नेदिवऽ आपृथिव्या विश्वानिधेह्यथा यजत्र ।
यदस्यां महिदिविजातं प्रशस्तं तदस्मा सुद्रविणं धेहिचित्रथं स्वाहा
॥३॥ इदमग्रये न मम ॥

ॐ सुगन्धुपन्था प्रदिशन्नऽ एहिज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽ आयुः । अपैतु
मृत्युरमृतं नऽ आगाद्वैवस्वतो नो ऽ अभयंकृणोतु स्वाहा ॥४॥
इदमग्रये न मम ॥

(दक्षिणस्याम् अन्यपात्रे त्यागः) प्रणीतोदक स्पर्शः ॥

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारणं स्मृतम् ।
 तथा देवोपघातानां शान्ति भवति वारणम् ॥
 शान्तिरस्तु ॥ पुष्टिरस्तु ॥ तुष्टिरस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥
 ४-अन्तर्पटं कुर्यात् ॥

ॐ परंमृत्योऽ अनुपरेहिपन्थां यस्तेऽअन्यऽ इतरोदेवयानात् ।
 चक्षुष्मते शृण्वतेते ब्रवीमिमानः प्रजाथं रीरिषोमोतव्वीरान्
 स्वाहा ॥५॥ इदं मृत्यवे न मम ॥

(इत्यग्रौ त्यागो वा भूमौ त्यागः ॥)

अन्तर्पटं निस्सार्य ॥ प्रणीतोदक स्पर्शः ॥

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारणं स्मृतम् ।
 तथा देवोपघातानां शान्ति भवति वारणम् ॥
 शान्तिरस्तु ॥ पुष्टिरस्तु ॥ तुष्टिरस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥
 इति पञ्चकहोमः ॥

ॐ अथ लाजाहोमः ॥ ॐ

अथ कुमार्या भ्राता नासादित शूर्पस्थान्लाजानंजलिनाऽऽदाय
 कुमार्या अंजलावावपति । तान् लाजान् प्राङ्मुखो तिष्ठन्ती
 कुमारी अंजलिना जुहोति ॥

विनियोगः-अर्यमणमित्यादि त्रयाणामाथर्वण ऋषि
 स्त्रिष्टुच्छन्दस्तृतीयस्यानुष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवता लाजाहोमे विनियोगः ॥

ॐ अर्यमणं देवंकन्याऽ अग्रिमयक्षत । सनोऽअर्यमा देवः प्रेतो
 मुञ्चतुमापतेः स्वाहा ॥१॥ इदमर्यम्णे न मम ॥

(अनेन मंत्रेण अञ्जलिस्थलाजानां तृतीयांशं जुहोति ॥

ॐ इयंनार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका । आयुष्मानस्तुमे पतिरेधन्तां
 ज्ञातयोमम स्वाहा ॥२॥ इदमग्रये न मम ॥

(अनेन अंजलिस्थलाजाद्धं जुहोति ॥)

ॐ इमां लाजानावपाम्यग्रौ समृद्धि करणंतव । ममतुभ्यं च
संवननंतदग्रिरनु मन्यतामियथं स्वाहा ॥३॥ इदमग्रये न मम ॥
(इत्यनेन मंत्रेणाञ्जलिस्थान्सर्वालाजाञ्जुहोति ॥ इदं मंत्रत्रयं कन्यैव
पठति)

वरः कन्याया दक्षिणहस्तं सांगुष्ठम् उत्तानं गृह्णाति पठति च
(वर कन्या के दक्षिण हाथ को अंगुठे सहित पकड़ कर मंत्र पढ़े)
विनियोगः—गृभ्णामीत्यादीनां चतुर्णां याज्ञवल्क्य भरद्वाजात्रि
प्रजापतय ऋषयः । त्रिष्टुबुष्णिगष्टुब् यजुश्छन्दांसि लिंगोक्ता
देवताः वध्वाः पाणिग्रहणे विनियोगः ॥

मंत्रः—ॐ गृभ्णामिते सौभगत्वायहस्तं मयापत्या जरदष्टिर्यथासः ।
भगोऽअर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यंत्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः ॥१॥

ॐ अमोहमस्मि सात्वथं सात्वमस्यमोऽअहम् ॥ सामाहमस्मिऽ
ऋक्त्वंद्यौरहं पृथिवीत्वम् ॥२॥

ॐ तावेव विवहावहै सहरेतोदधावहै । प्रजांप्रजनया वहैपुत्रान्विद्या
वहैबहून् ॥३॥

ॐ तेसन्तु जरदष्टयः संप्रियौरोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येमशरदः
शतंजीवेमशरदः शतःः शृणुयामशरदः शतम् ॥४॥

(वरस्य मन्त्रपाठः)

ततः वधूमग्रे कृत्वा अग्रेरुत्तरतो गत्वा तत्र वरो वध्वा दक्षिणपादं
सव्यहस्तेन गृहीत्वा दक्षिणेन वा गृहीत्वा ॥ पूर्वोपकल्पित दूषदुपरि
करोति ॥

(शिला खंड पर वधू का दक्षिण पैर का अंगूठा स्पर्श करावे)

विनियोगः—आरोहेममेति मंत्रस्य आथर्वण ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
अग्निर्देवता अश्मारोहणे विनियोगः ॥

ॐ आरोहेममश्मान मश्मेवत्वथंस्थिराभव । अभितिष्ठ पृतन्यतो
वबाधस्व प्रतनायतः ॥

(इत्याश्मारोहणे वरस्य मंत्र पाठ) ॥

अथ गाथां गायति:- सरस्वति प्रेदमवसुभगे वाजिनीवती ।
यान्त्वाविश्वस्य भूतस्य प्रजामस्याग्रतः ॥ यस्यांभूतं
समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्यगाथां गास्यामियास्त्रीणा
मुत्तमंयशः ॥ (इत्यन्तं वरो गाथां गायति)

अथ परिक्रामतः (अग्रे कन्या वरः पृष्ठतः)

विनियोगः-तुभ्यमग्रे इत्याथर्वण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता
अग्निपरिक्रमणे विनियोगः ॥

ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन् सूर्या वहतुनासह । पुनः पतिभ्योजायांदाग्रे
प्रजयासह ॥

(इति परिक्रमणे वरस्य मंत्रपाठः) ॥ एवं कुमार्या भ्राता शमीपलाश
मिश्राल्लाजानञ्जलिनाञ्जलावावपति ॥ इत्यारभ्य पतिक्रमणान्तं
पुनः वारद्वयं कुर्यात् ॥

ततः तृतीय प्रदक्षिणान्तरं शूर्पकोणे प्रदेशेन कुमार्या भ्राता
कुमार्यजलौ सर्वान्लाजान् आवपति ॥ कुमारी तिष्ठन्ती सर्वान्
लाजाञ्जुहोति ॥

४-ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय न मम ॥

(इति मंत्रं कन्यां वाचायति वरः)

ततः समाचारात् तूष्णीं चतुर्थ परिक्रमणं कुरुतः ॥

(तत्र अग्रे वरः पृष्ठे कन्या)

नेतरथावृत्तिः (पतिक्रमणान्ते वरः कन्याया आसने स्वयं स्थित्वा
कन्यां च स्वस्यासने उपवेशयेत् ॥) ततश्च पुनः उभौ पश्चादग्रेः
प्राग्वत् स्वासने उपविशेताम् ॥

वरो ब्रह्मान्वारब्धः प्राजापत्यहोमं कुर्यात् ॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ॥ इति प्रोक्षण्यां
त्यागः ॥ इति लाजाहोमः ॥

—❧— अथ सप्त पदाक्रमणम् ॥ ❧—

तत्रादौ शिष्टाचारात् अग्रेरुत्तरत उदकसंस्थान् सप्ततंडुल
पुंजान्कृत्वा वरः तत्र सप्ताचल पूजनं कुर्यात् ॥

संकल्पः—वरो हस्ते जलमादाय देशकालौ संकीर्त्य मम गृहीत
कन्या पतित्व सिद्धये सप्ताचल पूजनमहं करिष्ये ॥

ॐप्रतिपदसि प्रतिपदेत्वानु पदस्यनुपदेत्वा सम्पदसिसम्पदेत्वा
तेजोसितेजसेत्वा ॥ इति मंत्रेण गंधादिपंचोपचारैः संपूज्य वरः
सप्तपदानि प्रक्रमस्वेति प्रैषं कुर्यात् ॥

१-ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु ॥१॥

(इति वरोक्ते वधूर्दक्षिणैक पदमुदगधान्याचले दद्यात् ॥ एवं सर्वत्र ॥)

२-ॐ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वानयतु ॥ इति द्वितीयम् ॥

३-ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति तृतीयम् ॥

४-ॐ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति चतुर्थम् ॥

५-ॐ पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति पंचमम् ॥

६-ॐ षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥ इति षष्ठम् ॥

७-ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु ॥
इति सप्तमम् ॥

वर कन्या के पगरो अंगुष्ठ से सप्तपदी ढेरी को गिरा दे ॥
(मिला दें)

—❧— कन्या प्रतिज्ञा प्रति वचनम्:— ❧—

1-त्वत्तो मे ऽखिल सौभाग्यं पुण्यैस्त्वं विविधैः कृतैः ।

देवैः संपादितो मह्यं वधूराद्ये पदेऽब्रवीत् ॥

हे स्वामी मेरे अनेक पुण्यों और देवताओं की कृपा से आप
मुझे पति रूप में प्राप्त हुये हैं ॥ आप मेरे निरन्तर पूजनीय
हैं ॥ गृहस्थाश्रम में तो सुख दुःख पड़ते ही रहते हैं परन्तु उसमें
आप सर्वदा प्रसन्न चित्त रहें ॥

२-कुटुम्बं पालयिष्यामि ह्यावृद्ध बालकादिकम् ।

यथालब्धेन संतुष्टा ब्रूते कन्या द्वितीयके ॥

हे स्वामी मैं आपके कुटुम्ब के वृद्ध पुरुषों के वचनों का पालन करूँगी । और आपके कुटुम्ब के बालक वृद्धों की सेवा करूँगी घर में जैसा भी वैभव होगा उसके अनुसार ही संतुष्ट रहूँगी। और किसी भी प्रकार के खोटे वचन नहीं बोलूँगी ॥

३-मिष्टान्नव्यञ्जनादीनि काले संपादये तब ।

आज्ञा संपादिनी नित्यं तृतीये साऽब्रवीद्वरम् ॥

हे स्वामी आप को तथा आपके कुटुम्ब को हमेशा समय पर उत्तम भोजन मिष्टान्न व्यंजनादि बनाकर दूँगी तथा प्रतिदिन आपकी आज्ञा का पालन करूँगी ॥

४-शुचिः शृङ्गार भूषाऽहं वाङ्मनः कायकर्मभिः ।

क्रीडिष्यामि त्वया सार्धं तुरीये साऽब्रवीदिदम् ॥

हे स्वामी मैं हमेशा पवित्र भावना से, सुन्दर सौभाग्य श्रृंगार धारण कर मन से, वचन से, सत्कर्म से, आपको प्रसन्न करूँगी और आपका ही हिते चिन्तन करूँगी ॥

५-दुःखे धीरा सुखे हृष्टा सुख दुःख विभागिनी ।

नाहं परतरं गच्छे पञ्चमे साऽब्रवीत्पतिम् ॥

हे स्वामी आपके आपत्ति समय में मैं धीरज रखूँगी और आपके सुख दुःख में मेरा भी सहयोग रहेगा । और मैं पर पुरुष की कदापि इच्छा नहीं रखूँगी ॥

६-सुखेन सर्वकर्माणि करिष्यामि गृहे तव ।

सेवां श्वसुरयोश्चापि बन्धूनां सत्कृतं तथा ॥

यत्र त्वं वा ह्यहं तत्र नाहं वञ्चे प्रियं क्वचित् ।

नाहं प्रियेण वञ्चयाऽस्मि कन्या षष्ठे पदेऽब्रवीत् ॥

हे स्वामी मैं अपने घर का सब काम अपने हाथ से, योग्यतानुसार कर आपके माता पिता की सेवा करूँगी, और आप जहाँ

जाओगे मैं आपके साथ चलूँगी और आप जहाँ रहोगे वही पर मैं भी रहूँगी, मैं अकेली आपके बिना नहीं रहूँगी क्योंकि आप मुझे कभी भूलोगें नहीं और मैं भी आपको कभी भूलूँगी नहीं ॥

७-होमेयज्ञादि कार्येषु भवामि च सहायकृत् ।

धर्मार्थ कामकार्येषु मनोवृत्तानु सारिणी ॥

सर्वे च साक्षिण्यस्त्वं मे पतिभूतोऽसि सांप्रतम् ।

देहो मयाऽर्पितस्तुभ्यं सप्तमे सा ब्रवीद्वरम् ॥

हे स्वामी होम तथा यज्ञादि धर्म कार्य में मैं आपका हमेशा साथ दूँगी धर्म अर्थ तथा काम ये तीन पुरुषार्थ कार्य में मैं आपके इच्छा प्रमाण कार्य करूँगी ॥ और देव ब्राह्मण सब की साक्षी मैं आप मेरे पति बने हैं और मैं मेरा शरीर आपको अर्पण कर रही हूँ इसका संसार साक्षीभूत है ॥

❁❁ ॥ वरस्य प्रति वचनम् ॥ ❁❁

आदौ धर्मधरा कुटुम्ब सुखदा मिष्ट प्रिया भाषिणी ।

क्रोधालस्य निवारिका सुखकरी आज्ञानुगावर्तिनी ॥

शास्त्रा मोदित वृद्ध शासन परा धर्मानुगा सादरम् ।

एते तस्य गुणा वसन्ति सततं वामे हि सा त्वंभव ॥

हमारे कुल का जो धर्म है उसका पालन करो, हमारे कुटुम्ब को सुख दो, धर्मानुकूल वृद्ध जनों के उपदेश को स्वीकार करो, मेरी आज्ञा का पालन करो, मेरे माता पिता की सेवा करो, मेरी बहन से क्रोध न करो, ये सब गुण तुम्हारे में हो तो वामांग में आओ तुम्हारा स्वागत है ॥

॥ अथवा ॥

ॐ ॥ कन्या वचनम् ॥ ॐ

तीर्थ व्रतोद्यापन यज्ञदानं ,

मया सह त्वं यदि कान्त कुर्याः ।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं

ब्रवीति वचनं प्रथमं कुमारी ॥१॥

हे स्वामी तीर्थ, व्रत, उद्यापन, यज्ञ, दान, आदि कोई कार्य करें तो मुझे भी साथ लेकर करें, तो मैं आप के वामांग में आऊँ ॥१॥

हव्य प्रदानैः अमरान् पितृंश्च,

कव्यप्रदानैर्यदि पूजयेथाः ।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं,

ब्रवीति कन्या वचनं द्वितीयम् ॥२॥

यदि आप देवताओं के लिये द्रव्य या भोगप्रसाद अर्पण करें और पितरों को उनके निमित्त कोई श्राद्धीय द्रव्य दे । पूजन कर प्रसन्न करें तो मैं वामांग में आऊँ ॥२॥

कुटुम्ब सम्पालन सर्वकार्यं,

कर्तुं प्रतिज्ञां यदि कान्त कुर्याः ।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं,

ब्रवीति कन्या वचनं तृतीयम् ॥३॥

हे स्वामी आप अब तक तो घर बार की चिन्ता से मुक्त थे पर अब विवाह किया है तो कुटुम्ब के भार को सम्भालना है यदि आप इस भारको सहन करने की प्रतिज्ञा करो तो मैं आपके वामांग आना स्वीकार करती हूँ ॥३॥

आय व्यये धान्य धनादिकानां,

पृष्ट्वा हि मां स्वीयगृहे विदध्याः ।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं,

ब्रवीति कन्या वचनं चतुर्थम् ॥४॥

आय व्यय धन समृद्धि के विषय में आप मुझे जानकरी दें, मेरी सलाह से खर्चादि करें ताकि उसी परिस्थिति अनुरूप मैं गृहस्थ का संचालन, अथिति सेवा कर सकूँ, ताकि आपकी प्रतिष्ठा यथावत् बनी रहे। किसी मित्र बंधु रिश्तेदार को दिया लिया होतो उसका भी मुझे ज्ञान रहे तो अच्छा है। यह बात आपको स्वीकार हो तो मैं आपके वामाङ्ग में आऊँ ॥४॥

न मेऽपमानं सविधे सखीनां,

द्यूतं न वा दुर्व्यसनं भजेश्चेत् ।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं,

ब्रवीति कन्या वचनं च पंचमम् ॥५॥

यदि मैं मेरी सखियों में या अन्य स्त्रियों में बैठी होऊँ तब वहाँ पर मेरा अपमान न करें तथा जुआ आदि खेलने में और अन्य किसी दुर्व्यसन में न लगे तो मैं आपके वामाङ्ग में आना स्वीकार करती हूँ ॥५॥

देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा,

पृष्ट्वा विदध्याः व्यवहार कार्यम् ।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं,

ब्रवीति कन्या वचनं षष्ठम् ॥६॥

क्रय विक्रय कार्य या व्यावहारिक कार्य हेतु आप बाहर जायें अथवा अपने देशग्राम में जायें तो मुझे बताकर जायें ताकि आवश्यकता पड़ने पर आपसे संपर्क किया जा सके और अधिक समय का प्रवास हो तो उसकी व्यवस्था करें तो मैं आपके वामाङ्ग में आना स्वीकार करती हूँ ॥६॥

परस्त्रियं मातृसमां समीक्ष्य,

स्नेहं सदा चेन्मयि कान्त कुर्याः ।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं,

ब्रूते वचः सप्तममत्र कन्या ॥७॥

हे प्रिय आप परस्त्रियों को माता के समान समझें और मुझ पर ही सदा प्रेम रखा करें और क्रोध न करें तो मैं आपके वामाङ्ग में आना स्वीकार करती हूँ कन्या ने सातवाँ वचन मांगा ॥७॥

❀ ॥ वर वचनम् ॥ ❀

उद्याने विपिने तथा पर गृहेष्वेकाकिनीनो चराऽऽभाषेथा
रहसीतरैर्नहि नरैः पुंसां पुरो नो हसेः । सच्छीला मृदुभाषिणी
श्वशुरयोर्भक्ता मदाज्ञाकरी धर्म्या भक्तिपरायणा भवसि
चेदागम्यतां स्वागतम् ॥

हे प्रिये तुम बाग बगीचे में, बन में तथा पराये घरों में अकेली न जाओ और दूसरे मनुष्यों के साथ एकांत में वार्तालाप न करो, तथा पुरुषों के सामने न हंसो । और सुशील मिष्टभाषिणी होकर सासु ससुर की सेवा करो और पतिव्रतादि धर्मयुक्त ईश्वर भक्ति परायण रहती हुई आज्ञा का पालन करो, तो आइये मैं आपका स्वागत करता हूँ ॥

ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य पुरुष स्कन्ध स्थित कुम्भादाम्र पल्लवेन
जलमानीय तेन वरोवधु माभिषिञ्चति ॥

विनियोगः—आप इति प्रजापति ऋषिः लिंगोक्ता देवता सुप्रतिष्ठा
छन्दः मूर्धन्यभिषेचने विनियोगः ॥ आपः शिवाः शिवतमाः
शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे
॥१॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव
मातरः ॥२॥ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । (भूमौ
निक्षेप) (पुनः हस्तयोः) आपो जनयथा च नः ॥३॥

ततो दिवा विवाहे सूर्यदर्शनं रात्रि विवाहे च ध्रुवदर्शनं कारयेत् ॥
ॐ तच्चक्षुर्देव हितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येमशरदः
शतञ्जीवेमशरदः शतर्षश्रुणुया मशरदः शतम्प्रव्रवामशरदः

शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् ॥

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पौष्येमसि मह्यं त्वाऽदाद्
बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम् ॥

हृदयालंभनं ॥ ततो वरो वध्वा दक्षिणस्कंधोपरिहस्तं नीत्वा
ममव्रतेति स्वपठितमंत्रेण तस्या हृदयामालभते ॥

(वर, वधू के दक्षिण कंधे पर अपना दक्षिण हाथ रखें)

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि ममचित्त मनुचित्तन्तेऽस्तु ॥

मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ठा नियुनक्तु मह्यम् ॥

ततो वरोऽनामिकाग्रे वधू शिरसी धृत्वाः-

वरः वधूमस्तके रजतं मुद्रया सिन्दूरं ददाति ॥

ॐ सुमंगली रियं वधूरिमा ठं समेत पश्यत ।

सौभाग्य मस्यैदत्त्वायाथास्तं विपरेतन ॥

अत्र आचाराच्चतस्रः स्त्रियो मंगलं कुर्वन्ति ॥

(चार सौभाग्यवती वधु को आशीर्वाद दे ब्रह्मसावित्र्योः सौभाग्यं ।

इन्द्रेन्द्राण्योः सौभाग्यं । शिवपार्वत्योः सौभाग्यं । लक्ष्मी नारायण्योः

सौभाग्यं अखण्ड सौभाग्यवती पुत्रपौत्रवती भव)

(मण्डपं मधुपर्कं च लाजाहोमस्थैव च ।

यवत्कन्या न वामांगे तावत्कन्या कुमारिका ॥)

ततो वधूं वरस्य वामभागे उपवेशयति ॥ (मंत्रपाठो वरस्य)

ॐ व्वाममद्य सवितर्व्वामिमुश्वो दिवेदिवे व्वाममस्मभ्य थं सावी ।

व्वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया व्वामभाजः स्याम ॥

(ततस्तां दृढपुरुषेणोन्मथ्याग्रेः प्राग्वोदग्वानुगुप्तऽआगारे प्राग्ग्रीवऽ

उत्तरलोमास्तीर्णे रोहिते ऽआनडुहचर्मण्युपवेशयतीहगावइति)

ॐ इहगावो निषीदंत्विहाश्वाऽ इहपुरुषाः । इहोसहस्र दक्षिणो

यज्ञऽइहपूषानिषीदतु ॥

पश्चात्ः-अथ स्विष्टकृद्धोमः-ॐ अग्रये स्विष्टकृते स्वाहा ।

इदमग्रये स्विष्टकृते न मम ॥ संस्रवप्राशनम् ॥ अथाचम्य ॥
पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्रौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ पूर्णपात्रदानम् ॥
ॐ अद्य कृतैतद्विवाह होम कर्मणि कृता कृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्म
प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतममुक गौत्रायामुक शर्मणे
ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्य महं संप्रददे ॥ इति ब्रह्मणे दक्षिणां
दद्यात् ॥ स्वस्तीति प्रति वचनं ॥

ततो ब्रह्मग्रन्थि विमोकः ॥

हस्ते जलमादायः—कृतस्य विवाहाख्यस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं
यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथा संपन्नेनात्रेनाहं तर्पयिष्ये
तेन कर्माणि देवताः प्रीयतां न मम ॥

पुनः—कृतस्य विवाहहोम कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं आचार्यादि नाना नाम
गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो गंधादिभिः सम्पूज्य यथोत्साहं दक्षिणां दास्ये ॥
अथ तिलक मंत्र आशीर्वादान् दद्यात् ॥

ॐ सुमित्रियान आपऽओषधयः सन्तु इति शिरसि मार्जनं ॥

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इति
प्रणीतोदकमीशान्यां क्षिप्त्वा ॥ प्रणीता विमोकः ॥ पवित्रे अग्रौ
प्रक्षिप्य ॥ उपयमनमग्रौ प्रक्षेपः ॥ ततस्तरण क्रमेण
बर्हिनुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॥ ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वा
गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञं स्वाहा वातेधाः ॥ (स्वाहा) ॥
ततो विवाह दिन मारभ्य दम्पत्यो नियमाः ॥

त्रिरात्रमक्षारलवणाशिनौ स्याताम् ॥ त्रिरात्रमघः शयीयाताम्
॥ संवत्सरं न मिथुनमुपेयातां द्वादशरात्रं षड्रात्रं त्रिरात्रमन्ततः ॥

इति विवाह संस्कार प्रयोगः समाप्तः ॥

ॐ ॥ अथ चतुर्थी कर्म प्रयोगः ॥ ॐ

विवाहदिवसाच्चतुर्थ्यामपररात्रे भार्यया सह मंगलं स्नात्वाऽहत
वाससी परिधाय धृत मंगल तिलकः शुभासने वर उपविशति ॥
तत्र दक्षिणतो वधूः ॥ वरः आचम्य प्राणानायम्य ॥ सुमुखश्चेति
पठित्वा ॥ अद्येत्यादि० विवाहांगभूतं चतुर्थी कर्म करिष्ये ॥ तत्रादौ
निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणपतेः षोडशोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ॥
तत्र गृहाभ्यंतरतः स्थंडिले पंच भूसंस्कार पूर्वकं वैवाहिकाग्रेः
स्थापनं कुर्यात् ॥ ततो अग्रेर्दक्षिणः ब्रह्मासनाद्यासादनं कृत्वा
अग्रेरुत्तरत उदकुंभं स्थापयेत् ॥

अथ कलश स्थापन मंत्रः- ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि
विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवी यच्छ पृथिवीन्द्र
र्षे ह पृथिवीम्माहिर्षे सीः ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ ॐ धान्यमसि
धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु
प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण
पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥ इति यवान्निक्षिप्य ॥ ॐ आजिघ्न
कलशं मह्या त्वा विशंत्विन्दवः । पुनरुर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः
सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माऽऽविशताद्रयिः ॥ इति कुम्भं
स्थापयेत् ॥ ॐ वरुणस्योत्तं भनमसि व्वरुणस्यस्कं भसर्जनीस्थो
व्वरुणस्यऋत सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋत
सदनमासीद ॥ इति जलं प्रपूर्य ॥ ॐ त्वां गन्धर्वाऽ अखनँस्त्वा
मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा
दमुच्यत ॥ इति गन्धम् ॥ ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं
पुरा । मनै नु बभ्रूणामह ११ शतं धामानि सप्त च ॥ इति सर्वोषधी
प्रक्षेपः ॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो
दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ इति दूर्वाः ॥ ॐ अश्वत्थे वो
निषदनं पर्णे वो व्वसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किला सथयत्सनवथ
पुरूषम् ॥ इति पंचपल्लवान् ॥ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा

निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ इति मृत्तिकाप्रक्षेपः ॥
 ॐ याः फलिनीर्या ऽअफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति
 प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वऽ हसः ॥ इति पूगीफलम् प्रक्षेपः ॥
 ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
 स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इति
 हिरण्यम् ॥ ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्यक्रमीत् ।
 दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति पंचरत्नानि प्रक्षेपः ॥ ॐ सुजातो
 ज्योतिषा सहशर्म व्वरूथमासदत्स्वः । वासो अग्रे विश्वरूपथं
 संव्ययस्व विभावसो ॥ इति मंत्रेण सूत्रवेष्टनम् ॥ ॐ पूर्णा
 दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत ॥ व्वस्ने वव्विक्रीणा वहाऽइषमूर्ज
 र्ठ शतक्रतो ॥ इति तण्डुल पूर्णपात्रम् निधाय ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ
 र्ठ समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोऽँ ॥ म्प्रतिष्ठ ॥
 इति मंत्रेण प्रतिष्ठा कार्या ॥ ॐ उदकुंभाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः ॥
 इति षोडशोपचारैः पूजनं कार्यम् ॥

ततः पात्रासादनादिकम् आज्योद्वासनं चरोरुद्वासनं च
 आज्योत्पवनादि प्रोक्षण्याः प्रत्युत्पवनान्तं कृत्वा उपयमन
 कुशानादाय ॥ ॐ तिष्ठन् समिधोऽभ्यादाय स्वाहा ॥

प्रोक्षणी शेषोदकेन अग्निं प्रदक्षिणी कृत्य पवित्रयोः प्रणीतासु
 निधाय ॥ इतरथावृत्तिः ॥ ब्रह्मान्वारब्धेन स्रवेण होमः (मनसा)
 ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ॥

ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्रये स्वाहा
 इदमग्रये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥
 हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥

ॐ अग्नेनय सुपथारायऽअस्मान्निश्वा निदेवव्वयुनानि व्विद्धान् ।
 युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्तेनमऽउक्तिं विधेम ॥ चतुर्थी

कर्मणि साक्षिनाम्ने वैश्वानराय नमः गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ततो वर आज्येन पञ्चाज्याहुती जुहुयात् (उदपात्रे सर्वासां त्यागः) यथाः-

ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति रसिब्राह्मणस्त्वा
नाथकामऽउपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥
इदमग्रये न मम ॥१॥

ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति रसिब्राह्मणस्त्वा
नाथकामऽउपधावामि यास्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥
इदं वायवे न मम ॥२॥

ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति रसिब्राह्मणस्त्वा
नाथकामऽउपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥
इदं सूर्याय न मम ॥३॥

ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति रसिब्राह्मणस्त्वा
नाथकामऽउपधावामि यास्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥
इदं चन्द्रमसे न मम ॥४॥

ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति रसिब्राह्मणस्त्वा
नाथकामऽउपधावामि यास्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥
इदं गन्धर्वाय न मम ॥५॥

(एक आहुति चावल की दे)

ततः स्थालीपाकेन एकामाहुतिं जुहुयात् ॥ चरुमभिधार्य ॥ ॐ
प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ अग्रये स्विष्टकृते
स्वाहा । इदमग्रये स्विष्टकृते न मम ॥

ततो आज्येन भूराद्या नवाहुतयः ॥

ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे
न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ॥
षजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाथं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्
स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥

ॐ सत्वन्नोऽ अग्रेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽ अस्याऽ उषसोव्युष्टौ ॥
अवयक्ष्वनो वरुणं रराणोव्वीहिमृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥
इदमग्रीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्य मित्वमयाअसि ॥ अयानो
यज्ञं वहास्य यानोधेहि भेषजं स्वाहा ॥ इदमग्रयेअयसे न मम ॥६॥

ॐ येते शतंवरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः ॥
तेभिर्नोऽ अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा
॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमद्ध्यमंश्रथाय ॥
अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽ अदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं
वरुणायादितये न मम ॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥९॥ ततः संस्रव
प्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे
पूर्णपात्रदानम् ॥

कृतस्य चतुर्थीकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं ब्रह्मन् पूर्णपात्रं तुभ्यमहं
संप्रददे ॥ तत आचार्याय पूर्णपात्रं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ पश्चिमे
प्रणीता विमोकः ॥

तज्जलेन, आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते
कृण्वन्तु भेषजम् ॥ ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा ऽ अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः ॥ इति मार्जनम् ॥ (तत उदपात्र जलेन
वरो वधूमूधन्यभिषिंचति याते पतिघ्नोरिति ॥)

(अभिषेक करे वर वधू पर)

ॐ याते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निदितातनूर्जा
रघ्नीततऽ एनां करोमि साजीर्यत्वं मया सहासौ ॥ (असौस्थाने
वधुनामग्रहणं करोति वरः) अमुकी देवी इति ॥

अथैनां थं स्थाली पाकं परोशयतिः- (कंसार) वरः प्राशयति ।

कन्यामात्रा चतुर्वारं परिवेषणं कार्यम्

(यज्ञ कार्य सम्पूर्ण करने के बाद अग्नि को ढक कर उस पर बाजोट लगाकर एक थाल में वधू की माता चार श्रुवा चावल परोसे तथा घी और शककर परोसे पहले वर कन्या को जिमावे बाद में कन्या वर को जिमावे ॥) ततो वर एनां प्राशयति ॥

ॐ प्राणैस्ते प्राणान्संदधामि ॥१॥ ॐ अस्थिभिरस्थीनि संदधामि ॥२॥

ॐ मांसै र्मांसं संदधामि ॥३॥ त्वचा त्वचं संदधामि ॥४॥ अत्र

वधूः शुद्ध्यर्थमाचामेत् ॥ अत्र समाचारात् वधूः वरमपि पूर्वोक्तै र्मंत्रैः प्राशयेत् ॥ तत आचार्यो हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्व रिष्टं यज्ञं समिमं दधातु । विश्वे देवास ऽ इह मादन्तामो ऽ ३ ॥ म्प्रतिष्ठा ॥

उभयोर्वधू वरयोः सुप्रतिष्ठितमस्तु ॥ इति तयोः शिरसी क्षिपेत् ॥

ततो वरः वधू दक्षिण स्कंधोपरि हस्तं नीत्वा पठेत् ॥

ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चंद्रमसिश्रितम् ॥ वेदाहंतन्मांत

द्विद्यात्पश्येमशरदः शतं जीवे मशरदः शतं शृणुयामशरदः

शतम् इति ॥

संकल्पः-कृतस्य चतुर्थीकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् कुमारिकाः बटुकान् यथाकाले यथासंपन्नेनात्रेनाहं तर्पयिष्ये ॥

वरपिता प्रयोग करेः-आचमनं प्राणायामं कृत्वाः-इहाद्य तित्थौ

मम सुतस्य विवाहोत्सव कर्म प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं इदं द्रव्यं अग्निर्देवतं

गन्ध पुष्पाद्यर्चितं शास्त्रोक्त कृत पुण्य फलावाप्त्यर्थम् कन्या

प्रतिग्रह दोष निवारणार्थम् श्री विष्णो लक्ष्मी प्रीत्यर्थम् आचार्य

ब्रह्मणः प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं तथा उपविष्ट ब्राह्मणेभ्योऽहं संप्रददे ॥

आचार्य ने गौदान प्रयोगः-मम सुतस्य विवाहोत्सव कर्म परिपूर्णार्थं

गौदान परिकल्पितं इदं द्रव्यं अग्निर्देवतं पुष्पाद्यर्चितं शास्त्रोक्त

कृत पुण्य फल प्राप्त्यर्थम् आचार्य ब्राह्मणेभ्योऽहं संप्रददे ॥ प्रणिता पात्र विमोकः सुप्रोक्षितादि करणम् ॥

अग्निब्रह्मा विसर्जनम्:-गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरः यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन ॥ तिलक मन्त्र आशीर्वादः ॥

इति चतुर्थी कर्म सम्पूर्णम् ॥

(व्रत यज्ञ विवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे ॥ आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम् ॥१॥ प्रारम्भे वरण यज्ञे संकल्पो व्रत सत्रयोः ॥ नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाक परिक्रिया ॥२॥ विवाहे वितते यज्ञे संस्कारे च कृते यदा । कन्या ऋतुमति दृष्ट्वा कथं कुर्वीत याज्ञिकाः ॥३॥ स्नापयित्वा तु तां कन्या मर्चयित्वा यथा विधि ॥ यँञ्जाना माहुतिं हुत्वा तत स्तत्र प्रवर्तयेत् ॥४॥

अर्थः-व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, पूजा, जप, प्रारम्भ करने पर सूतक नहीं लगता । कर्म आरम्भ के पूर्व सूतक लगता है ॥१॥ कार्यारम्भ करने पर ऐसी स्थिति बन जाये तो विवाहादि कार्य नान्दीश्राद्ध करके सम्पन्न करलें ॥२॥ विवाहादि कार्य मे कन्या यदि ऋतुमती हो जाये तो कन्या को यथाविधि स्नान कराकर उसे यँञ्जाना मंत्र से आहुती देकर कार्य सम्पन्न करालें ॥३॥ पुत्र को जन्म देने पर 20 दिन के बाद और पुत्री को जन्म देने पर 30 दिन के बाद विवाह, उपनयन तथा चौल कर्म करने का स्त्री को अधिकार जानना चाहिये)

✽ अथ सीमन्तोन्नयन संस्कार विधिः ॥ ✽

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ प्रथमे गर्भे षष्ठेऽष्टमे वा मासे पुत्रक्षत्रे चन्द्रतारा ग्रहानुकूलदिने पत्न्या सह मङ्गलस्नानं कृत्वा अहतेवासो युगालंकृतः शुचिर्दर्भपाणिः पत्न्या सह बहिः शलायां शुभासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य गीतवाद्यमङ्गलघोषैः पतिगृहमागत्य ॥ सीमन्ते च विवाहे च पत्नी दक्षिणतः सदा ॥ सुमुहूर्तं सुलग्नं क्षेमं कल्याणं आरोग्यं शुभं भवतु ॥

सुमुखश्चैकेत्यादि० पठित्वा ॥

संकल्पः- देशकालसंकीर्तनान्ते मम तनुरुधिरप्रिया लक्ष्मीभूत राक्षसीगण दूर निरसन क्षेम सकलसौभाग्य निदान भूत महालक्ष्मी समावेशन द्वारा प्रति गर्भबीज गर्भ समुद्भवैनो निबर्हण जनकातिशय द्वारा च श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ स्त्रीसंस्काररूपं सीमन्तोन्नयनाख्यं कर्म करिष्ये ॥

तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणपतिपूजनं, स्वस्तिपुण्याहवाचनम्, अविघ्नपूजनं, मण्डपस्थापनं, मातृकापूजनं, वसोर्धारा आयुष्यमन्त्रजपं, नान्दीश्राद्धं च करिष्ये ॥

तत्र बहिः शालायां स्थण्डिले पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं मङ्गलनामाग्रेः स्थापनं करिष्ये ॥

ततः स्थण्डिले पञ्च भूसंस्कारान् कुर्यात् ॥

दर्भैः परिसमुह्य ३ ॥ गोमयेनोपलिप्य ३ ॥ स्रुवेणोल्लिख्य ३ ॥

अनामिकाङ्गुष्ठेनो धृत्य ३ ॥ कुशोदकेनाऽभ्युक्ष्य ३ ॥

अग्निमुपसमाधाय ॥ सौभाग्यवत्या काँस्यपात्र द्वय संपुटितेन

तमग्निमानीयमात्माभिमुखेअग्रिकोणे प्रतिष्ठाप्य ॥ तस्मादाचार्यः

हुँ फट् इति मंत्रेण क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यां क्षित्वा तस्योपरि अक्षतान्

विकीरयेत् ॥ आच्छादनं दूरीकृत्य ॥ आत्माभिमुखमग्निं स्थापयेत् ॥

ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्य वाहमुपब्रुवे । देवाँ २॥ आ सादयादिह ॥

ॐ आवो देवासऽईमहे वामं प्रयत्य ध्वरे । आवो देवास ऽ आशिषो

यज्ञियासो हवामहे ॥ इत्यग्निमुपसमाधाय ॥

अग्रेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् ॥ उत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् ॥ तत्र

ब्रह्मोपवेशनम् ॥ यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव ॥ ब्रह्मा

भवामि इति प्रतिवचनम् ॥ औदुम्बरफल संलग्नशाखा (गूलर

शाखा फल वाली) ॥ त्रयोदर्भाः ॥ (तीन कुशा पुंज) स्थानत्रये

श्वेता त्रीणि शल्लली ॥ (सफेद सहेली का काँटा) वीरतर शंकुः

(अश्वत्थो वैल्वः शारेषीको वा)(पीपल या बिल्व या सरीस

का कीला) पूर्णपात्रं ॥ मृदुपीठं ॥ (गूलर की कोमल चौकी) वीणा गाथिनौच (वीणा वादक) औदुम्बरमाला च (गूलर फल की माला) ॥ इत्याद्युपकल्पयेत् ॥ (इत्यादि की व्यवस्था कर लें) आज्य निर्वपणान्तरं चरुपात्रे (चावल पकाने का बर्तन) मुद्गप्रक्षेपं (हरे मूँग) कृत्वाऽधिश्रयणम् (पकाने को अग्नि पर चढा दें) ॥ ईषच्छ्रतेषु (कुछ पकने पर) तिलतण्डुल प्रक्षेपः (श्वेत तिल और चावल डाले) ॥

ॐ समिधोभ्याधायस्वाहा ॥ प्रोक्षणी शेषोदकेन सपवित्रहस्तेन पर्युक्षणं कुर्यात् ॥ पवित्रयोः प्रणीतागमनं ॥ दक्षिण जान्वाच्य ॥ ब्रह्मान्वारब्धे स्रुवेण होमः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥ ॐ अग्रये स्वाहा इदमग्रये न मम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ततोऽग्निपूजनं ॥ सीमन्ते मंगलनाम्ने वैश्वानराय नमः गधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ ततस्तिल मुद्गमिश्र चरुहोमः ॥ (मूँग मिले तिल चरु की एक आहुति दे) ॐ प्रजापतयेस्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ अग्रयेस्विष्टकृते स्वाहा ॥ इदं अग्रये न मम ॥

ततो भूराद्यानवाहुतयः-

ॐ भूः स्वाहा इदं अग्रये ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥

ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ॥

ॐ त्वन्नो अग्रे वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवया सिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्देषाथं सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ॥

ॐ सत्वन्नो अग्रेऽ वमो भवोती नेदिष्ठो अस्याऽ उषसोव्युष्टौ अवयक्ष्वनो व्वरुणथं रराणोव्वीहि मृडीकथं सुहवोन ऽएधि स्वाहा । इदमग्नि वरुणाभ्यां न मम ॥

ॐ अयाश्चाग्रेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाअसि ॥ अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज थं स्वाहा ॥ इदमग्रये न मम ॥

ॐ येतेशतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशवितता महान्तः ॥ तेभिर्त्रोऽअद्य सवितुर्विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तुमरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्य न मम ॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दबाधमंत्विमध्यमथं श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणाय आदित्याय अदितये च न मम ॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये ॥ इति नवाहुतयः ॥

औदुम्बर फलयुग्मयुतशाखा दर्भत्रयेण शलजीपूर्ण शरेणसह एकीकृत्यैनंवध्वा सीमंत ललाटादुपरि शिरोमध्य भागस्थ केशान्विनयेत् पतिः ॥ (गूलर की शाखा, तीनकुशा, सहेली का काँटा, बाण सहित एकीकृत करके बहु के ललाट के ऊपर सिर के मध्य भाग में पति केशों को विभाजित कर मुकुट बाँधे)

ॐ भूर्विनयामि ॥ ॐ भुवर्विनयामि ॥ ॐ स्वर्विनयामि ॥

ततोवध्वाशिरसि त्रिर्वेष्टनेन त्रिर्बध्नीयात् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ अयमूर्जावितोवृक्ष ऊर्ज्जीवफलिनी भवेति ॥ औदुम्बरपुष्पमालांच धारयेत् ॥

(गूलर की माला पहना दें)

ततो भर्ता वीणागाथिनौ राजार्थं संगायेतामिति प्रैषमाह । ततश्च तौ सोत्साहौ गायेताम् स च गाथा

(तब पति वीणा वादक के साथ यह मंत्र बोलें)

मन्त्रः ॐ सोमऽ एवनोराजे मामानुषी प्रजाः ॥ अविमुक्त चक्रासीरंस्तीरे तुभ्यमसाविति ॥ असौ स्थाने समिपावस्थितायाः नद्या नामग्रहणं स्त्रयेव करोति ॥ गङ्गा यमुनेत्येवमादि प्रथमान्तम् ॥

(असौ की जगह समीपस्थ नदी का नाम उच्चारण करे)

ततः संस्त्रवप्राशनं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥ पवित्र प्रतिपत्तिः ॥ पवित्रे अग्रौ प्रक्षेपः ॥ प्रणीता विमोकः ॥

स्वभावतः इत्यादि संस्कारः ॥ याजमशेषकल्याणगुणैकराशिम् १
व्यूहाङ्गिनें ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेत् कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ॥

श्री द्विजकर्म नन्दिनी

विष्णु पूजनम्

ब्रह्मणे पूर्णपात्रः-कृतस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं कृता कृता
वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इदं पूर्णपात्रं ब्रह्मणे तुभ्यमहं
संप्रददे ॥

ब्राह्मणभोजन संकल्पः- सीमन्तोन्नयनकर्मणः सांगता
सिद्ध्यर्थस्मृत्युक्तान् दशसङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ॥

तेन श्रीकर्माङ्गदेवता प्रीयन्ताम् न मम ॥

ब्राह्मणान् गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ तेभ्यश्च दक्षिणां दत्त्वा ॥ तेषाम्
आशिषो गृहीत्वा ॥ अग्निं विसृज्य ॥ मातृणां विसर्जनम् ॥ सुवर्णरक्षां
वामकरे बध्नीयात् ॥ बध्वो पितु वस्त्रदानं कुर्यात् ॥

॥ इति सीमन्तोन्नयन संस्कारः ॥

ॐ ॥ विष्णु पूजनम् ॥ ॐ

ध्यानम्:- शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥१॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।

सहारवक्षः स्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्
॥२॥

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥३॥

ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

हिः
आवाहनः- ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । सभूमिर्ठं

सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ आगच्छ भगवन् देव स्थाने

चात्र स्थिरो भव । यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संनिधौ

भव ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

ताम्न आवहे
आसनः- ॐ पुरुषऽ एवेदर्थं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ अनेकरत्नसंयुक्तं

अङ्गे तु वाप्रे कृष्णभानुजां मुदा 277 विराजमानामनुरूपसौभगात् ।

सरस्वत्यङ्गैः परित्रेवितो सदा स्मरेत् देवीं सकलेषु महात्मिणी ॥

नानामणिगणान्वितम् । भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमन्नारायणाय नमः । आसनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ वप्रजा०

पाद्यः-ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ गर्ज्जोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्धय संयुतम् । पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥

ॐ सोऽभि०

अर्घ्यः-ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ॥

चन्द्रां प्रभासा०

आचमनः-ॐ ततो विराडजायत व्विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ कपूरिण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् । तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

आदित्यवेदी०

स्नानः-ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्चये ॥ मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । स्नानीयं जलं समर्पयामि ॥

दुग्धस्नानः-ॐ पयः पृथिव्यां पयओषधीषु पयोदिव्यं तरिक्षेपयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यम् ॥ काम धेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । पयः स्नानं समर्पयामि ॥ पयस्नानान्ते

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

दधिस्नानः-ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयू षं षितारिषत् ॥

पयसस्तु समुद्धूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । दधिस्नानं
समर्पयामि ॥ दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

घृतस्नानः-ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसा पावानः
पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश
ऽ उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । घृतस्नानं समर्पयामि
। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते
आचमनीयं समर्पयामि ॥

मधुस्नानः-ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः
सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः ।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँर अस्तु सूर्यः
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

तरुपुष्पसमुद्धूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । मधुस्नानं समर्पयामि ॥
मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमीयं
समर्पयामि ॥

शर्करास्नानः-ॐ अपाथं रसमुद्वय सथं सूर्यसंतं थं समाहितम् ॥
अपाथं रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्रा यत्वा
जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिद्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुसारसमुद्धूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । शर्करास्नानं
समर्पयामि ॥ शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमीयं समर्पयामि ॥

पञ्चमृतस्नानः-ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियंति सस्रोतसः ।
सरस्वतीतु पंचधासो देशे भवत्सरित् ॥

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । पञ्चामृतस्नानं
समर्पयामि ॥

गन्धोदकस्नानः-ॐ अथं शुनाते अथं शुः पृच्यतां परुषापरुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥ मलयाचल सम्भूतं
चन्दनेन विमिश्रितम् । इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाकृतं नु गृह्यताम् ॥
श्रीमन्नारायणाय नमः । गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

शुद्धोदकस्नानः-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि बालस्तऽ
आश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णयामाऽ
अवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः ।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
समर्पयामि ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि ॥

॥ पुरुष सूक्तम् ॥

अभिषेकं कुर्यात्-हरिःॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् । सभूमिर्त्त सर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुषऽएवेदर्त्त सर्वेष्वद्भूतैश्चभाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो
ब्रह्मन्नेनातिरोहति ॥२॥ एतावानस्यमहिमातो ज्वायाँश्चपुरुषः ।
पादोस्यव्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्द्धऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ।
ततोव्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥
ततो व्विराडजायतव्विराजोऽअधिपुरुषः ।
सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ।
पशूँस्तौँश्चक्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्याश्चषे ॥६॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे ।
 छन्दाथंसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥
 तस्मादश्ववाऽ अजायन्तषेकेचोभयादतः ।
 गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥
 तैय्यज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षत्पुरुषज्ञातमग्रतः । तेनदेवाऽ
 अयजन्तसाध्याऽ ऋषयश्चषे ॥९॥
 यत्पुरुषैर्व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ।
 मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरु पादाउच्येते ॥१०॥
 ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहूराजत्र्यः कृतः ।
 ऊरूतदस्यषड्वैश्यः पश्चाथंशूद्रोअजायत ॥११॥
 चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ॥
 श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥१२॥
 नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षर्षी शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ।
 पश्चात्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोका २॥ ५अकल्पयन् ॥१३॥
 यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्वत ।
 व्वसन्तोस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥
 सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
 देवायद्यज्ञन्तञ्चाना ५ अबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥१५॥
 यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यासन् । तेहनाकं
 महिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः ॥१६॥
 पुनः शुद्धोदकस्नानः-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि
 बालस्तऽआश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
 कर्णधामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पाज्जन्त्याः ॥
 श्रीमन्नारायणाय नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥
 शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

वस्त्रः-ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
 उपैतु मां ०

छन्दाशंसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मा दजायत ॥ शीतवातोष्णसंत्राणं
लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ
मे ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । वस्त्रं समर्पयामि । आचमनीयं
जलं च समर्पयामि ॥

क्षुत्पिपासा

यज्ञोपवीतः-ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः ॥ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं
त्रिगुणं देवता मयम् । उपनीतं चोत्तरीयम् गृहाण परमेश्वर ॥
श्रीमन्नारायणाय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । यज्ञोपवीतान्ते
आचमनीयं जलं च समर्पयामि ॥

उपवस्त्रः-उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । भक्त्या समर्पितं
देव प्रसीद परमेश्वर ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । उपवस्त्रं
समर्पयामि । आचमनीयं जलं च समर्पयामि ॥

गन्धद्वारा

गन्धः- तस्यज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः । तेन देवाऽ अयजन्त
साध्याऽ ऋषयश्चये ॥ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । गन्धं विलेपयामि ॥
श्रीमन्नारायणाय नमः । चन्दनं समर्पयामि ।

(शालग्राम जी पर अक्षत नहीं चढाया जाता, अतः अक्षत के
स्थान पर श्वेत तिल अर्पित करना चाहिये।)

अक्षतः-ॐ अक्षत्रमीमदन्तह्य व प्रियाऽ अधूषत । अस्तोषतस्व
भानवो विप्रान विष्टुया मतीयोजान्निवन्दते हरिः ॥ श्रीमन्नारायणाय
नमः । अक्षतान् समर्पयामि ॥

मनसः

काम्यम्

पुष्पः- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्यपाशं
सुरेस्वाहा ॥ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः ।
पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

तुलसीपत्रः-ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं

किमस्यासीत् किं बाहू किमूरु पादा उच्येते ॥ ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः यखा ॥ तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् । भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि ॥

दूर्वाः-ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ विष्ण्वादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा । क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धीकरी भव ॥ दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ॥

आभूषणः-वज्रमाणिक्य वैदूर्य मुक्ताविद्रुममण्डितम् । पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । अलङ्करणार्थं आभूषणानि समर्पयामि ॥

गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वाः-

अङ्गपूजाः-ॐ पद्मनाभाय नमः पादौ पूजयामि । ॐ जनार्दनाय नमः जंघे पूजयामि । ॐ जगन्नाथाय नमः जानुनी पूजयामि । ॐ उरू विक्रमाय नमः ऊरू पूजयामि । ॐ नारायणाय नमः नाभिं पूजयामि । ॐ उरग-शयनाय नमः उदरं पूजयामि । ॐ वैकुण्ठ-सदनाय नमः वक्षः पूजयामि । ॐ भूतभृते नमः भुजान् पूजयामि । ॐ कैटभारये नमः कण्ठं पूजयामि । ॐ चक्रायुधाय नमः चिबुकं पूजयामि । ॐ मधुसूदनाय नमः मुखं पूजयामि । ॐ नवनीरदाभाय नमः नेत्रे पूजयामि । ॐ कौस्तुभधराय नमः कर्णौ पूजयामि । ॐ लक्ष्मीपतये नमः ललाटं पूजयामि । ॐ श्रीधराय नमः शिरः पूजयामि । ॐ सहस्रशीर्षाय नमः सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि ॥

सुगन्धित तैलः-ॐ अहिरिवभोगैः पर्येतिवाहुंज्याया हेतिम्परि
बाधमानाः । हस्तगघ्नो विश्वाव्वयनुनानि विद्वान्पुमान्पुमाथं
सम्परिपातु विश्वतः ॥

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च । मया दत्तानि लेपार्थं
गृहाण परमेश्वर ॥

कर्मैना

धूपः-ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू
तदस्य षडैश्वर्यः पश्चात् शूद्रो अजायत ॥ वनस्पति रसोद्भूतो
गन्धाद्गयो गन्ध उत्तमः । आग्नेयः सर्व देवानाम् धूपोऽयं
प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

आपः सृजन्तु

दीपः-चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षुः सूर्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्च
प्राणश्च मुखा दग्निरजायत ॥ साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना
योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
श्रीमन्नारायणाय नमः । दीपं दर्शयामि ॥ हस्तौ प्रक्षाल्य ।

आर्द्रा
पुष्करिणी

नैवेद्यः-ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः संवर्तत
पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रा तथालोका २ ॥ ॐ अकल्पयन् ॥ ॐ
अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्र दातारं तारिषऽऊर्जं
नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा,
ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा,
ॐ समानाय स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमन्नारायणाय नमः ।
नैवेद्यं निवेदयामि मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं
समर्पयामि, उत्तरापोषणार्थं हस्त प्रक्षालनं, मुखप्रक्षालनं आचमनीयं
जलं समर्पयामि ।

ऋतुफलः-ॐ याः फलिनीर्थाऽअफलाऽअपुष्पाश्च
पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वदं हसः ॥ इदं फलं
मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर्भजेज्जन्मनि
जन्मनि ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । अखण्डऋतुफलं समर्पयामि ॥

आश्रयः काम्यः

ताम्बूलः-मुख वासार्थं ताम्बूलम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा

यज्ञ मतन्वत । व्वसन्तोस्या सीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥

ॐ उतस्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः

श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि द्धधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा ॥

पूगीफलं महद्विव्यम् नागवल्ली दलैर्युतम् ।

एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमन्नारायणाय नमः । एलालवङ्गपूगीफलयुतं ताम्बूलं

समर्पयामि ॥

दक्षिणाः-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक

आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा

विधेम ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः

शान्तिं प्रयच्छमे ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । सांगतासिद्धयर्थं

हिरण्यगर्भदक्षिणां समर्पयामि ।

श्रीफलम्-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कया बहोरात्रे पार्श्वे

नक्षत्राणिरूपमश्विनौऽव्याप्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण

सर्वलोकम्मऽइषाण ॥

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात्फलं प्रदानेन पूर्णाः

सन्तु मनोरथाः ॥ श्रीमन्नारायणाय नमः । श्रीफलं समर्पयामि ।

आरतीः-ॐ इदं हविः प्रजननम्मेऽस्तुदशवीरं सर्वगणं

सस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि अग्निः

प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽस्मासुधत् ॥ सप्तस्या ताम्रश्रावः

मंत्र-पुष्पाञ्जलिः-यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि

प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः

सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय

कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो

ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं

भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं
समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वयुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै
समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः
परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः
सभासद इति ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
संबाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नारायणाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्
श्रीमन्नारायणाय नमः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

प्रार्थनाः—यं ब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।

ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुराऽसुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥
सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं

सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।

सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं

सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥

प्रदक्षिणाः—सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः । देवा
बद्धज्ञं तन्वाना ऽ अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ यानि कानि च पापानि
जन्मान्तरकृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे
॥ श्रीमन्नारायण पूजनं परिपूर्णमस्तु ॥

❧ ❧ ॥ महालक्ष्मी पूजन ॥ ❧ ❧

संकल्पः—ॐ विष्णु.....मासोत्तमे मासे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे
पुण्याममावास्यायां तिथौ अमुक वासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुक
नाम शर्मा(वर्मा, गुप्तः, दासः) अहं श्रुति स्मृतिपुराणोक्त
फलावाप्तिकामनया ज्ञाताज्ञातकायिकवाचिकमान
सिकसकलपापनिवृत्तिपूर्वकं स्थिरलक्ष्मी प्राप्तये

श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये।
तदङ्गत्वेन गौरीगणपत्यादि पूजनं च करिष्ये ॥ (गणेश जी षोडश
मातृका नवग्रह कलश पूजन पहले कर लें)

ध्यानम्:—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः,
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥१॥
अरुण कमल संस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा,
कर युगल धृतेष्टा भीति युग्माम्बुजा च ।
मणि मय-मुकुटाद्या-ऽलंकृता कल्पजालै,
र्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥२॥
पद्मासनां पद्मकरां पद्ममालाविभूषिताम् ।
क्षीरसागर संभूतां हेमवर्ण-समप्रभाम् ॥
क्षीरवर्णसमं-वस्त्रं-दधानां हरिवल्लभाम् ।
भावये भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभाम् ॥३॥

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं
लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ध्यानार्थं
पुष्पाणि समर्पयामि ॥

आवाहनः—ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्
। यस्यां हिरण्यं विन्देयङ्गामश्वं पुरुषानहम् ॥ सर्वलोकस्य जननीं
सर्वसौख्यप्रदायिनीम् । सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीमावाहयामि, आवाहनार्थं पुष्पाणि
समर्पयामि ॥

आसनः—ॐ अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् । श्रियं
देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभं
मुक्तामणिविराजितम् । अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । आसनार्थं कमल पुष्पं समर्पयामि ॥

पाद्यः-ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां
तर्पयन्तीम् । पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् । पाद्यं ददाम्यहं देवि
गृहाणाशु नमोऽस्तु ते ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । पादयोः पाद्यं
समर्पयामि ॥

अर्घ्यः-ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके
देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां
त्वां वृणोमि ॥ अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् । अर्घ्यं
गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमनः-ॐ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव
वृक्षोऽथबिल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च
बाह्याऽअलक्ष्मीः ॥ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णवादिभिः
स्तुता । ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै
नमः । आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

स्नानः-ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्यस्कं भसर्जनीस्थो
व्वरुणस्यऋत सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋत
सदनमासीद ॥ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः । स्नानं
कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

दुग्धस्नानः-ॐ पयः पृथिव्यां पयओषधीषु पयोदिव्यं
तरिक्षेपयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यम् ॥ काम धेनु समुत्पन्नं
सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्
॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । पयः स्नानं समर्पयामि ॥ पयस्नानान्ते
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
समर्पयामि ॥

दधिस्नानः—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयू ङं षितारिषत् ॥ पयसस्तु समुद्धृतं
मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । दधिस्नानं समर्पयामि ॥ दधिस्नानान्ते
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
समर्पयामि ॥

घृतस्नानः—ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसा पावानः
पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश
ऽ उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै
नमः । घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

मधुस्नानः—ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः
सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ङं रजः । मधु
द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्ने वनस्पतिर्मधुमाँर अस्तु सूर्षः
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ तरुपुष्पसमुद्धृतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
मधुस्नानं समर्पयामि ॥ मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

शर्करास्नानः—ॐ अपां रसमुद्वय सं सूर्षेसंतं समाहितम् ॥
अपां रसस्ययो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्रा यत्वा
जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसारसमुद्धृता
शर्करा पुष्टिकारका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । शर्करास्नानं समर्पयामि
॥ शर्करास्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते
आचमनीयं समर्पयामि ॥

पञ्चमृतस्नानः-ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियंति सस्रोतसः ।
सरस्वतीतु पंचधासो देशे भवत्सरित् ॥ पयो दधि घृतं चैव मधु
च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥

गन्धोदकस्नानः-ॐ अथं शुनाते अथं शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥ मलयाचल सम्भूतं
चन्दनेन विमिश्रितम् । इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाकृतं नु गृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

शुद्धोदकस्नानः-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि
बालस्तऽआश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णाश्रामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै
नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
समर्पयामि ॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

॥ श्री सूक्तम् अभिषेकं कुर्यात् ॥

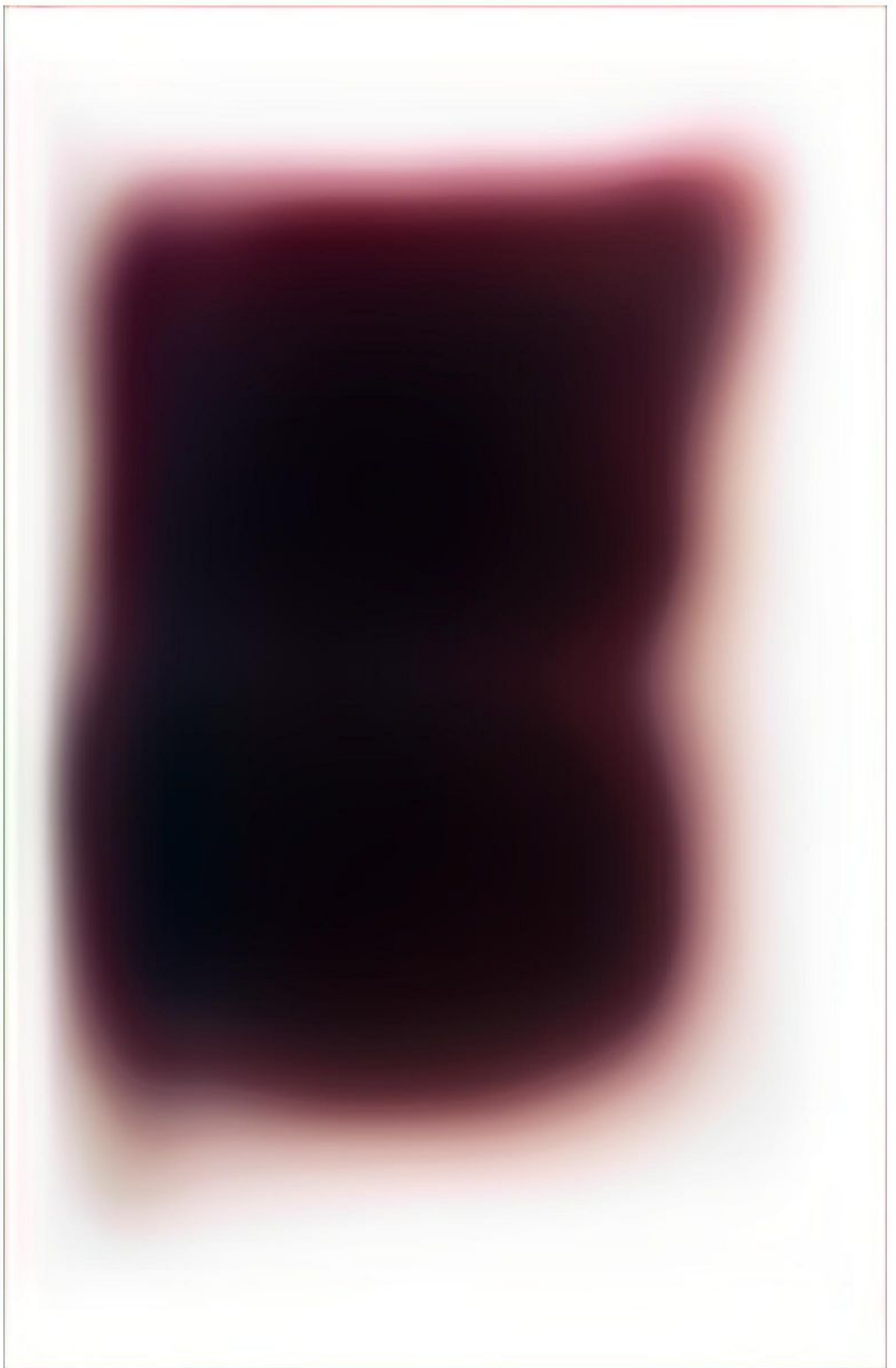
ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं
लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥ ॐ तांऽआवह जातवेदो
लक्ष्मी मनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्
॥२॥ ॐ अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् । श्रियं
देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥३॥ ॐ कांसोस्मितां
हिरण्यप्राकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मेस्थितां
पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥ ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा
ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमिं शरणमहं
प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥ ॐ आदित्यवर्णे
तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः । तस्य फलानि
तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः ॥६॥ ॐ उपैतु
मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्
कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥७॥ ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं

नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ॥८॥
 ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां
 तामिहोपहृयेश्रियम् ॥९॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः
 सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
 ॐ कर्द्धमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्द्धम । श्रियं वासय मे
 कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ ॐ आपःस्रजन्तु स्निग्धानि
 चिक्रीत वस मे गृहे । निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले
 ॥१२॥ ॐ आर्द्रा यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्या
 हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ ॐ आर्द्रा पुष्करिणीं
 पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीं । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो
 म आवह ॥१४॥ ॐ तांऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्
 । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
 अभिषेकं समर्पयामि ॥

शुद्धोदकस्नानः- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि बालस्तऽ
 आश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
 कर्णयामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै
 नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
 समर्पयामि ॥

वस्त्रः- ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोस्मि
 राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥ दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं
 त्वतिमनोहरम् । दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ॥
 ॐ महालक्ष्म्यै नमः । वस्त्रं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं च
 समर्पयामि ॥

उपवस्त्रः- कञ्चुकी मुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् । गृहाण
 त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि ॥



पुष्पमालाः—ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ माल्यादीनि सुगन्धीनि
मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

(गन्ध अक्षत पुष्प लेकर अङ्गपूजन करें)

अङ्गपूजाः—ॐ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि । ॐ चञ्चलायै
नमः, जानुनी पूजयामि । ॐ कमलायै नमः, कटिं पूजयामि ।
ॐ कात्यायिन्यै नमः, नाभिं पूजयामि । ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं
पूजयामि । ॐ विश्ववल्लभायै नमः, वक्षः स्थलं पूजयामि ।
ॐ कमलवासिन्यै नमः, हस्तौ पूजयामि । ॐ पद्माननायै नमः,
मुखं पूजयामि । ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि ।
ॐ श्रियै नमः, शिरः पूजयामि ।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ॥

(लक्ष्मीजी के पास गन्ध अक्षतपुष्प छोड़े)

अष्टसिद्धिपूजनम्—१-ॐ अणिम्ने नमः(पूर्वे), २-ॐ महिम्ने
नमः (अग्रिकोणे), ३-ॐ गरिम्ने नमः (दक्षिणे), ४-ॐ लघिम्ने
नमः(नैर्ऋत्ये), ५-ॐ प्राप्यै नमः (पश्चिमे), ६-ॐ प्राकाम्यै नमः
(वायव्ये), ७-ॐ ईशितायै नमः (उत्तरे), ८-ॐ वशितायै नमः
(ऐशान्याम्) ॥

अष्टलक्ष्मीपूजनम्—१-ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः । २-ॐ विद्यालक्ष्म्यै
नमः । ३-ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः । ४-ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः ।
५-ॐ कामलक्ष्म्यै नमः । ६-ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः ।
७-ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः । ८-ॐ योगलक्ष्म्यै नमः ॥

धूपः—ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय
मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो
गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्व देवानाम् धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

दीपः-ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ साज्यं चवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । दीपं दर्शयामि ॥ हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

नैवेद्यः-ॐ आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीं । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् । षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । नैवेद्यं निवेदयामि मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोषणार्थं हस्त प्रक्षालनं, मुखप्रक्षालनं आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

ऋतुफलः- फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । अखण्डऋतुफलं समर्पयामि ॥ आचमनीयं जलं च समर्पयामि ॥

ताम्बूल-पूगीफलः-ॐ आर्द्रा यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ पूगीफलं महद्दिव्यम् नागवल्ली दलैर्युतम् । एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि ॥

दक्षिणाः-ॐ तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । दक्षिणां समर्पयामि ॥

श्रीफलः-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कया बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ ऽव्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । श्रीफलं समर्पयामि ॥ प्रार्थनाः-सुरासुरेन्द्रादिकिरीट मौक्तिकै-

युक्तं सदा यत्तव पादपङ्कजम् ।
 परावरं पातु वरं सुमङ्गलं,
 नमामि भक्त्या खिलकामसिद्धये ॥
 भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।
 सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥
 नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
 या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात् ॥
 कृतेनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम् न मम ॥

❀ ॥ देहली विनायक पूजन ॥ ❀

(स्वस्तिक चिह्न शुभ लाभ आदि का पूजन करें)

ॐ देहलीविनायकाय नमः ॥ संपूज्य ॥

❀❀ ॥ श्रीमहाकाली (दवात) पूजन ॥ ❀❀

ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः ॥ संपूज्य ॥

प्रार्थनाः—कालिके त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्तसे ।
 उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये ॥
 या कालिका रोगहरा सुवन्द्या भक्तैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः ।
 जनैर्जनानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यदास्तु ॥

❀❀ ॥ लेखिनी पूजन ॥ ❀❀

ॐ लेखिनीस्थायै देव्यै नमः ॥ संपूज्य ॥

(मौली बाँधकर गन्धाक्षतपुष्प से पूजन कर दें)

प्रार्थनाः—लेखिनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना ।
 लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम् ॥
 शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नुयाद्यतः ।
 अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव ॥

ॐ सरस्वती (बही खाता) पूजन ॥ ॐ

ध्यानम्:-शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमा माद्यां जगद्व्यापिनीं,
 वीणा पुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यांधकारापहाम् ॥
 हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
 वंदे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥१॥
 या कुन्देन्दु तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
 या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
 या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
 सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाडयापहा ॥२॥
 आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रम्,
 वामेहस्ते च दिव्याम्बर कनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्यम् ॥
 स्वां वीणां वादयंती स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञान शब्दैः,
 क्रीडंती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना ॥३॥
 वाणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां,
 चन्द्रार्धाङ्कित मस्तकां सुतिलकां सम्बिभ्रतीमादरात् ।
 वीणामक्षगुणं सुधाढयकलशं विद्यां च तुङ्गस्तनीं,
 दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं हंसाधिरूढां भजे ॥४॥
 ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै श्री सरस्वत्यै नमः । सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत
 पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ ॥ कुबेरपूजन ॥ ॐ

(तिजोरी में सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर पूजन करें)
 ॐ वयथं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥
 आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु । कोशं वर्द्धय नित्यं
 त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ॥ कुबेर इहागच्छ इहतिष्ठ कुबेराय नमः
 कुबेरमावाहयामि स्थापयामि ॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत पुष्पाणि
 समर्पयामि ॥ (गल्ले में पाँच हल्दी की गांठ, पाँच कमल गट्टे
 सुखे सिगाड़े, साबत धनिया, मूँगसाबत, एक सिक्का इत्यादि
 डाल दें)

प्रार्थना:- धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च । भगवन्
त्वत्प्रसादेन धनधान्यादिसम्पदः ॥ वज्रहस्तः पुरन्दरः धनाध्यक्षश्च
यक्षराट् । मम पूजां प्रगृह्णातु कुबेरो नरवाहनः ॥

❖❖ ॥ तुला तथा मान-पूजन ॥ ❖❖

(तराजू में स्वस्तिक बनाकर व मौली बाँधकर पूजन करें)

ध्यानम्:- नमस्ते सर्वदेवानां शक्तितत्त्वे सत्यमाश्रिता ।

साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥

ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः ॥ सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत पुष्पाणि
समर्पयामि ॥

❖❖ दीपमालिका (दीपक) पूजन ॥ ❖❖

(किसी पात्र में सोलह दीपकों को प्रज्वलित कर पूजन करें)

ॐ दीपावल्यै नमः । सर्वोपचारार्थं गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

प्रार्थना:- त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारकाः ।

सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नमः ॥

☪ ॥ श्री लक्ष्मीजी की आरती ॥ ☪

ॐ जय लक्ष्मी माता (मैयां) जय लक्ष्मी माता ।

तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता ॥ ॐ ॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता ।

सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ ॥

दुर्गरूप निरञ्जनी, सुख-सम्पति दाता ।

जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ ॐ ॥

तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभ दाता ।

कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ॥ ॐ ॥

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।

सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ ॐ ॥

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय राता ।

खान-पान को वैभव सब तुमसे आता ॥ ॐ ॥

शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरनिधि जाता ।

रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता ॥ ॐ ॥

श्री महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई नर गाता ।

उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ ॥

मन्त्र-पुष्पाञ्जलिः-ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वयुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । संबाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ॥

❖❖ ॥ वैदिक शिव पूजनम् ॥ ❖❖

(सर्वप्रथम शिवपूजन तथा रुद्राभिषेक की अधिकारप्राप्ति के लिये प्रायश्चित्तरूप में गोनिष्क्रय या गोतृण दान का सङ्कल्प करें) अधिकारप्राप्त्यर्थ प्रायश्चित्त संकल्पः-विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य. ...गोत्रः.....शर्मा/वर्मा/गुप्तोहं क्रियमाणरुद्राभिषेक कर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थ कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक

चतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्धयर्थं च गोनिष्क्रयद्रव्यं अमुकगोत्राय
अमुकशर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे ॥

निम्न मंत्र से प्रत्यक्ष गौ की भावना कर प्रार्थना करे ॥

गोप्रार्थनाः-गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिहलोके परत्र च ॥

हस्ते साक्षत जलं गृहीत्वा सङ्कल्पं पठेत् ॥ ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः
श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य
श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वत
मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे
कौमारिका क्षेत्रे जम्बूद्वीपे श्रीशालिवाहनशके अस्मिन्वर्तमाने
अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे
अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे
अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु
यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषण विशिष्टायां
शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोहं अमुकशर्मा-गुप्ता-वर्माऽहं
ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं
अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थं
सकलमनईप्सित- कामनासंसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राज्यद्वारे
वा सर्वत्र यशो विजयलाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे
वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य
अखिल कुटुम्ब सहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधि
जरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं मम
जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टमद्वादशस्थान
स्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूच्ययिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं
तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं आदित्यादि
नवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थं इन्द्रदि
दशदिक्पाल प्रसन्नता सिद्ध्यर्थं आधिदैविकाऽऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिक

त्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा सर्वव्याधि
निरासनपूर्वकं सर्वाभीष्टसिद्धयर्थं श्रीनर्मदेश्वर लिङ्गपूजनमहं
करिष्ये ॥ तदंगत्वेन गणपत्यादि अम्बिकानन्दीश्वर
वीरभद्रस्वामिकार्तिककुबेरकीर्तिमुखपूजनञ्च करिष्ये ॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव
सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

ॐ ॥ गणपति-पूजनम् ॥ ॐ

ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे
निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा
त्वमजासिगर्भधम् ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमोनमो व्रातेभ्यो
व्रातपतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो
व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्चवो नमोनमः ॥

ध्यानान्ते अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

ॐ ॥ जगदम्बा-पूजनम् ॥ ॐ

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥ हिमाद्रितनयां
देवीं वरदां भैरव प्रियां । लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥
ध्यानान्ते अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

ॐ ॥ नन्दीश्वर-पूजनम् ॥ ॐ

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्ष
णीनाम् । सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शत थं सेना
ऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः ।
पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ध्यानान्ते अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥
षोडशोपचारैर्नन्दीश्वरं पूजयेत् ॥ ततः प्रार्थना ॥

(पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे)

प्रार्थना:- ॐ प्रैतु व्वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्त्वा । भरत्रग्निं
पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा ॥

◀ ॥ ततो वीरभद्र-पूजनम् ॥ ▶

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्ब्रजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाथं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥
षोडशोपचारैर्वीरभद्रं पूजयेत् ॥ ततः प्रार्थना ॥

(पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे)

प्रार्थना:- ॐ भद्रोनोऽ अग्निराहुतो भद्रारातिः सुभग भद्रो
अध्वरः । भद्रा उतप्रशस्तयः ॥

✽ ॥ ततः स्वामिकार्तिक-पूजनम् ॥ ✽

ध्यानम्:- ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा
पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं
तेऽऽ अर्वन् ॥ षोडशोपचारैः स्वामिकार्तिकं पूजयेत् ॥

ततः प्रार्थना ॥ (पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे)

प्रार्थना:- ॐ अत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
तत्रऽ इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥

✽ ॥ ततः कुबेरपूजनम् ॥ ✽

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यव च्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं व्वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽ उक्तिं यजन्ति ॥
षोडशोपचारैः कुबेरं पूजयेत् ॥ ततः प्रार्थना ॥

(पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे)

प्रार्थना:- ॐ व्वयं ठं सोमव्रते तवमनस्तनूषुभिभ्रतः प्रजावन्तः
सचेमहि ॥ इति कुबेरं प्रार्थयेत् ॥

—❖❖— ॥ ततः कीर्तिमुख पूजनम् ॥ ❖❖—

ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वते स्वाहा
गणशिश्रये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा
शूषाय स्वाहा सथं सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा
मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतये स्वाहा ॥ षोडशोपचारैः कीर्तिमुखं
पूजयेत् ॥ ततः प्रार्थना ॥

(पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे)

ॐ ओजश्चमे सहश्चमऽ आत्माचमे तनूश्चमे शर्मचमे
वर्मचमेङ्गानिचमेस्थीनिचमे परूथं षिचमे शरीराणिचमऽ
आयुश्चमेजराचमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ इति कीर्तिमुखं प्रार्थयेत् ॥

❖ ॥ शिव पूजनम् ॥ ❖

ध्यानम्:— ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,

रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।

पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानम्

विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः नर्मदेश्वराय नमः ॥ ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि
समर्पयामि ॥

आसनः:— ॐ यातेरुद्रशिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तया नस्तन्वाशं

तमयागिरिशन्ताभिचा कशीहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री

नर्मदेश्वराय नमः ॥ पुष्पासनं समर्पयामि ॥

पाद्यम्:— यामिषुङ्गिरिशन्त हस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरि

त्रताङ्कुरुमाहि ठ सीः पुरुषञ्जगत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री

नर्मदेश्वराय नमः । पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्यः:— ॐ शिवेनव्वचसात्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥ यथानः

सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ठ सुमनाऽ असत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते

श्री नर्मदेश्वराय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमनम्:- ॐ अद्भ्यवोचदधिवक्ताप्रथमो दैव्योभिषक् ॥
अहींश्च सव्वज्जम्भयन्त्सव्वश्चवातु धान्योधराचीः परासुव ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । आचमनं
समर्पयामि ॥

स्नानम्:- असौयस्ताम्रोऽरुणऽउतबब्धुः सुमङ्गलः ॥ येचैन ठ
रुद्राऽअभितोदिक्षुश्चिताः सहस्रशो व्वैषाथं हेडऽईमहे ॥
ॐ वरुणस्योत्तं भनमसि व्वरुणस्यस्कं भसर्जनीस्थो व्वरुणस्यऋत
सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋत सदनमासीद ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । स्नानं
समर्पयामि ॥

पयः स्नानम्:- ॐ पयःपृथिव्यां पयओषधीषु पयोदिव्यं
तरिक्षेपयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यम् ॥ काम धेनु समुत्पन्नं
सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । पयः स्नानं
समर्पयामि ॥ पयस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

दधिस्नानम्:- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयू थं षितारिषत् ॥ पयसस्तु समुद्भूतं
मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः दधिस्नानं
समर्पयामि ॥ दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

घृतस्नानम्:- ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसा पावानः
पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश
ऽ उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते

शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

मधुस्नानम्:- ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव थं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँर अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । मधुस्नानं समर्पयामि ॥ मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

शर्करास्नानम्:- ॐ अपाथं रसमुद्वय सथं सूर्यसंत थं समाहितम् ॥ अपा थं रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्रा यत्वाजुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिर्दिद्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । शर्करास्नानं समर्पयामि ॥ शर्करास्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

पञ्चामृतस्नानम्:- ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियंति सस्रोतसः । सरस्वतीतु पंचधासो देशे भवत्सरित् ॥ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥

गन्धोदकस्नानम्:- ॐ अथं शुनाते अथं शुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥ मलयाचल सम्भूतं चन्दनेन विमिश्रितम् । इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाकृतं नु गृह्यताम्

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

उद्धर्तनस्नानम्:- ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ ॐ अथं शुनाते अथं शुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । उद्धर्तनस्नानं समर्पयामि ॥

विजयास्नानम्:- ॐ व्विज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्योबाणवाँ २॥ ५उत ॥ अनेशन्नस्ययाऽ इषवऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । विजयास्नानं समर्पयामि ॥

शुद्धोदकस्नानः:- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि बालस्तऽआश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णयामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः ।
सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

अभिषेकं कुर्यात् ॥ (दूध मिश्रित जल से अभिषेक करे)

रुद्रसूक्तः-हरिः ॐ नमस्ते रुद्रमत्र्यवऽ उतोतऽइषवे नमः ।
बाहुभ्यामुतते नमः ॥१॥ यातेरुद्रशिवा तनूरघोरा^{५१५ का शिवा} । तया नस्तन्वाशं
तमयागिरिशन्ताभिचा कशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्त
हस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहि ठं सीः
पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेनव्वचसात्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥
यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ठं सुमनाऽ असत् ॥४॥ अद्भ्यवो
चदधिवक्ताप्प थमो दै वयो भिषक् ॥ अहींश्च
सर्व्वान्भयन्त्सर्व्वश्चयातु धान्योधराचीः परासुव ॥५॥
असौवस्ताम्रोऽअरुणऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः ॥ षेचैन ठं

रुद्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताः सहस्रशो व्वैषाथं हेडऽईमहे ॥६॥
 असौषोव्वसर्पतिनीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽ
 अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्यः सदृष्टोमृडयातिनः ॥७॥
 नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीदुषे ॥ अथोयेऽ अस्यसत्त्वानो
 हन्तेभ्योकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्कन्योज्ज्वाम् ॥
 याश्चतेहस्तऽइषवः पराता भगवोव्वप ॥९॥ व्विज्ज्यन्धनुः
 कपर्दिनो व्विशाल्योबाणवाँ २॥ ५उत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽ
 आभुरस्यनिषङ्गधिः ॥१०॥ यातेहेतिर्मीदुष्टमहस्ते बभूवतेधनुः ॥
 तयास्मान्निश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥११॥ परितेधन्वने
 हेतिरस्मान्ब्रूणक्तुव्विश्वतः ॥ अथोयऽइषुधिस्तवारऽ
 अस्मन्निधेहितम् ॥१२॥ अवतत्यधनुष्टु सहस्राक्षशतेषुधे ॥
 निशीर्यशल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव ॥१३॥ नमस्तऽ
 आयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभाब्भ्यामुततेनमो
 बाहुभ्यान्तवधन्वने ॥१४॥ मानोमहान्तमुतमानोऽ अबर्भकम्मानऽ
 उक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम् ॥ मानोव्वधीः पितरम्मतमातरम्मानः
 प्प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥१५॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽ
 आयुषिमानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः । मानोव्वीरान्नुद्रभामिनो
 व्वधीर्हीविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥१६॥ अभिषेकं समर्पयामि ॥
 शुद्धोदकस्नानः- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिबालस्तऽ
 आश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतयेकर्णवामाऽ
 अवलिप्ता रौद्रानभोरूपाःपार्जन्याः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते
 श्री नर्मदेश्वराय नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥
 शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥
 वस्त्रम्- ॐ असौषोव्वसर्पतिनीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽ
 अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्यः सदृष्टोमृडयातिनः ॥ ॐ युवा सुवासाः
 परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय

उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । वस्त्रं समर्पयामि ॥

यज्ञोपवीतम्:- नमोस्तुनीलग्नीवायसहस्राक्षायमीदृषे ॥ अथोषेऽ अस्यसत्त्वानो हन्तेभ्योकरन्नमः ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽ आवः । सबुध्या ऽ उपमाऽ अस्यविष्टाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि ॥

उपवस्त्रम्:- ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म व्वरूथमासदत्स्वः । वासो अग्रे विश्वरूपथं संव्ययस्व विभावसो ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । उपवस्त्रं समर्पयामि ॥

चन्दनम्:- ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयो रात्क्न्योर्ज्ज्वाम् ॥ याश्चतेहस्तऽइषवः पराता भगवोव्वप ॥ ॐ त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँस्स्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । चन्दनं समर्पयामि ॥

रक्त चन्दनम्:- नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु । ईशे रिपुरघशर्ठ सः ॥

रक्त चन्दन सम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम् । मया दत्तं महादेव चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । रक्तचन्दनं समर्पयामि ॥

भस्म:- ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्रे । सथं सृज्यमातृभिष्टं ज्योतिष्मान् पुनराऽ सदः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । भस्म समर्पयामि ॥

अक्षतान्:- ॐ अक्षत्रमीमदन्तह्य व प्रियाऽ अंधूषत । अस्तोषतस्व भानवो विप्रान विष्टया मती योजान्निवन्द्रते हरिः ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कंकुमुक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या

गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । अक्षतान् समर्पयामि ॥

पुष्पमालाः-ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्व्वाऽइवसजित्वरी वीरूधः पारयिष्णवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । पुष्पमालां समर्पयामि ॥

बिल्वपत्रः-ॐ नमो बिल्मिने चकवचिने च नमो वर्मिणे चव्वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥१॥ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् । त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥ त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः । शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥ अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे । शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥ शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत् । सोमयज्ञमहापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५॥ दन्तीकोटि सहस्राणि वाजपेयशतानि च । कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६॥ लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम् । बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७॥ दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम् । अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८॥ मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे । अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९॥ बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ । सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात् ॥१०॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । बिल्वपत्राणि समर्पयामि ॥

तुलसीमञ्जरीः-ॐ शिवो भवप्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः ॥ माद्यावा पृथिवी अभिशोचीर्मन्तरिक्षम्मा वनस्पतीन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । तुलसीमञ्जरीं समर्पयामि ॥

धत्तूरपुष्पं-ॐ कार्ष्णिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि । समापो अद्भिरगमत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । धत्तूरपुष्पं समर्पयामि ॥

दूर्वाङ्कुरान्:-ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥
एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते
श्री नर्मदेश्वराय नमः । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ॥

सुगन्धितद्रव्यम्:-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि ॥

एकादश-रुद्रपूजनम्:-(एकादश रुद्रों तथा एकादशशक्तियों
के नाममंत्रो से भगवान् श्रीसाम्बसदाशिव पर गन्धाक्षतपुष्प
तथा बिल्वपत्र चढ़ाये)

ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥ ॐ शर्वाय नमः ॥३॥
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥४॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः ॥५॥
ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥७॥ ॐ भैरवाय
नमः ॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥
ॐ महेश्वराय नमः ॥११॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि
समर्पयामि ॥

एकादश-शक्तिपूजनम्:-ॐ उमायै नमः ॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै
नमः ॥२॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥३॥ ॐ गौर्यै नमः ॥४॥ ॐ काल्यै
नमः ॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥६॥ ॐ कोट्यै नमः ॥७॥
ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॥८॥ ॐ ह्यं नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं नमः ॥१०॥
ॐ गङ्गादेव्यै नमः ॥११॥ सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि
समर्पयामि ॥

अङ्ग-पूजनम्:-ॐ भवाय नमः पादौ पूजयामि ॥ ॐ जगत्पित्रे
नमः जंघे पूजयामि ॥ ॐ मृडाय नमः जानुनी पूजयामि ॥ ॐ
रुद्राय नमः ऊरू पूजयामि ॥ ॐ कालान्तकाय नमः कटिं
पूजयामि ॥ ॐ नागेन्द्राभरणाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ॐ स्तव्याय
नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ॐ भवनाशनाय नमः भुजान् पूजयामि ॥

ॐ कालकंठाय नमः कंठं पूजयामि ॥ ॐ महेशाय नमः मुखं
पूजयामि ॥ ॐ लास्यप्रियाय नमः ललाटं पूजयामि ॥ ॐ शिवाय
नमः शिरः पूजयामि ॥ ॐ प्रणतार्तिहराय नमः सर्वाण्यङ्गानि
पूजयामि ॥

(गन्धाक्षत पुष्प चढाये)

गण-पूजा:- ॐ गणपतये नमः ॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥
ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ ॐ भैरवाय नमः ॥
ॐ शूलपाणये नमः ॥ ॐ ईश्वराय नमः ॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥
ॐ नन्दिने नमः ॥ ॐ महाकालाय नमः ॥

(भगवान् को आठ पुष्प अर्पण करे)

अष्ट-पुष्प:- ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः । ॐ भवाय जल मूर्तये
नमः । ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः । ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ।
ॐ भीमाय आकाश मूर्तये नमः । ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये
नमः । ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः । ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये
नमः ॥

नाना परिमलद्रव्य:- ॐ अहिरिवभोगैः पर्येतिवाहुंज्याया हेतिम्परि
बाधमानाः । हस्तगघ्नो विश्वाव्ययनुनानि विद्वान्पुमान्पुमाथं
सम्परिपातु विश्वतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय
नमः । नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि ॥

धूप:- ॐ आते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूवते धनुः ॥ तयास्मा
न्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ ॐ धूरसि धूर्वधूर्वन्तं धूर्वतं
योस्मान्धूर्वतितं धूर्व यं व्यन्धूर्वामिः । देवानामसि व्वन्हितमथं
स्नितमम्पिप्रतमञ्जुष्ट तमन्देवहूतमम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते
श्री नर्मदेश्वराय नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

दीप:- ॐ परिते धन्वनो हेतिरस्मन्वृणक्तु विश्वतः ॥
अथोषऽइषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहितम् ॥ साज्यं चवर्ति संयुक्तं
वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । दीपं दर्शयामि
॥ हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

नैवेद्यम्:- ॐ अवतत्यधनुद्धर्त सहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्यशल्या
नाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य
शुष्मिणः । प्रप्र दातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥
शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च । आहारं भक्ष्यभोज्यं
च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा,
ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । नैवेद्यं निवेदयामि
मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि,
उत्तरापोषणार्थं हस्त प्रक्षालनं, मुखप्रक्षालनं आचमनीयं जलं
समर्पयामि ॥

करोद्धर्तनम्:- ॐ सिञ्चति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च ।
सुरायै बभ्रुवैमदे किन्त्वो वदति किन्त्वः ॥ ॐ अथं शुनाते
अथं शुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो
अच्युतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः ।
करोद्धर्तनार्थं चन्दनानुलेपनं समर्पयामि ॥

ऋतुफलम्:- ॐ याः फलिनीर्या ऽअफलाऽ अपुष्पावाश्व
पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वहं हसः ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । ऋतुफलानि निवेदयामि ॥
आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

ताम्बूलम्:- ॐ नमस्तऽ आयुधायानाततायधृष्णवे ॥
उभाब्ध्यामुततेनमो बाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ पूगीफलं महद्दिव्यम्
नागवल्ली दलैर्युतम् । एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । मुखवासार्थम्
एलालवंगपूगीफल सहितं ताम्बूलं बीटिकां(बीड़ा) समर्पय ॥

द्रव्य दक्षिणाम्:-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ॐ षट्त्वं व्यत्परादानं व्यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः तदग्निर्वैश्व कर्मणः स्वर्देवेषुनो दधत् ॥ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्त पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥

श्रीफलम्:-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्या बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ ऽव्याप्तम् । इष्णान्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । श्रीफलं समर्पयामि ॥

मंत्र-पुष्पाञ्जलिः-ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽ आयुषिमानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः । मानोव्वीरान्द्रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं । शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम् ॥ नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं साङ्कुशं वामभागे । नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री नर्मदेश्वराय नमः । मंत्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

प्रार्थनाः-नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥ निराकारमोकारमूलं तुरीयं । गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥ करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥ तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥ स्फुरन्मौखि कल्लोलिनी चारुगंगा । लसद्बालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ॥
 मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
 प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
 त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
 कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सच्चिदानन्ददाता
 पुरारी ॥

चिदानन्द संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
 न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
 न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं ॥
 न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
 जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥
 श्लोकः—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ॥

(भगवान् शिवपर १०८ नामों से बिल्वपत्र चढ़ाये या
 गंधाक्षतपुष्पआदि से पूजन करें) ॥ अष्टोत्तरशत विल्वपत्र ॥

ॐ शिवाय नमः ॥१॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥२॥ ॐ शम्भवे
 नमः ॥३॥ ॐ पिनाकिने नमः ॥४॥ ॐ शशिशेखराय नमः
 ॥५॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥६॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥७॥
 ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥ ॐ नीललोहिताय नमः ॥९॥ ॐ शङ्कराय
 नमः ॥१०॥ ॐ शूलपाणिने नमः ॥११॥ ॐ खट्वाङ्गिने नमः
 ॥१२॥ ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ॥१३॥ ॐ शिपिविष्टाय नमः
 ॥१४॥ ॐ अम्बिकानाथाय नमः ॥१५॥ ॐ श्री कण्ठाय नमः
 ॥१६॥ ॐ भक्तवत्सलाय नमः ॥१७॥ ॐ भवाय नमः ॥१८॥
 ॐ शर्वाय नमः ॥१९॥ ॐ त्रिलोकेशाय नमः ॥२०॥
 ॐ शितिकण्ठाय नमः ॥२१॥ ॐ शिवाप्रियाय नमः ॥२२॥

ॐ उग्राय नमः ॥२३॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥२४॥ ॐ कामारये नमः
 ॥२५॥ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ॥२६॥ ॐ गङ्गाधराय नमः
 ॥२७॥ ॐ ललाटाक्षाय नमः ॥२८॥ ॐ कालकालाय नमः ॥२९॥
 ॐ कृपानिधये नमः ॥३०॥ ॐ भीमाय नमः ॥३१॥ ॐ परशुहस्ताय
 नमः ॥३२॥ ॐ मृगपाणये नमः ॥३३॥ ॐ जटाधराय नमः ॥३४॥
 ॐ कैलासवासिने नमः ॥३५॥ ॐ कवचिने नमः ॥३६॥
 ॐ कठोराय नमः ॥३७॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ॥३८॥
 ॐ वृषाङ्गाय नमः ॥३९॥ ॐ वृषभारूढाय नमः ॥४०॥
 ॐ भस्मोद्भूलितविग्रहाय नमः ॥४१॥ ॐ सोमप्रियाय नमः ॥४२॥
 ॐ स्वरमयाय नमः ॥४३॥ ॐ त्रयीमूर्तये नमः ॥४४॥
 ॐ अनीश्वराय नमः ॥४५॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥४६॥ ॐ परमात्मने
 नमः ॥४७॥ ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः ॥४८॥ ॐ हविषे नमः
 ॥४९॥ ॐ यज्ञमयाय नमः ॥५०॥ ॐ सोमाय नमः
 ॥५१॥ ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ॥५२॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥५३॥
 ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥५४॥ ॐ वीरभद्राय नमः ॥५५॥
 ॐ गणनाथाय नमः ॥५६॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥५७॥
 ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॥५८॥ ॐ दुर्धर्षाय नमः ॥५९॥ ॐ गिरीशाय
 नमः ॥६०॥ ॐ गिरिजापतये नमः ॥६१॥ ॐ अनघाय नमः ॥६२॥
 ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ॥६३॥ ॐ भर्गाय नमः ॥६४॥
 ॐ गिरिधन्विने नमः ॥६५॥ ॐ गिरिप्रियाय नमः ॥६६॥
 ॐ कृत्तिवाससे नमः ॥६७॥ ॐ पुरारातये नमः ॥६८॥ ॐ भगवते
 नमः ॥६९॥ ॐ प्रमथाधिपाय नमः ॥७०॥ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
 ॥७१॥ ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ॥७२॥ ॐ जगद्व्यापिने नमः ॥७३॥
 ॐ जगद्गुरवे नमः ॥७४॥ ॐ व्योमकेशाय नमः ॥७५॥
 ॐ महासेनजनकाय नमः ॥७६॥ ॐ चारुविक्रमाय नमः ॥७७॥
 ॐ रुद्राय नमः ॥७८॥ ॐ भूतपतये नमः ॥७९॥ ॐ स्थाणवे नमः
 ॥८०॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥८१॥ ॐ दिगम्बराय नमः ॥८२॥

ॐ अष्टमूर्तये नमः ॥८३॥ ॐ अनेकात्मने नमः ॥८४॥
 ॐ सात्त्विकाय नमः ॥८५॥ ॐ शुद्धविग्रहाय नमः ॥८६॥
 ॐ शाश्वताय नमः ॥८७॥ ॐ खण्डपरशवे नमः ॥८८॥
 ॐ अजाय नमः ॥८९॥ पाशविमोचकाय नमः ॥९०॥ ॐ मृडाय
 नमः ॥९१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥९२॥ ॐ देवाय नमः ॥९३॥
 ॐ महादेवाय नमः ॥९४॥ ॐ अव्ययाय नमः ॥९५॥ ॐ हरये
 नमः ॥९६॥ ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः ॥९७॥ ॐ अव्यग्राय नमः
 ॥९८॥ ॐ दक्षाध्वरहराय नमः ॥९९॥ ॐ हराय नमः ॥१००॥
 ॐ भगनेत्रभिदे नमः ॥१०१॥ ॐ अव्यक्ताय नमः ॥१०२॥
 ॐ सहस्राक्षाय नमः ॥१०३॥ ॐ सहस्रपदे नमः ॥१०४॥
 ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ॥१०५॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥१०६॥
 ॐ तारकाय नमः ॥१०७॥ ॐ परमेश्वराय नमः ॥१०८॥
 अनेन अष्टोत्तरशत-बिल्वदल-समर्पणेन कर्मणा श्री नर्मदेश्वरः
 प्रीयतां न मम ॥

ॐ ॥ शिवमानस पूजा ॥ ॐ

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं,
 नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
 जातीचम्पकबिल्वपत्रसहितं पुष्प च धूपं तथा,
 दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥
 सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं,
 भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
 शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं,
 ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥
 छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं,
 वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
 साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया,
 सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
 पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
 सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
 यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥
 करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा । श्रवणनयनजं वा
 मानसं वापराधम् ॥
 विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व । जय जय करुणाब्धे
 श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥
 वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं । वन्दे पन्नगभूषणं
 मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम् । वन्दे सूर्यशशांकवहिनयनं वन्दे
 मुकुन्दप्रियम् । वन्दे भक्तजनाश्रयञ्च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्
 ॥६॥ सौराष्ट्रे सोमनाथञ्च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् । उज्जयिन्यां
 महाकालमोङ्कारं ममलेश्वरम् ॥ केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां
 भीमशंकरम् । वाराणस्याञ्च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ॥
 वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुका वने । सेतुबन्धे च रामेशं
 घुश्मेशञ्च शिवालये ॥ द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः
 पठेत् । सर्वं पाप विनिर्मुक्तः सर्वं सिद्धिफलं लभेत् ॥७॥

❀॥ अथ जन्मोत्सव पूजन विधिः ॥❀

प्राङ्मुखो यजमानः-स्वासने उपविश्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥
 स्वस्त्ययनम् पठेत् ॥

साक्षतं जलं गृहीत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्:- श्रीविष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो
 महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपराद्धे
 तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वतरे अष्टाविंशतिमे
 कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत
 ब्रह्मावर्तैकदेशे गङ्गायामुनयोः पश्चिमे तटे नर्मदाया उत्तरेतटे
 अमुकनाम्निक्षेत्रे बौद्धावतारे अमुक विक्रम (अमुक) नाम्निसंवत्सरे
 अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ

अमुकवासरे यथावर्तमान नक्षत्रयोगकरण लग्नमुहूर्त समन्विते एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माहं मदीय जन्मोत्सव तिथौ आयुर्वृद्धिः कामार्थ लाभक्षेम विजयारोग्य सम्पत्तिप्राप्त्यर्थं श्रीकुलदेवता प्रीत्यर्थं प्रतिवार्षिक विहितं कुलदेवता पूजनं करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनपूर्वकं गौर्यादि षोडशमातृणां सूर्यादि नवग्रहाणां मार्कण्डेयाद्यष्ट चिरञ्जीवीनां पूजनं करिष्ये ॥ ततः कुङ्कुमादीनां गणपत्यादीनां स्थापनम् ॥

ॐ ॥ गणपति-पूजनम् ॥ ॐ

ॐ गणानां त्वा गणपति ठं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमोनमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमोनमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमोनमः ॥

ध्यानान्ते अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

ॐ ॥ अथ षोडशमातृका पूजनम् ॥ ॐ

ॐ समख्ये देव्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा । मा मऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि ॥

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः तुष्टि तथा पुष्टिरात्मनः कुल देवता । गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः ॥ षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

॥ अथ नवग्रहपूजनम् ॥

ॐग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशिप्रियाणां
वोऽहमिषमूर्जर्ठं समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष
ते षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

ॐब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥
षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥

ॐ अथ मार्कण्डेयादीन् पूजयेत् ॥

वामहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन नाम मन्त्रैरावाहयेत् ॥

१-ॐमार्कण्डेयाय नमः मार्कण्डेयमावाहयामि ॥ २-अश्वत्थाम्ने
नमः अश्वत्थानमावाहयामि ॥ ३-बलये नमः बलिमावाहयामि ॥
४-व्यासाय नमः व्यासमावाहयामि ॥ ५-हनुमते नमः
हनुमन्तमावाहयामि ॥ ६-विभीषणाय नमः विभीषणमावाहय ॥
७-कृपाचार्याय नमः कृपाचार्यमावाहयामि ॥ ८-परशुरामाय नमः
परशुराममावाहयामि ॥

मार्कण्डेयाद्यष्ट चिरञ्जीवीभ्यो नमः ॥ आसनादि षोडशोपचारैः
पूजयेत् ॥

प्रार्थयेत्:-

१-मार्कण्डेय प्रार्थना:-मार्कण्डेय महाबाहो सप्तकल्पांत जीविनम् ।
चिरञ्जीवी तथा त्वंहि मुनीनां प्रवर प्रभो ॥ नववर्षायुषानित्यं तपसा
महता पुरा । स्व स्व कल्पांत कृत्वायु प्रसृतं मुनिनां त्वया ॥

२-अश्वत्थामा प्रार्थना:-द्रोणपुत्र महाबाहो चन्द्रतेज समुद्भव
। भवायुर्वरदो मे त्वं अश्वत्थाम्ने नमो नमः ॥

३-बलि प्रार्थना:-दैत्येन्द्रकुल सम्भूत बहुदाता हरेः पुरा । भविष्येन्द्र
बले राजन् दीर्घमायु प्रयच्छ मे ॥

- ४-व्यास प्रार्थनाः- भविष्य सांप्रतं चैव त्वमतिज्ञानवान् मुने ।
नारायण समुद्धृतं त्वं व्यासायुः प्रदोभव ॥
- ५-हनुमत् प्रार्थनाः- अञ्जनी गर्भ संभूतं कपीन्द्र सचिवोत्तमः
। रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष मां सदा ॥
- ६-विभीषण प्रार्थनाः- विभीषण नमस्तुभ्यं समरे राम पूजकः ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि पौलस्य नन्दन ॥
- ७-कृपाचार्य प्रार्थनाः- कृपयापरया त्वं मे कुरु मां चिरजीविनम् ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं धनधान्यं प्रयच्छ मे ॥
- ८-परशुराम प्रार्थनाः- रेणुकेय महावीर्य क्षत्रियान्वंशभ्रंशज ।
आयु प्रयच्छ मे देव जामदग्निर्मोस्तुते ॥
- ९-प्रह्लाद प्रार्थनाः- दानवेन्द्र महाबाहो विष्णुभक्त जितेन्द्रियः ।
शरणं त्वां प्रपन्नोस्मि दीर्घमायु प्रयच्छमे ॥
- प्रार्थनाः- अश्वत्थामा बलिव्यासो हनूमांश्च विभीषणः । कृपः
परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥१॥ सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं
मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवेद्वर्षशतं साग्रमल्पायुनाशयेद्बुधम् ॥२॥
मार्कण्डेयाद्यष्ट चिरञ्जीवीभ्यो नमः ॥
- अथ षष्ठीपूजनम् :- षष्ठीदेव्यै नमः आवाहनादि षोडशोपचारैः
पूजयेत् ॥
- प्रार्थनाः- या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेश्वलक्ष्मीः पापात्मनां
कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः । श्रद्धासतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नतास्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ षष्ठी देव्यै नमः ॥
प्रार्थनां समर्पयेत् ॥
- कुलदेवीपूजनम्:- ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहाति
वेदः । सनः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेवसिंधुंदुरिता त्यग्निः ॥
कुलदेवी इहागच्छेहतिष्ठ अमुक कुलदेव्यै नमः । अमुक
कुलदेवीमाहयामि स्थापयामि ॥

प्रतिष्ठाः-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
अज्ञथसमिमं दधातु । विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ ॥
कुलदेवी सुप्रतिष्ठा वरदा भवतु ॥

अमुक कुलदेव्यै नमः आसनार्थं अक्षतान् समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै
नमः पाद्यं समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै
नमः आचमनं समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः स्नानं समर्पयामि
॥ कुलदेव्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः गंधं समर्पयामि
॥ कुलदेव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः पुष्पाणि
समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः धूपं समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः
दीपं समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि ॥ कुलदेव्यै
नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥ कुलदेव्यै नमः फलं समर्पयामि
॥ कुलदेव्यै नमः ताम्बूल सहितं दक्षिणां समर्पयामि ॥

ततः नारिकेरं गृहीत्वा अर्घ्यं दद्यात् ॥

तत्र मन्त्रः-रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहिमे । पुत्रान्
देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहिमे ॥१॥ फलेन फलितं सर्व
त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात्फल प्रदानेन सफलासन्तु मनोरथाः
॥२॥ कुलदेव्यै नमः नारिकेलमयफलार्घ्यं समर्पयामि ॥
नमस्करोमि ॥ ततो नीराञ्जनम् कुर्यात् ॥

तत्र मन्त्रः-ॐ अग्निर्ज्योतिरग्नि स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः
स्वाहा ॥ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः
स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा । चन्द्रादित्यो च धरणि
विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्वज्योतीषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
श्री कुलदेव्यै नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । आर्तिक्यं समर्पयामि ।
ॐ जातवेदसे सुनवा मसोममराती यतो निदहाति वेदः । सनः
पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा नावेवसिंधुदुरिता त्यग्निः ॥ कुलदेव्यै नमः ।
सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥
ततस्तिलगुडयुत दुग्धं प्रसादेन पिबेत् ॥

(तिल गुड दुग्ध भोग लगाकर तीन बार पीकर, आचमन करे)
 तत्र मन्त्रः—अञ्जल्यर्द्धमिदं क्षीरं सतिलं गुड मिश्रितम् ।
 मार्कंडेयाद्वरं लब्धा पिबामि वंश (आयु) वर्द्धये ॥ ततः द्विराचमनम् ॥
 कुलदेव्या पूजनकृतस्य कर्मणोविधेर्यन्यूनमऽधिकं वा तत्सर्वं
 भवतां ब्राह्मणानां प्रसादात् श्रीगणेशाम्बिकयोः प्रसादात्सर्वं विधेः
 परिपूर्णमस्तु, अस्तुपरिपूर्णम् ॥

हस्ते जलमादायः—कृतस्य कुलदेव्याः पूजनकर्मणः साङ्गता
 सिद्ध्यर्थं यथोपपत्रेनात्रेण तृप्तिपर्यंतं ब्राह्मणान् सौवासिनींश्च
 भोजयिष्ये ॥

कृतस्य कुलदेव्या पूजनकर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं आचार्यदक्षिणां
 दातुमहमुत्सृजे ॥

ततः शान्तिरस्तु इत्यादि अभिषेकं कुर्यात् ॥ स्वस्तिनइन्द्रेति
 यजमानस्य तिलकं कुर्यात् ॥ ॐ श्रीर्वचस्वेति अक्षतान् दद्यात् ॥
 ॐ श्रीर्वचस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं विधीयते ॥ धान्यं
 धनं पशुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ मंत्रार्थाः सफलाः
 सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु
 मित्राणामुदयस्तव ॥१॥ अक्षतान् विप्रहस्तेषु नित्यं विन्दन्ति ये
 नराः । तेषां चत्वारि वर्द्धन्ते आयुः कीर्तियशोबलम् ॥२॥ दीर्घायु
 धनवान् पुत्रवान् लक्ष्मीवान् भव ॥ यस्यस्मृत्येति विष्णुः स्मरणम् ॥
 यस्यमृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां
 यातु सद्योवन्देतमच्युतम् ॥

अभिवादनः— वृद्धान् गुरून् चाभिवादयामि ।

यथाशक्त्या ब्राह्मण भोजन संकल्पः ॥ वंशपात्राणां सप्तधान्य
 प्रपूरितानां सहकाञ्चनानां दानं कांस्यपात्रे हिरण्याज्ययुते स्वमुखं
 विलोकयेत् । पात्रं विप्राय दद्यात् ॥

शिव रहस्ये जन्मदिन निर्णयः—खंडनं नखकेशानां मैथुनाध्वागमौ
 तथा । आमिषं कलहं हिंसां वर्षं वृद्धौ विवर्जयेत् ॥ जन्मनक्षत्र

संक्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा । अस्पर्शास्पर्शने चैव न स्नानमुष्ण
वारिणा ॥१॥ कृतांत कुजयोवरि यस्य जन्मतिथिर्भवेत् । अनृक्ष
योग संप्राप्तौ विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥२॥ तस्य सर्वोषधीस्नानं ।
गुरुदेवाग्निपूजनम् कार्यं सर्वारिष्ट प्रशांतये । दीपिकायां ॥३॥
जन्मर्क्षयुक्ता यदि जन्ममासे यस्य श्रुवं जन्मतिथि भवेत् । भवंति
तद्वत्परमे वपानै रुज्य प्रयुक्तानि सुखानि तस्य ॥४॥ इयं तिथ्युदयन्ती
ग्राह्या । युगाद्या वर्षवृद्धिश्च पुण्ययोगस्तथा परे । रवेरुदयनीं
तेन नक्षत्र तिथि युग्मता । इतिमन्त्रं मुहूर्त व्यापिते पराग्राह्या
अन्यथा पूर्वग्राह्या । इति जन्मदिन कृत्य । अत्र केचिदूर्वा सर्षपाक्षतं
हरिद्रागोरोचनादियुतां रक्षापोटके हस्ते बध्नन्ति अन्य ।

अर्थः—केश और नाखून काटना, स्त्रीसंगम, मार्गचलना, मांसभोजन, कलह, हिंसा वर्ष वृद्धि पर न करे ॥१॥ जन्म नक्षत्र, संक्रान्ति, श्राद्ध, और जन्म दिन अस्पृश्य को छूने पर गर्म जल से स्नान न करे ॥२॥ शनिवार और मंगलवार के दिन अशुभ नक्षत्र एवं अशुभयोग होने पर कदम कदम पर विघ्न आते हैं । अतः सर्वोषधि स्नान गुरु, देव, अग्नि पूजन अरिष्ट शान्ति के लिये करे ॥३॥ यदि जन्म दिन जन्मनक्षत्र युत जन्म तिथि हो जन्ममास हो तो सारे सुख रोगयुक्त माने जाते हैं ॥४॥ तिथि नक्षत्र के योग से उदियात तिथि ली जाये ॥ दूर्वा सरसों अक्षत हरिद्रा गोरोचन से युक्त रक्षा पोटली हाथ पर बाँधे)

॥ इति श्रीजन्मोत्सव पूजनविधिः ॥

* ॥ दुर्गा पूजनम् ॥ *

संकल्पः—अद्येत्यादि० मम अमुक कामना फलप्राप्त्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती नवदुर्गा प्रीत्यर्थं यथाशक्त्या यथोपहारेण श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती नवदुर्गा पूजनाद्यर्चनमहं करिष्ये । इति संकल्पः ।

➔ प्रधान पीठ पूजा ➔

प्रधान मण्डलोपरि संपूजयेत्:- अक्षतान् गृहीत्वा-

ॐ पं पूर्वपीठाय नमः । ॐ पं पूर्णपीठाय नमः । ॐ कं कामपीठाय नमः ॥

प्राच्याः:- ॐ उं उड्यानपीठाय नमः । आग्नेयाः:- ॐ मां मातृपीठाय नमः । दक्षिणे:- ॐ जं जालंधरपीठाय नमः । नैऋत्ये:- ॐ कं कोल्हापुरोपपीठाय नमः । पश्चिमे:- ॐ पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः । वायव्याः:- ॐ सौं सौहारोपपीठाय नमः । उत्तरे:- ॐ कं कोल्हा-गिरिपीठाय नमः । ऐशान्याः:- ॐ कं कामरूपीठाय नमः । सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

नमस्कारः:- दक्षिणे- ॐ गुरवे नमः । ॐ परमगुरवे नमः । ॐ परात्परगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । ॐ गुरुपंक्तये नमः । ॐ मातापितृभ्यां । उपमन्यु, नारद, सनक, व्यासादिभ्यो नमः ॥ वामे:- ॐ गं गणपतये नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः । ॐ सं सरस्वत्यै नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥

✦✦ पीठ देवता स्थापना:- ✦✦

ॐ मं मण्डूकाय नमः । ॐ आं आधारशक्यै नमः । ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः । ॐ कं कालाग्रिरुद्राय नमः ॥

तदुपरि:- ॐ आं आदिकूर्माय नमः । ॐ अं अनन्ताय नमः । ॐ आं आदिवराहाय नमः । ॐ पं पृथिव्यै नमः ॥

तदुपरि:- ॐ अं अमृतार्णवाय नमः । ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः । ॐ हं हेमगिरये नमः । ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ मं मणिभूतलाय नमः । ॐ दं दिव्यमण्डपाय नमः । ॐ सं स्वर्णवेदिकायै नमः । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः । ॐ धं धर्माय नमः । ॐ ज्ञं ज्ञानाय नमः । ॐ वैं वैराग्याय नमः । ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ।

पुनः पूर्वे:- ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ।

पुनर्मध्येः-ॐ सं सत्त्वाय नमः । ॐ प्रं प्रबोधात्मने नमः ।
 ॐ रं रजसे नमः । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः । ॐ तं तमसे
 नमः । ॐ मं मोहात्मने नमः । ॐ सों सोममंडलाय नमः ।
 ॐ सूं सूर्यमण्डलाय नमः । ॐ वं वह्निमण्डलाय नमः । ॐ
 मां मायातत्त्वाय नमः । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः । ॐ शं
 शिवतवाय नमः । ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः । ॐ मं महेश्वराय नमः
 । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः । ॐ पं
 परमात्मने नमः । ॐ जं जीवात्मने नमः । ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने
 नमः । ॐ कं कन्दाय नमः । ॐ नं नीलाय नमः । ॐ पं
 पद्माय नमः । ॐ महापद्माय नमः । ॐ रं रत्नेभ्यो नमः । ॐ
 कें केसरेभ्यो नमः । ॐ कं कर्णिकायै नमः ॥

सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

❖❖ ॥ प्रधान कलश स्थापनम् ॥ ❖❖

अथकलश स्थापन मंत्रः-ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया
 विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवीयच्छ पृथिवीन्द्र ठं ह
 पृथिवीम्माहिर्ठ सीः ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ ॐ धान्यमसि धिनुहि
 देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामिनु प्रसितिमायुषे
 धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना
 चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥ इति यवान्निक्षिप्य ॥ ॐ आजिघ्र
 कलशं मह्या त्वा व्विशंत्विन्दवः । पुनरुज्जा निवर्त्तस्व सा नः
 सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माऽऽविशताद्रयिः ॥ इति कुम्भ
 स्थापयेत् ॥ ॐ वरुणस्योत्तं भनमसि व्वरुणस्यस्कं भसर्जनीस्थो
 व्वरुणस्यऋतं सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋत
 सदनमासीद ॥ इति जलं प्रपूर्य ॥ ॐ त्वां गन्धर्वाऽऽ अखनँस्त्वा
 मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा
 दमुच्यत ॥ इति गन्धम् ॥ ॐ याऽऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं
 पुरा । मनै नु बभ्रूणामह थं शतं धामानि सप्त च ॥ इति सर्वोषधी

प्रक्षेपः ॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥
 एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥ इति दूर्वाः ॥ ॐ अश्वत्थे
 वो निषदनं पर्णे वो व्वसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किला
 सथयत्सनवथ पुरुषम् ॥ इति पंचपल्लवान् ॥ स्योना पृथिविनो
 भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छ नः शर्म सप्रथाः ॥ इति मृत्तिकाप्रक्षेपः
 ॥ ॐ षाः फलिनीर्षा ऽअफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
 बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वक्रय हसः ॥ इति पूगीफलम् प्रक्षेपः
 ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्
 । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
 इति हिरण्यम् ॥ ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्यक्रमीत् ।
 दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति पंचरत्नानि प्रक्षेपः ॥ ॐ सुजातो
 ज्योतिषा सहशर्म व्वरूथमासदत्स्वः । वासो अग्रे विश्वरूपथं
 संव्ययस्व विभावसो ॥ इति मंत्रेण सूत्रवेष्टनम् ॥ ॐ पूर्णा
 दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत ॥ व्वस्नेवव्विक्रीणा वहाऽइषमूर्ज
 र्ठ शतक्रतो ॥ इति तण्डुल पूर्णपात्रम् निधाय ॥
 ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्ब्रह्ममिन्तनोत्वरिष्टं ब्रह्म
 र्ठं समिमन्दधातु । विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ॐ ॥ म्प्रतिष्ठ
 ॥ इति मंत्रेण प्रतिष्ठा कार्या ॥

◆◆ ॥ यंत्रस्थदेवता पूजनम् ॥ ◆◆

पूर्णपात्रोपरि यंत्रं स्थापयेत् (यंत्राभावे रक्तवस्त्रोपरि यंत्रं विलिख्य)
 बिन्दुमध्येः—ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री महाकाली
 महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै भगवत्यै
 दुर्गादेवतायै नमः । आवाहयामि स्थापयामि ॥

बिंदोः परितः—ॐ गुरवे नमः । ॐ परमगुरवे नमः ।

ॐ परात्परगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः ।

ॐ तत्रैवः—ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे नमः । ॐ क्लीं

शिखायै नमः । ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः । ॐ विच्चे
 नेत्रत्रयाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः ।
 त्रिकोण स्वाग्रादिप्रादक्षिण्ये क्रमेणः- ॐ स्वरया सह विधात्रे
 नमः । ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः । ॐ उमया सह शिवाय
 नमः । दक्षिणेः- ॐ क्षुं सिंहाय नमः । वामेः- ॐ हुं महिषाय नमः ।
 षट्कोणेः- (अग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षुच) ॐ ऐं नन्दजायै नमः ।
 ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः । ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः । ॐ
 दुं दुर्गायै नमः । ॐ हुं भीमायै नमः । ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः ।
 अष्टदलेः- (स्वाग्रादि प्रादक्षिण्ये क्रमेण)ः- ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमः ।
 ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः । ॐ क्लीं कौमार्यै नमः । ॐ ह्रीं वैष्णव्यै
 नमः । ॐ हुं वाराह्यै नमः । ॐ क्ष्यौं नारसिंह्यै नमः । ॐ लं
 ऐन्द्र्यै नमः । ॐ स्फ्रं चामुण्डायै नमः ।

मध्येचतुर्विंशतिदलेः- ॐ विं विष्णुमायायै नमः । ॐ चे चेतनायै
 नमः । ॐ बुं बुद्ध्यै नमः । ॐ निं निद्रायै नमः । ॐ क्षुं क्षुधायै
 नमः । ॐ छां छायायै नमः । ॐ शं शक्तये नमः । ॐ तृं तृष्णायै
 नमः । ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः । ॐ जां जात्यै नमः । ॐ लं
 लज्जायै नमः । ॐ शां शान्त्यै नमः । ॐ श्रं श्रद्धायै नमः ।
 ॐ कां कान्त्यै नमः । ॐ लं लक्ष्म्यै नमः । ॐ धूं धृत्यै नमः ।
 वृं वृत्यै नमः । ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः । ॐ स्मं स्मृत्यै नमः । ॐ
 दं दयायै नमः । ॐ तुं तुष्ट्यै नमः । ॐ पुं पुष्ट्यै नमः । ॐ मां
 मातृभ्यो नमः । ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः ।

भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिक्रमेणः- ॐ गं गणपतये नमः ।
 ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । ॐ वं बटुकाय नमः । ॐ यां योगिन्यै
 नमः ।

भूपुरे पूर्वादि क्रमेणः- ॐ इन्द्राय नमः । ॐ अग्रये नमः । ॐ यमाय
 नमः । ॐ निऋत्यै नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः ।

ॐ सोमाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः ।
ॐ अनन्ताय नमः ।

बाह्येः- ॐ व्रजाय नमः । ॐ शक्तये नमः । ॐ दंडाय नमः ।
ॐ खड्गाय नमः । ॐ पाशाय नमः । ॐ अंकुशाय नमः ।
ॐ गदायै नमः । ॐ त्रिशूलाय नमः । ॐ पद्माय नमः ।
ॐ चक्राय नमः ।

कलशाद्बहिः- (मूलेन सर्वत्र) ॐ कादम्बर्यै नमः । ॐ उत्कायै
नमः । ॐ कराल्यै नमः । ॐ रक्ताक्ष्यै नमः । ॐ श्वेताक्ष्यै
नमः । ॐ हरिताक्ष्यै नमः । ॐ यक्षिण्यै नमः । ॐ काल्यै
नमः । ॐ सुरज्येष्ठायै नमः । ॐ सर्पराज्ञ्यै नमः ।
ॐ यंत्रस्थदेवताभ्यो नमः । मूलेन संपूजयेत् ॥

◆◆ ॥ प्रधान पूजा ॥ ◆◆

ध्यानम्:- खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम् ।
नीलाशमद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥
घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामित्र सरस्वतीमनुभजे शुभादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥
इदमत्रादिपूजाः- ॐ नंदायै नमः । ॐ रक्तदंतिकायै नमः ।
ॐ शाकम्भ्यै नमः । ॐ दुर्गाभीमायै नमः । ॐ भ्रामर्यै

नमः । ॐ कालिकायै नमः । ॐ शिवदूत्यै नमः । ॐ महाकाल्यै नमः । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ महासरस्वत्यै नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ रुद्राय नमः ।
आवाहनः- ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । सभूमिथं सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ कल्याण जननीं सत्यां कामदां करुणाकराम् । अनंत शक्ति संपन्नां दुर्गामावाम्यहम् । श्री दुर्गादेव्यै नमः आवाहनं समर्पयामि ॥

आसनम्:- ॐ पुरुषऽ एवेदथं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ दुर्गे देवि सुरेशानि ज्ञान मार्गं प्रदे शिवे । आसनं मणि भूषाणां गृहाण त्वं सुरेश्वरि । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः आसनं समर्पयामि ॥

पाद्यम्:- ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ कल्याणि मे महादुर्गे चामुण्डे शंकर प्रिये । पाद्यं गृहाण देवेशि भद्रकालि नमोऽस्तुते । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्यम्:- ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ जगत्पूज्ये त्रिलोकेशि सर्वदा नवभंजिनि । अष्टांगार्घं गृहाण त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमनम्:- ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कः:- ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमं ठं रूपमन्नाद्यम् । तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपमन्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि । मधुपर्कान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

जलस्नानम्:- ॐ वरुणस्योत्तं भनमसि व्वरुणस्यस्कं भसर्जनीस्थो
व्वरुणस्यऋत सदन्यसि व्वरुणऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋत
सदनमासीद ॥ ज्ञानमूर्ति भद्रकालि दिव्यमूर्ति सुरेश्वरि । स्नानं
गृहाण देवेशि तीर्थोदक विभूषिणि । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
नमः स्नानं समर्पयामि ॥

पयः स्नानम्:- ॐ पयः पृथिव्यां पयओषधीषु पयोदिव्यं
तरिक्षेपयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्यम् ॥ काम धेनु समुत्पन्नं
सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्
॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः पयः स्नानं समर्पयामि । पयः
स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

दधिस्नानम्:- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयू षं षितारिषत् ॥ पयसस्तु समुद्भूतं
मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्
॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः दधिस्नानं समर्पयामि ।
दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

घृतस्नानम्:- ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसा पावानः
पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश
ऽ उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भगवत्यै श्री
दुर्गादेव्यै नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं
समर्पयामि ॥

मधुस्नानम्:- ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः
सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव षंरजः । मधुद्यौरस्तु
नः पिता ॥ मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँर अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो
भवन्तु नः ॥ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं
दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः

मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥
 शर्करास्नानम्:-ॐ अपाथं रसमुद्वय सथं सूर्यसंत थं समाहितम् ॥
 अपाथं रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्रा यत्वाजुष्टं
 गृह्णाम्येष ते षोणिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा
 पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
 ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ।
 शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

पञ्चामृतस्नानम्:-ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियंति सस्रोतसः ।
 सरस्वतीतु पंचधासो देशे भवत्सरित् ॥ पयो दधि घृतं चैव मधु
 च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
 ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।
 पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

गन्धोदकस्नानम्:-ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ।
 ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपहृयेश्रियम् ॥ ॐ अथं शुनाते अथं
 शुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥
 ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
 गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

शुद्धोदकस्नानम्:-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिबालस्तऽ
 आश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतयेकर्णशामाऽ
 अवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
 नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥
 अभिषेकम्:-पञ्चोपचारैः सम्पूज्य अभिषेकार्थम् पात्रे
 गंधपुष्पदुग्धजलैः अभिषेकं कुर्यात् ॥ अभिषेक समये देव्यथर्वशीर्ष
 श्री सूक्तं देवीसूक्तं वा पठेत् ॥

पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

वस्त्रोपवस्त्रम्:- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशून्स्तौंश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्चषे ॥

यत्स्वच्छं महार्हतु पट्टसूत्रे विनिर्मिते । गृहाण शुभगे देवि
पट्टकूल सुरार्चिते । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं
समर्पयामि ॥

(कंधा, सुरमा, अलङ्कार, कर्णभूषण, हार, अँगूठी, कटिभूषण,
नूपुर, मुकुट, इत्यादि भगवती के अर्पण करे)

अलंकारान्:- सुरासुर शिरो रत्न निघृष्ट चरणांबुजे । अलंकारान्
गृहाणत्वं नाना रत्न विभूषितान् । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
नमः अलंकारान् समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः केशपाश संस्करणं समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः सौवीराञ्जनं (सुरमा) समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः हस्तयोः कङ्कणे समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः कर्णयोः कुण्डले समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः कण्ठे ग्रैवेयकं समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः बाह्वोः अङ्गदे समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः करयोरङ्गुलिमुद्रिकां समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः कटिदेशे काञ्चीं समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः पादयोः नूपुरे समर्पयामि ॥

ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः शिरसि मुकुटं समर्पयामि ॥

चन्दनम्:- ॐ त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत ॥ श्रीखण्डं शीतलं

शुभ्रं मांगल्यं सुखवर्धनं । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं श्रीखण्डं व्रत हेतवे । ॐ

भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः श्री खण्डं चदनं समर्पयामि ॥

गन्धम्:- ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टाङ्कुरीषिणीम् । ईश्वरीं

सर्वभूतानां तामिहोपहृये श्रियम् ॥ श्रीखण्डागरुकर्पूर रोचनाभिश्च

संयुतम् । गृहाण गंधं देवेशि सर्व काम फलप्रदम् । ॐ भगवत्यै
श्री दुर्गादेव्यै नमः गंधं समर्पयामि ॥

कुङ्कुमम्:-कुङ्कुमं कान्तिदं देवि कुङ्कुमं काम रुपिणम् । अखंड
काम सौभाग्यं कुङ्कुमं प्रति गृह्यताम् । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
नमः कुङ्कुमं समर्पयामि ॥

सिन्दूरम्:-ॐसिन्धूरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति
यद्वाः । घृतस्य धारा अरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः
पिन्वमानः ॥ सिन्दूरं शोभनं रक्तं रजकं सुमनोहरं । कामदं काम
जननं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः
सिन्दूरं समर्पयामि ॥

अक्षतान्:-ॐअक्षत्रमीमदन्तह्य व प्रियाऽ अधूषत । अस्तोषतस्व
भानवो विप्रान विष्टया मती योजान्निवन्दते हरिः ॥ अक्षताश्च
सुरश्रेष्ठे कुङ्कुमाक्ताः सुशोभनाः । मया निवेदिताः भक्त्या गृहाण
परमेश्वरि । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि ॥

कज्जलम्:-चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे ! शान्तिकारके ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरी ॥ ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
नमः कज्जलं समर्पयामि ॥

सुगन्धितेलम्:-ॐत्र्यम्बकं षजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षी यमामृतात् ॥ ॐभगवत्यै श्री
दुर्गादेव्यै नमः अङ्गेषु विलेपनार्थं सुगन्धितेलं समर्पयामि ॥

पुष्पमालाम्:-ॐओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्ववाऽइवसजित्वरी वीरूधः पारयिष्णवः ॥ महीबीज महाभागं
पुष्पजाति समुद्भवम् । नाना वर्ण समाख्याता पुष्पमाला प्रकीर्तिता ।
ॐभगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि ॥

✠ ॥ अंग पूजा ॥ ✠

अंगपूजा:-ॐउमायै नमः पादौ पूजयामि ॥ ॐगौर्यै नमः
जंघे पूजयामि ॥ ॐपार्वत्यै नमः जानुनी पूजयामि ॥

ॐ जगद्धात्र्यै नमः ऊरू पूजयामि ॥ ॐ जगत्प्रतिष्ठायै
 नमः कटिं पूजयामि ॥ ॐ शान्तिरूपिण्यै नमः नाभिं
 पूजयामि ॥ ॐ देव्यै नमः उदरं पूजयामि ॥
 ॐ लोकवन्दितायै नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ॐ काल्यै
 नमः कण्ठं पूजयामि ॥ ॐ शिवायै नमः मुखं पूजयामि
 ॥ ॐ भवान्यै नमः नेत्रे पूजयामि ॥ ॐ रुद्राण्यै नमः
 कर्णौ पूजयामि ॥ ॐ शर्वाण्यै नमः ललाटं पूजयामि
 ॥ ॐ मंगलदात्र्यै नमः शिरः पूजयामि ॥

अबीर-गुलालः-ॐ अहिरिवभोगैः पर्येतिवाहुँज्याया हेतिम्परि
 बाधमानाः । हस्तगघ्नो विश्वाव्ययनुनानि विद्वान्पुमान्पुमाथं
 सम्परिपातु विश्वतः ॥ रक्तं रसोवसंतेज उत्सवे परमं शुभम् ।
 मस्तके धार्यते देवि रंगे रंगं ददातु माम् । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
 नमः अबीर गुलालं समर्पयामि ॥

धूपम्:-ॐ धूरसि धूर्ध्वधूर्ध्वन्तं धूर्ध्वतं योस्मान्धूर्ध्वतितं धूर्ध्वं यं
 व्यन्धूर्ध्वामिः । देवानामसि व्वन्हितमथं स्नितमम्पिप्रितमञ्जुष्ट
 तमन्देबहूतमम् ॥ गुग्गुलं घृत संयुक्तं अगरु वास संयुतम् ।
 गृहाण दशांगं धूपं भद्रकालि नमोऽस्तुते । वनस्पति रसो दिव्यो
 गंधाढ्यो गंध उत्तमः । आघ्रेयः सर्व भूतानां धूपोऽयं प्रति गृह्यताम् ।
 ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः धूपं समर्पयामि ॥

दीपम्:- ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि । रयिं
 पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कनिक्रदत् ॥ ॐ अग्निर्ज्योति
 ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
 अग्निर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
 ज्योतिः सूर्यः सूर्योर्ज्योतिः स्वाहा ॥ रक्त सूत्र लसद्वर्ति गो
 घृतेन च पूरितं । दीपं गृहाण देवेशि नमः त्रैलोक्य सुन्दरि ।
 दीपस्तमोनाशयति दीपः कांतिं प्रयच्छति । तस्माद्दीप प्रदानेन

प्रीयतां परमेश्वरि । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः दीपं समर्पयामि ।
हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

नैवेद्यम्:- ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्र दातारं
तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ दिव्यान्नं रस संपुष्टं नाना
भक्ष्यैस्तु संस्तुतम् । चोह्य लेह्य समायुक्तमन्नं देवि गृहाणमे ।
अत्र चंदन गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्यं वः स्वाहा । ॐ प्राणाय
स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ
उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ परमात्मने स्वाहा ।
मध्ये गंगाजलं समर्पयामि । नैवेद्यांते आचमनीयं समर्पयामि ॥

ऋतुफलम्:- ॐ षाः फलिनीर्षाऽअफलाऽअपुष्पाऽश्च
पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वहं हसः ॥ पुष्पं पत्रं
फलं तोयं रत्नानि विविधानि च । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देहि मे
वाञ्छितं फलं । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः फलं समर्पयामि ॥
आचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

पूगीफल-ताम्बूलम्:- मुख वासार्थं ताम्बूलम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण
हविषा देवा यज्ञ मतन्वत । व्वसन्तोस्या सीदाज्यं ग्रीष्मऽ
इध्मः शरद्धविः ॥ गृहाण देवि ताम्बूलं कपूरेण सुवासितं ।
पूगीफल समायुक्तं स्वर्णेन स्वादितं तथा । भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
नमः ताम्बूलं समर्पयामि ॥

दक्षिणाः:- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक
आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम
॥ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥

श्रीफलम्:- ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्कया बहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणिरूपमश्विनौ ऽव्यात्तम् । इष्णन्निषाणां मुम्मऽइषाण
सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि
मे । पुत्रं देहि धनं देहि सर्व कामांश्च देहि मे । भगवत्यै श्री

दुर्गादेव्यै नमः श्रीफलं समर्पयामि ॥

फलार्घ्यम्:-रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि मे । पुत्रां
देहि धनं देहि सर्व कामांश्च देहि मे । ॐ भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै
नमः फलार्घ्यं समर्पयामि ॥

आरती:- ॐ इदं हविः प्रजननम्मेऽस्तुदशवीर्यं सर्वगण्यं
स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि
अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽस्मासुधत्त ॥ मंगले
कालिके देवि महिषासुरसूदिनी । नीराजनं मया दत्तं गृहाणेश्वरि
सुन्दरि । मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः । मंगलं
पुंडरीकाक्षः मंगलायतनो हरिः । सर्व मंगल मांगल्ये शिवे
सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते
। भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः आरार्तिकं समर्पयामि ॥

जल आरार्तिकं समर्पयामि ॥

प्रार्थना:-मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला ।

ललाटे काशमीरं विलसति गले मौक्तिकलता ॥

स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी ।

भजामस्त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम् ॥

ॐ ॥ प्राचीन ध्यानम् ॥ ॐ

१-खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः

शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम् ।

नीलाशमद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्

यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥

२-अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्

शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्

सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥

- ३-वामे कर्णे मृगांकं प्रलय परिणतं दक्षिणे सूर्यबिम्बं
कंठे नक्षत्रमालां परिविकटजटा जूटके केतु मालाम् ।
स्कंधेबद्धोरगेन्द्रं ध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकंकालमाला
हुंकारि कालरात्रि परिहरतु भयं भद्रदा भद्रकाली ॥३॥
- ४-नान्यं भजामि वरदे न च वर्णयामि
नान्यं स्मरामि कमपीह नरं परं वा
वाञ्छाऽतिरिक्तफलदे त्रिपुरेति नाम
मातर्हृदिस्फुरतु मे कुलकामधेनुः ॥४॥
- ५-घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामित्र सरस्वतीमनुभजे शुंभादिदैत्यादिनीम् ॥५॥
- ६-सन्मूर्च्छन्मधुकैटभाय महिषोन्मादाय गौरी वपु
र्भूता यक्षतु दुष्ट दूत वससे धूम्रेक्षणादिच्छिदे ।
सासृग्बीजनिशुम्भशुम्भमथिनी विश्वस्तुता यार्पिता
क्ष्माभृद् वैश्य फलायभैरविभवद् रूपाय तस्मै नमः ॥६॥
- ७-या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्ड मथिनी या रक्तबीजाशिनी ।
शक्तिः शुम्भनिशुंभ दैत्य दलिनी या सिद्धलक्ष्मी परा
साऽ दुर्गा नवकोटि शक्ति सहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥७॥
- ८-मुण्डं विश्वस्य कर्तुः कर कमल तले धारयन्तीं पिबन्तीं
नाऽहं तृप्ता वदन्तीं सकलजन चयं भक्षयन्तीं सदैव ।
श्यामां विष्णुं गिरीशं त्वरिकुलमथिनी दौर्भिरीड्यैवृतांसि
वंदेऽहं भद्रकालीं नवतनु विशदां प्रेतमध्या सनस्थाम् ॥८॥
- ९-मुक्ता फलैः कुंकुम पाटलानां सन्ध्येवतारामलकैर्विभाति ।
या मूलपीठा चलचूलिकायां त्वामेक वीरां शरणं प्रपद्ये ॥९॥
- १०-मातर्मे मधुकैटभारि हृदये प्राणापहारोद्यमे

हेलालंबित धूम्रलोचन वधे हे चण्डमुण्डार्दिनी ।
 निः शेषी कृत रक्तबीज निलये नित्ये निशुंभावहे
 शुंभध्वंसि निशुंभराज दुरिते दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥१०॥
 ११-ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्यवदना माहेश्वरी शारदा
 कौमारी रिपुदर्प नाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी ।
 वाराही घनघोर घुर्घुर-रवा चैन्द्री सवज्रायुधा
 चामुण्डा गणनाथ रुद्रसहिता रक्षन्तु मां मातरः ॥११॥
 १२-या सा रक्ताम्बरधरा या देवी शूल पाणिनी ।
 सिंहासन समारूढा सा देवी वरदा ऽस्तु नः ॥१२॥
 १३-या श्री पद्मवने कदम्ब शिखरे राजारुहे कुंजरे
 श्वेते चाश्व रथे वृषे च धवले राज्ञि च यूपस्थिते ।
 शंखे देव कुले नरेन्द्र भुवने गंगातटे गोकुले
 सा श्रीस्तिष्ठतु सर्वदा ममगृहे मेरुर्यथा निश्चला ॥१३॥

★★ ॥ भैरव नामावली ॥ ★★

विनियोगः-अस्य श्री बटुकभैरवाष्टोत्तर शतनाम मन्त्रस्य
 बृहदारण्यको नाम ऋषिः अनुष्टुब्छंदः श्रीबटुकभैरवो देवता
 बं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं श्री बटुकभैरवं प्रीत्यर्थं शत
 नाम जपे (हवने) विनियोगः ।

शिरादि न्यासः- बृहदारण्यक ऋषये नमः शिरसि ॥ अनुष्टुब्छंदसे
 नमः मुखे ॥ श्रीबटुकभैरवाय नमः हृदये ॥ बं बीजाय नमः
 गुह्ये ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

अथ न्यासः-

ॐ ह्रं वां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ
 हुं वुं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रूं वैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ
 ह्रूं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां
 नमः ।

हृदयादिन्यासः-ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं वीं शिरसे
स्वाहा । ॐ हुं वुं शिखायै वषट् । ॐ ह्रूं वैं कवचाय हुम् ।
ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् ।
(असितांगो रुरुश्चण्ड क्रोधनुन्मत्त भैरवः । कपाली भीषणश्चैव
संहार चाष्टमस्मृतः)

अथ ध्यानम्:-

१-कवाकाशः कवसभीरण कवदहन कवापः कवविशाम्भर ।
कवब्रह्मा कवजनार्दन कवतरणी कवेन्दु कवदेवासुराः ॥१॥

२-कल्पान्ता नटिनं नटः प्रमुदितः श्रीसिद्धियोगेश्वरः । क्रीडा
नाटक नायको विजयंते देवो महाभैरवः ॥२॥

३-वंदे बालं स्फटिक सदृशं कुंतलोत्भासि वक्त्रं । दिव्या कल्पैर्नव
मणिमयै किंकिणि नूपुराढ्यं ॥ दीप्ता कारंविशद वसनं सुप्रसन्नं
महेशं । हस्ताभ्यां वै बटुक मनिशं शूल खड्गौ दधानम् ॥३॥

४-उद्यद्भास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्तांगराग सृजम् । स्मेरास्यं
वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः ॥ नील ग्रीव मुदार भूषणयुतं
शीतांशु खण्डो ज्वलम् । बन्धो कारण माशिषं भयहरं देवं सदा
भावयेत् ॥४॥

५-ध्याये नीलाद्रि कातं शशि शकलधरं मुण्ड मालं महेशं ।
दिग्वस्त्रं पिंगकेशं डमरुमथसृणि खड्ग पाशा भयानि ॥ नागं घंटां
कपालं कर शिरसि रुहैर्विभ्रतं भीमदंष्ट्रं । सर्पा कल्पं त्रिनेत्रं
मणिमय विलसत् किंकिणी नूपुराढ्यं ॥५॥

६-करकलित कपाल कुंडली दण्डपाणिस्त रुणतिमिरनीलो
व्याल यज्ञोपवीती । ऋतुसमय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति
बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥६॥

अथ मंत्रः- ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय
ह्रीं ॐ ॥

ॐ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः । क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च
क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट् ॥१॥ श्मशान वासी मांसाशी खर्पराशी
स्मरांतकृत् । रक्तपः पानपः सिद्ध सिद्धिदः सिद्धि सेवितः ॥२॥
कंकालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः । त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च
तथा पिंगललोचनः ॥३॥ शूलपाणिः खड्गपाणिः कंकाली
धूम्रलोचनः । अभीरु भैरवी नाथो भूतपो योगिनी पतिः ॥४॥
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान् । नागहारो नागपाशो
व्योमकेश कपालभृत् ॥५॥ कालः कपालमाली च कमनीयः
कला निधिः । त्रिलोचनो ज्वलनेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः ॥६॥
त्रिनेत्रस्तनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः । बटुको बहुवेशश्च
खट्वांगवरधारकः ॥७॥ भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः ।
धूर्तो दिगम्बरः शूरोहरिणः पांडुलोचनः ॥८॥ प्रशांतः शांतिदः
सिद्ध शंकरः प्रियबांधवः । अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञान
चक्षुस्तपोमयः ॥९॥ अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखः ।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः ॥१०॥ कङ्कालधारी मुण्डी
च नाग यज्ञोपवीतकः । जृम्भणो मोहनः स्तम्भी मारणः
क्षोभणस्तथा ॥११॥ शुद्धो नीलांजनः प्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः ।
बलिभुग् बलिभुङ्नाथो बालो बाल पराक्रमः ॥१२॥ सर्वापत्तारणो
दुर्गो दुष्टभूत निषेवितः । कामी कलानिधिः कान्तः
कामिनीवशकृद्दृशी ॥१३॥ सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णु रितीवहि ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः ॥१४॥ वाराणस्यां भैरवो
देवः संसार भय नाशनः । अनेक जन्म कृतं पापं स्मरणेन
विनश्यति ॥१५॥ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पांत दहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातु मर्हसि ॥१६॥

इति भैरव नामावली समाप्ता

ॐ ॥ गणपति मंत्र जपविधि ॥ ॐ

ॐ अस्य श्री वक्रतुण्ड गणपति मंत्रस्य भार्गव ऋषिः
अनुष्टुब्छन्दः विघ्नेशो देवता वं बीजं यं शक्तिः हुं कीलकं सर्वाभीष्ट
सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ अनुष्टुब्छन्दसे नमः मुखे ॥
ॐ विघ्नेशो देवतायै नमः हृदि ॥ ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥
ॐ यं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ हुं कीलकाय नमः सर्वांगे ॥
ॐ वं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ क्रं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ तुं
मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ डां अनाकाभ्यां नमः ॥ ॐ यं
कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ हुं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ
वं हृदयाय नमः ॥ ॐ क्रं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ तुं शिखायै वषट्
॥ ॐ डां कवचाय हुं ॥ ॐ यं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ हुं
अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:- ॐ उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निज हस्त पद्मैः पाशांकुशाऽ
भयवरान्दधतं गजास्यं ॥ रक्तांबरं सकल विघ्न हरं गणेशं
ध्यायेत् प्रसन्न मखिला भरणाभिरामम् ॥ “ॐ वं वक्रतुण्डाय
हुं” इत्यष्टोत्तर शत जाप्य कृतेन गणपतिः प्रीयतां न मम ॥

ॐ ॥ रुद्र पाठ न्यास-ध्यान विधिः ॥ ॐ

विनियोगः:- ॐ अस्य श्री रुद्राध्याय महामन्त्रस्य अघोर शिवऋषिः
अमृतानुष्टुब्छन्दः संकर्षण मूर्ति स्वरूपो योसावादित्ये स एष
रुद्रो देवता नमस्ते इति बीजं नमः शिवायेति शक्तिः शिवतरायेति
कीलकं रुद्राध्याय महामन्त्र जपे (पाठे)विनियोगः ॥

अथ ऋष्यादि न्यासः:- ॐ अघोरशिव ऋषये नमः शिरसि ॥
ॐ अमृतानुष्टुब्छन्दसे नमः मुखे ॥ ॐ संकर्षणमूर्ति स्वरूपो
योसावादित्य सएषरुद्रो देवतायै नमः हृदि ॥

ॐ नमस्ते इति बीजं गुह्ये ॥ ॐ नमः शिवायेति शक्तिः पादयोः
॥ ॐ शिवतरायेति कीलकं सर्वांगे ॥

करन्यासः- ॐ अग्निहोत्रात्मने नमः अंगुष्ठाभ्याम् नमः ॥
 ॐ दर्शपौर्णमासात्मने नमः तर्जनीभ्याम् नमः ॥ ॐ चातुर्मासात्मने
 नमः मध्यमाभ्याम् नमः ॥ ॐ ज्योतिष्टोमात्मने नमः
 अनामिकाभ्याम् नमः ॥ ॐ निरूढपशुबंधात्मने नमः
 कनिष्ठकाभ्याम् नमः ॥ ॐ सर्वकर्तात्मने नमः करतलकर
 पृष्ठाभ्याम् नमः ॥

हृदयादि न्यासः- ॐ अग्निहोत्रात्मने नमः हृदयाय नमः ॥
 ॐ दर्शपौर्णमासात्मने नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ चातुर्मासात्मने
 नमः शिखायै वषट् ॥ ॐ ज्योतिष्टोमात्मने नमः कवचाय हुम्
 ॥ ॐ निरूढपशुबंधात्मने नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ सर्वकर्तात्मने
 नमः अस्त्राय फट्

ध्यानम्:- आपाताल नभस्थलान्त भुवनं ब्रह्माण्ड माविस्फुरत्,
 ज्योतिस्फाटिक लिङ्ग मोलिविलसत् पूर्णेन्दुराका शुभैः ॥
 अस्तौकाप्लुत मेकमेव मनिशं रुद्रानुवाकाञ्जपन्,
 ध्याये दीप्सित सिद्धये धृतपदं विप्रोभिषं चेच्छिवम् ॥
 ब्रह्माण्डं व्याप्तदेहा हिमभसितरुचा भासमाना भुजङ्गैः,
 कण्ठे माला कपर्दा किरिटि च रुचिरा छन्दकोदण्डहस्ताः ॥
 त्र्यक्षारुद्राक्ष माला प्रकटित विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः,
 रुद्राः श्रीरुद्रसूक्तं प्रकाटित विभवाः नः प्रयच्छन्तु सौख्यम् ॥

☆☆ ॥ श्री शारदोक्त महामृत्युञ्जय जप विधिः ॥ ☆☆
 श्री गणेशाय नमः प्रातः स्नानादि नित्यकर्म कृत्वा ॥ आसनोपविश्य
 ॥ भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा ॥ आचमनं प्राणायामम् ॥
 सुमुखश्चेत्यादि गणपतिं स्मृत्वा ॥ आनोभद्रा भद्रसूक्तं पठेत् ॥
 गणपति पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारायुष्यमन्त्रजपं
 नान्दीश्राद्धम् आचार्यादि वरणं शिवपूजनं च कृत्वा ॥ अत्राद्य
 मम/यजमानस्य श्री महामृत्युञ्जय प्रसाद सिद्धि द्वारा भूतप्रेतपिशाच

कृत्यादि सकलोपद्रव शान्त्यर्थं तथाच मार्तंडादिग्रह संसूचित संसूचयिष्यमाणाशेषारिष्ट निवारण पूर्वकायुष्याभिवृद्धये (मम यजमानस्य वा शरीरे स्थितस्य अमुक रोगस्य समूल नाशनेन अपमृत्यु निवारणार्थं क्षिप्रमारोग्य प्राप्त्यर्थं विषमस्थान स्थितसकलारिष्ट निवृत्तये श्री महामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थम् अमुक संख्यान्तर्गत अमुक संख्याकान् महामृत्युञ्जय जपान् स्वयं ब्राह्मण द्वारा वा अहं करिष्ये (कारयिष्ये) (यजमान के लिए शुभ चिन्तक करिष्यामि बोले) तथा चादौ निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणपति मन्त्रस्य अष्टोत्तरशत संख्याकान् जपानहं करिष्ये ॥ अष्टोत्तरशत गणपति मंत्रं जप्त्वा ॥

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वसिष्ठऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीत्र्यम्बक रुद्रोदेवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः मम/यजमानस्य सर्वारिष्ट निवृत्तिपूर्वक सकलमनोरथसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

अथ ऋष्यादि न्यासः- ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि ॥
 ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ ॐ त्र्यम्बक रुद्रोदेवतायै नमः हृदये ॥
 ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥

अथ करन्यासः-

ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगंधिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे धूर्जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते

रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः
॥ ॐ हौं ॐजूसः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते
रुद्राय अग्रित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय
करतलपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥

अथ हृदयादिन्यासः- ॐ हौं ॐजूसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं
ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः ॥ ॐ
हौं ॐजूसः भूर्भुवः स्वः षजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय
अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा ॥ ॐ हौं ॐजूसः भूर्भुवः
स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे
धूर्जटिने स्वाहा शिखायै वषट् ॥ ॐहौं ॐजूसः भूर्भुवः स्वः
उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय
हां ह्रीं कवचाय ह्रूं ॥ ॐहौं ॐजूसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय
ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय
वौषट् ॥ ॐहौं ॐजूसः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते
रुद्राय अग्रित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय
फट् ॥ इति हृदयादिन्यासः ॥

अथ वर्णन्यासः- त्र्यं नमः दक्षिण चरणाग्रे ॥ बं नमः, कं नमः,
यं नमः, जां नमः, दक्षिणचरणसन्धि चतुष्केषु । मं नमः वाम
चरणाग्रे । हें नमः, सुं नमः, गं नमः, धिं नमः, वामचरणसन्धि
चतुष्केषु । पुं नमः गुह्ये, ष्टिं नमः आधारे, वं नमः जठरे, ङं
नमः हृदये, नं नमः कण्ठे । ॐ नमः दक्षिण कराग्रे । वां नमः,
रुं नमः, कं नमः, मिं नमः, दक्षिणकरसन्धि चतुष्केषु । वं
नमः वाम कराग्रे । बं नमः, धं नमः, नां नमः, मूं नमः,
वामकरसन्धि चतुष्केषु । त्यो नमः वदने । मुं नमः ओष्ठयोः ।
क्षीं नमः घ्राणयोः । यं नमः दृशोः । मां नमः श्रवणयोः । मूं
नमः भ्रुवोः । तान् नमः शिरसि ॥ इति वर्णन्यासः ॥

अथ पदन्यासः—ॐ त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवोः । सुगन्धिं
दृशोः । पुष्टिवर्द्धनं मुखे । उर्वारुकं गण्डयोः । इव हृदये ।
बन्धनात् उदरे । मृत्योः गुह्ये । मुक्षीय ऊर्वोः । मा जान्वोः ।
अमृतात् पादयोः ॥ इति पदन्यासः ॥

अथ ध्यानम्—हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसै राप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यान्तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् ॥ अङ्गन्यस्त
करद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवम्, स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दु
मुकुटाभान्तं त्रिनेत्रं भजे ॥ इति ध्यात्वा

प्रार्थनां कुर्यात्—मृत्युञ्जय महादेव त्राहिमां शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजराव्याधि पीडितं कर्मबन्धनैः ॥१॥ तावकस्त्वद्गतः
प्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदामृड । इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मृत्युञ्जयं
मनुम् ॥२॥ यथासंख्यं मूलमन्त्रं प्रजप्य पुनर्न्यासं कृत्वा ॥ जपं
भगवते त्र्यम्बकाय समर्पयेत् ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं
जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण
जलेन जप निवेदनम् ॥

अथ महामृत्युञ्जय मूलमन्त्रः—ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव
बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् । भूर्भुवः स्वरो जूंसः हौं ॐ ॥
पञ्चाशद्वर्णोऽयं मन्त्रः ॥ इति मृत्युञ्जय विधि समाप्ता ॥

ॐ ॥ त्र्यक्षर मृत्युञ्जय जप विधि ॥ ॐ

ॐ अस्य श्री त्र्यक्षर मृत्युञ्जय मन्त्रस्य कहोल ऋषिः गायत्री
छन्दः श्री मृत्युञ्जय रुद्रो देवता ॐबीजं जूं शक्तिः सः कीलकं
मम अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ॥

ऋष्यादि न्यासः—ॐ कहोल ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ गायत्री
छन्दसे नमः मुखे ॥ ॐ मृत्युञ्जय रुद्र देवतायै नमः हृदि ॥ ॐ बीजाय
नमः नाभौ ॥ ॐ जूं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ सः कीलकाय

नमः सर्वाङ्गे ॥

अथ कर न्यासः—सां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ सी तर्जनीभ्यां नमः ॥ सूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ सै अनामिकाभ्यां नमः ॥ सौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ सः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यासः—सां हृदयाय नमः, सी शिरसे स्वाहा, सूं शिखायै वौषट् सै कवचाय हुम् सौ नेत्रत्रयाय वौषट् सः अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम् :—चन्द्राकारिग्निलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं मुद्रापाश मृगाक्ष सूत्र विलसत्पाणिं हिमांशु प्रभम् ॥ कौटीरेन्दु गलत्सुधाप्लुततनुं हारादि भूषोज्ज्वलं, कीर्त्या विश्व विमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥

अथ त्र्यक्षर ह्रींमृत्युञ्जय मूलमन्त्रः ॐ जूं सः ॥

यथासंख्यं मूलमन्त्रं प्रजप्य पुनर्न्यासं कृत्वा ॥ जपं भगवते मृत्युञ्जयाय समर्पयेत् ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन जप निवेदनम् ॥ इति त्र्यक्षर मृत्युञ्जय विधि समाप्ता ॥

☆☆ ॥ शताक्षरा गायत्रीमन्त्र जप विधिः ॥ ☆☆

संकल्पः—अत्राद्य मम यजमानस्य वा शरीरे स्थितस्य अमुक रोगस्य समूल नाशनेन अपमृत्यु निवारणार्थं क्षिप्रमारोग्य प्राप्त्यर्थं विषमस्थान स्थितसकलारिष्ट निवृत्तये श्री सवितृ जातवेदस्त्र्यम्बक देवता प्रीत्यर्थम् अमुक संख्यान्तर्गत अमुक संख्याकान् शताक्षरा गायत्रीमन्त्र जपान् स्वयं ब्राह्मण द्वारा वा अहं करिष्ये ॥

विनियोगः—अस्य शताक्षरा गायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र-मरीचि-कश्यप-वशिष्ठ-ऋषयो-गायत्री-

त्रिष्टुप्-अनुष्टुप्छन्दांसि सवितृ-जातवेदस्त्र्यम्बका देवता
गायत्र्यक्षराणि बीजानिअनुष्टुबक्षराणि शक्तयस्त्रिष्टुबक्षराणि
कीलकानि ममारिष्ट शान्तये जपे विनियोगः ॥

विश्वामित्र-मरीचि-कश्यप-वशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥

गायत्री-त्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः (मुखे)

सवितृ-जातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः (हृदये)

गायत्र्यक्षरेभ्यो बीजेभ्यो नमः (गुह्ये)

अनुष्टुबक्षरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः (पादयोः)

त्रिष्टुबक्षरेभ्यः कीलकेभ्यो नमः (नाभौ)

विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)

करन्यासः-

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि (अंगुष्ठाभ्यां नमः)

ॐ धियो योनः प्रचोदयात् (तर्जनीभ्यां नमः)

ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः

(मध्यमाभ्यां नमः)

ॐ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः

(अनामिकाभ्यां नमः)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् (कनिष्ठिकाभ्यां नमः)

ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्

(करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः)

हृदयादि न्यासः-

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि (हृदयाय नमः)

ॐ धियो योनः प्रचोदयात् (शिरसे स्वाहा)

ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः

(शिखायै वषट्)

ॐ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः

(कवचाय हुम्)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् (नेत्रत्रयाय वौषट्)

ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् (अस्त्राय फट्)

ध्यानम्:- स्मर्तव्या खिललोकवर्ति- सततं यज्जङ्गमस्थावर,
व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्चविहितं मुक्तिर्यतः सिद्ध्यति।

यद्वास्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यद् गीयते,

तद्वस्तु स्थितिसिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः ॥

मूलमंत्रः- ॐ तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः
प्रचोदयात् ॥ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः ।

सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ त्र्यम्बकं
यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ ॥

अनेन शताक्षरागायत्री जपाख्येन कर्मणा श्रीसवितृजातवेदस्त्र्यम्बक
देवताः प्रीयन्ताम्

॥ शताक्षरी गायत्रीमंत्र जप विधि समाप्ता ॥

★★★ ॥ शिव पंचाक्षर मंत्र जपविधि ॥ ★★★

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षर मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः

अनुष्टुब्छन्दः सदाशिवो देवता जपे (पूजने) विनियोगः ॥

ॐ वामदेव ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ अनुष्टुब्छन्दसे नमः मुखे ॥

ॐ सदाशिव देवतायै नमः हृदये ॥

करन्यासः- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः ॥

ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ

वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ यं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

हृदयादि न्यासः- ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ नं शिरसे स्वाहा ॥

ॐ मं शिखायै वषट् ॥ ॐ शिं कवचाय हुम् ॥ ॐ वां नेत्रत्रयाय
वौषट् ॥ ॐ यं अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:- ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्ना कल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुत ममर गणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

मूलमन्त्रः ॐ नमः शिवाय ॥

यथासंख्यं मूलमन्त्रं प्रजप्यं, पुनन्यासं कृत्वा ॥ जपं भगवते
सदाशिवाय समर्पयेत् ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं
जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण
जलेन जप निवेदनम् ॥ इति ॐ नमः शिवाय जप विधि समाप्ता ॥

॥ अथ नवग्रह मन्त्राणां जप विधिः ॥

☆☆☆ सूर्य मन्त्र जप विधिः ☆☆☆

१-संकल्पः- अद्येत्यादि० मासानामुत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे
अमुकतिथौ अमुकवासरे मम यजमानस्य वा सर्वारिष्ट
निवृत्त्यर्थममुक ग्रहमन्त्रस्य यथा संख्याकाञ्जपात्रद्याहं कारयिष्ये
(करिष्ये)

विनियोगः- आकृष्णेनेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूप ऋषिः त्रिष्टुब्छन्दः
सविता देवता सूर्य प्रसन्नार्थं जपे विनियोगः ॥

अथ शिरोन्यासः- आकृष्णेन शिरसि ॥ रजसा ललाटे ॥ वर्तमानो
मुखे ॥ निवेशयन् हृदि ॥ अमृतं नाभौ ॥ मर्त्यञ्च कट्यां ॥ हिरण्ययेन
सविता जंघयोः ॥ रथेना ऊर्वोः ॥ देवो याति जान्वोः ॥ भुवनानि
पश्यन् पादयोः ॥

कर न्यासः- आकृष्णेन अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ रजसा तर्जनीभ्यां
नमः ॥ वर्तमानो निवेशयन् मध्यमाभ्यां नमः ॥ अमृतं मर्त्यञ्च

अनामिकाभ्यां नमः ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां
नमः ॥ देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥
ततो हृदयादि न्यासः- आकृष्णेन हृदयाय नमः ॥ रजसा शिरसे
स्वाहा ॥ वर्तमानो निवेशयन् शिखायै वषट् ॥ अमृतं मर्त्यञ्च
कवचाय हुँ ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ देवो
याति भुवनानि पश्यन् अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:-पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्त तुरंग वाहनः ।

दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

मूलमन्त्रः-ॐ आकृष्णे नरजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॐ ॥

(जप संख्या ७०००)

उत्तर-न्यासान्विधाय ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं
जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण
जलेन जप निवेदनम् ॥ सूर्याय समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः-ॐ घृणिः सूर्याय नमः ॥

तान्त्रिक मंत्रः-हां हीं हौं सः सूर्याय नमः)

◆◆◆ चन्द्र-मन्त्र जपविधिः- ◆◆◆

२-विनियोगः-इमन्देवेति गौतम ऋषिः द्विपदा विराट् छन्दः
सोमो देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ शिरोन्यासः-इमन्देवा शिरसि ॥ असपत्नकं ललाटे ॥
सुवध्वं मुखे ॥ महते क्षत्राय हृदि ॥ महते जैष्ठ्याय नाभौ ॥
महते जानराज्याय कट्यां ॥ इन्द्रस्येंद्रियाय ऊर्वोः इमममुष्यपुत्रं
जान्वोः ॥ अमुष्यै पुत्रं गुल्फयोः ॥ अस्यै विश एष वोमी राजा
सोमोस्माकं ब्राह्मणानां राजा पादयोः ॥

करन्यासः-इमन्देवा असपत्नक सुवध्वं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ महते क्षत्राय तर्जनीभ्यां नमः महते जैष्ठ्याय मध्यमाभ्यां नमः ॥ महते जानराज्याय अनामिकाभ्यां नमः ॥ इन्द्रस्येन्द्रियाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विषएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानां राजा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः- इमन्देवा असपत्नक सुवध्वं हृदयाय नमः ॥ महते क्षत्राय शिरसे स्वाहा ॥ महते जैष्ठ्याय शिखायै वषट् ॥ महते जानराज्याय कवचाय हुँ ॥ इन्द्रस्येन्द्रियाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विषएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानां राजा अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:-श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च, श्वेतद्युति र्दण्डधरो द्विबाहुः । चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

मूलमन्त्रः-ॐ इमन्देवाऽअसपत्नकं सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रमुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽ एष वोमी राजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणानां राजा ॐ ॥

जपसंख्या (११,०००) जपान्ते पुनन्यासान्विधाय ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन जप निवेदनम् ॥ चन्द्राय समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः-ॐ सों सोमाय नमः ॥

तान्त्रिक मंत्रः-ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः)

*** भौम मन्त्र जप विधिः- ***

३-विनियोगः-अग्रिमूर्द्धेति विरूपाक्ष ऋषिः गायत्री छन्दः अंगारको देवता भौम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

शिरोन्यासः-अग्निः शिरसि ॥ मूर्द्धा ललाटे ॥ दिवः मुखे ॥
ककुत् हृदि ॥ पतिः नाभौ ॥ पृथिव्यां कट्यां ॥ अयं ऊर्वोः ॥
अपां जान्वोः ॥ रेषांसि गुल्फयोः ॥ जिन्वति पादयोः ॥

करन्यासः- अग्रिर्मूर्द्धादिवः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ककुत्तर्जनीभ्यां
नमः ॥ पतिः पृथिव्याऽअयम् मध्यमाभ्यां नमः ॥ अपां
अनामिकाभ्यां नमः ॥ रेषांसि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ जिन्वति
करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः-अग्रिर्मूर्द्धादिवः हृदयाय नमः ॥ ककुत्
शिरसे स्वाहा ॥ पतिः-पृथिव्याऽअयम् शिखायै वषट् ॥ अपां
कवचाय हुँ ॥ रेषांसि नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ जिन्वति अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:-रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी,

चतुर्भुजो मेषगतो गदाधरः ।

धरासुतः शक्ति धरश्च शूली,

सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः ॥

मूलमन्त्रः-ॐ अग्रिर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥
अपाथं रेताथं सिजिन्वति ॥

जपसंख्या (१०,०००) जपान्ते पुनर्न्यासान्विधाय ॥ गुह्याति
गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव
त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन जप निवेदनम् ॥ भौमाय
समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः-ॐ अं अंगारकाय नमः

तान्त्रिक मंत्रः-ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः)

➤ बुध मन्त्र जप विधिः- ➤

४-विनियोगः-उद्बुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापतिः ऋषिः
त्रिष्टुब्धन्दः बुधो देवता बुध प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

शिरोन्यासः-उद् बुध्यस्वेति शिरसि ॥ अग्रे प्रति ललाटे ॥ जागृहि
त्वं मुखे ॥ इष्टापूर्ते हृदि ॥ स सृजेथमयञ्च नाभौ ॥ अस्मिन्सधस्थे

कट्याम् ॥ अद्भ्युत्तरस्मिन् ऊर्वोः ॥ विश्वेदेवा जान्वोः ॥
यजमानश्च गुल्फयोः ॥ सीदत पादयोः ॥

करन्यासः- उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥
इष्टापूर्ते तर्जनीभ्यां नमः ॥ ससृजेथामयञ्च मध्यमाभ्यां नमः ॥
अस्मिन्त्सधस्थेऽ अद्भ्युत्त रस्मिन् अनामिकाभ्यां नमः ॥ विश्वे
देवायजमानश्च कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ सीदत करतलकर पृष्ठाभ्यां
नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः- उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वं हृदयाय
नमः ॥ इष्टापूर्ते शिरसे स्वाहा ॥ ससृजेथामयञ्च शिखायै वषट् ॥
अस्मिन्त्सधस्थेऽ अद्भ्युत्त रस्मिन् कवचाय हुँ ॥ विश्वे
देवायजमानश्च नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ सीदत अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:- नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी, चतुर्भुज दण्डधरश्च हारी
। चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत्, सिंहादि रूढो वरदो बुधश्च ॥
मूलमंत्रः- ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सथं
सृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽ अद्भ्युत्त रस्मिन् विश्वे
देवायजमानश्च सीदत ॥ जपसंख्या (४,०००) जपान्ते
पुनर्न्यासान्विधाय ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन
जप निवेदनम् ॥ बुधाय समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः- ॐ बुं बुधाय नमः ॥

तान्त्रिक मंत्रः- ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः)

❁ गुरु मन्त्र जप विधिः- ❁

५-विनियोगः- बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः अनुष्टुब्छन्दः
बृहस्पति देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

शिरोन्यासः- ॐ बृहस्पते शिरसि ॥ अतियदर्वो ललाटे ॥
अर्हाद्दियुमद् मुखे ॥ विभातिक्रतुमत् हृदये ॥ जनेषु नाभौ ॥ यद्दीदयत्
कट्याम् ॥ सवसऽऋतप्रजात ऊर्वोः ॥ तत्तदस्मा सुद् द्रविणं

जान्वोः ॥ धेहि गुल्फयोः ॥ चित्रं पादयोः ॥

करन्यासः-ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥

अर्हाद्व्युमत् तर्जनीभ्यां नमः ॥ विभाति क्रतुमत् मध्यमाभ्यां नमः ॥

जनेषु अनामिकाभ्यां नमः ॥ उद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्प्रजा

ततदस्ममासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ द्रविणन्धेहि चित्रम्

करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः-ॐ बृहस्पते अतियदर्यो हृदयाय नमः ॥

अर्हाद्व्युमत् शिरसे स्वाहा ॥ विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट् ॥

जनेषु कवचाय हुँ ॥ उद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्प्रजा ततदस्ममासु

नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ द्रविणन्धेहि चित्रम् अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:- पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुज देवगुरुः प्रशान्तः ।

तथाक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डं च विभ्रद् वरदोऽस्तु मह्यम् ॥

मूलमन्त्रः-ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽअर्हाद्व्युमद्द्विभाति

क्क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्प्रजा ततदस्ममा

सुद्द्रविणन्धेहि चित्रम् ॥ जपसंख्या (१९,०००) जपान्ते

पुनर्यासान्विधाय ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन

जप निवेदनम् ॥ गुरवे समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः-ॐ बृं बृहस्पतये नमः ॥

तान्त्रिक मंत्रः-ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः)

✠✠ भृगुमन्त्र जपविधिः- ✠✠

६-विनियोगः- अत्रात्परिस्त्रुतेति मन्त्रस्य प्रजापतिः ऋषिः

अनुष्टुब्छन्दः शुक्रो देवता शुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

शिरोन्यासः- अत्रात्परिस्त्रुतः शिरसि ॥ रसम्ब्रह्मणा ललाटे

॥व्यपिवत्क्षत्रं मुखे ॥ पयः सोमं हृदये ॥ प्रजापतिः नाभौ ॥

ऋतेनसत्यं कट्याम् ॥ इन्द्रियंविपानं गुदे ॥ शुक्रं वृषणे ॥ अन्धसः ऊर्वोः ॥ इन्द्रस्येन्द्रियं जानुनोः इदं पयः गुल्फयोः ॥ अमृतम्मधु पादयोः ॥

करन्यासः- अत्रात्परिस्तुतोरसं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं तर्जनीभ्यां नमः ॥ पयः सोमम्प्रजापतिः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियं अनामिकाभ्यां नमः ॥ विपानं शुक्रक्रमन्धस कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः- अत्रात्परिस्तुतोरसं हृदयाय नमः ॥ ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं शिरसे स्वाहा ॥ पयः सोमम्प्रजापतिः शिखायै वषट् ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियं कवचाय हुँ ॥ विपानं शुक्रक्रमन्धस नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु अस्त्राय फट् ॥ ध्यानम्:- श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरिटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः ।

तथाक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम् ॥ मूलमन्त्रः- ॐ अत्रात्परिस्तुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियंविपानं शुक्रक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥ जपसंख्या (१६,०००) जपान्ते पुनर्न्यासान्विधाय ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन जपनिवेदनम् ॥ शुक्राय समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीजमन्त्रः- ॐ शुं शुक्राय नमः ॥

तान्त्रिकमन्त्रः- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः)

✽ शनिमंत्र जपविधिः- ✽

७-विनियोगः- शत्रोदेवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः दध्यङ्गाथर्वण ऋषिः गायत्री छन्दः शनिर्देवता शनिप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ शं शिरसि ॥ नः ललाटे ॥ देवीः नेत्रयोः ॥ अभिष्टये मुखे ॥

आपो कण्ठे ॥ भवन्तु हृदये ॥ पीतये नाभौ ॥ शंयोः कट्यां ॥
अभि जंघयोः ॥ स्रवन्तु गुल्फयोः नः पादयोः ॥

करन्यासः-शत्रोदेवी अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ अभिष्ट्टये तर्जनीभ्यां
नमः ॥ आपोभवन्तु मध्यमाभ्यां नमः ॥ पीतये अनामिकाभ्यां
नमः ॥ शंय्यो रभि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ स्रवन्तुनः करतलकर
पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः- शत्रोदेवी हृदयाय नमः ॥ अभिष्ट्टये शिरसे
स्वाहा ॥ आपोभवन्तु शिखायै वषट् ॥ पीतये कवचाय हुँ ॥
शंय्यो रभि नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ स्रवन्तुनः अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:-नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितः शस्त्रधरो
धनुष्मान् । चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदास्तु मह्यम्
वरदोऽल्पगामी ॥

मूलमन्त्रः-ॐ शत्रोदेवी रभिष्ट्टयऽ आपो भवन्तुपीतये ॥ शंय्यो
रभिस्रवन्तुनः ॥

जपसंख्या (२३,०००) जपान्ते पुनर्न्यासान्विधाय ॥ गुह्याति
गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव
त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन जप निवेदनम् ॥ शनये
समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः-ॐ शं शनैश्वराय नमः ॥

तान्त्रिक मंत्रः-ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः)

➤ राहुमंत्र जपविधिः- ➤

८-विनियोगः-कयानश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः गायत्री
छन्दः राहु प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

शिरोन्यासः-कया शिरसि ॥ नः ललाटे ॥ चित्रं मुखे ॥ आ
कण्ठे ॥ भुवः हृदये ॥ दूती नाभौ ॥ सदा कट्यां ॥ वृधः मेढ्रं ॥
सखा ऊर्वोः ॥ कया जान्वोः ॥ शचिष्ठया गुल्फयोः ॥ वृता
पादयोः ॥

करन्यासः- कया नः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ चित्रऽआ तर्जनीभ्यां नमः ॥ भुवदूती मध्यमाभ्यां नमः ॥ सदावृधः सखा अनामिकाभ्यां नमः ॥ कया शचिष्टया कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ वृता करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः- कया नः हृदयाय नमः ॥ चित्रऽआ शिरसे स्वाहा ॥ भुवदूती शिखायै वषट् ॥ सदावृधः सखा कवचाय हुँ ॥ कया शचिष्टया नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ वृता अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:- नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी, करालवक्त्रो करखड्गशूली । चतुर्भुजश्चर्म धरश्च राहुः, सिंहासनस्थो वरदोऽस्तु मह्यम् ॥

मूलमन्त्रः- ॐ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा ॥ कया शचिष्टया वृता ॥

जपसंख्या (१८,०००) जपान्ते पुनन्यासान्विधाय ॥ गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन जप निवेदनम् ॥ राहवे समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः- ॐ रां राहवे नमः ॥

तान्त्रिक मंत्रः- ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः)

❀❀ केतुमंत्र जपविधिः- ❀❀

१-विनियोगः-केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः गायत्रीछन्दः केतुर्देवता केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

शिरोन्यासः-केतुं शिरसि ॥ कृण्वन् ललाटे ॥ अकेतव मुखे ॥ पेशो हृदये ॥ मर्या नाभौ ॥ अपेशसे कट्यां ॥ समु ऊर्वोः ॥ षद्भिः जान्वोः ॥ अजायथाः पादयोः ॥

करन्यासः- केतुङ्कृण्वन् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ अकेतवे तर्जनीभ्यां नमः ॥ पेशोमर्या मध्यमाभ्यां नमः ॥ अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः ॥ समुषद्भिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ अजायथाः करतलकर

पृष्ठाभ्यां नमः ॥

हृदयादिन्यासः-केतुङ्कृण्वन् हृदयाय नमः ॥ अकेतवे शिरसे
स्वाहा ॥ पेशोमर्षा शिखायै वषट् ॥ अपेशसे कवचाय हुँ ॥
समुषद्भिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ अजायथाः अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्:-धूम्रो द्विबाहु वरदो गदाधरो,
गृध्रासनस्थो विकृतासनश्च ।

किरीट केयूर विभूषितो यः,
सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः ॥

मूलमंत्रः-ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्ष्याऽ अपेशसे ॥
समुषद्भिरजायथाः ॥

जपसंख्या (१७,०००) जपान्ते पुनर्न्यासान्विधाय ॥ गुह्याति
गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव
त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ इति मन्त्रेण जलेन जप निवेदनम् ॥ केतवे
समर्पयेत् ॥

(एकाक्षरी बीज मंत्रः-ॐ के केतवे नमः ॥

तान्त्रिक मंत्रः-ॐ स्रां स्त्रीं स्त्रीं सः केतवे नमः)

❧ ॥ अथः छायापात्र दानम् ॥ ❧

आचमन प्राणानायम्यः- इहाद्य तिथौ देशकाल संकीर्त्यः-
मम तच्छरीरोवा वन्च्छिन्न समस्त पापक्षय सर्वग्रह पीडा शान्ति
शरीरोत्थार्ति नाशाय प्रासाद आयुरारोग्यादि सर्व सौख्य प्राप्तये
च इदं स्वदेहं छाया वीक्षीताज्य पूरित काँस्यपात्र ससुवर्ण
सदक्षिणाकं द्रव्यदान महं करिष्ये ॥

तथा काँस्य पात्रे स्थिते आज्ये च आत्मरूपं निरीक्ष्य ॥

ॐ रूपेण वोरूपमभ्यागान् तुथोवो विश्ववेदा विभजतु ऋतस्यपथा
प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥१॥

रूपथं रूपंप्रतिरूपो बभूवतदस्य रूपंप्रति चक्षणाय इन्द्रो
मायाभिः ॥ पुरुरूप ईयते युक्ताह्यस्य हरयः शतादशो त्ययं वैहरयोयं

वैदश च सहस्रणी बहू चिनन्ता तदेतद् ब्रह्म पूर्वं मनमवाह्यज
मनुः सर्वानु शासनम् ॥२॥ इत्याज्ये मुखवलोक्य ॥

प्रार्थनाम् कुर्यात्:-याऽ लक्ष्मीर्यश्चमे दौस्थ्यम् सर्वाङ्गं समुपस्थितम् ॥
तत्सर्वम् नाशयाज्य त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय ॥१॥ आज्यं
सुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम् ॥ आज्यपात्र प्रदानेन शान्ति
रस्तु सदा मम ॥२॥

पुनः प्रयोगः- ममायुरारोग्य प्राप्तये ससुवर्णं मिदमाज्यपात्रं अमुक
गोत्रायामुक शर्मणे विष्णुरूप ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥
तेन दानेन श्री भगवान् विष्णुः प्रीयताम् न मम ॥ इति छायादानं ॥

◀ आसन रामायण जी का ▶

सोरठा:-जेहि सुमिरत सिधि होय, गन नायक करिवर वदन ।

करहु अनुग्रह सोई, बुद्धि राशी शुभ गुन सदन ॥१॥

मूक होय वाचाल, पंगु चढ़ई गिरिवर गहन ।

जासु कृपा सो दयाल, द्रवहु सकल कलिमल दहन ॥२॥

नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिज नयन ।

करउसो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन ॥३॥

कुन्दु इन्दु सम देह उमा रमन करुना अयन ।

जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मर्दन मयन ॥४॥

वन्दऊ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि ।

महा मोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकर ॥५॥

वन्दऊ अवध भूआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।

विछुरत दीन दयाल प्रिय तनु तृण इव परिहरेऊ ॥६॥

प्रणवऊ पवन कुमारं खल वन पावक ज्ञान घन ।

जासु हृदय आगार बसहि राम शर चाप धर ॥७॥

वन्दऊ चारिहु वेद भव वारिधी वोहित सरिस ।

जिन्हइ न सपनेऊ खेद वरनत रघुवर विसद जसु ॥८॥

वन्दऊ निधी पद रेनु भव वारिधि जेहि कीन्ह जहँ ।

संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल विष वारुनी जहँ ॥९॥
 दोहा:-श्री गुरु चरण सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि ।
 वरनऊ रघुवर विमल जसु जो दायक फल चारि ॥१॥
 तुलसी कृत रामायण कथा कहऊँ अनुसार ।
 आयसु आसन लीजिए विराजिये पवन कुमार ॥२॥
 राम कथा के रसिक तुम धीर वीर बल पुंज ।
 आयसु आसन लीजिए भक्त राशी मति धीर ॥३॥
 बेग पधारिये पवन सुत लिये हाथ जय माल ।
 रघुवर चरित बखानियो सुनियो दीन दयाल ॥४॥
 सियावर रामचन्द्र शंकर हरि ओम जय जय सियाराम
 जय जय हनुमान हरि की जय ॥

—: विसर्जन :-—

दोहा:-राम लक्ष्मण जानकी सदा करऊ कल्याण ।
 रामायण वैकुण्ठ में विदा वीर हनुमान ॥१॥
 जय जय सियाराम की जय लक्ष्मण बलवान ।
 जय कपीश सुग्रीव की कहत चले हनुमान ॥२॥
 कहऊँ दण्डवत प्रभु सन तुम्हहिं कहऊँ कर जोर ।
 वार वार रघु नाम कहि सुरति करायेहु मोरि ॥३॥
 एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आधी ।
 तुलसी संगत साधुकी हरे कोटि अपराध ॥४॥
 जहाँ न हरि की शुभ कथा भक्ति नहीं लवलेश ।
 तुलसी तहाँ न विलम्बिये परि हरिये वह देश ॥५॥
 राम नाम आधी घड़ी पापहि पुंज पहार ।
 बलि हारी वा नाम की जारि करै सोई छार ॥६॥
 पवन तनय संकट हरण मंगल मूरति रूप ।
 राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥७॥
 जोजन जहाँ से आईए कथा सुनी मनलाय ।
 अपने अपने धाम को हरि सुमरेऊँ गृह जाय ॥८॥

कथा विसर्जन होत है सुनो वीर हनुमान ।
 श्रोता वक्ता के प्रभु सदा करो कल्याण ॥१॥
 सियावर रामचन्द्र जी की जय, उमापति महादेव जी की जय,
 पवन सुत हनुमान जी की जय, सन्त वर तुलसीदास जी की
 जय ॥

❖❖❖ श्रीराम स्तुति ॥ ❖❖❖

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणं ।
 नवकंज लोचन कंजमुख, कर कंज पद कंजारुणं ॥
 कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील नीरद सुदरं ।
 पट पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
 भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनं ।
 रघुनंद आँनदकंद कोशलचंद दशरथ नंदनं ॥
 सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु^३अंग विभूषणं ।
 आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥
 इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं ।
 मम हृदयकंज निवास कुरु कामादि खल दलगंजनं ॥
 मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
 करुना निधान सुजान सीलु सनेह जानत रावरो ॥
 एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
 सो०-जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
 मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

❖❖❖ ॥ भजन शिव शंकर का ॥ ❖❖❖

मुंडन की माला सोहें ओड़े मृग छाला वो तो पीवे भंग प्याला
 भोला, के डम डम बाजे डमरुआ....२
 ॐ शिव शंकर कैलाशी
 आप हो घट-घट के बासी,
 आप हो घट-घट के बासी के भोला रहते हो काशी ।

मस्तक ऊपर चन्द्र विराजे,
 मस्तक ऊपर चन्द्र विराजे बाजे-बाजे रे डमरुआ ।
 मुंडन की माला सोहें ओड़े मृग छाला वो तो पीवे भंग प्याला
 भोला, के डम डम बाजे डमरुआ....२
 गोरा जी सेवा करती हैं जटा से गंगा बहती हैं ।
 जटा से गंगा बहती हैं पाप वो सबके हरती हैं ।
 पाप वो सबके हरती हैं जटा से गंगा बहती हैं ।
 डुड़े नादियाँ पे असवारी बाजे बाजे रे पायलियाँ ।
 मुंडन की माला सोवें ओड़े मृग छाला वो तो पीवे भंग प्याला
 भोला, के डम डम बाजे डमरुआ....२
 ॐ शिव मंडल आया हैं कि चरणों में शीश नवाया हैं ।
 चरणों में शीश नवाया हैं के भोले तेरा गुण गाया हैं ।
 पार लगादे पार लगादे भोले हमारी तो नईया पार लगादे ।
 मुंडन की माला सोहें ओड़े मृग छाला वो तो पीवे भंग प्याला
 भोला, के डम डम बाजे डमरुआ....२

(बोलो शंकर भगवान की जय)

अग्निवासः-जिस दिन हवन करना हो, उस दिन की तिथि
 और वार की संख्या जोड़कर एक और मिलावें, कुलयोग में
 ४ का भाग दे । शेष ० या ३ रहे तो अग्निवास पृथ्वी पर शुभ
 है । शेष १ रहे तो अग्निवास आकाश में प्राण हानि कारक
 तथा शेष २ रहे तो अग्निवास पाताल में धन हानिकारक है ।
 तिथि गणना शुक्ल प्रतिपदा तथा वार की गणना रविवार से
 करनी चाहिए । इसके बाद ग्रह मुख आहुति विचार देखना
 चाहिए ॥

❖❖ ॥ ग्रह मुखे होमाहुति चक्रम् ॥ ❖❖

सूर्य नक्षत्र से:- सूर्य ३ नेष्ट ॥ बुध ३ श्रेष्ठ ॥ शुक्र ३ श्रेष्ठ ॥
 शनि ३ नेष्ट ॥ चन्द्र ३ श्रेष्ठ ॥ मंगल ३ नेष्ट ॥ गुरु ३ श्रेष्ठ ॥
 राहु ३ नेष्ट ॥ केतु ३ नेष्ट ॥

☆☆ ॥ शिव वास ज्ञान चक्रम् ॥ ☆☆

शिव वासः-तिथि को दुगना करके ५ और जोड़ें । योग में ७ का भाग दें । शेष १ बचे तो कैलाश में सुख । २ बचे तो गौरी सन्निधि में सुख सम्पदा । ३ वृषारूढ में अभीष्ट सिद्धि । ४ सभा में संतापकारक । ५ भोजन में पीडाकारक । ६ क्रीडा में कष्टकारक । ० श्मशान में मृत्यु ॥

शिववास शुभतिथि चक्रम्:-शुक्लपक्षे:-२,५,६,७,९,१२,१३ तथा कृष्णपक्षे:-१,४,५,८,११,१२,३०

☆☆ ॥ श्री गणेशजी की आरती ॥ ☆☆

जयदेव जयदेव, जय मंगल मूरती, श्री राजन मूरती ।
दर्शन मात्रेमाय, सुमिरण मात्रे माय, कामना कुरता । जयदेव २ ।
१-सुख करता, दुःख हरता, वरता-विघ्नाची २, उर्वी कुर्वी
रूपा देहरांची ॥ जयदेव-२
सर्वाङ्गे सिन्दूर, वट षन दुरराची-२, कंठे सोहे माल कंठे झलके
माल मुक्ता बैहलाची, जयदेव-२ ।
२-हीरा रत्ना जडता बाला, सोहे तुझ गवरा-२ चंदा नाची बूटी
कुमुकुम केसरा ।
हीरा रत्ना जडता मुक्ता, सोहे तुझ गवरी कँवरा, रुण झुण
थई-थई फूंदी चरणे घूँघरा, जयदेव-२ ।
३-पाया चा घुघरियाँ, रुण झुण वाजन्ता-२, तथथई-तथथई,
नाचे गणपति-२ तुम ईश्वर पार्वती कौतुक ना कर्ता, जयदेव-२ ।
४-लम्बोदर पीताम्बर, फणी वणी वन्देना-२ शरले शुण्डे वक्रे,
गण्डेत्रे नैयना, दास रामा चार, वटपाये सजना-२ संकट पावाहेणी
निरहाणी रक्षाणी सुखरी वन्देना, जयदेव-२ ।
५-कनक प्रज्वलनी अंगे, उज्ज्वलनी आरती-२ विघ्न विनायक
कान्ता, द्वन्द्वे बलिहाची, भक्त्या चा तुम सांचा, तुम हो गणपति-२

तुम चा सुमिरण करता, विधे चा हरता जयदेव जयदेव, जय मंगल मूरती, श्री राजन मूरती ।

दर्शन मात्रेमाय, सुमिरण मात्रे माय, कामना कुरता । जयदेव २ । शुभम् ॥

❧ ॥ शतरुद्राभिषेक ॥ ❧

हरिः ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽ उतोतऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥१॥ यातेरुद्रशिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तया नस्तन्वाशं तमयागिरिशन्ताभिचा कशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहि ठ सीः पुरुषङ्गत् ॥३॥ शिवेनव्वचसात्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥ यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ठ सुमनाऽ असत् ॥४॥ अद्ध्यवो चदधिवक्ताप्प्रथमो दैव्योभिषक् ॥ अहींश्च सर्व्वान्भयन्त्सर्व्वश्चयातु धान्योधराचीः परासुव ॥५॥ असौयस्ताम्रोऽ अरुणऽउतबब्धुः सुमङ्गलः ॥ येचैन ठ रुद्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताः सहस्रशो व्वैषाथं हेडऽईमहे ॥६॥ असौयोव्वसर्पतिनीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽ अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्थः सदृष्टोमृडयातिनः ॥७॥ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीदुषे ॥ अथोयेऽ अस्यसत्त्वानो हन्तेभ्योकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्चधन्वनस्त्व मुभयोरात्क्न्योज्ज्याम् ॥ याश्चतेहस्तऽइषवः पराता भगवोव्वप ॥९॥ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्योबाणवाँ २ ॥ उत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः ॥१०॥ याते हेतिर्मीदुष्टमहस्ते बभूवतेधनुः ॥ तयास्मान्निश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥११॥ परितेधन्वनो हेतिरस्मान्त्वृणक्तुव्विश्वतः ॥ अथोयऽइषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहितम् ॥१२॥ अवतत्यधनुष्व ठ सहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्यशल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव ॥१३॥ नमस्तऽ आयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभाब्भ्यामुततेनमो बाहुभ्यान्तवधन्वने ॥१४॥ मानोमहान्तमुतमानोऽ अबर्भकम्मानऽ उक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम् ॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः

प्रियास्तत्रोरुद्ररीरिषः ॥१५॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽ आयुषिमानो
गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्द्रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः
सदमित्त्वा हवामहे ॥१६॥

नमोहिरण्यबाहवेसेनात्र्येदिशाञ्चपतयेनमोनमोव्वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः
पशूनाम्पतयेनमोनमः शष्पिञ्जरायत्त्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमो-
हरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमोनमोबभ्लुशाय ॥१७॥

नमोबभ्लुशायव्याधिनेत्रानाम्पतयेनमोनमोभवस्यहेत्यैजग-
ताम्पतयेनमोनमोरुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः
सूतायाहन्त्यैव्वनानाम्पतयेनमोनमोरोहिताय ॥१८॥

नमोरोहितायस्थपतयेव्वृक्षाणाम्पतयेनमोनमोभुवन्तयेव्वारिव-
स्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमोमन्त्रिणेव्वणिजायकक्षाणाम्पतयेन-
मोनमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयतेपत्नीनाम्पतयेनमोनमः कृत्स्नाय ॥१९॥

नमः कृत्स्नायतयाधावते सत्त्वानाम्पतये नमोनमः सहमा
नायनिव्याधिनऽआव्याधिनीनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणेककुभा
यस्तेनानाम्पतयेनमोनमोनिचेरवेपरिचरायारण्यानाम्पतयेनमोन

मोव्वञ्चते॥२०॥नमोव्वञ्चतेपरिवञ्चतेस्तायूनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिण
ऽइषुधिमतेतस्कराणाम्पतयेनमोनमःसृकायिभ्योजिघाथंसद्भयोमु
ष्णताम्पतयेनमोनमोसिमद्भ्योनक्तञ्चद्भ्योव्विकृन्तानाम्पतयेनमः

॥२१॥नमऽउष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोनमऽइषुमद्भयो
ध्रुवायिभ्यश्चवोनमोनमऽआतत्र्वानेभ्यःप्रतिदधानेभ्य
श्चवोनमोनमऽआयच्छद्भ्यो-स्यद्भ्यश्चवोनमोनमोव्विसृजद्भ्यः

॥२२॥ नमोव्विसृजद्भ्योव्विद्भ्यश्चवोनमोनमःस्वपद्भ्यो
जाग्रद्भ्य-श्चवोनमोनमःशयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्चवोनमोनमस्ति
ष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवोनमोनमःसभाभ्यः ॥२३॥ नमःसभाभ्यः

सभापतिभ्यश्चवोनमोनमोश्वेभ्योश्वपतिभ्यश्चवोनमोनमऽ
आव्याधिनीभ्योव्विविद्भ्यन्तीभ्यश्चवो नमोनमऽ
उगणाभ्यस्तृर्हतीभ्यश्चवोनमोनमोगणेभ्यः ॥२४॥

नमोगणे षड्योगणपति षड्यश्ववोनमोनमो व्राते षड्यो व्रात
 पति षड्यश्ववोनमोनमो गृत्से षड्योगृत्सपति षड्यश्ववो
 नमोनमो व्विरूपे षड्यो व्विश्वरू-पे षड्यश्ववोनमोनमः ॥२५॥ नमः
 से ना षड्य से नानि षड्यश्ववो न मो नमो रथि षड्यो ऽ
 अरथे षड्यश्ववोनमोनमः क्षत्तु षड्यः सङ्गृहीतु षड्यश्ववो नमोनमो
 महद्भ्यो ऽ अर्भके षड्यश्ववोनमः ॥२६॥ नमस्तक्ष षड्योर
 थकारे षड्यश्ववो नमोनमः कुलाले षड्यः कम्मरि षड्यश्ववो नमोनमो
 निषादे षड्यः पुञ्जिष्टे षड्यश्ववो नमोनमः श्वनि षड्यो मृगयु षड्य
 श्ववोनमोनमः श्व षड्यः- ॥२७॥ नमः श्व षड्यः श्वपति षड्यश्ववो
 नमोनमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय
 च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने ॥२८॥ नमः कपर्दिने च व्यु
 प्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च ॥ नमोगिरिशया
 य च शिपि विष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय ॥२९॥
 नमो ह्रस्वाय च व्वा मनाय च नमो बृहते च वर्षी से च नमो व्वृद्धाय च स
 वृ धे च नमो ग्राय च प्रथमाय च नमो आशवे ॥३०॥ नमो
 आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शी षड्या य च नमो ऊर्म्या
 य चावस्वत्र्या य च नमो नादेया य च द्वीप्याय च ॥३१॥
 नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो
 मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघत्र्याय च बुद्ध्याय च नमः सो षड्याय
 ॥३२॥ नमः सो षड्याय च प्रतिसर्षाय च नमो याम्या य च क्षेम्या
 य च नमः श्लोकक्याय चावसान्याय च नमो उर्वर्ष्याय
 च खल्ल्याय च नमो व्वत्र्याय ॥३३॥ नमो व्वत्र्याय च कक्ष्याय च नमः
 श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमो आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः
 शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने ॥३४॥ नमो बिल्मिने
 च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुत
 सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चा हनत्र्याय च नमो धृष्णवे ॥३५॥ नमो धृष्णवे
 च प्रमृशा य च नमो निषङ्गणे चेषुधिमते च नमो स्तीक्ष्णे षवे चायुधि च नमः

स्वायुधायचसुधन्वनेच ॥३६॥ नमः स्तुत्यायचपत्थ्यायचनमः
काटयायचनीप्यायचनमः कुल्यायचारस्यायचनमो
नादेयायचव्वैशन्तायचनमः कूप्याय ॥३७॥

नमः कूप्यायचार्वाट्यायचनमोव्वीद्व्यायचत्वा तप्यायचनमो मेग्ध्या
चव्विद्युत्यायचनमोव्वर्ष्यायचवर्ष्यायचनमोव्वात्याय ॥३८॥ नमो
व्वात्यायचरेष्म्यायचनमोव्वास्तव्यायचव्वास्तुपायचनमः ।
सोमायचरुद्धायचनमस्ताम्रा यचारुणायचनमः शङ्गवे ॥३९॥ नमः
शङ्गवे चपशुप तये चनमऽउग्रायचभीमाय चनमोग्रेवधा
यचदूरेवधायचनमोहन्त्रेचहनीयसेनमोव्वृक्षेबभ्योहरिकेशो
बभ्योनमस्ताराय ॥४०॥ नमः शम्भवायचमयोभ वाययचनमः
शङ्करायचमयस्करायचनमः शिवायचशिव तरायच ॥४१॥ नमः
पार्ष्यायचाव्वार्ष्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणायचनमस्तीर्थ्या
यचकुल्यायचनमः शष्प्यायच फेन्यायचनमः सिकत्याय ॥४२॥
नमः सिकत्यायचप्रवहष्या यचनमः किर्ठीशिलायचक्षणायचनमः
कपर्दिनेचपुलस्तयेनमऽ इरिण्यायचप्रपत्थ्यायचनमोव्व्रज्याय ॥४३॥
नमोव्व्रज्यायच गोष्ठ्यायचनमस्तल्प्यायचगेहष्यायचन
मोहृदष्यायचनि वेष्प्यायचनमः काट्ट्या यचगह्वरेष्ठायचनमः
शुष्क्याय ॥४४॥ शुष्क्यायचहरित्यायचनमः पाथं
सव्यायचरजस्यायचनमो लोप्यायचनमऽ ऊर्व्यायच
सूर्वायचनमःपर्णाय ॥४५॥ नमः पर्णायचपर्णशदायचनमऽउदुदुर
माणायचाभिघ्नतेचनमऽआखिदतेचप्रखिदतेचनमऽइषुकृद्भ्य
वोनमोनमोवः किरिकेबभ्योदेवानार्थं हृदयेबभ्योनमोव्वि चिन्वत्केबभ्यो
नमोव्विक्षिणत्केबभ्योनमऽ आनिर्हतेबभ्यः ॥४६॥ द्रापेऽ अन्धसस्पते
दरिद्धनीललोहित । आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा भेम्मरिोड्मोचन
किञ्चनाममत् ॥४७॥ इमारुद्रायतवसेकपर्दिने क्षयद्वीरा
यप्रभरामहेमतीः । यथाशमसद्विपदेचतुष्पदेव्वि श्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽ
अस्मिन्ननातुरम् ॥४८॥ यातेरुद्रशिवातनूः शिवाविश्वा
हाभेषजीशिवारुतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे॥४९॥

परिनोरुद्रस्यहे तिर्व्वणक्तुपरित्वेषस्यदुर्मतिरघायोः ।
 अवस्तिथराघवद्भ्यस्तनुष्वमीदुर्स्तो कायतनयायमृड ॥५०॥
 मीदुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव । परमेव्वृक्षऽआयुधन्नि
 धायकृतिं व्वसानऽआचरपिनाकम्बिबभ्रदागहि ॥ ५१ ॥
 व्विकिरिद्विव्विलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः । यास्तेसहस्रर्तहेत
 योन्यमस्मन्निवपन्तुता ॥ ५२ ॥ सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्त
 वहेतयः- । तासामी शानोभगवःपराचीनामुखाकृधि ॥ ५३ ॥
 असङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्याम् । तेषाथंसहस्रयो
 जनेवधन्वानितन्मसि ॥५४॥ अस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षेभवा ऽअधि
 । तेषाथंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥५५॥ नीलग्रीवाः
 शितिकण्ठादिवर्तरुद्राऽउपश्रिताः । तेषाथंसहस्रयोजनेव
 धन्वानितन्मसि ॥५६॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः
 क्षमाचराः । तेषाथंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥५७॥
 येवृक्षेषुशष्पिञ्जरानीलग्रीवाव्विलोहिताः । तेषाथंसहस्रयो
 जनेवधन्वानितन्मसि ॥५८॥ येभूतानामधिपतयोव्वि
 शिखासः कपर्दिनः । तेषाथंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥५९
 ॥ येपथाम्पथिरक्षयऽएलवृदाऽआयुर्द्युधः । तेषाथंसहस्रयो
 जनेवधन्वानितन्मसि ॥६०॥ येतीर्थानिप्प्रचरन्तिसृका
 हस्तानिषङ्गिणः । तेषाथंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥६१॥
 येनेषुव्विव्विद्व्यन्तिपात्रेषुपिबतो जनान् । तेषाथंसहस्रयो
 जनेवधन्वानितन्मसि ॥६२॥ यऽएतावन्तश्चभूयाथंस
 श्चदिशोरुद्राव्वितस्थरे । तेषाथंसहस्रयोजनेवधन्वा नितन्मसि
 ॥६३॥ नमोस्तुरुद्रेभ्योयेदिवियेषाँव्वर्षमिषवः । तेभ्योदशप्राची
 र्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्धाः । तेभ्योनमोऽ
 अस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्दिष्मोयश्चनोद्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे
 दध्मः ॥ ६४ ॥ नमोस्तुरुद्रेभ्योयेन्तरिक्षेये षाँव्वातऽ इषवः ।

तेऽभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रती चीर्दशोदीचीर्दशोर्द्धाः ।
तेऽभ्यो नमो ऽ अस्तु ते नो वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्दिद्विष्मो य
श्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६५ ॥

नमो स्तुरुद्रेऽभ्योयेपृथिव्याँयेषामन्नमिषवः । तेऽभ्योदशप्राचीर्दश
दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्धाः । तेऽभ्यो नमो ऽ
अस्तु ते नो वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्दिद्विष्मो यश्चनोद्वे
ष्टितमेषाञ्जम्भे
दध्मः ॥ ६६ ॥ नमस्ते रुद्रमन्त्रवऽ उतोतऽ इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते
नमः ॥ ६७ ॥ याते रुद्रशिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तथा नस्तन्वाशं
तमयागिरिशन्ताभिचा कशीहि ॥ ६८ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्त
हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहि ठ सीः पुरुषञ्जगत्
॥ ६९ ॥ शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥ यथानः
सर्वमिज्जगदयक्ष्म ठ सुमनाऽ असत् ॥ ७० ॥ अद्भ्यवो
चदधिवक्ताप्पथमो दैव्यो भिषक् ॥ अहीँश्च
सर्वाञ्जम्भयन्तसर्वाश्चयातु धान्यो धराचीः परासुव ॥ ७१ ॥
असौ यस्ताम्रोऽ अरुणऽ उत बभ्रुः सुमङ्गलः ॥ ये चैन ठ
रुद्राऽ अभितो दिक्षुश्चिरताः सहस्रशो व्वैषाथं हेडऽ ईमहे ॥ ७२ ॥
असौ यो व्वसर्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽ
अदृश्नन्नदृश्ननुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः ॥ ७३ ॥ नमोस्तु नील
ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ॥ अथोयेऽ अस्य सत्त्वानो हन्तेभ्यो करत्रमः
॥ ७४ ॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्कन्योर्ज्याम् ॥ याश्च ते हस्तऽ इषवः
पराता भगवो व्वप ॥ ७५ ॥ व्विज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ
२ ॥ ऽ उत ॥ अने शन्नस्य घाऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ ७६ ॥
याते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूवते धनुः ॥ तथा स्मान्निश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज ॥ ७७ ॥ परिते धन्वनो हेतिरस्मान्निश्वतः ॥
अथोयऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहितम् ॥ ७८ ॥ अवतत्यधनुष्व
ठ सहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्यशल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव
॥ ७९ ॥ नमस्तऽ आयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभाऽभ्यामुतते नमो

बाहुभ्यान्तवधञ्चने ॥८०॥ मानोमहान्तमुतमानोऽ
 अबर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम् ॥ मानोव्वधीः
 पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तञ्चोरुद्ररीरिषः ॥८१॥
 मानस्तोकेतनयेमानऽ आयुषिमानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः
 । मानोव्वीरान्नुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे
 ॥८२॥ एषतेरुद्रभागः सहस्वस्त्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽ
 आषुस्तेपशुः ॥८३॥ अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ।
 यथानोव्वस्यसस्करद्यथानः श्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात् ॥८४॥
 नमस्तेहरसे शोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे । अन्याँस्तेऽ
 अस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मब्भ्यर्थाशिवोभव ॥८५॥
 नमस्तेऽअस्तुव्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्कवे । नमस्तेभगवन्नस्तुयतः
 स्वः समीहसे ॥८६॥ नतम्बि दाथठऽइमाजजानान्यद्यु
 ष्माम्कमन्तरम्बभूव । नीहारेणप्प्रावृताजल्प्याचा
 सुतृपऽउक्थसश्चरन्ति ॥८७॥ विश्वकम्माह्यजनिष्टदेवऽ
 आदिद्गन्धर्वोऽअभवद्वितीयः तृतीयः पिताजनितौषधीनामपाङ्गर्भं
 व्यदधात्पुरुत्रा ॥८८॥ मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव ।
 परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधायकृतिं व्वसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि
 ॥ ८९ ॥ व्विकिरिद्विव्विलोहितनमस्तेऽअस्तु भगवः ।
 यास्ते सहस्रर्थाहेतयो न्यमस्मन्निवपन्तुता ॥ ९० ॥
 सहस्राणिसहस्रशोबाहोस्तवहेतयः- । तासामी शानोभगवः
 पराचीनामुखाकृधि ॥ ९१ ॥ असङ्ख्यातासहस्राणिषेरुद्राऽ
 अधिभूम्याम् । तेषाथं सहस्रयोजनेवधञ्चानितन्मसि ॥९२॥
 व्वयर्थासोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥९३॥
 एषतेरुद्रभागः सहस्वस्त्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽ
 आषुस्तेपशुः ॥९४॥ अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ।
 यथानोव्वस्यसस्करद्यथानः श्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात् ॥९५॥

भेषजमसिभेषजङ्गवेश्वायपुरुषायभेषजम् । सुखम्मेखायमेष्यै
 ॥१६॥ त्र्यम्बकैयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धना
 ऋत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्यम्बकैयजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ।
 उर्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥१७॥ शतत्तेरुद्रावस
 न्तेनपरोमूजवतोतीहि । अवततधन्वापिनाकावसःकृत्तिवासाऽ
 अहिर्ष सन्नः शिवोतीहि ॥१८॥ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य
 त्र्यायुषम् । यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽ अस्तुत्र्यायुषम् ॥१९॥
 शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिर्ष सीः ॥
 निवर्त्तयाम्या युषेन्नाद्या यप्प्रजननायरायस्पोषायसुप्प्रजा
 स्त्वायसुवीर्याय ॥१००॥

॥ शुभम् ॥

